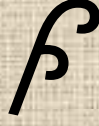
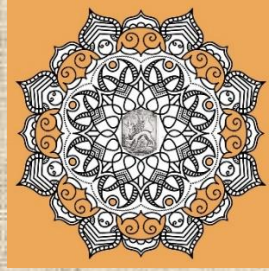


ISSN 2229-547X VIDEHA



विदेह ३७० म अंक १५ मई २०२३ (वर्ष १६ मास १८५ अंक ३७०)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.vidaha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनः मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादकः गजेन्द्र ठाकुर।



Gajendra Thakur

एो पथीक सवोधिकर सुरक्षित आछे। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतेक बिना पोथीक कानो अशक छाया प्रति एवं रिर्काडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यात्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , <http://www.geocities.com/gajendra> आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाई २००४ क पोस्ट <http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि (किछु दिन लेल <http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> लिंकपर, स्रोत wayback machine of [https://web.archive.org/web/*/videha_258_capture\(s\)_from_2004_to_2016-](https://web.archive.org/web/*/videha_258_capture(s)_from_2004_to_2016-) <http://videha.com/> भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे <http://www.videha.co.in/> पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c) २०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमें पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबधि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ए सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ए सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ए सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: <https://fonts.google.com/>
<https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts> , <https://keyman.com/>

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com)

Videha e-Journal: Issue No. 370 at www.videha.co.in



समानान्तर परम्पराक विद्यापति- चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल
द्वारा

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृतम्।

अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)

तिहुअन खेतहि काजि तसु किच्चिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मज्जो बन्धि न देइ॥ (कीर्तिलता
प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)

माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर (गद्य-पद्य रूपी) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे
ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.
-Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

१

ॐ ह्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः

ॐ ह्यौः आसिबलविक्ष W आसिः

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय (पृ. २-२०)

१.२.अंक ३६९ पर टिप्पणी (पृ. २१-२५)

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे (पृ. २८-३२)

२.२.राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक संक्षिप्त परिचय (पृ. ३३-४५)

२.३.प्रोमिशा मिश्रा- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' के व्यक्तित्व (पृ. ४६-५५)

२.४.भीमनाथ झा- लोकजीवनपर समेकित आलोक (पृ. ५६-५९)

२.५.बिजय कुमार मिश्र- रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक संग साक्षत्कार (पृ. ६०-६५)

२.६.साक्षत्कार- दिनेशचन्द्र गोपाल (पृ. ६६-७०)

२.७.अशोक-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुँहा' (पृ. ७१-७३)

२.८.लालदेव कामत-डा० राम भरोस कापड़ी "भ्रमर" : एक व्यक्तित्व (पृ. ७४-७७)

२.९.अजय अनुरागी- मैथिली भाषाक साहित्यकार 'भ्रमर' हरेक बिधामे पुस्तक प्रकाशन (पृ. ७८-८३)

२.१०.अश्विनी कुमार आलोक-रामभरोस कापड़ि भ्रमर: भारत-नेपालक सांस्कृतिक सेतु (पृ. ८४-८८)

२.११.चंद्रेश-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' : विचार, संवेदना आ चेतना (पृ. ८९-१०३)

२.१२.डा.राजेन्द्र विमल-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुहाँ'- प्रभाव आ प्रतिक्रिया (पृ. १०४-१०७)

२.१३.डा.रामदयाल राकेश- पुस्तक जे हम पढल-एन्टी भाइरसक कथात्मक संसार (पृ. १०८-११३)

२.१४.दिनेश यादव-लोक मैथिली केर विभूति 'भ्रमर' (पृ. ११४-१२७)

२.१५.चंद्रेश-विविधवर्णी आ बहुरंगी रचनाकार 'भ्रमर' (पृ. १२८-१३५)

२.१६.अयोध्यानाथ चौधरी- "भ्रमर"क बहुआयामिक व्यक्तित्व (पृ. १३६-१४१)

२.१७.अजित कुमार झा-घरमुहॉ: मधेशी आन्दोलन आ सामाजिक समरसताक दस्तावेज (पृ. १४२-१४७)

२.१८.रमेश रञ्जन-एकटा आर वसन्त : तात्कालीन समय आ समाजक प्रतिनिधि नाटक (पृ. १४८-१५६)

२.१९.विनय भूषण-इजोतक आश जगबैत भ्रमरक गजल (पृ. १५७-१६६)

२.२०.आशीष अनचिन्हार-कलंकित चान (पृ. १६७-१७०)

२.२१.विनीत ठाकुर-बहुआयामी व्यक्तित्वक एकटा सुधर स्वरूप:रामभरोस कापड़ि भ्रमर (पृ. १७१-१७८)

२.२२.डा. योगानन्द झा-भैया अएलै अपन सोराज: विहगंम दृष्टि (पृ. १७९-१८८)

२.२३.गजेन्द्र ठाकुर- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर एकटा समग्र दृष्टि (पृ. १८९-१९३)

२.२४.नित्यानन्द मण्डल-अपने रङ्गमे रङ्गाएल रामभरोस सर (पृ. १९४-२००)

ऐ अंकक अन्यान्य रचना

३. गद्य खण्ड

- ३.१. जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास) (पृ. २०३-२२५)
- ३.२. जगदीश प्रसाद मण्डल- शॉर्ट कट रास्ता (लघुकथा) (पृ. २२६-२३४)
- ३.३. नन्द विलास राय- भौटबेच्चा (पृ. २३५-२३६)
- ३.४. रबीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- ३१-३५ म खेप (पृ. २३७-२५२)
- ३.५. कुमार मनोज कश्यप- अन्हार सऽ लडैत (पृ. २५३-२५४)
- ३.६. निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-१९) (पृ. २५५-२६२)
- ३.७. संतोष कुमार राय 'बटोही' मंगरौना (धारावाहिक उपन्यास १२म खेप) (पृ. २६३-२६६)
- ३.८. आचार्य रामानन्द मण्डल- जाति बनाम जातिवाद/ धरम संकट मुक्त (पृ. २६७-२७५)

३.९.डा. किशन कारीगर-पुरुस्कारी गुर्गा पुरुस्कार बँटा डकैत (पृ. २७६-२७७)

३.१०.लाल देव कामत- कथाकार नन्द विलास राय जी के कथा पोथी 'असल पूजा'/पोथी समीक्षा- "सझिया रोपनि" (पृ. २७८-२८१)

३.११.कुन्दन कर्ण- मैथिली बीहनि कथा- रीढ़ (पृ. २८२-२८३)

३.१२.आशुतोष कुमार झा- जीवनक सीख (पृ. २८४-२८८)

४.पद्य खण्ड

४.१.राज किशोर मिश्र-जंक फूड (पृ. २९०-२९३)

५. अनुलग्नक (पृ. ००१-३३०)

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues (पृ ००१-०२२)

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download (पृ ०२३-०७४)

३.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos (पृ ०७५-०८४)

४. मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature (पृ ०८५-०९७)

५. विदेह स्त्री कोना (पृ ०९८-१०५)

६. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement) (पृ १०६-२०१)

७. विदेह मिथिलाक खोज (पृ २०२-२३१)

८. विदेह मिथिला रत्न (पृ २३२-३३०)



ॐ

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः
शान्तिर्ब्रह्म

ॐ द्यौः शान्तिब्रह्मविष्णुः शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्यूलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे,
वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आपः-
जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्यूलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे,
औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति
हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच,
आपः-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ॐ

ॐ, सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।

ॐ, स्र हस्र शीर्षा पुरुष षः। स्र ह्र स्रा षः

स्र हस्र पात्।

स भूमिं ग्वंग विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

सृष्टिं W रि श्रुता रू ब्रा श्रुता त्रिष्टद् दशाङ्गुलम्॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने
अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ सहस्रशीर्षां पुरुषः सहस्राक्षं
सहस्रपात् ॥ सभूमिं सर्वतस्मृत्वा
त्त्वतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्याग्ँ शूद्रो अजायत॥

प॥ ड्याग्ँ शूद्रो जायत॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्।

प॥ ड्यां सृष्टिं दिशः श्रोत्रात् ॥

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❁ (White Florette- innocence and purity)

❁ (Wheel of Dharma)

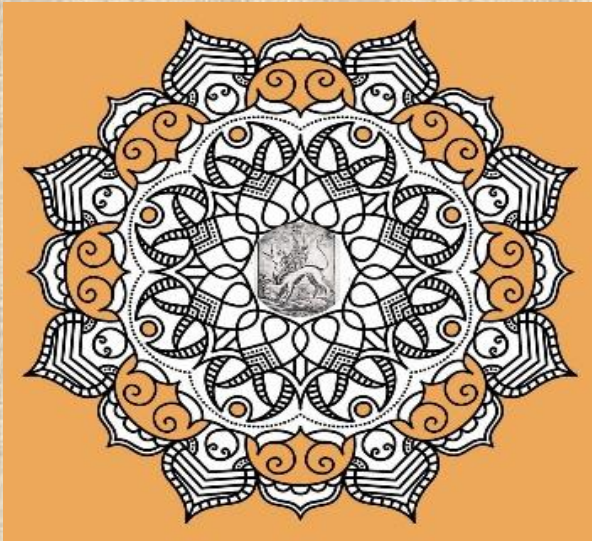
卐 (Swastik)

ॐ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम प्रिश्चिबुध, प्रिश्चम Devanagari Anji)

𑀧 (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑀧 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑀧



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३६९ पर टिप्पणी

१.१. गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे किछु गोटेकेँ हुनका मधेस आन्दोलनसँ जुड़लासँ दिक्कत छन्हि, से ओ रचना नै देता, से नेपालो दिसमे छथि आ भारतो दिस। मुदा समानान्तर धाराकेँ तकर आदति छै। से कोनो विशेषांकसँ कम रचना नै आयल।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' सर्वहारा वर्गकेँ गरिमा देलन्हि, जखन महेन्द्र मलंगिया आ जातिवादी रंगमंच शोलकन आ राड़ युक्त शब्दावली अपन स्लैपस्टिक ह्यूमर बला नाटक मे दऽ रहल छल, तखन भ्रमर जी ई केलन्हि, से आर महत्वपूर्ण छल।

रायपुरसँ गौहाटी तक ओ भ्रमण करैत छला। भ्रमण करैबला भ्रमर।

2

**HONOUR KILLING OF GANGESH UPADHYAYA
(FIRST BY RAMANATH JHA, THEN BY UDAYANATH
JHA 'ASHOK' (A PARALLEL HISTORY OF MITHILA
AND MAITHILI LITERATURE, WHY TODAY ITS NEED
BEING FELT MORE INTENSELY?)**

I was not surprised, though I must have been when I saw a monograph on Gangesh Upadhyaya, whose copyright is being held by Sahitya Akademi, the author of the monograph is Udayanath Jha 'Ashok'. I thought that Udayanath Jha 'Ashok', who has been given Bhasha Samman also, by the same Sahitya Akademi, would do some justice. But truth and research seem elusive in Sahitya Akademi

monographs, at least that I found in this monograph.

I searched and searched through chapters, that now the author will show courage. But the author like Ramanath Jha seems ashamed of the roots and offspring of Gangesh Upadhyaya. He tries to confuse the issue, but there is no confusion now at least since 2009. But in 2016 Sahitya Akademi seems to carry out the casteist agenda. Udayanath Jha mockingly pretends to search his name, lineage etc, where nothing is there to search for, yet he could not muster the courage, to tell the truth, and ends up just repeating the facts in 2016 that Dineshchandra Bhattacharya already has published way back in 1958.

The honour killing of Gangesh Upadhyaya by Prof. Ramanath Jha is being taken forward by Sahitya Akademi, Delhi in a most hypocritical way.

Ramanath Jha's obscurantism *vis-a-vis* Panji is evident from one example. The inter-caste marriage in Panji was well known to him (but he chose to keep the Dooshan Panji secret- which has been released by us in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at <http://videha.co.in/pothi.htm>). Sh. Dinesh Chandra

Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila". (1958)

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila----- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name-----...As there is no other reference to Gangesa we can assume that the family dwindled into insignificance again and became extinct soon after his son's death." [1958, Chapter III pages 96-99), which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha, and he seemed thankful to him.

The following excerpt from Our Panji Prabandh (parts I&II) is being reproduced below for ready reference:

-

महाराज हरसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कर्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान

स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files. Sh. Anshuman Pandey [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjikara-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panji records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of Michigan 2014].

Later these Panji Manuscripts were uploaded to Videha Pothi at www.videha.co.in and google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis,

and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education stream in British India, in Nepal it still has that meaning.

ORIGINAL PANJI REFERENCES ARE PLACED BELOW:

DOOSHAN PANJI- THE BLACKBOOK

४९.

१८८/२	चर्मकारिणी	माण्डर	वभनियाम	छादन
तत्त्वचिंतामणि कारकगंगेश	छादनगंगेशक	नाई	रत्नाकरक- मातृक (अज्ञात)	गंगेश
	वल्लभा	भवाइ	माहेश्वर	
			जीवे	

२१//१० छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक जगद्गुरु गंगेश

छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक

गंगेशक वल्लभा चर्मकारिणी पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते तत्व
चिन्तामणि कारक गंगेशोत्पत्ति- **चर्मकारिणी मेधाक सन्तानक**
लागिमे छलन्हि

छादन सँ तत्व चिन्तामणि कारक म०म० गंगेश

**"तत्व चिन्तामणि कारक म. म. पा. गंगेशक विषयक लेख प्राचीन
पञ्जीसँ उपलब्ध"।।**

**पितृ परोक्षे पंच वर्ष व्यतीते गंगेशोत्पत्तिः इति प्राचीन लेखनीयः
कुत्रापि**

देवानन्द पञ्जी ३९-२ छादनसँ जगदगुरू गुरू गंगेश सुताय वभनियामसँ
जयादित्य सुत साधुकर पत्नी

देवानन्द पञ्जी ३३९-३ जगदगुरू गंगेश सुत सुपन दौ भण्डारिसमसँ
हरादित्य दौ.।। पुत्र सुताच गोरा जजिवाल सँ जीवे पत्नी ए सुत सन्दगहि
भवेश्वर। अत्रस्थाने सुपनभ्रातृ हरिशर्म दारिति क्वचित् जजिवाल ग्राम

देवानन्द पञ्जी ३०=५ छादनसँ उपायकारक म.म. पा. वर्द्धमान सुताच
खण्डवलासँ विश्वनाथ सुत शिवनाथ पत्नी गंगेश- म.म. वर्द्धमान/ सुपन/
हरिशर्म

Gangesh, the author of the Tattvachintamani, wrote one text equivalent to 12,000 texts. Now come to the fact mentioned in the Panji- it clearly states that Gangesh of Tattvachintamani was born five years after the death of his father and he married a tanner, so why did Ramanath Jha hide this from Dinesh Chandra Bhattacharya? Vardhamana, son of Gangesh, calls Gangesh *sukavikairavakananenduh*. But the conspiracy under which the poems of a famous

scholar like Gangesh are not available today is clear from the example given above. Vasudev of Bengal was a classmate of Pakshadhar Mishra of Mithila, he came to study in Mithila, passed the *shalaka* examination and received the title of *sarvabhaum*. Vasudeva memorised the *tattvachintamani* of Gangesh and the *nyayakusumanjali karika* of Udayana. Pakshadhar and other Mithila teachers did not allow writing (copying) *tattvachintamani*. Raghunath Shiromani, a disciple of Vasudeva, took the right of certification after he defeated his guru Pakshadhar Mishra in a scriptural debate (*shastrartha*). The *Navya Nyaya* school was founded in Navadvipa by Vasudeva-Raghunath. Pakshadhar Mishra was a contemporary of Vidyapati (distinct from the Padavali writer who was of the pre-Jyotirishwar period) who wrote in Sanskrit and Avahatta. And the arrival of Mithila students of Bengal from Bengal stopped after Raghunath Shiromani. Gangesh Upadhyaya enjoyed '*param guru*' as well as '*jagad guru*' titles, the highest titles of the time and as per Panji only Vacaspati Mishra II was the other person who enjoyed the title of '*param guru*'. The extinction of Navya-Nyaya School from Mithila, as described above, was a revenge of nature against the honour killing of Gangesh Upadhyaya and his family.

[Translation of the Maithili Short Story, 'Shabdashastram' (based on the true Panji records

of Gangesh Upadhyaya) was done by the author Gajendra Thakur himself: published as 'The Science of Words' Indian Literature Vol. 58, No. 2 (280) (March/April 2014), pp. 78-93 (16 pages) Published By: Sahitya Akademi]

3

Kamlanand Jha has written a book on Nagarjun (Maithili's Yatri) where he credits him with giving a new direction to Maithili literature. Chandradhar Sharma Guleri wrote 'Usne kaha tha', a marvellous short story in Hindi, the best one of its time. But his literary corpora is very little in quantity, so if anyone tried to give him credit for giving direction to Hindi short story writing would make himself a laughing stock. And Yatri's Maithili literary corpora is even thinner than Guleri's. Moreover, Rajkamal Chaudhary calls him of the medieval age (Rajkamal Monograph, Subhash Chandra Yadav, Page no 14). He wrote Chitra (25 poems). He wrote, rather hurriedly published his 'Patrahin Nagn Gachh' (44 poems) for Sahitya Akademi Award in Maithili, which he got in 1968. After that he stopped writing in Maithili, so how can he influence anybody when after getting the award one stops writing in that language? This is one example of his instability so far as his ideology is concerned. He became a Buddhist monk when he left for Sri Lanka and became a Brahmin again when he returned after a 2nd sacred thread ceremony performed in his

village. This is another example of his instability so far as his ideology is concerned. Kamlanand Jha does not know Maithili literature. His comments should be exposed, as he tries to give a bad name to the great tradition of Maithili literature. There were mainstream writers, but there were writers of parallel tradition also (see below Annexures 1 & 2). He has confused the Sanskrit and Avahatt Vidyapati Thakkurah with the Padavali writer pre-Jyotirishwar Vidyapati. He should read the writing of Vijay Kumar Thakur, a leftist historian, who has given ample light on pre-Jyotirishwar Vidyapati. [*My article on Vidyapati in Prabandh Nibandh Samalochna Vol.II (available in Videha Archive) covers all these, the logo of Videha is the photograph of Pre-Jyotirishwar Vidyapati, sketched by Panak Lal Mandal, recipient of Videha Samman for fine arts.*]

Annexure 1

चन्दा झा (१८३१-१९०७), मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम-पिण्डारुछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रिएर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता केनिहार। कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।

न्यायक भवन कचहरी नाम।
सभ अन्याय भरल तेहि ठाम॥
सत्य वचन विरले जन भाष।
सभ मन धनक हरन अभिलाष॥
कपट भरल कत कोटिक कोटि।
ककर न कर मर्यादा छोटि॥
भन कवि 'चन्द्र' कचहरी घूस।
सभ सहमत ककरा के दूस।

२

रतिया दिन दुरगतिया हे भोला!
गैया जगतक मैया हे भोला
कटय कसैया हाथ
हाकिम भेल निरदैया हे भोला
कतय लगायब माथ
बरसा नहि भेल सरसा हे भोला
अरसा कए गेल मेह
रतिया दिन दुरगतिया हे भोला
जन तन जिवन संदेह

मुखिया बड़ बड़ सुखिया हे भोला

अन्नबक दुखिया डोल

के सह कान कनखिया हे भोला

सुखिया बिरना टोल

३

अस्त्र शस्त्र रोक आब मामिलाक मारि।

भाइ भाइकेँ पढ़ैछ नित्य नित्य गारि॥

ठक्क लोक हक्क पाब साधु केँ उजारि।

दैव जे ललाट लेख के सकैछ टारि?

चाही नहि धन, ललितवाम, पकवान जिलेबी,

मनोविनोदक हेतु अमरपति सदन न टेबी।

ई अन्तर अभिलाष हमर करुणामयि देवी

भक्ति भाव सँ सतत अहिंक पदपंकज सेवी॥

अन्न महग, डगमग अछि भारत, हयत कोना निस्तारा

उत्तर पश्चिम भूमि अगम्या पर्वत असह तुषारा।

धर्म-विरोधी सहसह करइछ, कुमत कथा विस्तारा

करथु कृपा जगजननी देवी महिसीवाली तारा॥

मिथिला की छलि की भय गेलि,

याज्ञवल्क्य मुनि, जनक नृपतिवर

ज्ञान भक्ति सौं गेलि।

वाचस्पति मिश्रादि जगद्गुरु

निर्जित बौद्ध झमेलि

से शारदा स्वर्ग जनि गेली

बढ़ल कुविद्या केलि।

वर्णाश्रम विधि ककरहु रुचि नहि

श्रुति श्रद्धाकेँ ठेलि

पूजा पाठ ध्यान वकमुद्रा

सभटा वंचन खेलि।

कह कविचन्द्र कचहरी भरिदिन

बहुत भोग कर जेलि,

कलह कराय धर्म धन नाशे

कलिक दरिद्रा चेलि।

४

मय केहन भेल घोर हे शिव!

गोधन विपति, धरम अवनति देखि कत हिय करब कठोर॥

साधु समाज राजसँ पीड़ित अति हरषित-चित चोर।

अकुलिन लोकेँ धरणि परिपूरित कुलिन समादर थोड़॥
धरम सुनीति प्रीति ककरहु नहि, खलहिक चलइछ जोर।
कन्द-मूल-फल सेहो अब दुरलभ अन्न गेल देशक ओर॥
किछु शुभ साधन बनि नहि पड़इछ थाकल मन, मति भोर।
कह कवि चन्द्र हमर दुख मेटत होयत कृपा शिव तोर॥

५

सुमरु सुमरु मन! शंकर समय भयंकर जानि।
ककर हृदय नहि कलुषित शासन कलि नृप पानि॥
केवल शिव करुणाकर सेवयित नहि जन हानि॥
भक्ति कल्पलति जानह परम परशमनि खानि॥
कतहु विषयमे न लागह त्यागह अनुचित मानि।
सुखसौँ अन्त विलसबह 'चन्द्र' चूड़ रजधानि॥

ANNEXURE 2

१

फतूरीलालक अकाली कविता / अकाली कवित्त

फतूरीलालक फसली बर्ख १२८१ .ई ७४-१८७३)सनसालक अकाली (कविता

[ग्रियर्सन [(मैथिली क्रेस्टोमैथी एण्ड वोकाबुलेरी)

साल एकासिक वर्णन सुनूचौदिस पड़ल अकाल /
 भेल बरिसात खिन्न ऐ सालककहाँ लागि वरनौँ हाल /
 रोहिणि आदि थीक बरिसातकजेहिँ एला तेहिँ गेला /
 म्रिगिसिरा मन पुरल मनोरथदै झीसा किछु गेला /
 अरदड़ा आडम्बर भारीगरजत हैं चहु ओर /
 पुख रुख राखल धरती केरभेल बरखा केर ओर /
 पुनर्वसु थिक बड़ पुनीताओहो बड़ा कसरेस /
 बिआ बिड़ारक जे किछु उपटलधनि बरिसल असरेस /
 मघा भेल मंगाहिआ कल्लरजगभरि के नै जान /
 पुरबा पूर पछ नै राखलककरा करब बखान /
 उत्तरा आइ जाय घर बैसलसपतौँ लै नै बून /
 हथिआ श्रृंग मुँड़ दै मूनलतनिकौँ लागल घून /
 चितरा चित मित नै राखलओहो भेल डाकू धाती /
 नाक रंगौलन्हि सभै नछत्तरदोम नुकौलन्हि खाती /
 जोतिष पढ़िसाधि भूगोल-साधि /पढ़ि जे जन ऐलाह-
 रेखागणित बीजसौँ ओआकिफतनि कौँ कच / ्वी बोल
 श्रीराम कृपागति ओहो ने जानथिजाहि कृपा सभ काज /
 पानिक प्रश्न कबौँ जौँ पुछिऐन्हिसेहो कहैत होइन्हि लाज /
 जेहिखन नदी नाल नै भरलेतेहिखन रौदी सरती /
 बिना जले जग किछु नै उपजलदगध भेल छथि धरती /
 ते नर रौदीक आगम बूझलजे छल कृषि किसान /
 दैव बेपच्छ पच्छ नै राखलजड़ि कटौलक धान /
 कोदो मडुआ एको ने उपजलनै उपजल किछु साम /
 गम्भड़ी गद्दरि खेतहि सुखाएलभेल विधाता वाम /
 मर्तभुवनमे के कर रच्छाकहाँ जाइ केँ भागि /
 सुखल पताल हाल नै ओतहुँसगरहुँ लागल आगि /
 धृक जीवन ओइ नृपति इन्द्रकेँजे रोकल गहि पानि /
 जीवा /जन्तु विकल पुहमीमे-ताकेँ हो नै आनि
 रवीने खेढ़ी औ चीन /राय एको नै उपजल-
 घरभेल अब बीन दुरदिन /नारी-घर सोच करै नर-

धनिक लोक सभ मनहि मगन छथिराखथि बहुतो ढेरि /
 हसोथि रुपैया घर कै राखथिमहगी भेल अब सेर /
 केओ कुरथी खेत मासु बेसाहलजाहि कौड़ि छल अपना /
 कतेक जना हरिवासर ठानलभात बहुत कै / सपना
 कतेक जना मिलि जनेर बेसाहलनिरधन बैसल तकइ /
 भेल धनन्तिरि दूइ फसिल जगआओर मकइ राहड़ि /
 काल पड़ल तिरहुतिमे भारीतँ ई बहि गेल हावा /
 घरफाँकि मकइ केर लावा / नारी-घर मगन करै नर-
 मालिक और महाजन सभकेँघर ढेरी अन्न-घर /
 लोक बुझाओन ओहो तकै छथिमूँह गरीबक सन /
 समै देखि बनिआँ सभ सनकलडरँ लगौलक टट्टी /
 सुन्न दोकान सहरमे परि गेलसुन्न भेल सभ चट्टी /
 सूखल गात बात भौ लटपटकतेक बात अब सहना /
 नर नारी सभ सान तेआगलबिकरी भेल अब गहना /
 मँगटीका खूटी औ तड़कीनकमुन्नी नै नाक /
 कटसरि बिछिआ औ झिमझिमिआँबाजूबन्द औ बाक /
 चन्द्रहार, हैकल औ सिकड़ीऔर घमौरिक दाना /
 सूति, नवग्रह औ पचखँड़ीलशुनी भेल निदाना /
 तापर दर्बजात नै बचलेकरम भेल निखट्ट /
 तमघैल, अढ़ैआ औ पिकदानीनै तसला औ तटू /
 बाटी, बट्टा औ पनबट्टाभोजन करैक थारी /
 माधव सीहि सहित सोबरनानै बचले घर झाड़ी /
 धन संपति घर किछु नै बचलेसभटा पड़ि गेल बंधक /
 तैओ भूख छुटल नै ककरोएहन पेट भेल खंधक /
 दैब अंश अबतरल कम्पनीजा पर राम सहाए /
 मिथिलापुर बूड़न जब लागयसे सुनि पहुँचल धाए /
 खरिद अनाज जहाजहिँ बोझलभरती करि करि बोरा /
 सदर तिलंगा ओआ पर भरतीऔर ओलाइति गोरा /
 हाजीपुरमे लाख हजारमकै लाखन हइ पटना /
 बाजितपुर सुलतानपुर गोलानै जानत हौँ केतना /
 गाड़ी, बैल, छकड़, ऊँट बिहारेउबहत हइ सभ दाना /

मिसर कन्हैआ केँ पोखरन मेपहिलुक अड़ी ठेकाना /
श्री लक्ष्मीश्वर सिंह नृपतिमहाराज मिथिलेश /
अचल राज दड़िभंगाश्रीपति हरहिं कलेश /
गाड़ी बैल लाखन हजारनताकेँ परे घड़ेर /
पहिलुक गोला मधुबन, भौड़ा जफरा /और अड़ेर
बेनीपट्टी, औ पचमहलाकुम्हरौल औ कमतौल /
हरिहरपुर, पिड़ारुछ बरनोंकेतेकाँ बरिऔल कारज /
बारि पोखरि, बिरसायर बरनोंपण्डौल को नै जान /
नवहद, सरिसो ओ भटपुरा, ता सौँ दक्षिण उजान
झंझारपुर, महरैल, कन्हौलीमधेपुर हइ खास /
बेनीपुर, कमान, नरैहिओबरनों फूलपरास /
झमना हइ जगजानित जगमेमहथा और बछौर /
दुहबी औ महिनाथपुरऔर जैनगर तक हइ दौर /
बलदेबपुर औ ढंगा बरनोंमिरजापुर लघु हाट /
सीबीपटी औ कपसीआसदर गोला सौराठ /
गुरबाकेँ परबरसी हाकिमकर तिरहुतमे आके /
नै तो मरते कत नर नारीबाले बचे सुखा के /
कत मुरदा गरदा मै मिलते असंख जीव चल /जाता
सर समधी केँ संभा ने लम्भननै बचते जलदाता /
सभकेँ सभ उपछै भै गेलपोखर औ सड़क धुर /
रहि गेल ब्राह्मण सोती पण्डितकायथ पछिमा ठाकुर फरक /
केओ ओरसिअर नाम लिखाओलकेओ मोहर्रिर भँट /
धर्मकार्यमे लुटथि रुपैआतें भेल सभ केर भँट /
केओ जमानत दैकेँ बचलाहजिनका अमला / नेही
ककरो मारि केँत पिठि तोड़ैन्हिउतरैन्हि जन्मक ठेही /
ककरहुँ गारत गात सुखाओलबहुतो होअय चलाना /
मातुपिता घर परिजन रोवयबाबू गेलाह जहलखाना /
ककरहुँ घर भेल खानातलासीभेट मोहर्रिर घौँछ /
केओ अदालतिमे डिड़िआइ छथिककरहुँ उपरैन्हि माँछ /
एतना सुनि हाकिम रिसिआओल /तें लागल जन ठीका
नाक रंगौलन्हि सभै मोहर्रिरलागल चूनक टीका /

जोग, बिकौआ, लौकिक वंशककिरिआमंत सुकूल /
गाछी, बाँस, बैल औ महिसिजगह कैल भकफूल /
ताहि रुपैआ सौँ करा गजरलै कोरट सौँ रीन /
तैं कारन बहुतो घर झगड़ाभाइ भतीजा भीन /
आए लाट बहादुरऔ दड़िभंगा धाम /
बाबू औ बबुआन सहित मिलिकीन्ह कुमैटी खान /

.....

.....

.....

एह सभ संग बैठि कैजाय कुमैटी भेल /
अजब कार सरकार केतिरहुत पहुँचल रेल /
बाजितपुरसँ सड़क निकालैआये दौड़िह दौड़ी /
हहेया गंडक पुल बन्हाएआए चौरही चौरा /
धर्मधीर, बलबीर, कम्पनीजानत हइ जगदीशन /
लछमी सागर के पोखरिमेताहि कीन्ह इसटीसन /
बड़ा लाट कलकत्तेवालेश्रीदुर्गा होए संग /
आगरा के छोटा लाल बहादुरबैठे सभ एकरंग /
जुटे कमिश्नर और कलट्टरबोलहिं बात नेअंट /
एह पाचो इजलास पर बैठेसंग जात ऐह जंट /
खबरि गए अखबार माँमैथिल के एह हाल /
सुनहु फिरंगी अवण दैकैमेटहु दुख के जाल /
हुकुम दीन्ह दोउ लाट कोसुनहु हमारे बैन /
मदति करहु रेआआनकोचैन क्या बैठे हौ /
बड़ा लाट दोउ बीर उठाएसाहेब औ जरनैल /
मेजर मजिस्टर और कलट्टरसंगजात करनैल /
देस देससौँ अन्न मंगाओलदीन्ह सभनि के दाम /
महामूँग, गहुम औ चाउरबजड़ा और बदाम /
डोली, पटना औ भटसारेदीली औ अजमे /र
आगरा और कान्हपुर ढाकाजहाँ अन्न के ढेर /
भए रमाना अन्न तिरहुतिमेलादि गाड़ी और बैल /
गज, तुरंग, गदहा औ छकड़संग सिपाही छैल /

छत्री औ पैठान मोगल सभबाँकाबीर रजपूत /
 सोभा बरनि नजात हइजैसे हनुमन्त दूत /
 आगे सफर ओ मैनापलटन वीर जमान /
 बरछी औ तरुआरि गहै कर गहै तीर /कमान
 चढ़ि तुरंग पर करै कवाइतजमादार होए संग /
 सोभा बरनि न जात हइतखनुक रंग देखि /
 करत काम सभ धाममेटूट अट सभ लूट /
 ढाहि भीड़ गाछी सहितबान्धै सड़क औ पूल /
 जिले पटने औ भटसारेप्रगन्ना महिसौर /
 तहाँ बसहिँ एक सज्जनतेहि घर जा लक्ष्मी दौड़ /
 श्री द्वारिका प्रशादितधर्म / मधीर बुद्धिमान
 तहसीलदार कोरट के खासाजानहिँ सकल जहान /
 बाबु इसरी प्रसाद दियौटीसो मधुबनमे आए /
 हुकुम दीन्ह सुपरनडेंटकेँटोले टोले होए जाए /
 मन पँचा मनगर भै लिएबहुतो लिए खैरात /
 धन्य धन्य अंगरेज बहादुरसभकेँ जूटल गात /
 गरिब, गनी, गुरबा, करु जै, जैब्राह्मण दे /त असीस
 श्री रघुनाथ बढै बदसाहीगदी लाख बरीस /
 फतुर लाल कवि बरनत हैंएह रौदी के हाल /
 गौरमिंट गौरनल बहादुरतिरहुति राखहिँ बहाल /

२

राधाकृष्ण चौधरी (मिथिलाक इतिहास) (विदेह पेटारमे उपलब्ध)

"१७७० क अकाल मिथिलाक इतिहासमे अद्वितीय छल आ मिथिलाक जनसंख्या घटिकेँ एक दम्म कम्म भऽ गेल छल। १८७३मे पुनः ७४-जकर विवरण हमरा फतुरी एकटा ओहने अकाल मिथिलामे भेल छल लाल कविक अकाली कवित्तसँ भेटइयै, अकाली कवित्त अप्रकाशित अछि। अकालकेँ दूर करबाक हेतु आ मजूरकेँ रोजी देबाक हेतु ताहि

काल रेलगाड़ीक योजना चलाओल गेल जकरा सम्बन्धमे फतुरीलाल लिखैत छथि-

'कम्पनी अजान जान कलनको बनाय शान।
पवन को छकाय मैदानमे धरायो है॥
छोड़त है अड़ादार बड़ा बीच धाय धाय।
सभेलोग हटाजात केताजात खड़ा है॥
तारकी अपारकार खबरि देत वार वार।
चेत गयो टिकसदार रेल की उवाई है॥
करत है अनोर शोर पीछे कत लगत छोर।
जोर की धमाक से मशीन की बड़ाई है॥
कम्पूसन पहरदार कोथी सब अजबदार।
कोइला भर करल कार धूआँसे उड़ायो है॥
बाजा एक बजन लाग हाथी अस।
पिकन लाग जैसा जो चढ़नदार वैसाधर पायो है॥
गंगाकेँ भरल धार उतरि गयो फतूर पार गाड़ीकी।
अजबकार कवित्त यह बनाया है॥ ' "

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३६९ पर टिप्पणी

नबोनारायण मिश्र

प्रिय कथाकार आदरणीय श्री अशोक जी क विशेषांक लेल शुभकामना! जे कार्य कोनो लोकप्रिय मैथिली पत्रिका नै कऽ सकल, से नीक कार्य विदेह ई पत्रिका कऽ सकल एतदर्थ ओहि टीम के सेहो बधाइ। जय मैथिली।

महेन्द्र

कथाकार अशोक पर केन्द्रित ई विशेषांक एकटा महत्वपूर्ण काज थिक जकर हम प्रशंसा करै छी, आ आशा करै छी जे एकर हार्ड कापी.समूज्य भेटि सकैत अछि। पुनः हार्दिक अभिनंदन !

डा धनाकर ठाकुर, प्रोफेसर मेडिसिन वाराणसी, ९८४३३७६८६१, ९४३०१४१७८८dhanakar@gmail.com

स्वकथित ओ आब प्रचलित कथाकार अशोक पर विशेषांकक सूचना एक चिन्हल द्वारा देखि पहिले त हुनकहि सर्वस्पर्शी भाव परिवर्तन लेल धन्यवाद देल जे ओ एक झांकेँ विशेषांकक पात्र बुझलन्हि, पेज खोललापर आनहुं अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व पर विशेषांकक जानकारी भेटि प्रसन्नता भेल। कथाकार अशोककेँ रचनाकार अशोकक रूपमे प्रस्तुत करक सफल प्रयासमे हुनक जानकारी भरल संक्षिप्त आत्मकथ्यसं काफी सूचना भेटल ओ लिखबाक मैथिली ढंग जे कासी कहैत छथि काशीकेँ जतय हम अपन जीवनकालक उत्तराखंडमे नियोजनक उत्कर्ष लेल प्रोफेसर मेडिसिन बनल, किछु मास पूर्वहिं अयलहुं अछि । कासीसं कटिहार होइत अशोकक पाटलिपुत्र हुनका एक बालकविसं कवि फेर कथाकार जीवनक अनुभव बना देलकैन्हि जकर अन्तिम औपन्यासिक दुखान्तिका हुनक पत्नीक आइसीयूमे सुदीर्घ संघर्षक बाद मृत्युकेँ जरूर समेटत, जकर आशा उषा किरणजी संग

भीमनाथ झाजी केने छथि, हमर एकमेव अनुरोध जे डाक्टरकेँ ओ बखसैत कारण डाक्टर एक निरीह प्राणी होइत अछि; हम एहि लेखनकेँ पढ़बाक कारणमात्र एक बेर फेर आइसीयू अपना नाम पर भर्ती भेल एक अधेड़ मधुमेहीकेँ देखय फेर एक बेर जायब यद्यपि कनीय रेजिडेंट डॉक्टरकेँ सभ निर्देश दय चूकल छी। घण्टा -डेढ़ घण्टामे सत्रह लेखकक उन्नैशटा हुनका पर लेख तीन परिचयात्मकक बाद यानी बाइस लेख पढ़ि लेब एक कठिन कार्य हम केलहूँ अछि किन्तु हमर यैह पाठकीय गति अछि आओर तत्क्षण लेखनीय जे दुर्गति सेहो करा सकैत अछि तथापि स्थालीपुलाक न्यायसं अवलोकित समग्र मूल्यांकन ई अछि जे अशोकक कथासंसार मिथिलाक गामक भूगोल ओ संसारक बीचक योजक अछि जे ओ एक ग्रामीण दृष्टियहिसं नहि राजधानीमे कार्यरत विभागीय उपक्रममे सेहो देखलाह, भोगलाह। हिनक चारि दशकमे कथासंख्या कम जनि जकर कारण हम बुझैत छी साहित्यिकीय प्रोत्साहन-पुरस्कार नहि भेटब मुख्य रहल। हमरा सेहो 'मातबर' पढ़ल अछि ओ ओकर समीक्षा सेहो कतहु लिखल होयत जाहिमे हुनक एक पात्र द्वारा अंग्रेजीक लम्बा कथनकेँ कृत्रिम बतौने छलियन्हि जखन कि कथाकार अशोकसं कथासमीक्षक हमरा नीक लगलाह,ओना ई बात अलग जे पटना कथारात्रिशेषमे हमर आधुनिक कथा 'ओ' पर किछु बाजयसं छिटकि गेलाह। हिनक कथासभ हम अति उत्कृष्ट त नहि मानैत छी किन्तु जखन बहुत सामान्यकेँ पुरस्कृत कयल गेल त अशोकजीकेँ बहुत पहिले सम्मानक पात्र बूझक छल। पहिले विशेषांकक सूचना देखने रहितहूँ त एहि विशेषांक लेल हम सेहो लिखने रहितहूँ। हम अशोकजीकेँ भद्रलोक बुझैत छी और सभ लेखक हुनका प्रति श्रद्धाभाव देखौलाह अछि। हस्तलिखित हिनक एक मित्र हमरहि जकां कोनहूँ अखनहूँ लिखैत छथि कोनो नहि से देखि प्रसन्नता भेल। अशोकजी मास्को रिटर्न यानी मार्क्सवादी विचारधाराक नहि देखाइत छथि एहि विशेषांकक बहुलांश लेखक द्वारा। हमरा सेहो ओ हरिमोहनी उच्चवर्णीय आधारभूमि पर उपजल एक कथाकार लागल छलाह जिनक अनेक अधुना प्रतिमान कारपोरेट जगतक आंग्लभाषाप्रेमी मानसिक दास, जिनका द्वारा सामाजिक समरसता वा उन्मेषक प्रयास भनहि कथाकार अशोक कयलन्हि ओ पलायनक विस्तृत आयामक एक अंशमात्र। महिला

लेखिकाद्वयमे कल्पना झा हुनक संयोगवश भेल अखबारी व्यंग्य लेखन पर सेहो प्रकाश दैत अछि जाहि पर हितनाथ झाक लेख केन्द्रित अछि । कल्पना झा संगहि 'पोखरिसभमे' आजादीक बाद घटल २४ लाखसं ६ लाख भेल संख्या लेल तड़ागोत्सव, कूपोत्सवक विकल्प अशोकक बतबैत अछि से नीक लागल। ओ वैवाहिक बलात्कारसं भेल गर्भ पर मौन छथि जे "स्वाधीन" कथामे आयल अछि किन्तु आभा झा एहि पर टिप्पणी करैत अशोकक पक्षक नारीवादी समर्थनमे किन्तु कि ई विवाहक संगहि बलात्कार नहि जे हम विवाह करब, काम सुखोपभोग करब किन्तु गर्भ धारण नहीं करब जे सामाजिक बदलाव नहि व्यवस्थाक संगहि बलात्कार भेल जे एक बाल-बच्चेदार लेखकक विशेषता नहि त्रुटि मानक चाही। दिलीप कुमार झाक लेख यथास्थितिवादी छनि जे ओ लिखलाह से सभ नीक आओर ई मैथिली समीक्षाक दयनीय अवस्था बतबैत अछि। अजीत कुमार झा डैडीगामक सभ कथा पर तेहनहि टिप्पणी केलाह अछि जखनकि एहि विशेषांकक एक लेखक प्रेमचन्दक संदर्भ देलाह अछि जे ककरहूं सभ कथा नीक नहि लिखाइत छनि। कुमार राहुल किछु हस्तक्षेप जरूर केलाह अछि। 'हड़बड़ीमे लिखायल' 'फार्मूलाबद्ध ' किन्तु की अशोक नव लीक द पयलाह अनुत्तरित रहि जाइत अछि। मार्क्सवादकें फ्रायडवादसं (वा डार्विनवादसं सेहो) विरोध कहां छैक? (हमर लिखित राजनीतिक सिद्धांत 'आध्यात्मिक मार्क्सवाद" क चर्चा एत अनावश्यक)। मित्र हेबाक नाते लालदेव कामतक अशोकक प्रशंसा ओ पृष्ठभूमि पर नीक विवरण, विशेषतः तानपूरा कथाक किन्तु ई समीक्षात्मक नहि। शिवशंकर श्रीनिवास व्यथित छथि जे अशोक शहरी कथाकार नहि ग्रामीण क्षेत्र पर सेहो लिखैत छथि आओर ओही सांसमे हुनक वैश्विक विवरणक? एहि भूमंडलीकरणक युगमे जहन मिथिला सेहो अछि प्रश्न जे ग्रामीण वा शहरी नहि अछि; एखन प्रश्न एकहि जे की बढ़ैत शहरीकरणमे गाम लोकक जीवनमे बांचत से धुरझार अंग्रेजीक प्रयोग करैत पात्र अशोककें लीकसं हंटल नहि बतबैत अछि। जगदीशचंद्र ठाकुर सेहो हमरहि आपत्ति बतबैत शिक्षामे मैथिली पर अशोककें मौन बतबैत छथि। अभिनव-अंकिता पात्र नामहि हुनक कथाकें कोनहूं शिवनाथ-गौरी सनहूं आधुनिक हरिमोहनी अशोककें कहां बनबैत अछि (हमरहूं कथाक कमली-रमियासन सन नहि)। नारायणजी अशोकजीकें

किरणप्रभासंमुक्त मानलाह अछि किन्तु ई उत्कर्ष तक नहि भेल भनहि अपकर्षहुं नहि। सहपाठी शैलेन्द्र अशोकक कलाकार पक्ष पर केन्द्रित छथि आओर लगैत अछि ओ कथाकार अशोकक मूल्यांकन नहि केलाह। शिवकुमार मिश्र सेहो अशोकजीक सांगठनिक सहयोग पर लिखलन्हि जे उत्तम किन्तु अशोकजीक सर्वोत्तम सहयोग कथा गोष्ठीमे हमरा जनैत रहल अछि। आशीष अनचिन्हार मैथिल महासभाइ दृष्टिदोषसं रहित अशोकजीकेँ नहि पबैत छथि परन्तु एहिमे अपन दृष्टिकोण रखबासं स्वयं सेहो मुक्त नहीं आओर ई बात नहि बिसरि जे समाजक सोचमे बदलावमे शताब्दी लगैत छैक दशक नहि आओर सामाजिक समरसता धैर्यक अपेक्षा करैत अछि तथापि हिनक अपेक्षा स्वागत योग्य। मुन्नाजी अशोकजीक साहित्यिक कार्यकर्ता निर्माण पर नीक प्रकाश देलन्हि अछि जकर अशोकजी वस्तुतः अधिकारी, सरकारी अधिकारी होइतहुं मंच-मला-माइकसं निस्पृह। श्रीधरम् अशोकजीकेँ गतिशील कथाकार स्थापित करय लेल विधवाक दुःख पर 'रांड' कथामे हूनक भावना रखैत छथि ओना 'स्वाधीन' कथाक पूर्वलिखित दृष्टिकोण रखबासं दूर छथि। इहो संकेत दैते छथि जे संभवतः अशोकजीक समीक्षाक स्तर हुनक कथालेखनसं ऊपर हो।

उषा किरण खान

बहुत बधाई! सामग्री सँ समृद्ध अंक बुझाइयै। विदेहक विशेषांक अशोक जी पर आबय बला रहय से बुझले छल तैं अजुका प्राती वैह भेल! कथाकार मे अशोक, व्यंग्यकथा मे बटुक भाई, उपन्यासकार मे साकेतानंद आ कवि मे महाप्रकाश हमर प्रिय रहलाह अछि। ई लोकनि विपुल नहिं लिखलनि मुदा ठोस बुझैलनि हमरा व्यक्तिगत रूप सँ। आर सब गोटे अपना अपना तरीका सँ प्रभावित केलाह अछि। शिवशंकर जी के कथाक लोकेल हमरा सन मिथिला कःनो मैन्स लैंड केर प्रायः जानकारी बढबैत अछि त अशोक जीक कथा मिथिला सँ बाहरक (काशी के) त्रासदीक ज्ञान दैत अछि। अशोक जीक स्वयं परिचय पढलौं आ तखन हुनक परिवेश जानि कथाक उत्स बुझबा मे आयल। अशोक जी हड़बडिया कथाकार नहिं छथि। तैं सटीक समीचीन कथा साधल लिखै

छथि तकर बड नीक विश्लेषण दिलीप कुमार झा केलन्हि अछि। आभा झा बड नीक विश्लेषण केलनि मुदा विस्तार नै देलीह। बूझि पडैत अछि आगाँ देतीह।

नारायण जी

मैथिलीमे कतेको हार्ड कापीक पत्रिका रहैत ई पत्रिकेक रूपमे किएक ने होअय कथाकार अशोकजीक विशेषांक द्वारा नोटिस लेबा लेल हमर हार्दिक बधाइ।

बैकुंठ झा

विशिष्ट साहित्यिक व्यक्तित्व पर विशेषांक निकालब महत्वपूर्ण काज। एहि वास्ते साधुवाद अहांके

अरविन्द ठाकुर

स्वागत ! अहि आयोजन लेल विदेह टीम केँ बहुत बहुत बधाई!

प्रफुल्ल कोलख्यान

बधाई आ शुभकामना। नीक लागल। बड़ नीक लागल

दिलीप कुमार झा

नीक प्रयास। अह्लादकारी अंक। बधाइ संपादक मंडलकेँ।

-
अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

२.१. प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

२.२. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक संक्षिप्त परिचय

२.३. प्रोमिशा मिश्रा- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' के व्यक्तित्व

२.४. भीमनाथ झा- लोकजीवनपर समेकित आलोक

२.५. बिजय कुमार मिश्र- रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक संग साक्षत्कार

२.६. साक्षत्कार- दिनेशचन्द्र गोपाल

२.७. अशोक-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' क उपन्यास 'घरमुँहा'

२.८. लालदेव कामत-डा० राम भरोस कापड़ि "भ्रमर" : एक व्यक्तित्व

२.९. अजय अनुरागी- मैथिली भाषाक साहित्यकार 'भ्रमर' हरेक बिधामे पुस्तक प्रकाशन

२.१०. अश्विनी कुमार आलोक-रामभरोस कापड़ि भ्रमर: भारत-नेपालक सांस्कृतिक सेतु

२.११. चंद्रेश-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' : विचार, संवेदना आ चेतना

२.१२.डा.राजेन्द्र विमल-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुहाँ'- प्रभाव आ प्रतिक्रिया

२.१३.डा.रामदयाल राकेश- पुस्तक जे हम पढल-एन्टी भाइरसक कथात्मक संसार

२.१४.दिनेश यादव-लोक मैथिली केर विभूति 'भ्रमर'

२.१५.चंद्रेश-विविधवर्णी आ बहुरंगी रचनाकार 'भ्रमर'

२.१६.अयोध्यानाथ चौधरी- "भ्रमर"क बहुआयामिक व्यक्तित्व

२.१७.अजित कुमार झा-घरमुहाँ: मधेशी आन्दोलन आ सामाजिक समरसताक दस्तावेज

२.१८.रमेश रज्जन-एकटा आर वसन्त : तात्कालीन समय आ समाजक प्रतिनिधि नाटक

२.१९.विनय भूषण-इजोतक आश जगबैत भ्रमरक गजल

२.२०.आशीष अनचिन्हार-कलंकित चान

२.२१.विनीत ठाकुर-बहुआयामी व्यक्तित्वक एकटा सुधर स्वरूप:रामभरोस कापड़ि भ्रमर

२.२२.डा. योगानन्द झा-भैया अएलै अपन सोराज: विहगंम दृष्टि

२.२३.गजेन्द्र ठाकुर- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर एकटा समग्र दृष्टि

२.२४.नित्यानन्द मण्डल-अपने रङ्गमे रङ्गाएल रामभरोस सर

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

विदेह द्वारा लेखकपर विशेषांक 'जीबैत मुदा उपेक्षित' शृंखला रूपमे कएल गेल छल 2015 सँ जकरा आब "विदेहक जीवित मैथिलकर्मि, संगीतकर्मि, साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मि-रंगमंच-निर्देशकपर विशेषांक शृंखला" नामसँ जानल जाइत अछि। दिसम्बर 2022 मे विदेह "रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक" प्रकाशित करबाक सार्वजनिक घोषणा केलक आ प्रस्तुत अछि ई विशेषांक। एहि सूचनाकेँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी-घोषणा। मैथिलकर्मिसँ हमर सभहक आशय जिनकर काज मिथिला-मैथिली-मैथिली लेल कोनो माध्यमसँ भेल हो। ओ संगठनकर्ता सेहो भऽ सकै छथि, आन भाषाक लेखक सेहो। तहिना संगीतकर्मि मने गीत-संगीतसँ जुड़ल लोक।

एहन शृंखलामे, एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह 9 टा विशेषांक प्रकाशित कऽ चुकल अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा चुनौतीपूर्ण काज छै। अनेक संकट केर सामना करए पड़ैत अछि लेख एकट्ठा करएमे। मुदा संगहि ईहो हम कहब जे संकटसँ बेसी हमरा लग समर्थन अछि। हँ, ई मानएमे हमरा कोनो दिक्कत नहि जे जतेक लेख केर उम्मेद केने रहैत छी हम ततेक नै आबैए, जतेक लोक लिखबाक लेल गछैत छथि से सभ अंत- अंत धरि आबि चुप्प भऽ जाइत छथि। आ एकर कारणो छै, किनको ई लागै छनि जे आनपर लिखब से हम अपने रचना किए ने लीखि लेब, किनको लग पोथिए नै रहै छनि, जखन कि हम सभ पाठककेँ विकल्प रूपमे पोथीक पी.डी.एफ फाइल सेहो देबाक लेल तैयार रहैत छी। कियो विदेहक समावेशी रूपसँ दुखी छथि, तँ किनको मित्रकेँ विदेहसँ दिक्कत छनि तँइ ओ नहि देता। बहुत लोक तँ विदेहमे एहू लेल रचना नै पठबैत छथि जे कहीं हमरा अकादमी वा धनी संस्था सभ ने देखि लिए। अकादमी आ संस्था सभ विदेहकेँ अनेरे अपन शत्रु मानि बैसल अछि आ पुरस्कारक इच्छा रखनिहार तँइ विदेहमे रचना नै

पठबै छथि। एकरो हम संकटे बुझी छियै जे सभ फेसबुकपर लंबा-लंबा लेख वा कमेंट टाइप कऽ लै छथि सेहो सभ विदेह लेल हाथसँ लिखल पठाबैत छथि। जे सभ कहियो काल फेसबुकपर टाइप कऽ लीखै छथि तिनकर आलेख हम सभ टाइप करिते छी। जिनकर रचना टाइप करैत छी ताहिमे स्वतः रूपसँ टाइप केनिहारक वर्तनी आबि जाइत छै। खएर पहिने कहलहुँ जे संकटसँ बेसी समर्थन अछि तँइ आइ पहिलसँ लऽ कऽ नवम विशेषांक धरि पहुँचलहुँ हम। 2015 सँ लऽ कऽ 2023 केर मध्य धरि 9 टा विशेषांक प्रकाशित भेल मने बर्खमे एकटा। निश्चिते समर्थन बेसी भेटल हमरा। जखन कि विदेहक ई 9 विशेषांक केर अलावे आनो विषयपर विशेषांक प्रकाशित भेल अछि। एकर अतिरिक्त ईहो बात संतोषदायक अछि जे विदेहक हरेक विशेषांक अभिनंदनग्रंथ हेबासँ बाँचि गेल अछि। मुख्यधारा जकाँ विदेहकेँ अभिनंदनग्रंथ नहि चाही। अभिनंदनग्रंथ अहू दुआरे नै चाही जे ओहिसँ लेखक वा जिनकापर निकालल गेल छनि तिनकामे सुधारक गुंजाइश खत्म भऽ जाइत छै। तँइ विदेहक विशेषांकमे आलोचना-प्रसंशा सभ भेटत।

एहन नै छै जे रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीपर लिखल नै गेलै मुदा ओ सभ एकट्ठा नै भऽ सकल छै तँइ ओकर प्रभाव हेड़ा गेल छै। एहि संदर्भमे हम कहि सकै छी जे विदेहक ई प्रस्तुत विशेषांक एहन पहिल प्रयास अछि जाहिमे ई बुझबाक प्रयास कएल अछि जे रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक रचना केहन छनि। ई अलग बात जे हम सभ कतेक सफल वा असफल भेलहुँ से पाठक कहता। एहि विशेषांक केर शुरूआत विदेहक आने विशेषांक जकाँ अछि। संगे-संग ई क्रम ने तँ उग्रक वरिष्ठता केर पालन करैए आ ने रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एतेक धेआन जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होइन आ से विश्वास अछि जे रसभंग नै हेतनि।

पाठक जखन एहि विशेषांककेँ पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी ओ मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से सोझे-सोझ हमर सभहक गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई धेआन रखबाक बात जे विदेह शुरुएसँ हरेक वर्तनी बला लेखककेँ स्वीकार करैत एलैए।

तँड मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बादो बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमरे सभहक गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ओहो सभ कोनो विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बसिये रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा सोचियौ जे 72-80 पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिका होइत छै ताहिमे लगभग आधा सामग्री साभार रहैत छनि, तेसर भागमे लेखक केर किछु रचना रहैत छनि आ चारिम भागमे किछु नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीपर बेसी जोर दैत छियै। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइत रहै। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजककेँ कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करहे पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्राक हो कि विचारधारक हो कि सामग्रीक हो। हमरा लोकनि वर्तनीक स्तरपर समझौता कऽ रहल छी मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद दोबारा नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा फेर पाइ लागि जेतै) तँड ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इंटरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इंटरनेटसँ प्रिंट हेबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा सामग्रिए बसिया रहत तँ सही वर्तनी रहितो नव अध्याय नै खुजि सकत तँड हमरा लोकनि वर्तनी बला मुद्दापर समझौता केलहुँ। हमरा लोकनि कएलनि, कयलनि ओ केलनि तीनू शुद्ध मानैत छी, एतेक शुद्ध मानैत छी एकै रचनामे तीनू रूप भेटि जाएत। आन शब्दक लेल एहने बूझू।

भ्रमरजी नेपालक मैथिलीकेँ प्रतिनिधित्व करै छथि तँ आलेख नेपाल दिससँ सेहो आएल अछि तँड भाषा संबंधी किछु बात देखल जाए जे कि मात्र भारतीय पाठक लेल अछि-

१) भारतीय पाठक कोनो लेखक लेल जेहन आदरसूचक शब्दक प्रयोग देखैत-पढ़ैत एलाह अछि से नेपालक आलेखमे नहि भेटैत आ नेपालक मैथिली लेल ई सामान्य बात भेलै।

२) भारतीय पाठकसभकेँ किछु शब्दक अर्थ नहि लगतनि आ एहि लेल हुनका विदेहपर उपल्बध नेपालीय मैथिली मैथिली साहित्यकेँ पढ़ए पड़तनि।

३) फान्टकेँ बदलबामे सेहो बहुत रास दिक्कत भेल छै जाहिपर हम सभ काज कऽ रहल छी।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आने विशेषांक जकाँ एकरा पढ़ताह आ पढ़ि एकर नीक-बेजाएपर अपन सुझाव देताह। विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक केर पोथी रूप "स्वतंत्रचेता" केर नामसँ प्रकाशित भेल उम्मेद जे भविष्यमे रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीपर केंद्रित एहि विशेषांक केर पोथी रूप सेहो आएत।

विदेह द्वारा विशेषांक शृखंलामे प्रकाशित भेल आन विशेषांक सभहक लिस्ट एना अछि एहिठाम जे अंकक लिस्ट देल गेल अछि ताहि अंकपर)
-(क्लिक करबै तँ ओ अंक खुजि जाएत

१) अरविन्द ठाकुर विशेषांक ०१ नवम्बर २०१५ अंक १८९

ई विशेषांक २०२० मे पोथी रूपमे सेहो आयल अछि। लिंक अछि:

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप]

२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक ०१ दिसम्बर २०१५ अंक १९१

३) रामलोचन ठाकुर विशेषांक ०१ अप्रैल २०२१ अंक ३१९

४) राजनन्दन लाल दास विशेषांक ०१ नवम्बर २०२१ अंक ३३३

५) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक १५ जून २०२२ अंक ३४८

६) केदारनाथ चौधरी विशेषांक १५ अगस्त २०२२ अंक ३५२

७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक ०१ नवम्बर २०२२ अंक ३५७

८) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक १५ नवम्बर २०२२ अंक ३५८

९) अशोक विशेषांक ०१ मई २०२३ अंक ३६९

ई तँ भेल जे काज हम सभ कऽ सकलहुँ तकर विवरण मुदा किछु एहनो घोषणा छै जे कि हम सभ नै कऽ सकलहुँ जेना २०१६ मे हम सभ परमेश्वर कापड़ि, कमला चौधरी आ वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक केर घोषणा कइयो कऽ नहि प्रकाशित कऽ सकलहुँ। पाठक एहि घोषणाकेँ एहि लिंकपर देखि सकै छथि- सूचना

बादमे विदेहक "वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक" (जे कि प्रकाशित नै भऽ सकल) लेल वीरेन्द्र मल्लिक जीक साक्षात्कार जे नबोनारायण

मिश्रजी से विदेहक ३३७म अंकमे प्रकाशित भेल पाठक एकरा एहि लिंकपर पढ़ि सकै छथि- १ जनवरी २०२२ अंक ३३७

← विदेहक परमेश्वर कापड़ि, कम...
m.facebook.com

← विदेहक परमेश्वर कापड़ि, कमला चौधरी आ ...



Ashish Anchinhar

15 June 2016 at 21:21 · 🌐

विदेहक परमेश्वर कापड़ि, कमला चौधरी आ वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक केर घोषणा

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह 2015 मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा 60-70 वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर 40-50 सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल" जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक दू टा अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि आ वीरेन्द्र मल्लिकजीक उपर रहत संगे-संग भोटिंगमे दोसर नं पर आएल कमला चौधरीजीपर हमरा सभ सेहो निकालब । हमर सबहक प्रयास रहत जे ई सभ विशेषांक जनवरी ओ फरवरी 2017 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना (आलोचना, समीक्षा, समालोचना, संसमरण आदि) 31 दिसम्बर 1016 धरि ggajendra@videha.com पर पठा दी।



अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक संक्षिप्त परिचय राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक संक्षिप्त परिचय

एहिठाम प्रस्तुत अछि रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक संक्षिप्त परिचय। एहि परिचयक अधिकांश तथ्य पहिनेसँ सार्वजनिक अछि। अधिकांश फोटो भ्रमरजीसँ प्राप्त भेल अछि। नेपालमे विक्रमी संवत चलैत छै, जइठाम ईनै लिखल छै ., से विक्रम संवत बर्ख अछि आ ओइ लेल मात्र अंक लिखल छै। तँइ जइ ठाम मात्र अंक छै से संवत बर्ख भेल आ ताहिमेसँ 57 घटा देने अंग्रेजी बर्ख ई. आबि जाएत। उदाहरण लेल भ्रमरजीक जन्म संवत 2008 मे छनि जाहिमेसँ 57 घटेलापर 1951 अबैत अछि, अर्थात भ्रमरजीक अंग्रेजी जन्म बर्ख 1951 ई. भेल। एनाहिते पोथी प्रकाशन वर्षकेँ सेहो बदलि सकैत छी।



नाम- रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

माता : दुखनी देवी

पिता : राम गुलाम कापड़ि

स्थान : बघचौड़ा, जिला- धनुषा, जनकपुर अंचल, गाबिस बघचौड़ा, वार्ड नं.-1 (नेपाल)

जन्म तिथि : 2008 साल, साओन, 22 गते (स्कूलक सर्टिफिकेटमे 5 मइ 1951)

शिक्षा : त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम.ए., पी.एच.डी. (मानद)।

वृत्ति: पत्रकारिता, भाषा, साहित्यक सेवा

नव जिम्मेबारी: अध्यक्ष:मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठान, मधेश प्रदेश, जनकपुरधाम, धनुषा, नेपाल

ईमेल आइडी: bhramar.2010@gmail.com
, मो.नं. 9854020889.9807677001

प्रकाशित कृति मौलिक: (एखन धरि भ्रमरजीक जतेक मौलिक पोथी प्रकाशित भेलनि ताहिमेसँ अधिकांश विदेह पोथी डाउनलोडपर राखल गेल अछि आ एहिठाम जे पोथीक लिस्ट देल गेल अछि ताहिमे पोथीक नामपर क्लिक करबै तँ ओ पोथी खुजि जाएत)-

काव्य:

- 1) बन्न कोठरी औनाइत धुआ कविता संग्रह: 2029
- 2) नहि, आब नहि दीर्घ कविता 2036
- 3) मोमक पघलैत अधर गीत, गजल
- 4) अप्पन अनचिन्हार कविता संग्रह: 1990 ई.
- 5) भयो अब भया नेपाली अनुवाद बस अब नहीं हिन्दी अनुवाद
- 6) अन्हरियाक चान गजल संग्रह 2070

7) युद्धभूमिक एसगर याद्वर कविता संग्रह, 2017 ई.

कथा संग्रह:

- 1) तोरा संगे जयबौ रे कुजबा (1987 ई.)
- 2) हुगली ऊपर बहैत गंगा 2065
- 3) एण्टीभायरस कथा संग्रह 2076, 2019 ई

उपन्यास:

- 1) घरमुहाँ 2069

नाटक:

- 1) रानी चन्द्रवती : 2045
- 2) एकटा आओर वसन्त : 2052
- 3) महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक : 2054
- 4) भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरू नेपाली अनुवाद 2064
- 5) भैया अएलै अपन सोराज नाटक 2067
- 6) एकटा आओर वसन्त एवं अन्य नाटक संग्रह 2069, साझा प्रकाशन, नेपाल
- 7) सूलीपर इजोत एवं अन्य नाटक, नाटक संग्रह 2072

यात्रा संस्मरण:

- 1) चीन जे हम देखल 2070

2) सीमामे आर-पार 2073

शोध आलेख संग्रह:

- 1) जनकपुरधाम र यास क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू : 2056 साल
- 2) राजकमलक कथा साहित्यमे नारी : 2064 साल
- 3) लोकनाट्य : जट-जटिन : 2064 :
- 4) Cultural heritage of Janakpur 2062
- 5) मैथिली लोक संस्कृति आलेख संग्रह 2066
- 6) तराईको फांट देखि हिमालको कांख सम्म आलेख संग्रह, प्रकाशक: साझा प्रकाशन, 2067
- 7) मिथिलाक सपूत : राजा सलहेस, 2075, प्र. भोर
- 8) मैथिल लोक संस्कृति : विविध आयाम नेपाली आलेख संग्रह 2075, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, नेपाल

विविध:

- 1) आजका धनुषा : 2039, जनकपुर लोकचित्र : 2046
- 2) समयको अन्तराल पछ्याउदै आलेख संग्रह, 2066
- 3) ठेकान पर (विचार संग्रह)
- 4) समय-सन्दर्भ निबन्ध संग्रह 2068
- 5) अहाँ जे कहलहुँ, अन्तरवाता संग्रह 2071
- 6) कोरोनाक संत्रासमे ओझरायल जिनगी (लकडाउन डायरी) (2020

ई)

सम्पादन:

- 1) मैथिली पद्यसंग्रह : नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान : 2051
- 2) लाबाक धान कविता संग्रह 2051
- 3) त्रिशूली स्व. माथुर द्वारा लिखित खण्डकाव्य 2049
- 4) नेपालक मैथिली पत्रकारिता: 2044
- 5) मैथिली लाकनृत्य: भाव भंगिमा एवं स्वरूप नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान 2061
- 6) अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल: 2065
- 7) हम और तुम हिन्दी कविता संग्रह 2066
- 8) मैथिली नाटक-संग्रह नाटक संग्रह 2067
- 9) महाकवि विद्यापति आ नेपाल निबन्ध संग्रह साझा प्रकाशन, काठमाण्डू, नेपाल, 2068
- 10) मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी प्रतिवेदन, 2069
- 11) लोकनायक सलहेस निबन्ध संग्रह 2069
- 12) लोकनायक सलहेस, द्वितीय खण्ड निबन्ध संग्रह 2070
- 13) लोकगाथा नायक दीनाभद्री-निबन्ध संग्रह 2070
- 14) अबधी संस्कृति विविध आयाम निबन्ध संग्रह, 2070
- 14) सोन्हगर गन्धक अन्वेषी डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', 2073

प्रधान सम्पादक : गामघर साप्ताहिक मैथिली; आँजुर मैथिली
द्वैमासिक

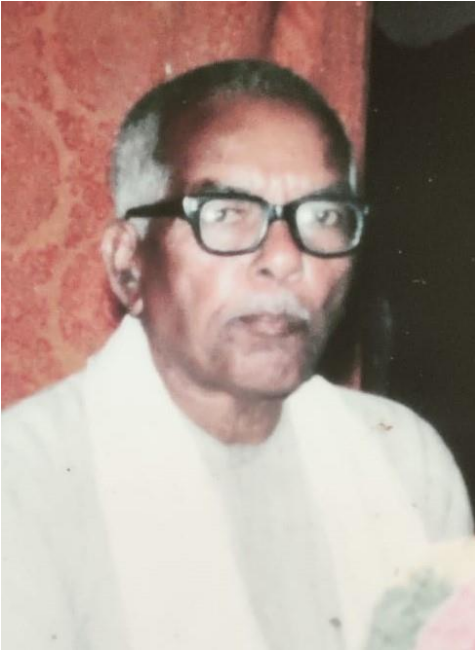
सम्मान:

- 1) नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान द्वारा प्रदत्त प्रथम मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार द्वारा सम्मानित : 2052
- 2) विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा मिथिला विभूति सम्मान, 22 दिसम्बर, 1996 ई.
- 3) शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा शेखर सम्मान, 3 नवम्बर, 2007 ई.
- 4) मैथिली साहित्य परिषद्, जनकपुर द्वारा 'वैदेही प्रतिभा पुरस्कार',
- 5) अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्बई द्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मान, 22 दिसम्बर, 2006 ई.
- 6) मधुरिमा नेपाल द्वारा 'मधुरिमा सम्मान',
- 7) चेतना समिति, पटना द्वारा यात्री चेतना पुरस्कार 2011 ई.
- 8) साझा प्रकाशन द्वारा 'साझा लाक संस्कृति पुरस्कार 2068
- 9) नेपाल विद्यापति भाषा, साहित्य पुरस्कार 2069
- 10) रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत द्वारा मिथिला विभूति सम्मान 2069
- 11) मैथिल समाज, रहिका द्वारा सम्मानित
मधुबनी, बिहार 8, अप्रिल 2018 ई.
- 12) केशवलाल वाखं सिरपा कथा
पुरस्कार 2070 जेठ 21 गते, घरमुहाँ उपन्यासक लेल

13) गंकी धुस्वां बसुन्धरा पुरस्कार प्राप्त 2071 आदि दर्जनो सम्मान, पुरस्कार प्राप्त।

पत्रकारिता: 2027-28 सं बेदेही साप्ताहिक, जनकपुरधामसं पत्रकारितामे प्रवेश। तकराबाद कान्तिपुर, गारखापत्र, नागरिक, अन्नपूर्णा पार्सट दैनिकसभमे, अनलाइन सभमे, साहित्यिक पत्रिका मधुपर्क, गरिमा, परिवार, शिक्षक रचना लगायत अनेकहु पत्र-पत्रिकामे लेखन।

विशेष: पूर्व अध्यक्ष: साझा प्रकाशन, ललितपुर, पूर्व सदस्य, प्राज्ञ परिषद, नेपाल, प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी।



चित्र 1-रामगुलाम कापडि (भ्रमरजीक पिता)



चित्र 2-दुखनी देवी (भ्रमरजीक माता)



चित्र 3-भ्रमरजी युवावस्थामे



चित्र 4-भ्रमरजी अपन पत्नी दलतीया देवीक संग



चित्र 5-बामासँ दहिना (पहिने पुरुष आ तकर बाद महिलाक विवरण)- भ्रमरजी, हुनकर पत्नी, सातम जेठ बालक राम नारायण कपड़ि, आठम छोटका बालक संदीप कुमार आ नवम माझिल बालक प्रदीप कुमार, सबसँ अंतिम जमाय मनोज चौधरी। भ्रमरजीक छोटकी पुतौह अनिशा, पोता विवेक, जेठका बालकक पत्नी निर्मला देवी, तकराबाद भ्रमरजीक बेटी प्रमिला कुमारी आ अंतमे मझिली पुतहु अंशु कुमारी निच्चामे पोती आदिती, पोता अंकित आ कोरामे पोती साक्षी।



चित्र 6-भ्रमरजीक एकटा आर पारिवारिक चित्र (नाम उपरमे देखि चीन्हल जा सकैए)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.३.प्रोमिशा मिश्रा- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' के व्यक्तित्व



प्रोमिशा मिश्रा,शोधार्थी

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' के व्यक्तित्व

श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' पूर्व अध्यक्ष: साझा प्रकाशन,पूर्व परिषद सदस्य, नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठान,हाल अध्यक्ष: मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठान, मधेश प्रदेश, वरिष्ठ साहित्यकार तथा पत्रकारके जन्म धनुषा जिल्लाक साविक बघचौडा गाउँ पालिका ४ सम्प्रति हंसपुर नगरपालिका २ बघचौडा पूर्वटोलमे एकगोट सम्पन्न परिवारमे भेल छलनि। पिता स्वर्गीय रामगुलाम कापड़ि आ माय स्वर्गीया दुखनी देवीक छोट सन्तानक रुपमे जन्म ग्रहण कएने भ्रमरके एकगोट भैया , एकगोट दिदी आ एक गोट बहिनी छनि। दिदीके ८६,८७ बर्षक लकझकमे ,किछुमासपूर्व देहावसान भ गेलनि। पिता रामगुलाम कापड़ि बघचौडामे मात्र नहि परोपट्टामे प्रतिष्ठित समाजसेवीक रुपमे चिन्हल जाईत छलाह। ओ तत्कालीन बघचौडा गाउँ पञ्चायतके लगातार तीन बेर प्रधानपञ्च निर्वाचित भेल छलाह। पचासो

विगहा खेत, फूलवारी, पोखरी, ईनार सहित बघचौरा आ जनकपुरधाममे सुविधा सम्पन्न पक्की घर छलनि। हुनका गामवासीसभ आदरसँ ' अधिकारी ' मालिक कहि क सम्बोधन करैत छलनि।

भ्रमरके बाल्यकाल

धनुषा जिल्लाक बघचौड़ा गाममे विक्रम शम्भत जन्म २००८ साल श्रावणमे जन्म ग्रहण कएने भ्रमरके प्रारम्भिक शिक्षा गामेमे भेल छलनि। गामेमे एकटा सम्पन्न गीरहत कन्हाई साहुक दलानपर खुजल मधुकरही निवासी गनेशलाल कर्णक चटिसारमे हुनका दुनू भाईकेजबरदस्ती पठाओल गेल रहन्हि। आनाकानी कएलापर नोकर बहादुरके कहि पाठशालामे गेला त मुदा कोनो बहन्ने जल्दीए आबि गेल। ई क्रम किछु दिन चललै। एकर कारण रहैक मायक दुलार, खान पीन, खेलधूप। आ जखन मन लाग लगलैक त पाछा घूमि क नहि देखलक। गुरुजीबला खाँति, बिटगरहा आदि जे भुइयाँसँ होइत पाटी दुआइत धरि चलल तकरा बाद पंचायतेके यादब मिडिल इस्कूलमे नाम लिखाओल गेल आ तखन ओतहि पढैत तीन क्लासक बाद आगा पढबाक लेल जनकपुरक सरस्वती हाई स्कूलमे नाम लिखाओल गेलनि। तकरा बाद ओत्तहिसँ मैटिक आ रारा बहुमुखी कैम्पससँ मैथिली बिषयमे प्रथम श्रेणीमे एमए कएल। बाल्यकालहिसँ पढय लिखयमे होसिर तथा वाकपटु भेलाक कारणे हुनका सभगोटे वेस प्रेम करैत छलनि। आर्थिक, सामाजिक आ शैक्षिक रुपसँ हुनक परिवार समाजमे प्रतिष्ठित छल तँ हुनक बाल्यकाल सुखमय छलनि। अध्ययनके क्रममे जनकपुर आएलाह आ अपन स्टेशनसँ उत्तर अवस्थित पुस्तैनी घरमे रहि अध्ययन करए लगलाह। घरसँ खाद्य समग्री अबैत छलनि आ भानस बनेवालेल भनसिया सेहो राखल गेल छलनि।

भ्रमरके शिक्षा

सबसँ पहिने गामक चटिसारमे अ आ इ एसे ल खाँति बिटगरहा सब सिखलनि, पढलनि। तकराबाद पंचायतेके बेल्ही मिडिल इस्कूलमे तीन बक्षा धरि पढलाह। तकराबाद गाममे आएल एकटा गामविकास

अधिकारीक उत्प्रेरणासं बाबूजी हिनका दुनू भाईके जनकपुर सरस्वती हाई स्कूलमे नाम लिखा देलकनि। जनकपुरमे अपने पक्की मकान छलनि। एकटा भनसियाक संग ओ जनकपुरके आवासपर रहि सरस्वती माध्यमिक विद्यालयसँ एसएलसीधरिक शिक्षा प्राप्त कएलनि आ प्रवीणता प्रमाणपत्र (आई .ए.), स्नातक (बी.ए.) आ स्नातकोत्तर (एम.ए.) धरिक अध्ययन रामस्वरूप रामसागर बहुमुखि क्याम्पस , जनकपुरधामसँ प्राप्त कएलनि। डा.धीरेन्द्रक सद्प्रयाससँ राराब क्याम्पसमे सुरु भेल मैथिली स्नातकोत्तर विषयक ओ पहिल बैचक छात्र छलाह आ प्रथम श्रेणीमे स्नातकोत्तर उत्तीर्ण कएने छलाह। स्वर्गीय रामगुलाम कापड़ि आ स्वर्गीय दुखनी देवीक तेसर सन्तानक रुपमे जन्मग्रहण कएने भ्रमरके भैयाक नाम छनि सुकुमार कापड़ि , दिदीक छलनि दाया देवी (जनिक हालेमे स्वर्गवास भ गेलनि) आ बहिनके सोनावती देवी। भ्रमरके विवाह किसोरावस्थामे धनुषा जिल्लाक भगवानपटी गाममे दलतीया देवीसंग भेल छनि। हुनका तीनगोट पूत्र आ दूगोट पुत्री छनि। जेठ पुत्र रामनारायण कापड़ि जनकपुर एक्सप्रेसके सम्पादक छथि आ राजनीतिमे सेहो संलग्नछथि तँ माझिल प्रदीप कापड़ि नेपाल खाद्य संस्थानमे कार्यरत छथि। छोट संदीप कापड़ि उच्च कोटिक कम्प्युटरक ग्राफिक एक्सपर्ट छथि आ अपने व्यावसाय करैत छथि। दुनू बेटीक विवाह भ' गेल छनि।

साहित्यमे अएबाक प्रेरणा

सरस्वती हाई स्कूलमे अध्ययनरत रहल समय हुनका सम्पर्क भेलनि डा.धीरेश्वर झा ' धीरेन्द्र ' संग। जे हुनक घरके परोसेमे भाडाल' रहैत छलाह आ राराब क्याम्पसमे अध्यापन करैत छलाह। डा.धीरेन्द्रक सम्पर्कमे अएलाक पश्चात् हुनक आकर्षण साहित्यदिसि भेलनि। यद्यपि पत्र पत्रिका , साहित्यिक उपन्यास तथा कथा कविताआदि पढवाक रुचिमे हुनकामे पहिनहिसँ छलनि। ओ हिन्दीक पुस्तक,पत्र पत्रिका पढबामे रुचि रखैत छलाह। पछाति डा. धीरेन्द्रक प्रेरणासँ मैथिलीमे लिखय लगलाह। हुनक पहिल रचना वालकथा अछि इमानदार वालक ई कथा तत्कालीन समयमे प्रतिष्ठित मैथिली

साप्ताहिक मिथिला मिहिरक १९६४ ई. मे प्रकाशित भेल छल। तहिया हुनक उमेर १२ वर्षमात्र छल। तहिएसँ ओ अपन नामक पाछाँ ' भ्रमर ' लिखब सुरु कएलनि।

भ्रमरके व्यवसायिक जीवन

त्रिभुवन विश्वविद्यालयक आंगिक क्याम्पसके रुपमे रहल रामस्वरुप रामसागर बहुमुखि क्याम्पस, जनकपुरसँ मैथिली विषयमे प्रथम श्रेणीमे स्नातकोत्तर (एम ए) कएने छलाह भ्रमर। मुदा ओ सरकारी सेवामे नहि गेलाह। त्रि.वि.वि. मैथिली शिक्षण विभागक तत्कालीन अध्यक्ष डा. धीरेश्वर झा ' धीरेन्द्र ' हुनका बेर बेर प्राध्यापन पेशामे अएबाक वास्ते आग्रह कएने छलाह मुदा ओ विश्वविद्यालय सेवामे जएबाक अपेक्षा पत्रकारिता, स्वतन्त्र लेखन, अध्ययन, अनुसंधान आ यात्रामे रमल रहबाक निर्णय कएलनि। आर्थिक रुपसँ सवल तथा व्यावहारसँ स्वच्छन्द विचारक भेलाक कारणे ओ स्वतन्त्र पेसा अर्थात् पत्रकारिता आ स्वतन्त्र लेखन विधा चुनलनि।

भ्रमर २०२६०२७ सालमे वैदेही साप्ताहिकके कार्यालय प्रतिनिधिक रुपमे पत्रकारिता प्रारम्भ कएने छलाह। २०४६ सालक राजनीतिक परिवर्तन पश्चात् देशमे बहुदलीय प्रजातन्त्र स्थापना भेल। निजी क्षेत्रसँ सेहो ब्रोडसिट पत्र पत्रिकासभक प्रकाशन सुरु भेल। राजधानीसँ प्रकाशित एहि पत्र पत्रिकामध्य कान्तिपुर पब्लिकेशनके कान्तिपुर दैनिक सेहो छल। भ्रमर २०४९ सालसँ कान्तिपुरके जनकपुर संवाददाताक रुपमे काम कएलनि। कान्तिपुर प्रकाशन भेलाक शुरुक ५ वर्षधरि ओ एहि पत्रिकाक जनकपुर समाचारदाताक रूपमे काज कएलनि ।

कान्तिपुर राष्ट्रिय दैनिकसँ पहिनहि ओ मैथिलीक पत्रकारिताक क्षेत्रमे स्थापित भ चुकल छलाह। प्रकाशक सम्पादकके रुपमे हुनक पहिल पत्रिका मैथिलीमे छल जकर नाम छल अर्चना (२०३० साल)। ई पत्रिका दश बर्षसं उपर चलल। मैथिली संसारमे मिहिर बाहेकक पत्र कम्मे छल वा नगण्य छल। एहनमे अर्चना अपन पातरो कायामे नेपाल भारतक खनेको रचनाकारके आगा लएबामे महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह

कएलक। डॉ. भीमनाथक शब्दमे एकर सम्पादक श्री भ्रमरक स्वच्छ दृष्टिक कारणे, अपन श्रीणो कलेबरमे ई महत्वपूर्ण भ गेल अछि। अर्चना ओहि समयक प्रकाशन छल जहिया नेपाली बाहेकके पत्रके दर्ता नहि कएल जाइत छलक। तखन मैथिली सामयिक संकलन कहि एकर प्रकाशन भेल छल। अनेको बाधा ब्यबधानक बादो अर्चना चौदह पन्द्रह बर्ष निकलल। नेपालक पहिल आ एखन धरि एक मात्र मैथिली साहित्यक इतिहासकार डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन अपन नेपालक मैथिली पत्रकारिता: एकटा सर्वेक्षण शिर्षक आलेखमे लिखै छथि अर्चना (२०३०, फागुन)क मुख्य एद्येश्य नेपालमे हेराएल, भोतिआएल, अनचिन्हार मुदा प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार लोकनिक स्वस्थ साहित्यके मैथिली संसारक आगां राखब छलैक। और ओ विगत प्रकाशन धरि अपन घोषित उद्येश्यक सभ अनुरूप चलि रहल अछि। हमरा लग अर्चनाक बारह बर्षक जीवन यात्राक (२०३०-२०४५) उपलब्धि ६२टा अंक प्रत्यक्ष अछि। अर्चना भ्रमरक एकल प्रयास आ साहसिक प्रयासे चलि रहल अछि। ओ अर्चनाक माध्यमे नेपालक मैथिली चेथना, भाषायी सामर्थ्य एवं रचनाधर्मिताके यथासमय प्रस्तुत करबामे सफल भेल छथि। साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त मैथिली पत्रकारिताक इतिहास पुस्तकमे श्री अमरजी लिखने छथि अर्चना नेपालमे एकमात्र एहन पत्रिका अछि जे मातृभाषाक अर्चनामे अपन सम्पूर्ण शक्ति समर्पित कएने अछि। अर्चनाक एखन धरिक योगदान उल्लेखनीय अछि। ३

तकराबाद नेपाली मासिक अंजुली आ मैथिली द्वैमासिक आंजुर। विसं २०३९ सालसँ हुनक सम्पादन आ प्रकाशनमे सुरु भेल छल गामघर मैथिली साप्ताहिक जे आईधरि निरन्तर प्रकाशित होइत आबि रहल अछि। यी देशक पहिल मैथिली समाचार पत्र अछि जे करीव ३९ वर्षसँ निरन्तर प्रकाशित भ रहल अछि। एहि साप्ताहिक मार्फत मैथिली आ नेपालीक अनेकौ साहित्यकार आ पत्रकारक जन्म भेल अछि। स्थानीय नेपाली दैनिकसभ सुप्रभात (२०५४) के प्रारम्भिक सम्पादक सेहो ओएह

छलाह। सम्प्रति जनकपुर एक्सप्रेस (२०५५) के सेहो प्रकाशन करैत छथि।

पत्रकारिता, स्वतन्त्र लेखनसंगहि ओ नेपाल सरकारक साझा प्रकाशनके अध्यक्षक रुपमे सेहो काज कएने छथि। साझा प्रकाशनके इतिहासमे ओ पहिल मधेसी अध्यक्ष भेलाह। नेपाली भाषा आ नेपाली कर्मचारीसभक बोलबाला रहल साझा प्रकाशनके ओ अपन एक वर्षक कार्यकालमे कायापलट क देने छलाह। पहिल बेर नेपाली बाहेकके दोसर भाषा मैथिलीक पुस्तक सेहो हुनके कार्यकालमे प्रकाशन भेल छल। नेपाली साहित्यकारसभक चित्रक संग मैथिलीक महाकवि विद्यापतिक चित्र सेहो प्रकाशन करौलनि। साझा प्रकाशनके अध्यक्ष पदपर आसीन रहिते काल हुनका नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ परिषद सदस्य नियुक्त कएल गेलनि। तकराबाद ओ साझा प्रकाशनसँ 'राजिनामा द' प्राज्ञपरिषद सदस्यक रुपमे चारिवर्ष काज कएने छलाह। प्राज्ञके रुपमे ओ मैथिली लोक संस्कृतिउपर उल्लेख्य काज कएलनि आ करबौलनि। हुनक सकृयतामे सलहेस, दीनाभद्री, जटजटिन सदृश्यक लोकगाथा, लोकनाट्यसभक विषयमे अध्ययन अनुसंधान, लेखन आ प्रकाशन भेल। जे लोक साहित्यक अनुसन्धाताक हेतु सन्दर्भ सामग्रीक रुपमे नेपाल भारतमे मान्य अछि।

भ्रमर भाषा, साहित्य, संस्कृतिसंगहि साहित्यक प्रायः सम्पूर्ण विधामे धुरझार लिखैत आएल छथि। एकरा अतिरीक्त ओ उच्चकोटीक फोटोग्राफर आ चित्रकार सेहो छथि। एखनधरि भ्रमरद्वारा लिखल गेल मैथिली, नेपाली, हिन्दी आ अंग्रेजी भाषाक करीव ५० गोट पुस्तक प्रकाशित भ चुकल अछि। हुनक टटका पुस्तक अछि मिथिलाक लोक जीवनः लोक सन्दर्भ जकर बिमोचन जनकपुरमे भेल जाहिमे पटनासं डा. रमानन्द झा रमण, कोलकातासं अशोकजीजी, दरभंगासं डा. भीमनाथ झा, चन्द्रेश लगागत काठमाण्डूसं नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक कुलपति गंगा प्रसाद उपेती आएल छलाह। हुनक लेखनी एखनहुँ चलिए रहल छनि।

मानसम्मान

भ्रमर मैथिलीसंगहि नेपाली साहित्यक सेहो प्रसिद्ध साहित्यकार छथि। साहित्यक प्राय ः सम्पूर्ण विधामे ओ निरन्तर सृजनारत्त छथि। एहि कारणे ओ मैथिली आ नेपाली दुनू साहित्यदिसक पुरस्कार आ सम्मान प्राप्त कएने छथि। नेपाल राजकीय पज्ञाप्रतिष्ठानद्वारा प्रदत्त प्रथम 'मायादेवी प्रज्ञापुरस्कार २०५२ (रु.५००००।)सँ ओ पुरस्कृत छथि। तहिना विद्यापति सेवा संस्थान, दरभङ्गाद्वारा 'मिथिला विभूति' सम्मान, शेखर प्रकाशन, पटनाद्वारा 'शेखर सम्मान', नेपाल मैथिली साहित्य परिषद्, जनकपुरद्वारा 'वैदेही प्रतिभा पुरस्कार', अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्बईद्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मान प्राप्त कएने छथि त मधुरिमा नेपालद्वारा 'मधुरिमा सम्मान', चेतना समिति, पटनाद्वारा यात्री चेतना पुरस्कार, साझा प्रकाशनद्वारा साझा लोक संस्कृति पुरस्कार २०६८ आ नेपाल सरकारद्वारा स्थापित विद्यापति पुरस्कार कोषद्वारा वर्ष २०६९के मैथिली भाषा साहित्य पुरस्कार २०६९ सेहो प्राप्त कएने छथि। २ लाख राशिक उक्त पुरस्कार मैथिली साहित्यमे प्रदान कएल जायबला सर्वाधिक राशिक पुरस्कार अछि। (२०६९), रायपुर(छत्तीसगढ, भारत)द्वारा मिथिला विभूति सम्मान(२०६९) मैथिल समाज, रहिका(मधुबनी, विहार, ८ अप्रिल २०१८ई.) नेवारी भाषा साहित्यक संस्था केशवलाल वाखं सिरपा कथा पुरस्कार(२०७० जेठ २१ गते), हुनक घरमुहाँ उपन्यासके लेल रु. पचास हजारक गंकी धुस्वां बसुन्धरा पुरस्कार प्राप्त(२०७१) लगायत दर्जनो सम्मान, पुरस्कार प्राप्त। एकरा संगहि हुनका पार्वती प्रतिष्ठान, सिसोटिया सर्लाहीद्वारा 'पार्वती सम्मान'सहित दर्जनो सम्मान आ पुरस्कार प्राप्त छनि।

सामाजिक क्षेत्रमे सकृयता

रामभरोस कापड़ि'भ्रमर'के मुख्य परिचय एकगोट साहित्यकार आ कुशल पत्रकारक छनि मुदा ओ सामाजिक आ राजनीतिक क्षेत्रमे सेहो ओतवे सकृय छथि ताहिबातक जानकारी बहुत थोर लोकके छनि। साहित्यिक स्रस्टाक रुपमा ओ मैथिली भाषा, साहित्य, कला, संस्कृतिक

सेवा क रहल छथि त विभिन्न संघ संस्थामे संलग्न रहि भाषा,साहित्य, कला,संस्कृतिक संस्थागत विकासमे सहयोग क रहल छथि। तहिना राजनीतिक क्षेत्रमे सेहो हुनक अहम योगदान छनि। तत्कालीन कटरैत गाउँ पञ्चायतके उपाध्यक्षक रुपमे निर्वाचित भ' ओ गाम पञ्चायतके विकास निर्माणमे अहम योगदान देने छलाह त अपन पुस्तैनी गाम बघचौडामे अवस्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयके व्यवस्थापन समितिक अध्यक्षके रुपमे ओ विद्यालयके शिक्षाक गुणस्तर बढैबामे अहम योगदान देलनि।

ओ मैथिली साहित्य उत्सव , नेपालक अध्यक्ष , तराई जनजाति अध्ययन प्रतिष्ठान, जनकपुरके अध्यक्ष, जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, के अध्यक्ष, दीनानाथ भगवती समाज कल्याण गुठी, जनकपुरके सचिव, पत्रकार महासंघ , धनुषाक राष्ट्रिय पार्षद आदिक रुपमे सेहो उत्कृष्ट काज कएने छथि। काठमाण्डुमे आयोजित सार्कस्तरीय कवि गोष्ठीमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधित्व सेहो कएने छलाह।

मधेश आन्दोलनमे योगदान :

पत्रकारितासंगहि ओ मधेश आ मधेशीक विचार , समस्या आ समाधानक उपायआदिपर निरन्तर चिंतन मनन करैत रहैत छथि। २०६३ सालक मधेश आन्दोलनमे ओ अपन पत्रिका गामघर तथा जनकपुर एक्सप्रेस दैनिकके माध्यमसँ आन्दोलनके पक्षमे जनमत बनैबामे अहम योगदान देलनि। ओ स्वयं सेहो आन्दोलनके पक्षमे सडकपर उतरलाह आ अधिकारविहीनसभक अधिकार सुनिश्चित करैबामे सकृयता देखौलनि। ओतबे नहि,मधेश आन्दोलनक समयमे भातीय मिडिया आन्दोलनके गलत ब्याख्या क रहल छल , ओ एकरा नेपालसं अलग हड्ढाक आन्दोलनक रुपमे प्रचा,ित करैत छल , तखन बिचार भेलै जे ओइपारक समडियाके कोना अबगत कराओल जाए। समस्या ईहो रहैक जे ओ सभ ककरा कहल पर बिश्वास क सकैत अछि। तखन तय भेलैक जे भ्रमरजी उपयुक्त: पात्र हयताह आ हुनकासं सम्पर्क कएल गेल। ओ तत्काल स्वीकार क लेने रहटि।आ तखन घनघोर बर्षाक बीच पटना

गैलाह राति दू बजे। मधेश आन्दोलनक कमाण्डर उपेन्द्र यादबजीसं लगातार सम्पर्कमे छलाह। दोसर दिन भेने अपन सम्बन्धके प्रयोग क मिडियाके धखाइते बजाओल गेल। हिनका चिन्ता छलनि जे ओ सभ कतेक रीस्पोन्स करैत अछि। मुदा जखन अति संक्षिप्त सूचना पर मिसडया पर्सनसभक जे यपस्थिति भेल ओ अदभूत छल। बक्ताक रुपमे भ्रमरजी मधेश आन्दोलनक डीतवृति सुनौलकनि आ स्पष्ट कयलनि जे ई आन्दोलन अलगावक नहि जूडावक अछि जे दू नम्बरसं एक नम्बरक नागरिक बनि देशक मूलधारमे आब चाहैत अछि जकरा अदौसं अलग रखबाक बाज होइत आएल छल। पत्रकार सम्मेलनक सफलता तखन बुझमे आएल जखन भोरका अखबारमे ई समाचार लगभग प्रत्येक अखबारमे आएल।

प्रथम मधेस आन्दोलनके अनुभव आ आन्दोलनके नामपर समाजमे पसरल साम्प्रदायिक द्वन्दके निरुत्साहित करैत सामाजिक सरभावक सन्देशके आधार बना ओ एकगोट उपन्यास लिखलनि घरमूँहा। जकर मुख्य विषयवस्तु मधेश आन्दोलन अछि। एहि उपन्यासक हिन्दी, भोजपुरी आ नेपाली भाषामे अनुवाद सेहो भ' चुकल अछि। एही उपन्यासपर हिनका पचास हजार टकाक गंकी धुस्वाँ वसुन्धरा पुरस्कार पुरस्कार भेटल छन्हि।

रुची आ स्वभाव

भ्रमर व्यक्तिगत जीवनमे निक निकुत खायबला आ ब्राण्डेड कपडा पहिरनिहार व्यक्ति छथि। आर्थिक रुपसँ सक्षम परिवारमे जन्मल भ्रमरके बाल्यकालक यी सौख एखनहुँ विद्यमाने अछि। मंहग मोवाईल, कम्प्युटर, क्यामरा हुनक दोसर सौख थिक। कैमरामे नीक फोटो खिचब आ एहि फोटोसभके सुरक्षित राखब हुनक विशेषता छनि। एकर अतिरिक्त ओ फिल्म निर्माण, फिल्म लेखन आदि कलामे सेहो निपुण छथि। ओ अध्ययन आ भ्रमण करबामे सेहो विशेष रुचि रखैत छथि। ओ नेपाल आ भारतसंगहि चीनक सेहो भ्रमण कएने छथि।

संदर्भ-

- १) अजय अनुरागी : लोकान्तर डटकम : अनलाईन पत्रिका। प्रकाशन : कात्तिक २, २०७६
- २) गामघर साप्ताहिक, २०४१ चैत १ गतेक अंक सं।
- ३) मैथिली पत्रकारिताक इतिहास: श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर, मैथिली अकादमी, पटना

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

२.४. भीमनाथ झा- लोकजीवनपर समेकित आलोक



भीमनाथ झा-संपर्क-7482066855 **लोकजीवनपर समेकित आलोक**

श्री भ्रमरजीक साहित्यचास बहुफसिला छनि । कोनो खेत एकफसिला होइ छै, कोनो दुफसिला छै जे बड़ उपजाउ ताहिमे तेसरो फसिल सुतरिए जाइ छै । ओहन खेत 'सोनाक टुकड़ी' कहबै छै । मुदा, हिनक खेतमें कोनों एहन फसिल छैके नै भरिसक जे उपजल नहि होइन, उपजैत नहि होइनि । इहो सुनने छिए जे केहनो उर्वर भूमि एकनेएक दिन उस्सर भऽ जाइ छै, जखन ओकर नमी सुखा जाइछै । मुदा, हिनक खेतक नमी तँ दिनानुदिन हरिआएले जाइत देखै छियनि । एहन जमीनके की कहबै ? हीराक टुकड़ी, पन्नाक टुकड़ी, मोतीक टुकड़ीजे कहि लियौ, सभ छजतै । तँ ने, बरु उनचासो बसात बहि जाओ, तैयो हिनक चासक पचासो गाछ सभ ऋतुमे लहलहाइते देखै छियनि ।

कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबन्ध, यात्रा संस्मरण, रिपोर्ताज, शोध, समीक्षा, टिप्पणी, डाइरी आदिआदि, जकर ओरसँ अनवरत चलि रहल छथि, तकर छोर एखन बहुत दूर छनि । बीचक जगहकें लगातार भरैत चलबाक छनि । से ई कऽ रहला अछि । हम एकरा मध्यान्तर सैह मानैत छियनि । अपने पूछब कोना ? हम कहब तकर प्रमाण थिक ई पोथी 'मिथिलाक लोकजीवन ः लोकसन्दर्भ' । एते दिन में जते: ई पढ़ललि अछि, जते ई देखलनि अछि, जते ई सिखलनि

अछि, जते ई लिखलनि अछि, तकर झलक तँ लगातार विभिन्न पोथी सभमे देखबैत आबिए रहल छथि । एहि कृतिमे सभटाक निचोड़ आनिकऽ राखि देलनि अछि । अर्थात एहि पोथीकेँ लेखकक एतबा दिनक कार्यकौशलक 'रिपोर्ट' मानि सकै छी ।

एहि पोथीक रचना सभक लेखनचक्र चारि दशकसँ उपरेक होयबाक चाही । एतावता जाहि जाहि दिशामें जतेक दूर घरि हिनक बौद्धिक प्रवेश भऽ सकलनि अछि, तकर ठोस साक्ष्य तँ अवश्य ई कृति प्रस्तुत करैत अछि ।

एतऽ विवेच्य विषयक संकेत मात्र करबाक प्रयास कयल अछि

विषय

साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, प्राकृतिक, शास्त्रीय एवं लोकपक्षीय अछि, जकर विचारक केन्द्रमे नेपालभारतस्थ समस्त मिथिलाक्षेत्रीय भूगोल आबि गेल अछि । लेखकक दृष्टिक व्यापकता तँ विषयक विविधता, निरीक्षणक सूक्ष्मता, सोचक स्पष्टता, अभिव्यक्तिक निर्भीकता एवं तर्कक अकाट्यता ताहीसँ प्रमाणित भऽ जाइत अछि ।

विद्वान लेखक मध्यकालीन गीतक उद्धारक चिन्ता व्यक्त करैत छथि तँ तिरहुतिया गीतक तालपर सेहो झुमैत छथि । एक दिस मिथिलामे पारम्परिक कीर्तनपरम्पराक खोज करैत छथि तँ दोसर दिस शिशुगीतक विभिन्न रूपक दर्शनो करबैत छथि । ऋतुगीतक परम्परामे पावस, होरी आ वसन्तक उल्लास बँटै छथि तँ गंगाक पावनताक रक्षा एवं कमलानदीक सांस्कृतिक महत्तासँ परिचयो करबैत छथि । अपन लोकसांस्कृतिक वैशिष्ट्य प्रकाशनक क्रममे लोकचित्रकला, लोकनृत्य, (मिथिला आ जटाजटिन) एवं लोकदेवता (सलहेस दीनाभद्री एवं राजा भरथरी) के चरितचर्चा करैत हुनका लोकनिक महत्ता देखबैत छथि । तहिना, धनुषाक मकर, झूलन, जूडशीतल, श्रीपंचमी, परिक्रमा, छठि तथा रामनवमी सन मिथिलाक विशिष्ट पाबनितिहारकेँ सामाजिक समरसताक प्रतीक मानैत छथि । धार्मिक स्थलमे जनकपुर, अहल्यास्थान एवं दुहबी गढ़ीक विशेष उल्लेख भेल अछि ।

जनकपुरक एक सुविख्यात जानकी मन्दिर (नौलक्खा) के निर्माणसम्बन्धक निस्तुकी प्रमाणक अभाव मानैत ताहि दिस अनुसन्धानक हेतु विभिन्न सरकार आ जनताक ध्यान आकृष्ट करैत छथि । ऐतिहासिक घटनाक क्रममे कनिष्क आ हर्षवर्धन केँ मिथिला आ नेपालसँ सम्बन्धकेँ सप्रमाण पुष्ट कयने छथि ।

नेपालमे मोडल विद्यापतिपदावलीक प्रसंग उठाय ताहिपर पाँच गोटा अनुसन्धानमूलक निबन्ध लिखने छथि, जाहिमे ओकर खोज एवं तकर व्यापक अध्ययनक आह्वान कयल गेल अछि । हुनक अतिरिक्त लोककवि घाघ, कवीश्वरचन्दा झा, कविचूडामणी मधुप, महाकार्य यात्री एवं लोकगाथा उद्धारक काव्य विमर्श उपयोगी अछि । मैथिली कविता एवं पत्रकारिताक संगहिँ साहित्यमें नारी विमर्शपर फराकसँ विचार कयल गेल अछि । तहिना, एक निबन्धमें भानुभक्तक रामायण आ लालदासक रमेश्वर चरितक तुलनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण अछि । एकर अतिरिक्त नेपालस्थ मैथिलीक सामाजिक, राजनीतिक, क्षेत्रीय भाषानीतिक संगहिँ शिक्षानीतिक समस्याकेँ प्रमुखताक संग उजागर कयल गेल अछि ।

अन्तमें ईहो कहब जे संवेदनशील साहित्यकार द्वारा प्राकृतिक आपदा भूकम्प आ कोरोनाक त्रासदीकेँ साहित्यमें समेटबाक दामित्वके कोना छोड़ल जा सकै छल, जाहिमे सम्पूर्ण मानवता तबाह भऽ गेल !

एतावता विषयवस्तुक संकेतसँ स्पष्ट होइछ जे समीक्षित पोथी सभ वर्गके पाठकक अपेक्षा पूर्ण करबाक योग्यता रखैत अछि । सामान्य पाठककेँ एतबा जनतब प्राप्त करबा लेल सात घाटक पानि पीबऽ पड़ितनि । अनुसन्धेत्सु ओ ज्ञानपिपासु गंभीर अध्येतागणक चिन्तनक हेतु अनेक बिन्दु भेटतनि एवं हुनका लोकनिमें स्वरुचि विषयक आर अधिक जिज्ञासा जगौतनि ।

सभसँ लाभान्वित तँ दुनू पारक 'भ्रमर' प्रेमी पाठक होयता जनिका अपन प्रिय साहित्यकारक अभिनव रूपक दर्शन होयतनि । अनेक देशमे बसल प्रवासी मैथिल समाजक ओ लोकनि, जे सभ अपने मिथिलामैथिलीक गरिमामय अतीत एवं उज्ज्वल वर्तमानक गुणगान तँ सुनैत छथि, किन्तु

अपन धरोहरके जानि नहि सकल रहथि, तनिका सभक हेतु तँ ई पोथी मिथि मिथिला डाइरेक्टरी कही सैह थिकनि । हर्ष अछि जे अमेरिकाक मिथिला सेंटर अपन प्रकाशनक श्रीगणेश सर्वथा उपयुक्त पोथीसँ कयलक अछि ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठार।**

२.५. बिजय कुमार मिश्र- रामभरोस कापडि'भ्रमर'जीक संग साक्षत्कार



बिजय कुमार मिश्र

रामभरोस कापडि'भ्रमर'जीक संग साक्षत्कार

१. राम भरोससं भ्रमर कोना बनलहुं ?

(१) ई गप थिक हाईस्कूलक। जखन मैट्रिकके परीक्षामे फॉर्म भरबाक समय अएलैक त किछु मित्र कहलनि जे नाम एहिमे भरबैक ओ स्थायी भऽ जाएत। हम 'भ्रमर' उपनामसं गद्य पद्य लिखैत रही। भेल जं एकरा फॉर्ममे लिखिदेबैक त 'भ्रमर' हमर स्थायी उपनाम भऽ जाएत। आ ताही लौल सं हम एकरा लिखने रही। मुदा हमर प्रधानाध्यापकके ई नहि पचलनि। ओ तकरा कटैत हमरा निक जकां फटकारलनि सभ चाहता है कि कविए बन जाएं..।

यद्यपि ओत हमर नाम त काटि देल गेल, मुदा हमर मोनमे उठल जे लक्ष रहए से एकटा संकल्प रुपमे रुपान्तरित होइत 'भ्रमर' उपनामक संग रचनाशील रहल। आ आइ हमर संग एहि तरहेँ जूड़ल अछि जे मैथिली मे जं 'भ्रमर' कही त प्रायः लोक हमरे बुझैत अछि।

२. नाटक, रंगमंच, गीत आदिक राम भरोस साहित्यसृजनक भ्रमरक कोना बनलहुं ?

(२) हम कहिचुकल छी शुरुएसं 'भ्रमर' लिखैत रहलहुँ। प्रायः तहिया हमरा लागल रहए 'भ्रमर'सं जते राग रंगक बोध होइत छैक ओ हमर काँच मोनपर हावी भऽ गेल छल। तएँ गीत हो, नाटक हो अथवा साहित्यक अन्य विधा..। हम निरन्तर 'भ्रमर' उपनामक संग लिखैत रहलहुँ।

३. सुनल अछि लोक गीत आ अन्य गीतक कैसेट सेहो कयने छी। ओकर परिणाम कहु ?

(३) हम बच्चेसं गीतक प्रति आकर्षित रहलहुँ। हाइस्कूलमे रहैत आठ पन्नाक एकटा गीत संग्रह 'जवानीक दिन' नामसं निकालने छलहुँ। जे रेलवे स्टेशन पर एकटा गायक द्वारा गाओल जाइत छल। बादमे हमर बहुतो गीत प्रसिद्ध भेल। नेपाली फिल्म 'सीता'मे होरी गीत खूब चर्चित अछि। तहिना मैथिली टेलीफिल्म 'एकटा आओर बसन्त' मे दूटा गीत फिल्मांकन भेल जाहिमे 'सखी हे सावनके बुन्न झिंसी काफी लोकप्रिय रहल। किछु वर्ष पूर्व 'अरिपन' नामसं ९ गोट गीतक एलबम बहार केलहुँ जे भिडियो एलवम के रुपमे श्रोताबीच पसीन कयल गेल। हमर अपन यूटयुव चैनल अछि 'म्यूजिक' मिथिला' ताहिमे हमर आनो आनो गीत सभ राखल अछि।

४. अपन साहित्य साधना, कला आ सांस्कृतिक साधनाक दस्तावेजी शक्ल देबाक आवश्यकता कोना बुझलहुं ?

(४) नेपालमे पुस्तक प्रकाशनक अभाव रहलैक। जहिया हम लिखब शुरू कयने रही आंगुरपर गन जोग लेखक रहथि। ताहूमे पूर्णकालिक त नहि। सभ कतौ ने कतौ रोजगारीमे लागल छलाह। हम जं कि ताहिसं मुक्त रही, पूर्णकालिक लेखक रहलहुँ। आ आइ पचास सं उपर पुस्तक प्रकाशित भऽ सकल अछि आ से विभिन्न विधाके। हमर सदैब मान्यता अछि अपन चिन्तन मननके दस्तावेजी रूपमे राखि देबाक चाही। पाटकके तकर मूल्यांकन कर देबाक चाही। अपनेसं अपन लेखन वा ब्यक्तित्वके माथ पर चढा क राखब उचित नहि।

५. साहित्य, सिनेमा आ समाजक सरोकारके नकारल नहि जा सकैछ। एहिमे फिल्म निर्माणक भूमिका केहन हयबाक चाही ?

(५) साहित्य सिनेमा आ समाज एक दोसाराक अभिन्न थिक। एक दोसराक विना ककरो मोजर नहि भऽ सकैछ। साहित्य जहिना समाजके सचेत करैत अछि, सिनेमा सेहो सामाजिक सदभाव आ प्रेमके स्थापित करबाक माध्यम होइछ। तखन जत्त साहित्य अपनबाट छोड़बाक गलती करैत अछि, सिनेमा सेहो नीक सन्देश प्रवाहित नहि कऽ पवैत अछि। तएँ फिल्म सोद्येश्य आ सभके संग लऽ चलबाक सामर्थ्य रखनिहार हयबाक चाही आ ताहिमे साहित्य ओकरा अर्थ प्रदान करैत अछि।

६. मिथिलाक लोक अबदानके संरक्षित करबाक लेल फिल्म निर्माणक महत्व कतेक ?

(६) हम पहिने कहल अछि समाजक खूजल चित्रण थिक फिल्म। एत मिथिला आ मैथिल समाजक जीवन पद्धति, ओकर व्यथा कथा, हास परिहास सभक संगोरक संग फिल्म बनत त ओकर महत्ता अपने आप समाजमे स्थापित भऽ जाएत।

७. फिल्म निर्माणक दृष्टिएं पुनौराधाम, जनकपुरधाम आ सीतामण्ी यथेष्ट शूटिंग मानल जाइछ। माता जानकी कहाँ धरि एहि लोकेशनमे जगह पौलनि अछि ?

(७) देखू ई त जानकारीक विषय भेल जे मां जानकीक जन्मस्थली सभक परिवेशमे फिल्म निर्माणक कतेक संभाव्यता छैक आ तकर उपयोग कतेक कयल गेल अछि। ओना फिल्मकार लोकनि एहि लोकेशन पर निरन्तर शूटिंग करैत अएलाह अछि। भले ओकर विषय वस्तु, मां सीताक जीवनपर आधारित नहि हो। नेपालीमे फिल्म बनल छल सीता। मुदा ओ जनकपुरक पृष्ठभूमि पर नवकथाक संग पैघ बजेटक फिल्म छल। हमर गीत एही फिल्ममे राखल गेल छल। आइ काल्हि जनकपुरधाम जानकीमंदिर लगायतमे एकटा नेपाली फिल्मक शूटिंग एकमास सं भऽ रहल अछि। नाम अछि भागवत गीता। मुदा कथा किछु आरे छैक। काल्हिए पुनौराधाम गेल रही। ओत कहल गेल जे एत शूटिंग होइत रहैत अछि। कोनो भिडियो अथवा शर्ट फिल्म आदिक। मात्र रामायणकालीन चरित्रके लऽ फिल्म बनल हो हमरा ज्ञात नहि अछि।

८.नेपालक फिल्म उद्योग आआ काठमाण्डूमे गायक गायिकाक संग गीतक भण्डार अछि। ओहिसं मिथिलांचल कहाँ धरि लाभान्वित भेल अछि ?

(८) नेपालमे नीक फिल्म उद्योग छैक। हं, एकरालेल कोनो फिल्मसीटी नहि भऽ पौलक अछि। तएँ एकर शूटिंग एहिना बौआ बौआ कऽ कयल जायत अछि। ढेरो कलाकार छथि, दर्जनो गीत बनैत अछि। एकसं एक गायक छथि मुम्बई धरिजा कऽ फिल्मक प्रोसेस होइत छैक। भारतीय गायक गायिकासं गीत गबाओल जाइत छैक। जं कि उदितनारायणजी नेपालीए छथि तं कही हुनको सं गीत गबाओल जाइत छन्हि। तखन एहि इण्डस्ट्रीजसं मिथिलाञ्चलके की उपलब्धि त गोलमोल शब्दमे कही त शून्य। कोनो स्थान विशेषपर शूटिंग कऽ लेब अथवा कोनो मिथिलाञ्चलक कलाकारके छोट मोट रोल दऽ उपकृत कऽ देब समग्ररुपेँ 'लाभान्वित'क श्रेणीमे नहि आनल जा सकैछ। हं तखन एक आधटा फिल्म आएल अछि जरूर जाहिमे मधेशक चरित्रकेँ आगां लाबि कथाके ओजन देल गेल अछि।

९.आधुनिकताक अनर्गल प्रभाव आ अपसंस्कृतिक परिवेश सिनेमाके दोषी मानेत अछि।एहना स्थितिमे मैथिली फिल्म निर्माण कोना हयबाक चाही ?

(९) आधुनिकताक नामपर जाहि तरहें फिल्मके कथानक आ अहिरन पहिरनके नवरुप दऽ देल गेल अछि, ओ सर्वथा चित्तनीय विषय अछि। तखन दर्शकके अपना दिश घिचबाक लेल आ बाक्सअफिस पर पाइ असूलके लेल मात्र एकर उपयोग भऽ रहल अछि। एहन धारणा जं बनैत रहत त नीक फिल्मक गुंजायश कम भऽ जाएत। भोजपुरी फिल्मक बढ़ैत डेगक पाछां कथासं मैथिली फिल्म निर्माता लोकनिकें शिक्षा लेबाक चाही, नक्कल कक नहि, ओहिसं जं कोनो नकारात्मक गन्ध अबैत छैक त बचि कऽ रहबाक लेल। हमरा सभक अपने समाजमे बहुतो एहन विषय अछि। तकर उठान कऽ दर्शक वीच आयल जा सकैत छैक। तकरा लेल व्यवसायिक निर्माता, निर्देकक जरुरति छैक जे मैथिलीमे नहि अछि। किछु बनल, चलबो कयल फेर जे हुसल त समहरल नहि।

१०.अपन महत्वाकांक्षी साहित्य आ सांस्कृतिक यात्राक मुख्य मुख्य अंशक बर्णन करी?

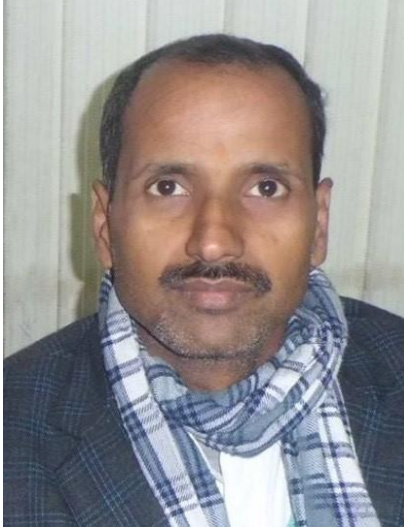
(१०) साहित्य आ संस्कृति हमरा सभक प्राण अछि। जाहि परिवेशमे हम काज करैत छी ताहिमे त आर एकर जिम्मेवारी बढि गेल छैक। हमसभ एहि पक्षके आगां लयबाक लेल प्रतिवद्धतापूर्वक लागी।

जहिया कहियो साहित्य सेवाक अभियान शुरु करने रहि तहिया मात्र अपन साहित्यिक इच्छा पूर्तिक लेल उत्साहित भऽ लागल रही। बादमे जखन हम ई अनुभव कएलहुँ, मैथिली भाषा, साहित्यमे हमरा सन लोकक काज करब कठिन छैक आ संख्या सेहो नगण्य छैक त ई हमर मीशन भऽ गेल। जाति पाति आ वर्ग विभेदक जालमे फसल मैथिलीके सभ वर्ग क्षेत्रक भाषाक रुपमे स्थापित करबाक एकटा लगन हमर महत्वाकांक्षाके आगा बढौलक आ संभवतः तकरे परिणाम स्वरुप हम निरन्तर समाजसं प्राज्ञिक व्यक्तित्व आ संस्थासं सम्मानित होइत रहलहुँ अछि।

भले हमर अभियान देरीसं मान्यता प्राप्त कैलक आ तकर कारण एकला चलो केर बाध्यता रहल। मुदा जखन स्वीकृत भेलहुँ त तेहने सम्मान आ अबसर अबैत गेल। हमर इएह साहित्यिक आ संस्कृतिक यात्रा हमरा नेपालक बहुत प्रतिष्ठित संस्थान 'साझाप्रकाशन'क पहिल मधेशी अध्यक्ष बनौलक, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक परिषद् सदस्य बनौलक आ एखन मधेश प्रदेश सरकार द्वारा गठन कएल गेल 'मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अध्यक्षक रुपमे काज करबाक अवसर प्रदान कएल गेल अछि। कहबाक जरुरति नहि, जाहि साहित्यिक आ सांस्कृतिक यात्राके लेल हम निरन्तर निजी स्तर पर लागल रहलहुँ, आव सरकारी स्तर पर ताहूसं नीक ढंगसं, उचित प्रक्रियासं एहि क्षेत्रक लेल काज कऽ सकब।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.साक्षत्कार- दिनेशचन्द्र गोपाल



साक्षत्कार- दिनेशचन्द्र गोपाल

मैथिली पत्रकारिता अयनामे अपन अनुहार देखि देखि खुश होएबा लेल करैत छी: बरिष्ठ समहित्यकार, सम्पादक श्री राम भरोस कापड़ि भ्रमर

आबक दिनमे श्री राम भरोस कापड़ि भ्रमर कोनो परिचयके मोहताज नहि छथि। विक्रम सम्वत २००८ सालमे स्व. रामगुलाम कापर आ स्व. दुखनी देबीक सन्तानकरूपमे धनुषा जिल्ला, बघचौरा गाममे जन्म लेने श्री भ्रमरक एखन धरि तीन दर्जन विभिन्न विधाक पुस्तक प्रकाशित छन्हि त जनकपुर एक्सप्रेस दैनिक(नेपाली), गामघर साप्ताहिक(मैथिली) आ आँजुर द्वैमासिक(मैथिली)के प्रधान सम्पादक, प्रकाशकक हैसियतसं संलग्न छथि। नेपालीय मैथिलीमे सशक्त हस्ताक्षरक रूपमे स्थापित श्री भ्रमर सम्पूर्ण मैथिली संसारमे अपन उपस्थितिके मजबूतीक संग राखि चुकल छथि। एखने हिनक दोसरो रूप मैथिली संसार देखलक अछि एकटा सशक्त गीतकारक रूपमे। हिनक अरिपन भिडियो एलबम हालेमे बहार भेल अछि जे काफी चर्चित भ रहल अछि। ई अनेको बिधामे

अखैत छथि मुदा मूलरूपसं ई कवि छथि आ एखन धरि हिनक तीन गोट कविता संग्रह प्रकाशित छन्हि आ चारि गोट कवितासंग्रहक सम्पादन कएने छथि।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"सं पत्रकार दिनेशचन्द्र गोपाल क बीच भेल बातचितक सारसंक्षेप एत्त प्रस्तुत अछि।

1. मैथिली पत्रकारिता कहिया सं प्रारम्भ कयल?

-हम २०३० सालमे अर्चना पत्रिकाक प्रकाशन कयल, जे अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषदक प्रकाशन रहैक आ हम सम्पादक रही। बादमे हमरे प्रकाशन कर पडल जे एक दशकसं उपर धरि जारी रहल।

2. मैथिली पत्रकारिताक चुनौती आ सम्भावना केहन बुझना जाइछ?

-मैथिलीमे पाठकक अभाव छैक। पत्रिका बिकाइत नहि छैक। जे केओ अपन लगानी आ प्रयाससं निकालितो अछि त ओकरा स्तरीय रचना भेटैत नहि छैक। जँ कि पत्रिका के बाजार नहि छैक, ब्यबसायिकरूपेँ लोक आब नहि चाहैत अछि। परिणामतः मैथिली पत्रकारिता अबूह भ क रहि गेल छैक। बहुरंगी मिथिलाआबाज सन पत्रिका करोडो टकाक चूना लगा गेल प्रकाशकके, मिथिलाक गढमे ससरि नहि सकल। जहा धरि सम्भावनाक गप अछि कानो तरहेँ उल्लासमय नहि।पेट काटि बहार बरैत रहु आ अयनामे अपन मुँह देखि देखि प्रशन्न होइत रहु।

3. मैथिली पत्रकारितामें एतेक रास चुनौती होईतो फेर साहित्यिक पत्रकारिता तरफ कोना आकर्षित भेलौ?

-कहलहु नहि, अयनामे अपन अनुहार देखि देखि खुश होएबा लेल।

4. आँजुर कतेक वर्ष सं प्रकाशित होईत अछि?

-वि.स.२०४५ सऽ शुरु भ दश बर्ष धरि चलल। फेर बन्न भ गेल से पुनः २०७१सं प्रारम्भ भेल अछि आ निरन्तर जारी अछि।

6. पञ्चायतकालमें पत्रपत्रिका प्रकाशन करब त बड दुरुह छलै , अपने कोना डेग आगा बढेलियै?

-ओहि समयमे पत्रिका दर्ता करा क प्रकाशित करब दुरुह जरूर रहै। तखन अर्चनाक प्रकाशन संकलनक रुपमे भेल रहए। आ से विशुद्ध साहित्यिक मात्र। आनो पत्रिकासब आयल रहै,सब मात्र साहित्यिक संकलनक रुपमे। राजतन्त्र आ राजाक विरुद्धमे कानो शब्द नहि आबि सकैक तकर ख्याल कर पडैक। जहाँधरि समाचारपत्रक बात छै त गामघर साप्ताहिकक प्रकाशनमे हमरा बड बड पापड बेल पडल रहए। एकदशकक अथक प्रयासक बाद तत्कालीन सीडियो दामोदर रेग्मीक सहयोगसं २०३८ सालमे एकर प्रकाशन संभव भ सकल। जे आई धरि निरन्तर जारी अछि आ मैथिलीक माइल स्टोन पत्रिका मिथिलामिहिरक बाद सबसं बेसी समय धरि नियमित चलबला पत्रिका बनि सकल अछि।

7. सरकारी प्रताडना, वा त्रासक कोनो अनुभव।

-प्रताडानाक त तेहन कानो अनुभव नहि, मुदा त्रास त निरन्तर बनल रहैत छल।

8. महाकवि विद्यापति नेपाल प्रवास सम्बन्धमे अपनेक धारणा की थिक?

-कोनो नव नहि। राजा शिवसिंहक संकटकालमे महाकवि विद्यापति रानी लखिमाके सुरक्षार्थ नेपालक राजापुरामित्यक ओहिठाम ल अनलखिन्ह जे बारह बर्ष धरि रहलाह। एहि अबधिमे श्रीमद्भागवतक लिप्यांतर,लिखनावलीक रचना आ कतेको सुप्रसिद्ध गीतसभक प्रणयन कएलनि जे आइ इतिहासमे हुनक प्रमाणिक रचना मानल जाइत अछि। साँच कही त सम्पूर्ण मैथिली साहित्यके नेपालक ई पैघ योगदान छैक।

9. नेपालमें मैथिली पत्रकारिता आ साहित्यिक अवस्था केहन बुझना जाईछ?

-पत्रकारिताक त कहिए देलहु, तखन साहित्यक बात करी त ई पूर्णरूपेण जगजियार भ रहल अछि। लोकमे कानो तरहें साहित्य लेखन मात्र नहि तकरा प्रकाशनक जोश उत्पन्न भ रहलैक अछि, एहिसं आनक भरोसे फौजदारी खेलएबाक परम्पराक अन्त होइत देखि पडि रहल छैक।

10 अपने नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ परिषदमें छलौह, प्रतिष्ठानमें मैथिलीक दिशा दशा केहन अछि?

-हम अपन अबधि भरि जे किछु भ सकल कएल, यद्यपि प्रज्ञामे मैथिलीक कोनो अलगसं बजेट नहि छैक। एहनो स्थितिमे लगभग आधा दर्जन मैथिली पुस्तकक प्रकाशन आ तहिना एक दर्जन जतेक मैथिलीक बिभिन्न विधापर संगोष्ठीक आयोजन कएलहुँ। हमरा छोडला आठवर्षसं उपर भ गेलै, एक्कोटा कोनो कार्यक्रमक सूचना नहि अछि। हमरा प्रज्ञामे रहब किछु गोटेके बोझ भ गेल रहनि। तखन एहनो अबस्थामे हुनका सभक आश्चर्यजनक चुप्पी रहस्यमय अछि।

11. राष्ट्रिय स्तर पर प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित आँगन मैथिली पत्रिकाक अवस्था की अछि?

-जखन हम प्रज्ञासभामे गेल रही तहिए एकर प्रकाशन करबौने रही आ हमर कार्यकालमे अनेको एतिहासिक महत्वक विशेषांकक प्रकाशन भेल रहैक। एम्हरो प्रकाशित होइत रहल अछि।

12 मैथिली पाठय पुस्तकक अध्ययन विद्यालयमुखी किएकनै भ रहल अछि?

-ई त पाठ्यक्रम विकास केन्द्रके पुछबाक चाही। माल जँ गुणस्तरीय छैक त बाजार त पएबाक चाही। से कोनो विद्यालय एकरा स्वीकार नहि क पाबि रहल अछि आने विद्यार्थीएके एखनका पुस्तकमे रुचि छैक। मैथिली भाषाक प्रचार प्रसार एहिसं रुकल अछि, मुदा ककरो लेल धनसन।

13. अपनेक जीवनक कोनो अविस्मरणीय पल।

-हँ, २०५२ सालमे जखन पहिल मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार हमरा भेटल छल। एहि दुआरे नहि जे ओकर उन्तीस वर्षपूर्वक राशि पचास हजार टकाक रहै। ओ एहि दुआरे जे मैथिलीमे आई काल्हि जेना गुट बना पुरस्कार बँटबाक परम्परा विकसित भ रहल अछि , से एहिसं भिन्न सर्बथा अप्रत्याशित ओ घोषणा एखनो रोमाँचित क दैछ।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

२.७. अशोक-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुँहा'



अशोक-संपर्क-8986269001

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुँहा'

घरमुँहा उपन्यास २०१२ ई.मे प्रकाशित भेल अछि। २१म शताब्दीमे मैथिली उपन्यासक प्रकाशनमे गति आएल अछि। वर्ष २०१२मे गौरीनाथक 'दाग', प्रदीप बिहारीक 'शेष', हेतुकर झाक 'पराती', नीरजा रेणु केर 'इजोत', मधुकांत झा केर 'ममता जोगी', मनमोहन झाक 'कृष्ण सर्प' के संग भ्रमरक 'घरमुँहा' उपन्यास आएल। एहिसँ पहिने हिनक कोनो उपन्यास नहि आएल रहए। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' नेपालमे मैथिलीक जानल-मानल साहित्यकार छथि। हिनक कविता, गीत, गजल केर संग्रह प्रकाशित अछि। दू टा कथा संग्रह 'तोरा संगे जएबौ रे कुजबा' आ 'हुगली उपर बहेत गंगा' सेहो प्रकाशित छनि। नाटक आ शोध छनि। आलेख सभहक संग्रह छनि। पत्रिकाक संपादन लगातार कऽ रहल छथि। पोथी सभहक संपादन केने छथि।

घरमुँहा उपन्यास नेपालक मधेश आन्दोलनक पृष्ठभूमिमे पहाड़ी युवती आ मधेशी युवकक प्रेमकथापर आधारित अछि। कथा हो वा कविता प्रेम भ्रमरक स्थायी भाव रहल अछि। एहि उपन्यासक संबंधमे प्रसिद्ध साहित्यकार राजेन्द्र विमल भूमिकामे लिखने छथि जे "आख्यानकार भ्रमर आपना समयक प्रमाणिक खिस्सा आबए बला पीढ़ी दर पीढ़ी धरि

सुनएबामे उत्सुक छथि। तें प्रस्तुत उपन्यास मूक इतिहासक मुखर सहोदर भए गेल अछि। राजनैतिक घटनाक्रमक धरातलपर कल्पनाक फट्टा, मृत्तिका, सन्दी सन आदिसँ समकालीन मधेशक जीवन्त मूर्ति तैयार कऽ समाजिक संबंध-बंधक रागमयताक रंग ढेउरल गेल अछि जे हृद्यहारी अछि। उपन्यास ऐतिहासिक महत्वक दाबेदार एहू कारणे अछि जे ई पहिल नेपालीय मैथिली उपन्यास थिक जे समकालीन राजनैतिक घटनाक्रमपर आधारित अछि।"

मधेश क्षेत्रमे रहनिहार कतेको पहाड़ी परिवार ओहिठामक जीवन ओ संस्कृतिमे रचि-बसि गेल अछि। कतेको व्यक्ति ओ परिवारक बीच मित्रता ओ स्नेह कायम भऽ गेल छैक। मधेश आन्दोलन तीव्र भेलापर ओहिमे कतेको अराजक ओ हिंसक तत्व सक्रिय भऽ जाइत अछि। अपहरण, लूट आदिक धंधा करऽ लगैत अछि। एहि उपन्यासमे मधेश आन्दोलनक विस्तृत वर्णन अछि।

उपन्यासमे रमेश उपाध्याय एक शिक्षक छथि। ओ पहाड़ी मूल के छथि। एहन कतेको परिवार मधेशमे अछि। मधेश आन्दोलनकेँ ओकर सभहक समर्थन छै। आन्दोलनी ओ सरकारक बीच बहुत बेर समझौता होइत छैक। माँग सभ मुदा पूरा नहि भऽ पबैत अछि। किछु लोक आन्दोलनकेँ हिंसक बनबऽ चाहैत अछि। लोक सरकारी दमन ओ शोषणसँ त्रस्त भऽ गेल अछि। क्रमशः पहाड़ी आ मधेशीक बीच वैमनस्य पनपि जाइत अछि। हिंसक तत्व सभ आ लूट करबामे लागि जाइत अछि। अही क्रममे रमेश उपाध्याय केर बेटी किरणक अपहरण भऽ जाइत छैक।

किरण जे एक पहाड़ी मूलक अछि ओकरा मधेशी कामेश्वर सिंहक बेटा राजीवसँ प्रेम छैक। दूनू विवाह करऽ चाहैत अछि। दूनूक परिवारकेँ सेहो कोनो आपत्ति नै छैक। उपाध्याय के दस लाख फिरौती देबाक रहैत छनि। एहि लेल अपन मकान बेचि दैत छथि। राजीवकेँ ई ज्ञात होइत छैक जे एहि अपहरण उद्योगक सरगना ओकरे बाप छैक। ओ अपन माएसँ मीलि कामेश्वर सिंहक विवेककेँ जगबैत अछि। अन्ततः किरण मुक्त होइत अछि। राजीव संग ओकर विवाहक निर्णय दूनू परिवार करैत अछि।

उपाध्याय जे पहाड़ दिस घूरि जेबाक निर्णय केने रहथि से पुनः ओहीठाम रहि जाइत छथि। एहिमे हुनक मित्र जगमोहन सहयोग करैत छथिन। मकान सेहो बिक्री नहि होइत छनि।

एहि उपन्यासमे पहाड़ी आ मधेशी लोक सभहक बीच एकठाम रहबाक कारणे आपसी मित्रता ओ भाइचाराक यथार्थ सेहो उभरि कऽ आएल अछि। संगहि क्षेत्रक स्वायत्ता आ विकास के समानान्तर विभिन्न क्षेत्रक मनुक्ख आ ओकर मनुक्खता सेहो उजागर भेल। उपन्यास कहैत अछि जे वस्तुतः मनुक्खे सर्वोपरि थिक।

संघर्ष, आन्दोलन, अपहरण, लूट, प्रेम आदि घटनाक आधार लऽ कऽ बूनल ई उपन्यास रहस्य ओ रोमांचसँ भरल अछि। संपूर्ण उपन्यासमे रोचकता बनल रहैत अछि। 'घरमुँहा' नाम केर संबंधमे उपन्यासकारक कहब छनि जे "घरमुँहा" नाम मैथिलीमे एहिसँ पूर्व कतौ आएल होइक से संभव, मुदा हमर एहि उपन्यासक केंद्रीय पात्रक मनःदशा, अपन जन्मधरतीसँ लगाव आ प्रेम आ विस्थापनक बाबजूद अवसर भेटिते जन्मधरतीपर घुमबाक अद्भुत उत्साह, स्फूर्ति 'घरमुँहा' शब्दकेँ सार्थकता प्रदान करैत अछि। तँए एकरा ताही रूपमे ली से आग्रह"। वस्तुतः ई उपन्यास कहैत अछि जे जाति, वर्ण, पहिचान बहुत माने नहि रखैत अछि। माने रखैत अछि मानवीय स्नेह, व्यङ्ग्य, प्रेम, सदाशयता, मित्रता, मानवीय संबंध, जुड़ाओ। एही जुड़ाओ आ लगाओ संग जतऽ लोक रहैत अछि सएह "घर" थिक। मुदा एहि घर लेल मनुक्ख आ मनुक्खता अपेक्षित अछि। एही ठाम आबि कऽ 'घरमुँहा' मनुक्ख अपनाकेँ सार्थक बना लैत अछि।

अपन **मंतव्य** editorial.staff.vidaha@gmail.com **पर**
पठार।

२.८.लालदेव कामत-डा० राम भरोस कापड़ी "भ्रमर" : एक व्यक्तित्व



लालदेव कामत, संपर्क-०७६३१३९०७६१

डा० राम भरोस कापड़ी "भ्रमर" : एक व्यक्तित्व

स्वनामधन्य ७१ वर्षीय बघचौरा गाम निवासी श्री रामभरोस कापड़ी एक व्यक्तियेटा नहिँ अपने आपमे एक संस्था सन लोक छथि। ई बहुआयामी प्रतिभा'क धनी साहित्यकार छथि। हिनक जन्म २००८ संवत्, साउन मास तदनुसार ५ मई १९५१ केँ नेपाल देशक धनुषा जिला केर गाउं पालिका वार्ड -४ बघचौरा नामक गाममे भेल छन्हि। वर्तमान में ई रहय छथि उप नगरपालिका वार्ड १ शिवपथ जनकपुरधाममे, जतय ओ पाँच दशक सँ अहर्निश मैथिली साहित्य लेल सेवा करैत अयलाह अछि।

हिनक दादा मिठू लाल पेसर मनोरथी क' पुत्री दाया रहनि आ पुत्र राम गुलाम व पुत्रवधू दुखनी देवी केँ दू पुत्र क्रमशः सुकुमार आ रामभरोस एवं एक पुत्री सोनावती भेलनि। रामभरोस कापड़ी जीक किशोर अवस्था मे धनुषा जिलाक भगवानपट्टी गामक दलतीया देवी केँ संग विवाह भेलनि, जाहि सँ तीन पुत्र क्रमशः राम नारायण कापड़ी- जनकपुर एक्सप्रेस क' सम्पादक आ राजनीति सँ सम्बन्ध , प्रदीप कापड़ी - नेपाल खाद्य संस्थान में कार्यरत आ संदीप कापड़ी - उच्च कोटिक कम्प्यूटर ग्राफिक एक्सपर्ट , एवं दू विवाहित बेटी प्रमिला छन्हि। कापड़ी जीक साहित्यिक नाम 'भ्रमर' शब्द चर्चित छन्हि। बालपनमे हिनक शिक्षा - दीक्षा गामेक एक गिरहस्त कन्हाई साहूक दलान पर मधुकरही निवासी गणेश लाल कर्ण जीक चटिसारमे शुरू भेलनि। हिनका ५० बिगहा जमीन जत्था आ जनकपुर टीशनक उत्तरवारि कात पक्का मकान रहनि, ततहि रहिकय सरस्वती हाई स्कूल सँ मैट्रिक पास कयलाह। ओ त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडू के अन्तर्गत रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस सँ मैथिली विषय(पहिल बैच) में एम ए, पी एच डि० (मानद) धरि कयने छथि। नेपालक मधेशक सरकार अपना प्रदेशमे मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठान'क गठन कय लम्बित ऐ योजनाके मंत्री परिषद सँ मंजूरी दैत हिनका संचालन समिति केर अध्यक्ष बनौलक हन्। साहित्य क्षेत्रमे हिनक ५०म् कृति 'मिथिला'क लोकजीवन; लोक संदर्भक किछ मास पूर्व जनकपुर धाममे विमोचन भेल छल। एहि सँ पूर्वहि ओ नेपाल सरकारक नियुक्तिमे साझा प्रकाशन अध्यक्ष आ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक परिषद् सदस्य भ' चुकल छथि।

भाषा समृद्धि लेल भ्रमरजी ओतुका मुख्यमंत्री लालबाबू राउत जीके ज्ञापन दैत एक समय बुझौने रहथिन - स्थानीय किछु संघ , संस्था के उठल माँगपर सहानुभूति पूर्वक विचार कयल जाय। आब मधेश सरकार अपन प्रदेशमे मातृभाषा उत्थानक लेल एतुका संस्कृति, कला, नाट्य, संगीत, पुरातत्व अधिक उत्थान हेतु काज आरंभ केलक। एहि विभाग क' विकासमे लागल, हेरायल , नुकाएल प्रतिभा सबके खोजिकय तकर संरक्षण , सम्बर्धनक संगहि, सम्मान आ पुरस्कारक व्यवस्था ई प्रतिष्ठान करबे करत , पुस्तकाकार प्रकाशन सेहो

। पूर्वमे रामभरोस जीकेँ नेपाल विद्या मैथिली भाषा साहित्य पारोतोषिक सेहो भेटल छन्हि। हिनका नामे आरो अनेक पुरस्कार भेटल छन्हि।

नेपाली आदि कवि बसकट्टा भानुक प्रथम कविता सँ प्रेरणा पाबि ओ बन्न कोठरी औनाईत धुआँ रचलनि। नेपाल' क पहिल 'क' श्रेणिक मैथिली भाषा में "आंजुर - पत्रिका" केर विगत ३२ शाल सँ सम्पादन करैत आबि रहलाह अछि। जेबकट्टा गिरहकट्टा गरदनिकट्टा'क इतिहास कोना लिखू हम, श्रद्धांजलि रूपेँ - आजुक संदर्भमे भानुकेँ प्रति हिनक श्रद्धांजलि कविता पढैत पाठक निमग्न भ' जाईत छैक। हिनक दीर्घ कविता 'नहिँ आब नहिँ' पाठ्य करय योग्य पाठकके बुझाई छन्हि। कथा विधामे हिनक - तोरा संग जेबौ रे कुजबा केँ मैथिली अकादमी- पटना सँ १९८४ में पुरस्कृत कयल गेल रहनि। गजल संग्रह- मोमक पघलैत अधर- १९८३, गीत गजल संग्रह अपन अनचिन्हार- कविता संग्रह १९९०, रानी चन्द्रवती, नाटक - एकटा और बसंत, महिषासुर मुरादाबाद, अन्ततः कथा संग्रह, मैथिली संस्कृति बीच, रमाउंदा- सांस्कृतिक निबंध संग्रह नेपाली में आ हिनक " नहिँ आब नहिँ" केर मैथिली अनुवाद भयो अब भयो, मनु ब्राजाकी द्वारा कयल गेलनि अछि। कविता - बिसरल - बिसरलसन, जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिंग), लोक नाट्य : जट जटिन (अनुसंधान) छन्हि। हिनक सम्पादन कयल - मैथिली पद्य संग्रह, लाबाक धान कविता संग्रह-माथुरजीक " त्रिशुली" खंडकाव्य, मैथिली पत्रकारिता, मैथिली लोकनृत्यः भाव भंगिमा एवं स्वरूप - आलेख संग्रह बहुचर्चित भेल रहनि। हिनक प्रमुख पोथी :- युद्ध भूमिक एसगर योध्दा, हुगली उपर बहैत गंगा, डॉ ० प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' आ नवारम्भ प्रकाशन सँ बहराएल 'एन्टीवायरस पोथी', सुली पर ईजोत प्रकाशित छन्हि। मैथिल लोक-संस्कृति विविध आयाम- ने.प्र.प्र. आ मिथिलाक सपुत : राजा सलहेस - दीनाभद्री, अहाँ जे कहलहुँ, अन्हरियाक चान, लोक नायक सलहेस (द्वितीय खण्ड), समयको अन्तराल पहुँचाउँदै, सीमा के आर- पार, चीन- जे हम देखल(यात्रा संस्मरण) केर जोरा नँय छैक।

हम सब मैथिली भाषी लोक राम भरोस कापड़ी भ्रमर जीके गीति रचना

भिडियों एलबंम निम्नलिखित सुनि कीर्त कृत्य होइत छी। यथा -:

१. अहाँ आबि की छनकय हमर कंगना
२. आउ,आउ,आउ दिल खोलिकऽ आउ
३. प्रिय प्राणनाथ सादर प्रणाम यौ
४. मचल आई होरी हो
५. मनके भीतर दर्द भरल अछि
६. बहमुआ हो , करि दैहो नैहर केँ विदाई
७. रून्झुन रुन्झुन बाजे पैजनिया हो
८. पाबिने हमई जोरिया
९. राखी केँ बन्धनमे भैया ...

राम भरोस कापड़ी पिछरल समाज में शिर्ष साहित्य सेवी छथि। कोनू नौकड़ी स्कूल- कालेजमे नहिं केलनि। हिनक रचना संसार बोडरके दूनू पार खुब धूम मचेने छैक आ व्यापक समृद्धिक आचरण ग्रहण कयने छैक। कोनू पुस्तकालयमे एकठाम अध्येताके पढबाक हिनका मादे मातृभाषा अनुराग जानि सकबाक खगौट तँ अछिये।सवासय पोथीक संख्याँ पुरना से हार्दिक शुभकामना

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com **पर**
पठाउ।

२.९.अजय अनुरागी- मैथिली भाषाक साहित्यकार 'भ्रमर' हरेक बिधामे पुस्तक प्रकाशन



अजय अनुरागी

मैथिली भाषाक साहित्यकार भ्रमर हरेक बिधामे पुस्तक प्रकाशन

राम भरोस कापडि भ्रमर मैथिली भाषा साहित्यके प्रसिद्ध साहित्यकार छथि। धनुषाके बाघचौडा गाम, जनकपुरधाम उपमहानगरपालिका वडा नम्बर १ आ हंसपुर नगरपालिका वडा नम्बर २ के ७० वर्षीय भ्रमर अखनो साहित्यिक रचना आ पुस्तक प्रकाशनमे सक्रिय छथि। ओ कहैत छथि, मैथिली भाषा साहित्यक क्षेत्रमे हम एकमात्र एहन व्यक्ति छी जे पूर्णकालिक छी।

मैथिली भाषा साहित्यके क्षेत्रमे बहुत लोक कलम चलबैत छथि मुदा हुनकर मुख्य पेशा अलग अछि। लेकिन हुनकर कहना छै जे हुनक प्राथमिक व्यवसाय मैथिली भाषा साहित्यके क्षेत्रमे लेखन छैन्ह।

डा. धीरेन्द्रक कारणें साहित्यकार बनि गेलाह

जहियासँ जनकपुरक सरस्वती हाई स्कूलमे पढ़ैत छलाह तहियासँ भारतमे प्रकाशित बाल पत्रिका पढ़बामे रुचि छलनि। भारतक पटना, कलकत्ता, दिल्ली, मुंबईसँ प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका हुनक घरक समीप जनकपुर रेलवे स्टेशन पर पोथीक स्टा ल पर अबैत छल। हिन्दी भाषामे बाल साहित्य पत्रिका जेना भारतक मुंबईसँ प्रकाशित पराग पत्रिका आ दरभंगासँ प्रकाशित बालक पत्रिका पढ़ैत छलाह। पढ़ैत मात्र नहि, हुनक कतेको रचना बालक पत्रिकामे छपैत छल।

ओहि समय मे अपन घर लग जनकपुर स्थित राम स्वरूप राम सागर बहुउद्देशीय कालेजमे अध्यापन करयवला प्रोफेसर धीरेश्वर झा धीरेन्द्र के संपर्क मे आबि गेलाह। ओही कालेजक राजनीति विज्ञानक प्राध्यापक नारायण प्रसाद साह हुनके घरमे किराया लऽ कऽ रहैत छलाह। डा. धीरेन्द्र ओतहि नियमित अबैत रहथि। एही कारणे प्रोफेसर झासँ सम्पर्क भेलनि।

भ्रमर जखन क्लास ७ मे पढ़ैत छलाह तखन हिन्दी मे एकटा कथा लिखलनि जकर नाम छल इमान्दार बालक आ झा केँ देखलनि। ओ कथा हिन्दी मे लिखल गेलाक कारणें नहि देखलनि। झा कहलखिन जे कथा अपन मातृभाषा मैथिलीमे आनब तखन मात्र देखब। तखन मैथिली मे अनुवाद क देख देलखिन। आ प्रोफेसर साहेब एकरा पाँति दर पाँति सुधारि देलनि। आ फाइनल लिखि कऽ आन कहलखिन्ह।

भ्रमर संपादित कथा दोसर पेपर पर लिखि अनलनि। तकरा बाद प्रा..झा मिथिला मिहिर नामक भारतसं प्रकाशित साहित्यिक पत्रिकाक संपादक सुधांशु शेखर चौधरीकेँ पत्र लिखि कथा छपबाक आग्रह

केलनि। किछु दिनक बाद पत्रिकाक नेना भुटकाक चौपाडि स्तम्भमे भ्रमरक कथा छपल। तकरा बाद भारतक कलकत्तासँ प्रकाशित आंखर नामक पत्रिका मे (१९६८ई.)नव हस्ताक्षरक रूप मे हुनक लिखल अनहरिया इजोरिया नामक कविता प्रकाशित भेल।

हिनका द्वारा लिखल गेल कविता आ कथा भारतक विभिन्न साहित्यिक पत्रिका मे प्रकाशित होइत रहल। जँ डा. धीरेन्द्र नहि रहितथि त हम सम्भवतः साहित्यकार नहि भ पबितहुँ भ्रमरक उक्ति छन्हि।

साहित्यके हर विधामे पुस्तक

पत्रकारिता पेशामे सेहो शुरुआत केलनि आ साहित्यक क्षेत्रमे सेहो लिखैत रहलाह। आब साहित्यक हरेक विधामे मैथिली भाषामे पोथी प्रकाशित क चुकल छथि। कथा, कविता, उपन्यास, आलोचना, नाटक, निबंध, यात्रा संस्मरण सहित सब विधामे पोथी लिखने छथि। आइके दिनमे ५०सं उपर पुस्तक प्रकाशित भ गेल छन्हि।

हिनक बन्न कोठारी औनाइत धुवा नामक काव्य संग्रह, नहि आब नहि नामक दीर्घ कविता, मोमक पघलैत अधर नामक गीत गजल संग्रह, अपन अनचिन्हार, युद्धभूमिक एसगर योद्धा नामक कविता संग्रह, अन्हरियाक चान गजल संग्रहक प्रकाशन भेल अछि। मैथिली भाषामे लिखल दीर्घ कविता नहि आब नहि के नेपाली भाषामे भयो, अब गयो शीर्षकसँ नेपाली भाषाक प्रसिद्ध साहित्यकार मनु बज्राकी द्वारा अनुवाद कयल गेल अछि। बाद मे ई दीर्घ कविता नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित प्रज्ञा पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल।

तोरा संगे जयबौ रे कुजवा, हूगली ऊपर बहैत गंगा, एण्टी भायरस नामक कथा संग्रह प्रकाशित अछि। हुनक दावा छनि जे नेपालमे मैथिली भाषामे हुनक लिखल तोरा संग जेबौ रे कुजवा पहिल आधुनिक कथा संग्रह थिक। हुनक ईहो दावा छन्हि जे ई कथा संग्रह बिहार सरकारक

सरकारी संस्था मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित नेपालक पहिल आधुनिक मैथिली कथा संग्रह छैक।

हुनकर लिखल उपन्यास घरमुहाके भोजपुरीक बरिष्ठ साहित्यकार उमाशंकर द्विवेदी भोजपुरी भाषामे आ भारतके चर्चित साहित्यकार डा.प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन हिन्दी भाषामे अनुवाद कएने छथि। भ्रमर स्वयं कहैत छथि जे मधेश आन्दोलनक समयमे वर्षोंसँ जनकपुरमे रहनिहार पहाड़ी समुदायकेँ कोना मधेश छोड़य पड़ल छल ताहि पर लिखल ई उपन्यास हुनक पसीनक कृति थिक।

कतेको नाटक लिखने छथि। मैथिली भाषामे रानी चन्द्रवती, एकटा आओर बसंत, महिषासुर मुरदावाद, भैया अएलै अपन सोराज, सुली पर इजोत नामक नाटकलगायत दर्जनो नाटक प्रकाशित छन्हि आ मंचित होइत रहैत छन्हि। धर्मेन्द्र झा विहवल हुनक लिखल नाटकक अनुवाद नेपाली भाषामे भ्रमरका सर्वश्रेष्ठ नाटकहरु नामसँ कएने छथि।

एकर अतिरिक्त विभिन्न विचार संग्रह, निबंध संग्रह, यात्रा संस्मरण संग्रह सेहो प्रकाशित कएने छथि। समय समय पर कतेको पोथी आ रचनाक संपादन करैत आबि रहल छथि। भ्रमर कहैत छथि जे हुनका द्वारा लिखल गेल कविता, नाटक आ कथा नेपाल आ भारतमे स्कूल आ विश्वविद्यालय स्तरीय पाठ्यक्रममे शामिल कए पढ़ाओल जा रहल अछि।

साहित्यमे योगदानके कारण नेपालक सरकारी संस्था तत्कालीन नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रथम मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार(रु.५००००), विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा द्वारा मिथिला विभूति सम्मान, शेखर प्रकाशन पटना द्वारा शेखर सम्मान से सम्मानित कएल गेल छथि। तहिना मैथिली साहित्य परिषद जनकपुर द्वारा वैदेही प्रतिभा पुरस्कार, अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मुंबई द्वारा मिथिला रत्न सम्मान, मधुरीमा द्वारा देल गेल नेपाल मधुरीमा सम्मान, चेतना समिति पटनाके यात्री चेतना पुरस्कार स सम्मानित भेल छथि।

तहिना साझा प्रकाशनकेँ साझा लोक संस्कृति पुरस्कार, विद्यापति मैथिली भाषा साहित्य पुरस्कार, पार्वती प्रतिष्ठान सिसौटिया सर्लाही केँ पार्वती सम्मान सँ सम्मानित कयल गेल छथि।

भ्रमर नेपालक पहिल मैथिली भाषाक साहित्यकार छथि जे नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक परिषद्क सभा सदस्य बनबामे सफल भेलाह आ बादमे परिषद्क सदस्य बनलाह। तहिना साझा प्रकाशनके अध्यक्षके रूपमे भ्रमर पहिल मधेशी व्यक्ति भेलाह। ओ अपन छोट कार्यकालमे नेपाली भाषाके अलावे मैथिली सहित अन्य भाषामे प्रकाशन शुरू केलनि। मैथिली बाल कथा संग्रह बगियाक गाछ हुनक कार्यकालमे पहिल बेर साझा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित भेल। आ जे साझा प्रकाशनसं पुरस्कृत सेहो भूल छल।

एतबे नहि, काठमांडू आ जनकपुरमे ३ टा अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनके सफलतापूर्वक आयोजन कयलनि अछि।

हुनकऽ कहब छन्हि जे मैथिली भाषामे लिखी क समाजके बदलना या परिवर्तन करना बहुत कठिन काम छै। हुनक कहब छनि जे प्रकाशनक अभावमे मैथिली भाषाक साहित्य नहि फलल फूलल अछि, त प्रकाशक लोकनिक अभावसें पाठक धरि नहि पहंचि पबैत अछि।

भ्रमर कहैत छथि, "एहन स्थिति अछि जे स्वयं लिखनिहार लोक स्वयं पढ़ैत छथि वा अपन गोलक लोक पढ़ैत छन्हि, एकरा कीनि क पढ़बाक कोनो आदति नहि अछि। " मुफ्तमे बाँटबाक प्रवृत्ति अछि। मैथिली भाषाक जनसंख्या विशाल अछि, मुदा मैथिली भाषाक स्तरीयताक कारणेँ पाठक नहि अछि, भ्रमर कहैत छथि, "मैथिली भाषाक मानकके सहज बनाओल जाय आ जँ मैथिली भाषामे लिखल रचनाक अनुवाद नेपाली, अंग्रेजी आ हिन्दीमे कयल जाय" त आनोभाषा मे सेहो, एकरा बाजार भेटत।"

ओ टिप्पणी केलनि जे रचना मात्र पोथीक संख्या बढ़ेबाक लेल लिखल जा रहल हो त ताहिमे गुणवत्ता अभाव रहत। लिखबा लेल पहिने पढ़य

पड़त। मुदा ओ कहैत छथि जे एतय पढ़बाक संस्कृति नहि अछि ताहि लेल समस्या अछि। साहित्य समाजक असली दर्पण थिक आ ओ दुख व्यक्त करैत छथि जे ई समाजक यथार्थक वर्णन करबाक लेल कम लिखल जा रहल अछि।

ओ मैथिली भाषा सहित विभिन्न मातृभाषाके विकास लेल राज्य सरकारके आगा आबक चाही।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.अश्विनी कुमार आलोक-रामभरोस कापड़ि भ्रमरः भारत-नेपालक सांस्कृतिक सेतु



अश्विनी कुमार आलोक, संपर्क- 8789335785

रामभरोस कापड़ि भ्रमरः भारत-नेपालक सांस्कृतिक सेतु

करीब डेढ़ दशक पहिने हम नेपाल गेल छलौं।कुनू साहित्यिक कार्यक्रम मे देश सँ बहरा भाग लेबाक ई हमर पहिला अनुभव छल।एकरा पहिने एक बेर आरो नेपाल गेल छलौं अपन दादीक आँखिक ऑपरेशन करेबाक लेल।लहान जेबाक क्रमे त ई बुझना पड़ल , जे दोसर देश मे जेबाक लेल कम सँ कम दू दिन चाही।मुदा ई नहिं लागल , जे लहान नेपाल मे अछि आ कि हम भारतक बिहार सँ गेल छलहुँ। तेहने घर - दुआर ,तेहने रहन - सहन आ तेहने बात - विचार।जेहिना देश अहाँक , तेहिना हमर।हम एक - दोसर सँ कुनू सामरिक सीमा सँ सेहो विभक्त नहिं छी , कियेक त

हमरा - अहाँक मध्य कुनू विवाद एहेन स्तर पर नहिं आएल।हमर संबंध बेटी - रोटीक संबंध छल , घर - परिवारक संबंध छल।

नेपालक जनकपुर मे ई कार्यक्रम भारत - नेपालक दूतावास केँ आपसी संबंध सँ आयोजित केल गेल छल। हम आदरणीय प्रफुल्ल कुमार सिंह ' मौन ' क संगे गेल छली।राति मे दरभंगाक संस्कृत शोध संस्थानक तत्कालीन निदेशक देवनारायण यादवक आतिथ्य स्वीकार केल , सूर्योदय हेबाक पहिने बस सँ जयनगर गेलौं आ तकर बाद नेपालक बस सँ जनकपुर।जनकपुरक एक गोट विशिष्ट सभागार मे ओ कार्यक्रम दू दिनी आयोजित केल गेल छल , जकर मुख्य कर्ता - धर्ता रामभरोस कापड़ि ' भ्रमर ' रहथि।उद्घानटक बाद पाँच टा कवि केँ काव्यपाठ सुनेबाक मुख्य अतिथि मादे इच्छा व्यक्त केल गेल छल।ओ पाँच गोट कवि मे एकटा कवि हमहुँ छली।ताहि दिन सँ रामभरोस कापड़ि ' भ्रमर ' सँ जुड़ल छी।हमरा मोन पड़ैत अछि , जे भारत मे कुनू महत्वपूर्ण मैथिली कार्यक्रम संभवतः नहिं भेल हुए , जाहि मे रामभरोसजीक भूमिका नहिं हुए।विशेषक' दरभंगाक कार्यक्रमे।ओ दरभंगा आ जयनगरक साहित्यिक धुरिएटा नहिं छथि, भारत आ नेपालक सांस्कृतिक संबंधक एकटा दायित्वसजग व्यक्तित्व छथि।जनकपुरक ओ कार्यक्रम सँ पहिने हुनक नाम बिहार सँ प्रकाशित हुए बला अनेक रास पत्र - पत्रिका मे पढ़ले छलहुँ। ओ मात्र कार्यक्रमक सूत्रधार नहिं छथि,सिद्धांत और व्यवहार सँ सेहो भारत आ नेपालक सांस्कृतिक समन्वयक हितचिंतक छथि।हमर आवास वैशाली जिलाक महनार मे अछि आ हमर आवास सँ कतोक दूर रहैत छलाह मैथिली आ नेपालीक प्रसिद्ध लोकसाहित्य विशेषज्ञ प्रफुल्ल कुमार सिंह ' मौन ' । मौन जी सँ हुनक बड्ड आत्मीयता छलनि,मौन जी ए त आबैत रहथि।मुदा मौन जी एत' भ्रमर जी सँ हमरा भेंट नहिं भेल। नेपालक ओहि कार्यक्रमक बाद हमर भेंट एक बेर चेतना समितिक कार्यक्रम मे भेल छल , तकर बाद हुनक बेटीक घर पटनाक बोरिंग कैनाल रोड मे। हुनक जमाय इंजीनर छथि,ओ पटना मे बसि गेल छथि।मुदा एहेन नहिं , जे जमाय नेपालक छथि।हुनक घर ओम्हरे कतो मधेपुरा,मधुबनी दिस छैन।अर्थात् ओ मूल रूप सँ बिहारक निवासी छथि।रामभरोस कापड़िक

घर धनुषा ।हम मौनजीक संगे ओहि कार्यक्रमक दौरान गेल छली। ओ विशुद्ध साहित्यजीवी छथि,भावुक मनुष्य आ सजग पत्रकार। हुनक विशेषता ई अछि , जे ओ संबंध बनेबा आ संबंध के विस्तार देबा मे विश्वास रखैत छथि।हुनक साहित्य मैथिली आ नेपाली मे अपन विशिष्ट स्थान रखैत अछि। ओ लोकसाहित्य के मर्मज्ञ विद्वान अछि। लोकवार्ता के संग्रह आ विश्लेषणक क्षेत्र मे ओ मान्य विद्वान छथि। हुनक विद्वता मात्र पोथीक पढ़ला सँ नहीं संपन्न भेल अछि,ओ क्षेत्र भ्रमण आ संगति - सहयोग सँ अपन ज्ञानक विस्तार के पुष्ट केने छथि।हुनक साहित्य नेपाली आ मैथिलीक समृद्धिक काज करैत अछि।ओ निश्चंकरूप सँ भारत आ नेपालक संबंधक समर्थन करैत अछि। जहिना भारत आ नेपालक आपसी संबंध कुनू राजनीतिक सीमारेखाक ऊपर अछि,तहिना भ्रमरजीक साहित्य भारत - नेपालक सांस्कृतिक परंपराक प्रदक्षिणा करैत बूझि पड़ैत अछि।हुनक साहित्य लेखनक आरंभ नेपाल सँ भेल ,कियेत ओ नेपालक धनुषा जिला अवस्थित बघचौड़ा गाम मे जन्म लेलनि।पढ़ाई नेपालक त्रिभुवन विश्वविद्यालय मे केलनि। मुदा हुनक पहिल साहित्य रचना 1964 ई मे पटना सँ प्रकाशित हुए बला प्रसिद्ध मैथिली साप्ताहिक ' मिथिला मिहिर ' मे छपल।ओ रचनाक नाम छल ' ईमानदार बालक ' ।तकर बाद ओ साहित्य आ पत्रकारिता केँ अपन जीवन समर्पित क देने छलथिन।हुनक पहिल पोथी मैथिलीक कविताक छल ' बन्न कोठरी औनाइत धुँआ ' ।एहि पोथी मे रामभरोस कापड़ि ' भ्रमर ' ओ विसंगतिक चर्च कैने छथि , जाहि मे मनुक्खक जीवन औनाइत छल। मनुक्ख बुझैत अछि जे ओकर शोषण , दमन आ प्रताड़नाक जिम्मेदार लोक ताहि दिन धराशायी भ जायय,जाहि दिन प्रतिकार आ क्रांतिक मशाल जरि जायत। मुदा एहेन नहिं भ सकैत अछि। मनुक्खक आगि ओकरा मे कुलबुलाइत अछि,ओकरे जरबैत अछि आ ओकर देह कुनू बन्न कोठरी जकाँ विवश ठार अछि,ओकर धुँआ औनाक' ओकरे प्रताड़ित करैत अछि।एहिना शोषक वर्गक व्यवसाय शोषितक निष्प्राण जकाँ मनोदशा सँ आगाँ बढैत अछि।' बन्न कोठरी औनाइत धुँआ ' मे रामभरोस जी जे परिस्थितिक वर्णन करैत छथि,तकरे विस्तार एक गोठ पैघ कविता पोथी ' नहिं , आब नहिं ' मे ओ केने छथि।मनुक्ख अपन पराजित जीवन सँ व्यथित अछि,बेचैन अछि आ बेर

बेर ओ संकल्प लैत अछि , अपन जीवनक एहि गति जिम्मेदार लोकक ओ खबर लेति, मुदा ई संकल्प कत' फुरैत अछि। एहेन मनोदशाक वर्णन करबाक पीछू रामभरोस जीक कवित्व समूचा शोषित - उत्पीड़ित समुदायकें प्रतिनिधित्व करैत छनि। हुनक आरो मैथिलीक कविताक पोथी एहि प्रकारें अपन विश्वसनीय आधार बनबैत अछि, जाहि मे जीवनक समरस समाजक निर्माण हुए आ सभ कें समान अवसर आ अधिकार भेंटै। हुनक दू टा मैथिली कविता पोथी हुनक कवित्वक विस्तार आ ओकर आवश्यक वर्ण्य विषयक उदाहरण लक' काव्यविश्लेषक लोकनिकें अपन महत्त्व बतेबा मे सर्वथा सक्षम अछि 'मोमक पघलैत अधर' आ 'अपन अनचिन्हार'। तकर बाद 'युद्ध भूमिक एसगर योद्धा' आ 'अन्हरियाक चान' हुनक कविताक ओ पोथी छल, जाहि मे एक दिस मनुक्ख प्रेम आ शृंगारक भाव सहेजबाक लेल प्रयत्नशील छल, त दोसर दिस ओ जीवनक युद्ध भूमि मे अपन युद्ध एसगरे लड़ेबाक लेल विवश छल। रिश्ता, संबंध आ भावक हास करैय नवका समय मनुक्ख कें एक दोसर सँ कतेक विलगवैत अछि, रामभरोसजीक कवित्व ओकर चिह्नित करैत अछि।

ओ कविता लेखन सँ अपन लेखकीय जीवन शुरु केलनि, मुदा हुनक लेखन खाली कवितेटा मे नहिं रुकल। साहित्यक अनेक रास विधा ओ समृद्ध केलनि, जाहि मे कथा, उपन्यास, नाटक आ यात्रावृत्तक क्षेत्र विस्तृत छल।

हुनक कथा संग्रह 'तोरा संग जैबो रे कुजबा' क प्रकाशन बिहार सरकारक मैथिली अकादमी कैले छल। 'हुगली ऊपर बहैत गंगा' आ 'एंटी भाइरस' नामक हुनक कथाक पोथी हुनक कथाशिल्प मे ग्राम्य संवेदना आ गामक बदलैत स्वरूप कें विस्तार सँ बन्हबा मे सफल भेल। हुनक उपन्यास 'घरमुँहा' घर सँ निष्कासित आ संत्रस्त एक गोठ जीवनक तेहेन त्रासदीक कथा अछि, जाहि मे व्यक्तिक घर सँ दैहिक निष्कासन भले भ गेल हुए, मुदा मन सँ ओ अपन घर सँ बन्हाएल रहैत अछि। असल मे ई नेपालक मधेश आन्दोलन पर आधारित अछि। आ पहिल उपन्यास सेहो।

रामभरोस कापड़ि ' भ्रमर ' लोक संस्कृति मे सामाजिक चेतना हेरनिहार एकटा विश्वस्त लोक छथि।नेपाली आ मैथिली मे हुनक अनेक रास पोथी छपल अछि आ ताहि कारण सँ ओ अपन दृष्टि आ विवेचना सँ चमत्कृत करैत छलथिन।हुनक एहि प्रकांड विद्वतार्के अनेक रास सम्मान भेंटल अछि।भ्रमर जी हिंदी , नेपाली आ मैथिली साहित्य केँ अनुवाद क्षेत्र मे अपन विलक्षण योगदान दैत दैत रहलाह अइछ। ओ भारत आ नेपालक सांस्कृतिक सेतु छथि।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११. चंद्रेश-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' : विचार, संवेदना आ चेतना



चंद्रेश-संपर्क-9430640883

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' : विचार, संवेदना आ चेतना

इन्द्रधनुषी सातो रंगक प्रतिच्छविकेँ अपनामे समेटने-बटोरने राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क वैविध्य साहित्य जनसमाजसँ जुड़ल अछि। हिनक रचना जन-जनसँ प्रभावित ओ परिवेशगत समय आ समाजसँ सम्बन्ध बनबैत अछि। हिनक दृष्टि शोषित-पीड़ित समाज दिस टकटकी लगौने सत्यानुभूति करबैत अछि। जनसमाजक हृदयक करुणा, पीड़ा, दया, प्रेम आदिकेँ उभारिकऽ जनसंवेदनाकेँ मानवीय मूल्यबोधक संवाहक भऽ जगबैत अछि।

जीवन-संघर्षमे जूझैत चलैत चढ़ैत-बढ़ैत कोनो रचनाकारक आत्मसजगता जँ मौलिक विचारधरामे कलात्मक ढर्छेँ स्वाभाविक यथार्थबोधक उपस्थितिबोध अपन रचनामे प्रस्पुफटितकऽ करबा दैत अछि तँ ओहन रचनाकार युग आ समयक अतिक्रमण कऽ अपन एकटा फूट इतिहास रचि नवताबोधक सनेस बिलहि दैत अछि। अपने समय आ

युगक अतिक्रमण कऽ हवाक विरोधमे चलिकऽ संकटापन्न स्थितिसँ जूझैत संघर्षपूर्ण चुनौतीकेँ स्वीकारब अबस्से सजग ओ सचढ़ रचनाकारक दायित्वबोध थिक। बहुआयामी व्यक्तित्व ओ कृतित्वक धनी भ्रमरक साहित्यिक अवदान विशेषे अछि। ओ सदाबहार लेखक छथि जे रचनाकेँ सदाजीवी बनाकऽ ओहिमे अपन कलात्मकताक संग अपन वैविध्यपूर्ण विवेककेँ झोंकि पद्माइत चिनगीकेँ लहका दैत छथि। जेँ ओ सूक्ष्म दृष्टिक परिचायक छथि तेँ ओ अपन सूक्ष्म दृष्टिक परिचायक भऽ साहित्यिक, राजनैतिक आ विचारधराकेँ एकसंग इंगित करैत छथि। देखब, परेखब आ स्पष्टतः इमानदारीपूर्वक काज करब अबस्से एकटा चुनौती ठाढ़ करैत छथि। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' अबस्से एहि चुनौतीकेँ स्वीकारैत अपन कलमक लोहा मनबैत छथि। लोक चेतनाक रचनाकार भ्रमर पाठककेँ समय आ संस्कृतिकेँ बुझयबाक भरिसक प्रयास करैत छथि। एहि हेतु हिनक रचना अबस्से परम्पराकेँ नव रूपमे परिभाषित करैत वर्तमानक दुरुक्खा पर भविष्यसँ अन्तर्सम्बन्ध बनबैत अछि। साहित्य आ संस्कृतिसँ सम्बन्ध हिनका छात्रावस्थाहिसँ जागल। हिनक पहिल प्रकाशित रचना 'इमानदार बालक' जे 1964 ई.मे मिथिला मिहिरक नेनाभुटकाक चौपाड़िमे आयल अछि। तकर बाद पीठियाठोक आठ गोट गीतक संकलन 'जवानीक दिन' 1965 ई.मे प्रकाशित भेल।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क जन्म 2008 साल साओन 22 गतेकऽ प्रमाणपत्रक अनुसारें बघचौड़ा, जिला- धनुषा, जनकपुर अंचल, गाबिस बघचौड़ा, वार्ड नं.-1 मे भेल। एहि गामक चौहद्दी अछि - उत्तर-मिथिलेश्वर मौआटी गा.वि.स., दक्षिण- मानसिंह पट्टी गा.वि.स.। हिनक वंशावली अछि-

मनोरथी कापड़ि

मीठू लाल कापड़ि

रामगुलाम कापड़ि ;पत्नी दुःखनी देवी

दयावती देवी सुकुमार कापड़ि रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' ;पत्नी-
दलतीया देवी सोनावती देवी

रामनारायण कापड़ि, प्रदीप कुमार कापड़ि, नगीना देवी, प्रमिला कुमारी
देवी, संदीप कुमार

बघचौड़ा गामक नाम पड़ल हेतैक जे एतय बाघ चराउर करैत छलैक। एहि ठामक जमीन कोह-कहबैत छलैक जे अढ़ाइ-तीन किलोमीटर दूरी धरि छल। हिनक जन्म सुसम्पन्न परिवारमे भेल रहनि। गाम बघचौड़ा की कही, परोपट्टामे सभसँ धनीक घरमे। हिनक बाबूजीकेँ अगगह-विगगह जमीन, लाखक लाख लगानी, जमीन्दारोकेँ कर्ज दैत छलथिन। गामसँ बाहर सटले खेत रहनि। गोरहासँ लऽ कऽ कोह धरि। बड़द खड़कै छल तँ ओतहि उफपर होइत छल। एहि बीचमे आनक जमीन नहि छल। अपने खेतमे लीख। अपने खेतक आरिसँ पानि पटाओल जाइत छल। पटौनी प्रकृति पर निर्भर छल। चूरे पहाड़क पृष्ठभूमि जे पहाड़ 25-30 कि.मी.बेसी नहि होयत। पहिने 900 बीघा बाँधक छलैक। आब 300 बीघाक छैक जे बान्हिकऽ पटाओल जाइत छलैक। ओना आब बान्हक औचित्य समाप्त भऽ गेलैक। गहराइवला बोरिंग धँसाओल गेल छैक, मुदा तैयो उपयुक्त तेना भऽ कऽ नहि छैक। आब पाइप गाड़िककऽ प्लग लगाकऽ मोटरसँ जल टानैत छैक। अर्थात् ढेकुलसँ एक बीघा धरि पटौनी कयल जाइत छैक जाहिमे एक समयमे 5000 सँ 6000 टाका धरि लगैत रहैक, आब हजार लागिए जाइत छैक। धन, गहूम, तोरी, सरिसो आदि मुख्य उपजा छैक। बघचौड़ाक पूब अरहरी नदी जकर चौड़ाइ 25सँ 30 फीट आ गहराइ बेस छैक। गाममे हिनक पिताक स्थिति- पात जेँ पूर्णतः सफल रहनि तँ अदिकारी नामसँ सेहो जानल जाइत छलाह। कोनो दोकान-दौरी एहन नहि जे हिनक नाम उचरला पर केओ पाइ माँगय। सभकेँ हिनक पिता पर भरोस छलनि। ओ बघचौड़ा गाम पञ्चायतक तीन खेप प्रधन रहलथि। ओना ओ गामक मुखिया आ तकर बाद वैह पद भऽ गेल प्रधान पञ्च। ओ गामक पञ्चैती करथि। हिनके बाबू राष्ट्रीय प्राथमिक विद्यालय बघचौड़ा खोललथि। ओ स्कूलमे अध्यक्ष भेलाह वा कही तँ सर्वेसर्वा यैह

रहथि। एहीमे मैथिलीक नेपालक प्रतिष्ठित पत्रकार ओ साहित्यकार श्रीश्याम सुन्दर कापड़ि 'शशि' शिक्षक रहथि आ राजविराज कओलेजमे प्राध्यापक भेलथि। ओना वर्तमान समयमे आर.आर.कैम्पस, जनकपुरमे छथि। हिनक बाबूजीक बाद हिनक जेठ माय सुकुमार कापड़ि अध्यक्ष भेलाह आ तकर बाद राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' दस वर्ष लगभग एहि पदकेँ सम्हारलनि।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' घरैसी-घरैया शिक्षा प्राप्त कयलनि। हिनक पहिल गुरु मधुकरही निवासी गणेश लाल जे धरती पर भट्टासँ ककहरा लिखेने छलाह। अ आ सँ व्यावहारिक गणित धरि। तकर बाद निम्न माध्यमिक विद्यालय बेलहीमे वर्ग 1 सँ 3 धरि पढ़लनि। ओहि विद्यालयक नाम एखन थिक माध्यमिक विद्यालय बेलही जे बघचौड़ासँ 2 कि.मी.अछि। पयरे आबाजाही। बहुत कठिनसँ गेनाइ-अयनाइ। बहादुर पकड़िकऽ लऽ जानि। पार्टी आ कचरा, करचीक कलम, बोड़ा ओछाकऽ बैसब आदि। वर्ग 4 सँ मैट्रिक अर्थात् एस.एल.सी.सरस्वती मा.बि.जनकपुर, साल 2025।

एकटा बात स्पष्ट कऽ देब उचित होयत जे 12 वर्षक अवस्थामे भगवान पट्टी, मानसिन्ह पट्टी, ग्राम वि.स.क अन्तर्गत दलतीया देवीक संग विवाह भेलनि। पाँचम सन्तानमे तीन गोट पुत्र आ दूटा पुत्री छनि। इहो कहब अनर्गल नहि होयत जे हिनक जन्म जाहि केओट परिवारमे भेल रहनि ताहिमे पढ़ाइ पर ओतेक जोर नहि छल। मुदा, भ्रमर आई.ए.अर्थात् प्रवीणता प्रमाणपत्रासँ उत्तीर्ण कयलनि। ओ बघचौड़ामे जे पढ़ाइ प्रारम्भ कयने छलाह से कन्हाइ साहु नामक व्यक्तिसँ। ओएह सम्पन्न वर्गक ओहि ठाम पढ़बैत छलाह। ओ जनकपुर जे अयलाह से युगल किशोर लालक प्रेरणासँ। वैह हिनक बाबूजीकेँ प्रेरित कऽ पढ़ौनीक लेल जनकपुर जेबाक हेतु कहलनि। जँ जनकपुरमे जगह-जमीन रहनि, एखनो छनि तँ जनकपुरमे पढ़लनि। दोसर, डा.धीरेन्द्र सन अभिभावक भेटलनि आ हुनकेसँ प्रभावित भऽ अपन रचना-संसार बनौलनि।

ओ बच्चेसँ हिन्दी पढ़ैत छलाह। पत्र-पत्रिका पढ़लोपरान्त हिनका भेलनि जे हमहुँ लिखि सकैत छी। खासकऽ लिखबाक अनुभूति ओहि समयक लोकप्रिय उपन्यासकार कुशवाहाकान्त, गुलशन नन्दा आ कर्नल रंजीतक जासूसी उपन्यास सभ पढ़िकऽ लगलनि। गोविन्दसिंहक 'पपिहरा बाजय आधी रात' विशेष नीक लगैत छलनि। बालक, पराग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग, नर-नारी पत्रिका पटना आदिक पाठक ओ रहथि। हिनक लेखनमे विशेषकऽ यौनसँ सम्बन्धित नर-नारी प्रभावित कयलक आ आयल। पूर्वक रचनाकेँ देखिकऽ हिनका नारी मनोभावक विशेषज्ञ कहल जा सकैत अछि।

ईहो कहि देब उचित होयत जे भ्रमर नेनावस्थेसँ चन्सगर रहथि। जहिना पढाइमे तहिना धैस जगयबामे। कही तँ Hero अर्थात् Healthy, Educated rich and organisation कहब जे पढ़िते छलाह से अबस्से। जनकपुर अयलाक बाद ओ अपन भैयाक संग कोनो नव सिनेमाकेँ प्रथम पालीमे देखिते छलाह। डॉ. धीरेन्द्रक नेपाल अयलाक बाद एक नम्बरक शिष्य भ्रमर रहथि। डॉ. धीरेन्द्र जँ नहि रहितथि तँ भ्रमर नहि रहितथि। दुनू अगले-बगलमे रहैत छलाह। ओहुना डॉ. धीरेन्द्रक जीवनमे शिष्योपशिष्य ढेर-ढाकी छनि मुदा, भ्रमर आ भुवनेश्वर पाथेय महत्वपूर्ण रहलनि। सर्वहारा वर्गक प्रतिनिधित्वकेँ ओ चिन्हलनि।

मैथिली साहित्य परिषदक गठन भेल तँ सचिव भेलाह राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'। विद्यापति पर्व समारोह जानकी मन्दिरक प्रांगणमे मनाओल गेल। मातृका प्रसाद कोइराला, पूर्व प्रधानमंत्री, नेपाल मुख्य अतिथि रहथि।

हिनका दहिना कपार पर चोटक चिन्ह छनि। आम ओ रखैत छलाह, सतघरा खेल खेलाइत छलाह। आम लूटबाक लेल दौगलनि तँ एहि क्रममे टाटमे लागिकऽ कपार फूटलनि। ओ ओहि समयमे चतुर्थ वर्गक छात्र छलाह। तत्क्षण ओ बुझबो ने कयलनि जे कपार फूटि गेल अछि।

1968-69 मे हिनका अपन जेठ भाय सुकुमार कापड़िक धनुष-तीरसँ हिनक आँखिमे तीर लागल। मायक मानता छठि माइक अर्ध छनि जे

आइयो देल जा रहल अछि। सूपमे सभ वस्तु-जात दऽ कऽ । ओ आनो कतेको मानता केने रहथिन।

स्वास्थ्य तँ यैह रहनि जे बच्चामे बेस मोटगर-डटगर वा कहीं तँ भोकना बिलाड़ रहथि। भैंसक दूध, घीक आ मीठा छुच्छे खाथि। सन्नूकमे गूड़क चेकी आ सौंसे टारामे बरकायल घीक भेटनि से बेस पाबथि। डॉ.आर.एन.सिन्हा गणितक प्राध्यापक कहने रहनि हिनका जे आबऽ वला समयमे गाड़ी पर तोरा लादिकऽ लऽ जाय पड़त। हिनक बाबूक भट्टी सुरक्षित रहनि आ खूब पीबथि। मुदा, हुनकर निधन 84 वर्षक अवस्थामे भेलनि। ओहि परिवेशमे रहितो भ्रमर कहियो मद्यकेँ हाथ नहि लगौलनि। ओना तेना भऽ कऽ चाह-पान वा कही तँ दू टुक सुपारियो ने पबैत छथि। एहि वातावरण आ परिवेशसँ अपनाकेँ फराक रखने छथि।

हिनक प्रिय संगी केओ नहि रहनि। खासकऽ एहि स्तरक। ओना छात्रजीवनमे मुजफ्फरपुरक कामेश्वर प्रसाद अबस्से दस-पन्द्रह वर्षक मीत रहनि।

ओ जहिया एम.ए.कयलनि आ डा.धीरेन्द्रक कृपापात्र रहथि तँ ओ चाहितथि तँ गुरुक कृपा-फलसँ मैथिली विषयक प्राध्यापक रहितथि। मुदा, ओ एहि सेवाकेँ नकारलनि आ पत्रकारिता दिस ढुकलाह। तकर कारण छल जे आर्थिक सम्पन्नता। जेँ कोनो अभाव नहि खटकलनि तँ नोकरीक विचार मोनमे नहि अयलनि। ओ मनमौजी प्रकृतिक रहथि तँ स्वतंत्र जीवन-यापन करैत रहल छथि।

2026-27 सालमे ओ वैदेही साप्ताहिक कार्यालय प्रतिनिधि रूपमे उभरलाह। 2049 सालसँ कान्तिपुर राष्ट्रीय दैनिक पत्रक जनकपुर, संवाददाता शुरूक 5 वर्ष धरि रहलाह। प्रकाशक-सम्पादक भऽ ओ मैथिली 'अर्चना' पत्रिका प्रकाशित कयल। तकर वाद 'अंजुली' नेपाली मासिक आ मैथिलीमे द्वैमासिक 'आंजुर' प्रकाशित कयल। 2039 साल कार्तिक 4 गतेसँ गामघर प्रकाशित भेल जे नेपालसँ प्रकाशित पहिल आ एकमात्र समाचारपत्र साप्ताहिक अछि। जकर प्रकाशन आइयो भऽ रहल अछि। सुप्रभात जे नेपाली दैनिक तकर

आरम्भिक सम्पादक यैह रहथि। 'जनकपुर एक्सप्रेस' दैनिक अखबारक सम्पादन-प्रकाशन 2055 सँ यैह करैत छथि।

पचास वर्षक इतिहासमे नेपाल सरकारक पहिल बेर साझा प्रकाशनक अध्यक्ष पद पर राजनीतिक नियुक्ति जे से नेपाल भरिमे 2021-22मे भेल अछि से रामभरोस कापड़ि भ्रमरकेँ बनाओल गेल। तहिना प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे नेपाल सरकार द्वारा जे पहिल बेर मैथिली साहित्यकार भेल से हिनके नाम एहि खातामे दर्ज छनि।

नेपालमे मारिते रास क्षेत्रमे भ्रमर पहिल छथि।

1. पहिल बेर मायादेवी प्रज्ञा प्रतिष्ठान पुरस्कार 50,000 टाकाक हिनका देल गेलनि। ओ एहि लेल 2052सँ पुरस्कृत छथि।

2. 'नहि आब नहि' हिनक पहिल प्रेम काव्य छनि जे त्रिभाषामे प्रकाशित भेल अछि।

3. मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित नेपालक पहिल कथाकारक पोथी अछि 'तोरा संगे जेबौ रे कुजबा'।

4. नेपाल राजकीय प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित गोष्ठीमे 2048 सालक पुरस्कार पाँच हजार टाकाक 'सूली पर टाङ्गल इजोत'केँ भेटल अछि।

5. कोनो नेपालीय नाटक 'एकटा आओर वसन्त' नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे मंचित भेल अछि। एहि पोथीक तीनटा संस्करण भऽ चुकल अछि।

6. अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य समारोहमे एहि नाटककेँ द्वितीय पुरस्कारसँ प्रकाशित कयल गेल अछि।

7. 2067 सालमे हिनका 'पहिल लोक साझा संस्कृति' पुरुष मैथिली साहित्यकार केँ भेटल।

8. यात्री चेतना पुरस्कार चेतना समितिसँ भेटल।
9. शेखर सम्मान भेटलनि। ई पुरस्कार शेखर प्रकाशनक देन थिक।
10. विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा 'मिथिला विभूति सम्मान' भेटल छनि।
11. अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन द्वारा मुम्बईमे 'मिथिला रत्न' सम्मानसँ सम्मानित छथि।
12. 2069 क विद्यापति पुरस्कार प्राप्त कयने छथि 2 लाख टाकाक।
13. 'पार्वती सम्मान' सिसोदिया सर्लाही द्वारा भेटल छनि।

एहिना आर कतिपय सम्मानसँ सम्मानित भेल छथि। सम्मानक बोझ तर ओ स्वयं दबल छथि। हिनका आब जे सम्मान भेटैत छनि से हिनक उपलब्धि अबस्से थिक। मुदा, हमरा लगैत अछि जे आब हिनका लेल सम्मान बोझ परक आँटी थिक। लेखकक संग हिनक सम्पादनमे रुचि रहलनि अछि। सम्पादकक सन्धिविच्छेद अछि सम्+पदन्। यैह क्रिया सम्पादन कहबैत अछि। संस्कृत पदमे सम् उपसर्ग लागिकऽ सम्पादक शब्द बनैत अछि। कोनो लेखकक लिखल रचनाकेँ व्याकरणक दृष्टिसँ ठीक करब अर्थात् सभ पदकेँ सम् यानि ठीक करबाक क्रिया सम्पादन थिक। कोनो काजकेँ पूराकऽ पाठकक सोझाँ आनव सम्पादकक काज थिक। ओना ओ 'गामघर'केँ समाचार पत्र बनौने छथि आ 'आंजुर'केँ साहित्यिक। मुदा, 'गामघरमे सेहो साहित्यिक रचना प्रकाशित भऽ जाइत अछि। एकटा बात ई ध्यान रखबेक थिक जे साहित्य जँ पत्रकारितामे अबैत अछि तँ सोनमे सुगन्धि होइत अछि। तहिना जँ साहित्यमे पत्रकारिताक तत्व बेसिए घोंसिया जाइत अछि तँ गूड़ गोबर होयबाक सम्भावना बेस बढि जाइत अछि। कारण साहित्यमे पत्रकारिता आबिकऽ बेसी सूचनात्मक आ तात्कालिक बना दैत अछि जखन कि साहित्य पत्रकारितामे आबिकऽ अनुभूत सत्यकेँ जगगियारकऽ मानवीयगुण ओ

दृष्टिकोणक आधार पर कही तँ पाठकक अन्तर्मनकेँ अबस्से बेसिए स्तर धरि झकझोरि दैत अछि।

भ्रमर कथा, कविता, उपन्यास, नाटक, लोकसाहित्य आ लोकसंस्कृति, साक्षात्कार, यात्रा-संस्मरण, निबन्ध, डायरी, शोध विषय आदि लिखलनि। हमरा जनैत ओ मूलतः कवि आ तकर बाद कथाकार छथि। ओ बहुविधवादी छथि तँ स्वाभाविक अछि जे विभिन्न विधमे हिनक रचना दम-खमक संग आयल अछि। हेनरी डेविड थोरो कहने छथि- 'सभसँ पैघ कलाकार वैह होइत अछि जे अपन जिनगीकेँ कलाक विषय बना लैत अछि'। भ्रमर यैह काज कयने छथि। ओ स्पष्टतः लिखने छथि- जीवन एकटा गति छैक/ गतिक संग मनुक्ख आगाँ बढ़ैत अछि। संकल्पित ठाम धरि जाएब; नहि, आब नहि -अर्चना, वर्ष-8 कार्तिक 2087। हिनक पोथी 'नहि, आब नहि' पहिने कुमार अभिनन्दनक नामसँ 'अर्चना'क 24 पृष्ठमे प्रकाशित भेल। दीर्घ कविताक ई पोथी अछि। ओना हिनक पहिल पोथी कविता संग्रहक बन्न कोठरी औनाइत धुआँ अछि जे 2021 सालमे आयल अछि।

हिनक वैविध्य विषयक लेखनक उद्देश्य रहल अछि :-

1. विभिन्न विधकेँ सुपुष्ट करब।
2. सामाजिक व्यवस्थाकेँ बदलबाक प्रयास करब।
3. इमानदारीपूर्वक अपन बातकेँ राखब।
4. ओ जेँ अपन वर्गक विरल लोक छथि तँ सर्वहारा वर्गक बातकेँ ध्वनित करब। अर्थात मूल्यबोधक संवाहक बनब।
5. तथाकथित वर्ग द्वारा जे चक्रव्यूहक घेरा बनाओल गेल अछि तकरा अपन लेखनीबलें तोड़ब। कही तँ कमजोर आ बेबस वर्गक बात उठायब।
6. एहन पैघ लकीर घीचब जकरा केओ लेखनबलें छोट नहि कऽ सकय।

7. दृश्य आ ध्वनिक सेहो एकटा अर्थ होइत अछि। एहि दिस ध्यान तेना भऽ कऽ नहि जाइत अछि। तँ एकर सार्थक महत्ता उपस्थापित करब।

8. पठन, लेखन, प्रकाशन आ वितरण दिस सचेष्ट भऽ नव पीढ़ीकेँ भविष्यक बाट देखायब।

9. लेखनक हेतु भाषा ओ शैलीमे नव-नव सम्भावनाकेँ खोजब।

10. नव पीढ़ीक निर्माण करब जे आत्म सजग भऽ जनसमाजमे नव चेतना-जगबय।

ओ प्रायः बेसिए विधमे हाथ अजमौलनि। एतेक दूर धरि जे समकालीन कविताक सशक्त हस्ताक्षर होइतो ओ गीत, गजल आदिक संग 'पिरामिड' जे नव विध थिक सेहो लिखलनि। कथा, उपन्यास, निबन्ध आदि लिखितो ओ नाटक लिखबाक दिस अग्रसरित भेलाह। प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे नाटक महोत्सवक बात उठल आ एकटा वरिष्ठ नाटककारक नाटक अस्वीकृत भऽ गेल तँ मात्र सात दिनक अभ्यन्तर तत्कालीन उपकुलपति डा. ईश्वर बरालक आग्रह पर 'एकटा आर वसन्त' नाटक लिखायल आ मंचित भेल। एही नाटक पर फिल्म बनि नेपाल टेलिविजनसँ प्रसारित भेल।

ओ छोट-छोट नाटक प्रायः घंटा आध घंटा धरिक लिखैत छथि। 'नेताजी आबि रहल छथि', आ 'बौधू बाजि उठल', 'सूली पर इजोत' आदि बेस चर्चित-प्रशंसित भेल। लोकनाट्य जट-जटिन ;2064 साल, भैया अएलै अपन सोराज ;2067 साल आदि दरभंगाक विद्यापति सेवा संस्थानक मञ्च पर बेस जमल अछि। जनकपुरधाम आ आनो ठाम जेना पटना आदिमे हिनक नाटक मंचित भेल अछि। रंगमंचसँ जुड़ब आ रंगभाषा अर्जित करब श्रमसाध्य आ समय साध्य दुनू अछि।

ओ कैकटा पोथीक सम्पादन दक्षतापूर्वक कयने छथि। जेना लावाक धान ;2050 साल, गामघरक 2046 क कार्तिक मासक आठम वार्षिक विशेषांक मथुरानन्द चौधरी 'माथुर' लिखित 'त्रिशूली' सम्पूर्ण

खण्डकाव्य जे 1876 पृष्ठमे आयल अछि। 'गाम घर'मे तँ कैकटा वार्षिक अङ्क संस्कृति विशेषाङ्क' वर्ष-4, अङ्क-1, कातिक 2042, अक्टू-नव. 1985, मू. 25 टाका, नेपालक मैथिली पत्रकारिता 2044 साल आदि अछि। 'महाकवि विद्यापति आ नेपाल', "लोकनायक सहलेस' दू खण्ड, लोकगाथा नायक दीनाभद्री ;2070 साल आदि बेस चर्चित प्रशंसित अछि।

नाटक सम्बन्धमे एतेक तँ कहले जायत जे कथा, कविता, निबन्धादि जकाँ एके सुरमे कखनो नाटक नहि लिखल जाय तँ नीक। कारण, एहन नाटक लिखब नाटकक क्षमताक सौन्दर्यकेँ क्षति पहुँचायब थिक। कही तँ- 1. थियेटर एक्टिविस्ट 2. नियमित नाटक देखब 3. रंगमञ्चक आवश्यकतानुकूल नाटकक शिल्प, भाषा, पात्रक चरित्र-चित्रण, संवाद अदायगी, विषय- वस्तु आ बुनावटि आदि पर ध्यान केन्द्रित करब थिक। 4. दृश्य संयोजनकेँ बुझब 5. पात्रक अन्तर्द्वन्द्व आ बाह्य चरित्र-चित्रणकेँ ध्यान राखब 6. शब्दक मितव्ययिता 7. मंचीय प्रदर्शन आदि विशेष महत्व रखैत अछि। नाटककार भ्रमर एहि सभ बातकेँ नीक जकाँ जनैत-बुझैत नाटक लिखैत छथि। संगहि गीतक परिकल्पना सेहो करैत छथि। ओना तँ ओ प्रारम्भसँ नाटकक मंचन आ सिनेमा भरपूर देखथि। ओ ऐतिहासिक नाटक 'रानी चन्द्रावती' 2045 सालमे लिखलनि। मुदा, नाटक दिस हिनक बढैत रूझान हिनका प्रगति आ प्रयोगपरक नाटक लिखबाक हेतु बेस आकृष्ट कयलक। ओ गौरसँ टेलीविजन पर होइत टेलीफिल्म सभकेँ देखथि। अधुनातन दृष्टिएँ ओ नाटक लिखबा दिस प्रवृत्त भेलाह। कारण छलनि हिनक जिद्दपना ओ जिद्दपनाक फलस्वरूप कैकटा नाटक लिखने छथि। किएक तँ नेपालक मैथिली नाटककेँ नाटक बुझले नहि जाइक। दोसर, जे संस्था मिनाप नाटक करय ताहिमे कोनो एकटा खास व्यक्तिक मात्र नाटक खेलायल जाइक। एही वर्चस्ववादी रीतिकेँ तोड़बाक आ मानसिकताकेँ जाग्रत करबाक उद्देश्येँ ओ एक समयमे नाटक लिखबा पर जोर देलनि। ततबे नहि, मञ्चक खगताकेँ देखैत नाट्यमंचन हेतु अपन रुचि लैत कैकटा संस्थासँ सम्बन्धित भेलाह। एतेक दूर धरि जे एहि लेल ओ संघर्षपूर्ण चुनौतीकेँ

स्वीकारलनि। अपने तँ नाटक लिखिकऽ प्रकाशित करबे करथि जे आनोकें नाटक लिखबाक हेतु प्रेरित कऽ प्रकाशित कयलनि।

ओ प्रेमपरक अभिव्यक्ति विभिन्न विधमे बेस कयलनि। मुदा, ओ जखन काठमाण्डूमे पदासीन भेलाह तँ हिनक रचनामे एकटा नव स्तर आयल। ओ अभिव्यक्तिमे मात्र करुणा आ दया-भाव उपजयबला प्रसंगे धरि सीमित नहि रहि मानवीय संवेदनकेँ बेस जगजियार कयलनि। यैह भेल मोड़ जे समयानुकूल अनुभूत सत्यकेँ प्रतिपादित करबामे भेल। ओ जे बात अपन कथाक माध्यमे कहैयो चाहलनि, मुदा पूर्णतः कहि नहि सकलाह से मानवीय सरोकारकेँ आरो घनीभूत करैत, मानवताक पक्षमे ठाढ़ होइत, देश-दुनियाक आ खासकऽ नेपालक परिस्थितिगत परिवेशक उद्घाटन क्रममे मानवीय मूल्यवत्ताकेँ समक्ष रखैत 'घरमुहाँ' उपन्यास लऽ अयलाह। एकटा बात ईहो, कहब स्वयंसिद्ध अछि जे रचना हिनका पियरगर लगलनि, लगबे कयलनि ताहि पर आनो विधमे कलम चलौलनि। 'सूली पर टांगल इजोत' निस्सन्देह अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपरक नीक कवितामे परिगणित होयत तँ ताहि पर नाटक अछि।

ओ मोनोड्रामा सेहो लिखलनि। टी स्टॉलवाली मुनियाँक व्यथा-कथा ओ दू गोट विधमे लिखलनि। ई सत्य अछि जे मनोभावकेँ अभिव्यक्ति करबाक हेतु जँ सम्पूर्ण आकार कोनो एकटा विधमे प्राप्त नहि भऽ सकैत छैक तँ आनो-आन विधमे रचनाकारक रचना होयब स्वभाविके अछि। ताहिमे भ्रमर ? ओ अपन रचनाकेँ चमकयबा हेतु आन विधमे तँ उपयोग करबे कयलनि जे प्रचार-प्रसारक दृष्टिँ आन भाषाकेँ सेहो चुनलनि। कही तँ आनो भाषामे अपन मातृभाषा मैथिलीकेँ पचौलनि। बहुभाषाविद् भ्रमरक योगदान नेपाली, भोजपुरी आदिमे अछि।

हिनक अन्वेषणपरक दृष्टि जाहि कोनो कारणेँ वन-प्रान्तर वा स्थल-विशेषकेँ देखि-सुनिकऽ लिखबाक हेतु बाध्य कयलकनि। ओ एहि लेल रने-बने बौआयल छथि। लुम्बिनीक गौतम बुद्धक स्थलसँ लऽ कऽ दीनाभद्री, सलहेस आदि लोकगाथापरक स्थल धरि घुरि आयल छथि। ओहिना मोन अछि जे राजा सलहेसक फुलवाड़ीमे फुलाइत ओ हारम

फूल जे असमयमे देखने छलाह। ओना ई फूल स्थानीय भाषामे हारम कहल जाइत अछि, मुदा ई थिक आर्किड। ओहि फूलकेँ देखिते ओ पहिने अचम्भित भेलाह आ तकर बाद लाकैत मनुहार पर अतिरिक्त प्रसन्ताक लहरि दौड़ि आयल छलनि। सहजता आ जिज्ञासा दुनू भाव देखायल छल जेना नेनपनक कोनो कल्पित वस्तु भेटि गेल होनि।

ओ चिक्कन फोटोग्राफर छथि। हुनका फोटोग्राफी करबामे बेस रुचि छनि। नव-नव वस्तुकेँ देखब, नव-नव स्थानक परिभ्रमण करब, नव-नव विषय-वस्तुकेँ उठायब वा कही तँ नवताक पक्षधर ओ जिज्ञासु रहल छथि। ठीकसँ बिटिआयब तँ हिनक रचनाकेँ पढ़िते बुझि जायब जँ आलेखक संगहि फोटो सभ-प्रामाणिक, यथार्थपरक आ विश्वसनीय थिक।

ओ ढेर-ढाकी किताब जहिना लिखैत छथि से लगभग पचास धरि होयबा पर हेतनि। तहिना ओ ढेर-ढाकी पोथी कीनैत छथि, संग्रहित करैत छथि, पढ़ैत छथि। ओ स्वयं मानक साहित्यकार छथि। मुदा, जँ कतहु कोनो सन्देह होइत छनि तँ कोनो ने कोनो प्रकारें ताकि-हेरिकऽ वा सुयोग्य आ तद्विषयक विद्वानगणसँ सम्पर्क कऽ अपन कलमकेँ साधैत छथि। प्रयास रहैत छनि जे शोधपरक प्रवृत्ति होअय। 'राजकमलक कथा साहित्यमे नारी' विषयक पोथी छनि। प्रायः ओ एहि पर शोधग्रन्थ लिखबाक प्रयास कयने छथि। जेकि हिनका डाक्टरी उपाधिक ततेक आवश्यकता नहि बुझयलनि, ओना ई मानद उपाधि एकटा संस्थासँ भेटलो छनि जाहि संस्थाप्रदत पर कतिपय जन अपन नामक पाछाँमे डॉ. लगबितो छथि। ओ अपन शोध प्रबन्ध नियमतः प्रस्तुत नहि कयलनि तँ की ? कतिपय जन तँ हिनक नामक पाछाँ 'डाक्टर' लगबिते छथि।

एकटा ई बात कहि देब आवश्यक अछि जे किनको सुसकेमे गुणानुवाद करी वा भर्त्सना करी तँ ओहि व्यक्तिकेँ ने हित होइत अछि आ ने अहित। सवाल विश्वासनीयताक अछि। जँ भ्रमर कर्मरत छथि तँ ढेर-ढाकी हीत-मीत छनि तँ बेस शत्रुताकेँ सेहो पोसने छथि। मुदा, ओ अपन पथसँ अखनो टससँ मस नहि होइत छथि। ओ अपन कर्म करैत रहैत छथि।

लेखन-कर्मकेँ साधना बुझि ओ अडिग छथि। ओ जनैत-बुझैत छथि जे लिखल आखर मूल्यावान होइते अछि। समय मूल्याङ्कन करबे करत।

ओ कखनो अपनाकेँ कमतर कऽ नहि आँकैत छथि। पहिरन-ओढ़नसँ लऽ कऽ रहन-सहन ओ लेखन-कर्म धरिमे कतहुसँ कोनो समझौता नहि करैत छथि। ओ बोन-झाड़सँ गुलाबकेँ चुनि लैत छथि आ घास-पात, काँट धरिकेँ बेकछाकऽ फराक रखैत छथि। जाहि रचनाकारमे हिनका प्रतिभा बुझाइत छनि, किछु करबाक ऊहि बुझाइत छनि तनिका भरपूर मदति करिते छथि।

ओ स्वयंमे एकटा आन्दोलन छथि। हिनक रचनाकाल जाहि राजशाही शासन-कालमे भेल, लिखबा पर संयमित रहय पड़ैत छल ताहि अवधिमे सेहो बेस लिखलनि। आइ नव प्रजातांत्रिक युगमे सेहो खूब लिखि रहल छथि। ढेर-ढाकी किताब लिखिये लेब कोनो खास विशेषता नहि रखैत अछि। जेँकि गुणात्मक दृष्टिँ ओ किछु रचना देलनि अछि जाहि बलें ओ समादृत छथि, रहबे करताह। हमरो जे हिनक व्यक्तित्व-कृतित्वकेँ मूल्याङ्कित करबाक सुअवसर भेटल अछि से आब हिनक सद्यः प्रकाशित पोथी 'मिथिलाक लोकजीवनः लोक संदर्भ' पोथीक विमोचनक सुअवसर पर भेटल अछि। एहि तिथि 08.05.2022 कऽ वेलकम, जनकपुरधम, नेपालमे ई आलेख पढ़ैत हम अपनाकेँ गौरवान्वित बुझैत छी। प्रभावशाली आ प्रासंगिक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक धनी रामभरोस कापड़ि भ्रमरक सम्पूर्ण पचास वर्ष की, रचनाकाल 58 वर्षक परिदृश्यकेँ मूल्याङ्कित करब ततेक सहज नहि अछि। तँ हिनक सम्पूर्ण सहित्यिक साधना ओ जीवन-कर्मसँ सैद्धान्तिक आ व्यावहारिक पक्षकेँ एकटा छोट-छीन आलेखमे गुम्फित कऽ लेब ततेक सोझ आ सरल नहि अछि। ई हम मानैत गछैत छी जे हिनक रचनाकर्म पर जाहि ढङ्गे ईमानदारी आ वास्तविकताक संग आलोचना-प्रत्यालोचना होयबाक थिक से नहि भऽ सकल अछि। जखन कि हिनक रचना-कर्म उपेक्षित रहल अछि सेहो नहि कहल जा सकैत अछि। पैघसँ पैघ साहित्यकार हिनक रचना पर वा कही तँ पोथी पर कलम चलौने छथि। किछु जनक नजरिमे ओ खटकितो छथि तँ कतिपय

भद्रजनक आँखिमे बसलो छथि। साहित्य आ साहित्येतर दुनू कोटिक ओ रचना कयने छथि। किछु फरमाइशी रचना सेहो छनि। दवाबमे लिखल गेल फरमाइशी रचना जँ कखनो कऽ अपन मूल्यबोध निर्धारित करितो अछि तँ बेसिये एहन रचना हलुकबितो अछि। मुदा, मुक्त भऽ आत्मसात रचना जँ कागत पर उतरैत अछि तँ निस्सन्देह फलदायी बनैत अछि। हड़बड़ी-धड़फड़ीमे लेखक बनबाक लौलें फेसबुकिया रचनाकारसभमे बेसिये साहित्यिक घातक बनैत अछि। जेकि हिनक रचना मूल्याबोधक कसौटी पर सही उतरैत अछि तें आइयो हिनक रचनात्मक जड़ि आरो गहीर अछि आ जमीनसँ जुड़ल टिकल अछि। सहमति-असहमतिक सन्धिबिन्दु पर ठाढ़ भ्रमर अपन रचनाबलें कही तँ रचनात्मक परिदृश्यकेँ उभारबामे सक्षम छथि। कालान्तरमे हिनक कर्म-धर्म अबस्से भविष्यक पीढ़ीसँ आत्मीय सम्बन्ध बनौने राखत आ समयक संग संवाद स्थापित करैत रहत। कतिपय जनकेँ भविष्यमे विश्वासो नहि होयत जे एहन सक्रिय रचनाकार एतेक काज कऽ क्रान्तिक लौ जगा देने छथि। ओ जँ जीवट छथि तें हिनक आत्मकथा देखबाक लिलसा हमरा जगले अछि। एहि विधक पोथी मैथिलीमे अत्यल्पे अछि आ हिनक एहि विधक छूटल पोथीसँ पाठक लाभान्वित होयत।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.डा.राजेन्द्र विमल-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुहाँ'- प्रभाव आ प्रतिक्रिया



डा.राजेन्द्र विमल

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुहाँ'- प्रभाव आ प्रतिक्रिया

कार्यकारण श्रृंखलामे सुगुम्फित ओहि गद्य कथानककेँ उपन्यास कहल जाइत अछि, जाहिमे अपेक्षाकृत अधिक विस्तारसं जीवनेजगतमे अनुभव कएल यथार्थकेँ कल्पनासँ रडि कए रसात्मक विचारोत्तेजक रूपमे प्रस्तुत कएल जाइछ। मैथिलीक ख्यातनामा आख्यानकार श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क पहिल उपन्यास 'घरमुहाँ' नेपालक मधेसआन्दोलनसँ उपजल उमड़ल जनआकांक्षा, मोहभंग, विकृति, पीड़ा, भावनात्मक उद्वेलन, विक्षोभ आ जटिलताकेँ घोर यथार्थपरक चित्रावली उरैहैत समन्वय दर्शनसंग मर्मस्मर्शी इति पबैत अछि। आन्दोलन जखन एक गोट ऐतिहासिक उँचाई

ल' रहल होइत अछि तँ ओहिमे आन्दोलनकारीक छदम श्वेत भेष द्वारा सामाजिक प्रतिष्ठाक नकली खोल ओढ़बामे सफल गुन्डाक सरदार कामेश्वर सन आपराधिक मनोवृत्तिक व्यक्ति सचक निरन्तर प्रवेश होबए लगैत छैक। हत्या, अपहरण, आतंक आ डर धमकी द्वारा ई वर्ग खास कए पहाड़ी समुदायसँ पैसाक उगाही करैत अछि। अपन अधिकार, पहिचान आ विकसित मुद्दाक एहि विराट जनक्रान्तिमे शहादत दैत युवकसभक प्रत्येक दिन लहासपर लहास खसि रहल छै आ ओम्हर ई लुटेरा तत्व पहाड़ीक दोकान सभमे आगि लगा रहल अछि, सामान लूटि रहल अछि, ओकरा सभक घरपर पाथर फेकि आतङ्क पसारि रहल अछि। आतङ्कभरल एहि वातावरणमे पहाड़ी होइतो धोतीकुर्ताधारी मास्टर रमेश उपाध्याय अपना घरमे डरे दबकल रहैत छथि। मोन तँ मास्टरो साहेबक होइ छैन्हि जे अपन मधेसी मित्र जगमोहन अधिकारी जेकाँ जुलुसमे जा जोर जोरसँ नारा लगा आन्दोलनकेँ समर्थन दिएक, मुदा सोचै छथि "जे उन्माद एखन युवा सभमे छै ओ की हमर (पहाड़ी) अनुहारकेँ पचा सकत ?" अदंकसँ भरल मास्टर साहेबकेँ अपन घर ल' अनबाक विचार जगमोहनकेँ होइत छन्हि, मुदा मास्टर रमेश एहि दुआरें अपन मधेश आन्दोलनक अगुआ मित्र जगमोहनक घर जाएसँ अस्वीकार कए दैत छथि जे कतहु आन्दोलन कमजोर ने पड़ि जाइक। १ जून २००७, २५ जुलाई २००७, २८ जुलाई २००७, ५ अगस्त २००७ क वार्ता असफल भेलाक बाद ३० अगस्त २००७क' २६ बूँदापर सहमति होएब मुदा कायान्वयनमे आनाकानीसँ आन्दोलनक फेर उग्र लपट ऊठब ऐतिहासिक दस्तावेज अछि, जे उपन्यासमे प्रस्तुत भेल अछि।

मास्टर रमेश उपाध्यायक विपत्तिक तमिस्रा अओर सघन तखन अओर सघन भ' जाइत छैन्हि जखन हुनका पता चलैत छैन्हि जे हुनकर बेटी किरण दछिनबरिया टोलक कामेश्वरक बेटा राजीवसँ प्रेम करैत अछि। ताबत ई ककरो ने बूझल छैक जे गामक सम्पन्न आ सम्भ्रान्त मानल जाएबला व्यक्तित्व कामेश्वर गाममे व्याप्त हत्या, अपहरण, चन्दा आतंक आदिमे संलग्न गिरोहक मुख्य सूत्रधार आ खलनायक अछि। मास्टर महाविपत्तिक समुद्रमे उबडुब कए रहल छथि

कि बेटी किरणक अपहरण भए जाइ छैन्हि आ दश लाख टाका फिरौतीक लेल फोनसँ दिन राति धमकी आबए लगैत छैन्हि। मास्टर अपन सम्पूर्ण सम्पत्ति बेचिकए विस्थापित होएबाक लेल बाध्य छथि ओमहर कामेश्वरक एकलौता बेटा राजीव अपन बापक कुकृत्यसँ परिचित भ' जाइत अछि आ मायक माध्यमसँ किरणक मुक्तिक लेल दबाब बनबैत अछि। कामेश्वरकेँ ई जानि ग्लानि होइत छैक जे ई उएह किरण थिक जकरा पुतहु बना घर अनबाक मोन हुनक परिवार बना चुकल अछि। बसमे चढि चुकल मास्टर रमेश उपाध्यायक ओकर परम मित्र जगमोहन आ अपहरणकारी कामेश्वर गाम घुरा अनबामे सफल होइत छथि।

आख्यानकार 'भ्रमर' अपना समयक प्रामाणिक खिस्सा आबएबला पीढ़ी दर पीढ़ीधरि सुनएबामे उत्सुक छथि। तँ प्रस्तुत उपन्यास मूक इतिहासक मुखर सहोदर भए गेल अछि। राजनैतिक घटनाक्रमक धरातलपर कल्पनाक फट्टा, मृत्तिका, सन्दी, स'न आदिसँ समकालीन मधेसक जीवन्त मूर्ति तैयारक' सामाजिक सम्बन्ध बन्धक रागमयताक रंग ढेरल गेल अछि जे हृदयहारी अछि। उपन्यास ऐतिहासिक महत्वक दाबेदार एहू कारणेँ अछि जे ई पहिल नेपालीय मैथिली उपन्यास थिक जे समकालीन राजनैतिक घटनाक्रमपर आधारित अछि।

रमेश उपाध्याय, जगमोहन, कामेश्वर, राजीव, किरण, बन्ठा, लुखिया आदि सभ वर्गीय प्रतिनिधि पात्र अछि। सम्बादमे स्वाभाविकता आ सजीवता छैक। भाषाशैलीक नाटकीयता आ चित्रात्मकताक कारण उपन्यास आदिसँ अन्तभरि सिनेमाक रीलजेकाँ चलैत अछि, जे पाठककेँ आरम्भसँ अन्तधरि बन्हने रहैत अछि। पहाड़ी मधेसीक एकता संबर्धनक उद्देश्यसँ प्रणित एहि उपन्यासक यात्रा उबड़खाबड़, पहाड़ जंगल, खुरपेडियाक जटिल यात्रा नहि, सोझ सपाट मैदानक सरल सरस यात्रा थिक जे सरसराकए अपन गन्तव्यधरि पहुँचैत अछि। तँ उपन्यासक संरचनामे पँच पाँच आ ओझराहटि नहि अछि। मधेस मिथिलाक आम लोकक भाषामे प्रयुक्त 'लल्हका', 'लभका', 'बढ़का', 'खुर्सी' आदि शब्दक सचेत उपयोग उपन्यासक भाषाकेँ सहज

स्वाभाविकता आ अभिनवता प्रदान करैत अछि। आख्यानकार श्री 'भ्रमर'क ई सद्यःजात कृति नेपालीय मैथिली उपन्यास साहित्यक एक गोट उपलब्धि थिक, ताहिमे सन्देह नहि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.डा.रामदयाल राकेश- पुस्तक जे हम पढल-एन्टी भाइरसक कथात्मक संसार



डा.रामदयाल राकेश

पुस्तक जे हम पढल-एन्टी भाइरसक कथात्मक संसार

राम भरोस कापडि 'भ्रमर' मैथिली साहित्य आ संस्कृतिके क्षेत्रमे परिचयके मुहताज नहि छथि। ओ एकसाथ कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, कवि, संस्कृतिविद आ यात्रा संस्मरण लिखनिहार छथि। एक शब्दमे कहल जाए त ओ बहुमुखी प्रतिभाक धनी साहित्यकारके रुपमें, सुपरिचित व्यक्तित्व छथि। समीक्ष्य कथा संग्रह, एन्टीभाइरसमे संग्रहित किछु कथासभ स्तरीय, पढनीय आ संग्रहनीय भऽ सकैत छैक तेकर विस्तृत व्याख्या, विश्लेषण, चर्चा परिचर्चा बहुतो अर्थमे समय सापेक्ष, सान्दर्भिक आ समसमायिक संसारके विभिन्न परिस्थिति एवं दृष्टिकोणसँ कएल जा सकैत छैक। मुदा संस्पेन्स यहाँ एकर बैशिष्ट्यके उद्धारित करवाक प्रयास कऽ रहल छी।

भ्रमरक कथा सभ अपन समय आ समाजके अर्थपूर्ण आख्यान कहल जा सकैत अछि। वास्तवमे हुनक दृष्टिबोध अत्यंत व्यापक अछि आओर कथात्मक संसारक आयाम सेहो विस्तृत एवं वैशिष्टपूर्ण छैक। एक ओर किछु कथा महानगरीय जीवनक ऐना कहल जा सकैत छैक त दोसर दिश

ग्रामीण जीवनक या जनपदीयक जीवनक जीवंत दस्तावेज। मिथिलाञ्चलक जनजीवनक विविधरंग, विविध पक्ष, विभिन्न आयामक उदघाटन करबामे हुनका महारत हासिल भेल छन्हि। समीक्ष्य कथासंग्रहक सभ कथा रेखांकित कर योग्य छैक आ कथा शिल्पक दृष्टिकोणसँ बेजोड कहल जा सकैत अछि।

कथासंग्रहक किछु कथाक परिवेश आ पृष्ठभूमि मिथिलांचलक माइत पाइनसँ सम्बन्धित छैक आ मिथिलांचलक सामाजिक संरचनामे जे अभूतपूर्व परिवर्तन दिनानुदिन राखल जाइत छैक तकर सटीक आ सांदर्भिक संकेत एवं सूचना पाठक सभके दऽ सकैत छैक। कथाकार मनोयोगपूर्वक एवं महत्वसँ कथाक शिल्प (ड्राफ्ट) तैयार करबामे निपुण देखि पड़ैत छथि।

भायरससं युक्त संसारमे भ्रमर एण्टी भाइरसयुक्त कथा लिखवाक साहस जुरा सकैत छथि मगर परिवेश एवं पृष्ठभूमि त जनकपुरसँ काठमाण्डूधरिक जीवनके चित्रणमे लगनशील भऽ जनकपुरमे रमाएके लालसो व्यक्र कऽ रहल छथि। हुनको पत्नीके काठमाण्डूक वातावरणमे कोनोरस नै भेटइत छैक तखन ओ काठमाण्डू जयबाकप्रति हुनका कोनो चाव नहि देखल जाइत छैक। दाम्पत्य जीवनमे कोनो भाइरसके प्रवेश नहि होय एकर खूब ध्यान रखैत छथि ताहिलेल अपने परिश्रम पर हुनक ध्यान बेशी रहैत छैक। दु घंटाके बदले चार घंटा खाना पकाबेमे लागि जाओ कोनो बात नहि मगर घरक भायरसके भयसे ओ परेशान भऽ जाइत छथि। यी भाइरस कि छैक त कोनो दोसर जनानी के खाना पकएवाकलेल नहि राखि सकैत छैक। यी भाइरस वास्तविक भाइरससँ भयानक लगैत छन्हि।

आइसीयू कथामे दरभंगाके अस्पतालक अनुभव आ बारेमेके बेचैनीक बेबाक चित्रण भेटैत छैक। अपन बेमार भाईके पीडासँ पीडित कथाकारके अनुभूति कत्तेक दरद पैदा करैत छैक देखू ! जीवन आ मृत्युक बीच संघर्ष करैत हमर भैया, हमर अभिभावक...। हमरा लेल आब असहनीय भेल जा रहल अछि।

'अमृत पान' कथामे कथाकार मधेश आन्दोलनके दौरान पावनि तिहारक सनेस समयपर नहि पठा सकल घर परिवार आ धार्मिक चित्रमे सफल देखना जाइत छथि। दोसर दिश तिलवा चूड़ा कतेक सुअदगर लगैत छैक जे अमृत पानसँ कम नहि छैक। दोकान पर चाहकप देवबाला मरद एकरा सवारमे चाहके चुस्की सदाके लेल विसर जाइत छैक। कथाकारके सांस्कृतिक संचेतना कतेक धनीभूत छैक तकरे स्पष्ट चित्रण करबामे सफल छथि।

कथा द्वितीय क्षणीक एकटा डिब्बामे यात्रा करवाक आनन्दानुभूति आ यौनिक आकर्षणके आनन्दके वर्णनमे कथाक कथावस्तु सफल छैक।

'क्वार्टर नं. एफ तीन' कथामे धऽ क्वार्टर कोशी प्रोजेक्टमे काजकएनिहार सभक हेतु बनाओल क्वार्टर छैक। यही क्वार्टरके पुरान या नव अनुभव वर्णन त छैहे आत्मीय सम्मानके संभावनाके तलाशमे मानवीय संवेदनाके बटोरबामे कथाकार सफल देखना जाइत छथि। पराकंपन शीर्षक कथा १९९२ सालके महाभुकम्पके पराकंपनके पृष्ठभूमिमे लिखल गेल छैक। नव घरके निर्माणके परिक्षण आ यही घरमे वासके खुशी कतेको बेरक पराकम्पनसँ परिवर्तित नहि भऽ सकैत छैक। यी कथामे सेहो कथाकार मानवीय संवेदनाके स्रोत तयारीमे बहुत राश सभक खरच कएने छथि आ भौतिक सुख प्रतिमे प्रसन्नताके वर्णन। परिवर्तन शीर्षक कथामे दाम्पत्य जीवनके द्वन्द्व चित्रण कएल गेल छैक आ यी द्वन्द्वके वर्णनमे कथाकार द्विविधा ग्रस्त मन स्थितिके वर्णनमे सेहो सफल। यी कथाके कथावस्तुके कथानकमे मैथिली आ हिन्दीके पुट रडक कथाउपर स्वाभाविकताके निर्वाह कएने छथि।

मुनिया टी स्टल मिथिलाञ्चलके जीवनमे प्रायः घटित होमवाला कथानकके कथाउपर अपना प्रतिभासँ प्रकट करबाक लेल प्रयासशील देखना जाइत छथि। गामघरमे कोनो चाहक दोकानमे एहन घटना प्रायः घटित होइत रहैत छैके। दोकानपर यदि कोनो सुन्नरी छैक त ओकर दोकान खुब चलैत छैक ओहि दोकानपर खूब भीड रहैत छैक आ किसम किसिमके गहँकी अनाई स्वभाविक छैक। कतेक गहँकी सभ चाहक लाथे

आ लाभसँ बेसी रमौलवालीके रुपरंग आ हावभाव पर भमरा जकाँ रस चुसक लेल ललाहित रहैत छैक। एकदिन ओ सुन्नरि अपन पति बला बच्चा सभके छोडि क एकटा छौडा रामधनक साथे भागि गेलै। यी गामघरके लेल सभसँ बेसी चर्चित धटना भऽ गेलै जे सर्व स्वभाविक छैक।

समीक्ष्य संग्रहके मास्टर पिस कथा छैक अन्नधन लक्ष्मी। यी कथा मधेशके धरातलीय यर्थाथके चित्रणमे सफल छैक। एकरा युवक आ युवतीके मन स्थिति आ मनोविज्ञानके चित्रणमे बेजोड छैक। एकरा परित्यका युवती जे प्यारके फंदामे पड़ि गर्भवती भऽ जाइत छैक आ ओकरा ओकरे अफिसके आदमी धोखा दऽ दैत छैक। एहिमे ओकर बेदनाके बड़ सटिक ढंगसँ व्यक्त कएल गेल छैक। यी युवती एकटा पुरुषसे पताडित आ दोसर महिलासँ विक्षिप्त। एह कथाके मुख्य उदेश्य छैक। रेमीटान्स आर्थिक उन्नति त व्यक्तिके जीवनमे आनि दैत छैक मगर सामाजिक संरचनाके भत्ताभंग कऽ दैत छैक।

मगर यी कथाके सुखान्त बनाबक कला कथाकारके विशेषता मानल जाए सकैत अछि। सम्पूर्ण कथा बेदनासँ भरल छैक मगर एकर अन्त सुखान्त पक्षके सराहनीय दंग कथाकारके कलाकारिताके विशेषता छैक।

गंगा प्रसादक स्वायतता शीर्षकमे सुगाक मार्फत गणतंत्र व्यवस्थापर व्यंग्यक वाण प्रहार प्रशंसनीय कहल जा सकैत छैक।

'प्रतीक्षामे' कथा ग्रामीण जिन्दगी आ शहरी जीवनके बीचके अन्तर्द्वन्दक चित्रण करबामे सफल मानल जा सकैत छैक। दू संस्कृति आ भाषाके कारणेँ जिन्दगी द्वन्दमे फस जाइत छैक आ सच्चा सुखभोगसे बँचित। एकटा कहबीमे सम्पूर्ण कथाक सारांश स्पष्ट भऽ जाइत छैक लेना न देना विनु छुछुरीके बेना।

'दहेज' शीर्षक कथामे पुराने विषयवस्तु के वर्णनके माध्यमसँ कथाकार नव समस्या या ज्वलंत समस्या जे मिथिलाज्चलके छैक तेकर बेबाक वर्णन आधुनिक संदर्भमे करब हुनक उदेश्य देखना जाइत छैक। खाडीक देशमे काज करबाक शान शौकत के प्रदर्शन आ दहेजके वेशी माँगसँ

सम्पूर्ण मिथिलाञ्चल आकान्त अछि। कन्या पक्ष कल्पित कल्पित कहैत छैक जे हमरा हैसियतसँ बेशी माँग भेल मगर एकर कोनो सुनुवाई बर पक्षके लोकसभसँ नहि भेलासँ सम्पूर्ण परिवारमे निराशा होनाई कोनो आश्चर्यक गप्प नहि छैक। कथाकारके कटु सत्यमे कतेक सत्यता छैक देखू

"आब त बिआहमे मोटरसाइकल नहि होइत तँ विआहे कौंसिल। एम्हर घरवालीसँ बेसी महत्व भऽ गेल छैक मोटरसाइकलके। विआहसँ पूर्व घरवालीके अनुहार नहि, मोटरसाइकल के अनुहार देखऽ चाही। एहिसँ पीडा, अपमान दुर्घटना सेहो बेसीय धटित भऽ रहल अछि। मुदा बेटाबाला सभकलेल धनसन।"

'उडान' कथा नया कथात्मक शैलीमे लिखल गेल छैक। यी कथा नाटकीय शैलीमे लिखि क कथाकार भ्रमर नव प्रयोग करबाक कोशिशमे छथि। दश दृश्यमे लिखल कथाक निचोड़मे की छैक त अपने धरती पर प्रेम आ संस्कार पएबाक। 'उडान' शीर्षक कथाके मुख्य केन्द्र सेहो रेमिटेन्से छै जेकरा चलते सामाजिक आ पारिवारिक सम्बन्धके नकारात्मक असर देखना जाइत छैक। तसर्थ कथाकारके कथन सार्थक छैक ः

हमर उडानमे अहाँसभके साथ चाही।

आ आब होरी आबि गेलै शीर्षकमे सांस्कृतिक जीवनके जीवैत करबाक लेल कथाकार सक्रिय एवं सचेष्ट देखना जाइत छथि। फगुआ मिथिलांचलक एकटा बड महत्वपूर्ण एवं मौलिक पर्व मानल जाइत छैक आ एकर रंगीनी नशा युवा युवतिके समान रूपसँ देखल जाइत छैक। कथाकार भ्रमरके शब्दमे ः "मने फगुआक रंग दुनू दिश चढल रहैक। होरी है..।"

चौतावरके चिताकर्षक लोकगीतके समावेश सँ यही कथाक कथात्मक सौन्दर्यमे चारि चाँद लगवाएक लेल कथाकार प्रयत्नशील बुझाइत छथि जेना ः

"घुरती बेरमे डफलिया सभ चेतावर गाबए लगैक चैत मास गेनमा फुलाएबल हो रामा...।

कि सइया नहि आएल।"

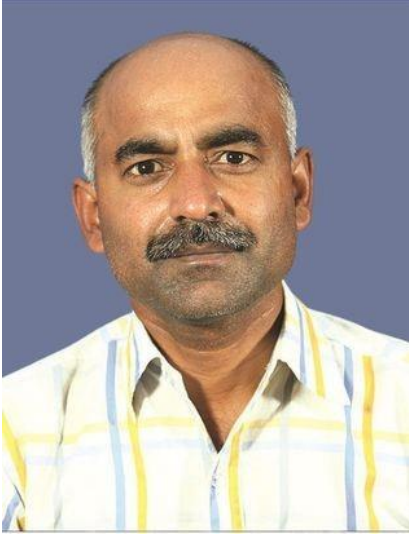
'सपना' शीर्षक कथामे देशमे विभेदक कारणे मधेश आन्दोलनक आरंभ भेल रहैक तेकरे कथावस्तु बना क कथाकार एही कथाके निर्माण करब उचित ठानि क बाप मायके सपनाके सचित्र चित्रण करमे सफल देखना जाइत छैक। जीवनभर अयोधी अपन नोकरीकालमे विभेदके शिकार भेल आ अन्तमे अपना बले अशोकके बी.ए.पास कएलाके बादो सिपाही पद पर भर्ना नहि करवा सकल तेकर वेदना व्यक्त करमे सफल भेल छैक। सीमापरक भूत शीर्षक कथामे कथाकार चिंतित होयब स्वाभिक छैक। बेटी रोटी के सम्बन्ध जे शताब्दीसे कायम छैक नेपाल आ भारतमे ओकरा आइके राजनीतिमे समाप्त नहि कऽ देइक तेकर चिंताके खूब निमन दंगसँ व्यक्त कएने छथि। एकटा स्तंभके कारणे दुई देशक विभाजनके पीडा सीमावर्ती इलाकाके लोकसभ भोगि रहल छैक। कथाकारक कथन मार्मिक छैक ः

"पता नहि, आब सीमा पर ठाढ़ ई उजरका स्तंभ ओकरा भूत जकाँ कहिया धरि डेरबैत रहतै।"

इजोरिया रातुक सपना बहुत राशि कथासँग्रह सभमे प्रकाशित भेल कथा अछि। ताही वास्ते समीक्ष्य कथासँग्रहमे संकलित करवाक कोनो औचित्य नै देख रहल छी। अन्तमे कथाकारक शैली बड परिमार्जित आ प्रशंसनीय छैक आ एहिसँ कथामे एकर प्रभावसँ मिठास आओर बढि गेल छैक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर**
पठार।

२.१४.दिनेश यादव-लोक मैथिली केर विभूति 'भ्रमर'



दिनेश यादव

लोक मैथिली केर विभूति 'भ्रमर'

नेपालक धनुषा जिल्ला बघचौडा गाममे ७२ वर्ष पहिने राम भरोस कापडि 'भ्रमर' के जन्म भेल छलनि। एकैहटा व्यक्तिके अनेक रुप कवि, कथाकार, नाटक लेखक, पत्रकार, सम्पादक आ प्राज्ञ। एकटा बहुआयम रहल लोक शायद 'भ्रमर' बाहेक आर कियौ नए भँ सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे विभिन्न पुस्तक प्रकाशित कँ चुकल ओ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानके प्राज्ञ परिषद् सदस्य आ साझा प्रकाशनके अध्यक्षके समेतके भूमिका निर्वाह करबाक अनुभव सेहो प्राप्त कएने छथि।

प्रारम्भिक शिक्षा गामे सँ पुरा केलाक बाद ओ उच्च शिक्षाक लेल जनकपुर पहुँचलाह। ओतैह संचालित त्रिभूवन विश्वविद्यालयक आंगिक क्याम्पस रामस्वरुप रामसागर बहुमुखि क्याम्पससँ ओ स्नातकोत्तर

उत्तीर्ण कएलनि। बहुमुखी प्रतिभाके धनी कापडि कविता, कथा, प्रबन्ध, निवन्ध, नाटक, गीत, यात्रासंस्मरण आदि विविध क्षेत्रमे दशकौं सँ कलम चलबैत आइब रहल छथि। ओ मैथिली भाषा साहित्यमे सब सँ बेसी सक्रिय रहला अछि। तथापि हुनकर नेपाली, हिन्दीसहितके भाषा साहित्यमे सेहो ओतबे अतूलनीय योगदान छइन। मैथिली साहित्यमें बौद्धिकताके पैघ आ अविस्मरणीय पदचिन्ह छोड़वामें ओ कुनू कसैर शेष नहि रखला अछि। ओ नेपालक प्रज्ञा प्रतिष्ठानमें होए किंवा साझा प्रकाशनमे, जतह रहला सबठाम लोकमैथिली भाषा, साहित्य आ कला क्षेत्रमे अद्वितीय काज करैत रहला अछि। नेपालीय मैथिली भाषा क्षेत्रमे हुनक उचाई एकटा गरिमा कायम कँ चुलक अछि।

अपन मातृभाषामें सदखनि साहित्य साधना करैत रहला 'भ्रमर' मैथिली साहित्यकेर 'शेक्सपियर' छथि। ओ पत्रकार, साहित्यकार, लेखक आ सर्जक मात्र नए युगस्रष्टा सेहो छथि। आबाजविहिनके आबाज बनि ओ सदखनि अपन समाजके लेल ठाड रहला अछि। तई हुनका युगस्रष्टा किंवा युगद्रष्टा कहबामे कुनू विमति किनको नहि होमाक चाहि। ओ ब्राह्मणेत्तर समाजक प्रतिनिधित्व करैत जहि रुपसँ अपन उपस्थिति मैथिली साहित्य क्षेत्रमे जनौने छथि ओ बहुतके लेल असंभव मात्र नै दूलर्भ सेहो भँ सकैत अछि। ओ मैथिली साहित्यकेर माध्यम सँ एकटा एहन युगक निर्माण केलथि जकर बर्णन करबा असंभव बुझाइछ।

क्रान्तिके गीत होए किंवा मैथिली साहित्यके बहुआयामिक संवद्रधनक बात होए, सबमें ओ अपन कमल निरन्तर चलबैत अविच्छिन्न ताराके भूमिकामे रहला अछि। यथार्थवादी भावभूमि आ प्रगतिवादी चिन्तनक प्रतिष्ठापनमे हुनक विशिष्ट योगदानक चर्चा परिचर्चा केनाई नेपालक भूमिमे किनको बसके बात नहि भँ सकैत अछि। हमरा जनितब, मैथिली साहित्यके युगानुरूप आगा बढेबाक हुनक साधनाके सम्मान करबामे किनको कंजुसाई नहि होमाक चाहि। नेपाल पंचायतकालसँ गणतन्त्रमे आबि गेल अछि, अहि राजनीतिक परिवर्तन आ रुपान्तरणमे कापडिके योगदान प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष रुपमे ओतबे रहल अछि। हुनक जीवन्त

मैथिली साहित्यिक रचनाके माध्यमसं अहिमे ऐतिहासिक भूमिका निर्वाह करबाक प्रमाणसब सेहो खुबे भेटयैक छैक।

नेपालक सबसँ बेसी बजैवाला लोकमैथिली भाषाके माध्यमसं मातृभाषीके जोडबाक काज ओ करैत रहला अछि। लोकमैथिली भाषामे अपन उज्जर प्रस्तुति आ शैलीके माध्यमसं सदखनि एकताक भावके संरक्षण र संवर्द्धन करैत रहला अछि। ई काज हुनका चिरस्मरणीय अछि आ नवतुरिया पीढीजनके लेल गौवान्वित होमाक विषय सेहो थिकैह। ओ नेपालीय लोकमैथिएटामें मात्र नय भारतीय मैथिलीमें सेहो ओतबे अपन प्रस्तुतिके जर्बदस्त बनौने छथि। तई नेपाल आ भारत दुनू कात हुनक योगदानक महिमामंडन खुबे होइत छइन। लोकमैथिलीमे बर्षोसँ जारी ब्राह्मणवादके बाबजूद एकटा ब्राह्मणेत्तर समूदायसँ जई तरहे ओ उपस्थिति जनौलथि अछि ओ अतूलीयन त अछिए, बेजोड सेहो ओतबे अछि। तई कैह सकैत छि जे ओ सभहकले प्रेरणाके स्रोत थिकाह। कियैक त कापडि मैथिली साहित्यमे स्वच्छन्दतावादी काव्यधाराके एकगोट विशिष्ट प्रवर्तक, प्रजातन्त्र, लोकतन्त्र, राष्ट्रियता, स्वतन्त्रताके प्रतिमूर्ति सेहो छथि। तई लोकमैथिलीके इजोत करैमे ओ स्वयं कहियो प्रकाशक संपादकके रुपमे उपस्थित भँ जाइत छथि त कहियो गैर मैथिली भाषाके प्रत्रिकामे सेहो लोकमैथिलीके उत्थान, विकास आ प्रर्बधन हेतू अपन कमल चलबैथि रहैत छथि। ओ लेखक, विश्लेषक, संपादक, प्रधान संवादक, आलोचक मात्र नहि थिकाह, लोकमैथिलीके एकगोट पैघ, सम्मानित आ विभूति सेहो थिकाह।

भ्रमर लोकमैथिली साहित्यमे मात्र नय नेपाली साहित्यके श्रीवृद्धिमे सेहो ओतबे सक्रिय रहला अछि। नेपालीमें अपन गजलके माध्यमसँ गजल गायिकीके परिभाषित करैत भाव, अभिव्यक्ति, शब्द, मौन आ लोकक जीवन अविछिन्न चलि रहल जीत हार आ मनुखकके चेहरामें लागल अनेक मुखडाके गजब शैलीमे परोसैत छथि

नेपाली गजल : तरंग जिन्दगीको

गजल गायिकी हो तरंग जिन्दगीको

भाव वनिता हो तरंग जिन्दगीको

अभिव्यक्तिमा आउँछ धुन तालको सरगम

शब्द व्याख्या हो, तरंग जिन्दगीको

मौन बसेको हो वा उमंग टाढासम्म

त्यसैको उच्चछास हो, तरंग जिन्दगीको

जित हारको खेल चलिरहने हो सधैं

पचाउने सामथ्र्य हो तरंग जिन्दगीको

मानिसको अनुहारमा टाँसिएका मकुन्डो अहा

'भ्रमर' को व्यापार हो तरंग जिन्दगीको।

(स्रोत: नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानके कविता प्रधान चौमासिक पत्रिका 'कविता', पुर्णार्क : १६, आश्विन पुस, २०७०)

अपन मातृभाषामे सेहो गजल विद्यामे हुनक ओतबे ओजपूर्ण प्रस्तुति रहलैए। निचा हुनक एकगोट प्रतिनिधि गजल देलगेल अछि। अहि गजलमें ओ जीवन संघर्ष आ चुनौतिसं लडबाक लेल आश भरोसा देमामें कुनू कसैर बाँकी नहि रखने छथि

मैथिली गजल : एखन बाँकी अछि

करिछौंह मेघके फाटब, एखन बाँकी अछि

चम्कैत बिजलैकाके सैतब, एखन बाँकी अछि

उठैत अछि बुलबुल्ला फूटि जाइछ व्यथा बनि

पानिके अडाबे से सागर, एखन बाँकी अछि

बहैत पानिआओ किनार कतौ खोजत ने

अगम अथाह सन्धान, एखन बाँकी अछि

फाटत जे छाती सराबोर हएत दुनियाँ 'भ्रमर'

ई झिसी आ बरखा प्रलय, एखन बाँकी अछि।

(स्रोत: नेपाली गजल गुगल ग्रुप, २००९)

साहित्यकार भ्रमरके किछु काव्यसंग्रह

क्र.सं. पोथीके नाम विधा प्रकाशित वर्ष (विक्रम संवत्)

१. बन्न कोठरी औनाइत धुँवा कविता संग्रह २०२९

२. नहि, आब नहि दीर्घ कविता २०३६

३. मोमक पधलैत अधर गीत-गजल २०४७

४. अप्पन अनचिन्हार कविता संग्रह २०४७
५. भयो अब भयो अनुवाद (नेपाली) २०७०
६. बस अब नही अनुवाद (हिन्दी) २०७०
७. अन्हरियाक चान गजल संग्रह २०७०
८. युद्धभूमिक एसगर योद्धा कविता संग्रह २०७५

प्रतिनिधि कथा 'एंटीवायरस'

भाषा, साहित्य, संस्कृति राष्ट्रके निधि होइछ। एकर उत्थानस' राष्ट्र उत्थानक झलकके अनुभूति होइछ। समालोचनाक अर्थ सृजनाकृति (काव्य, गद्यसहित) के उपर सिद्धान्तपरक सृजनशील पठन होइछ। कियो स्वीकार करौक वा नइ करौक, मुदा इ एकटा सत्य थिक साक्तिशाली समालोचकीय पद्धति स्थापित नइ होमेधरि सृजनात्मक लेखन आ पठन अपेक्षित उचाइ प्राप्त नइ कए सकैछ।

एक दिसि हनुमान चालिसाक बिसैरजाइवाला स्तुतिगान आ दोसर दिसि अन्यायोचित क्षुद्र वाणीस' भरल निन्दापरक दुनू धारसं नेपाली साहित्यमे आन मातृभाषा (मैथिलीसहित) समालोचना मुक्तिक चाहना रखने अइछ। मैथिली साहित्यिक समालोचनामें त भावुकतामय स्तुति आ आवेशमय निन्दाक प्रवृति बेसी भेटैक छै। मैथिलीमें सभस' पैघ दुर्भाग्य एहा छै। एक त कम साहित्यिक पोथीक प्रकाशन, ओहूमें सहि समालोचनाक अभावमे मैथिली पद्य आ गद्यसहितके आख्यान हक्कन कानि रहल अछि। मैथिली साहित्य मुलतः जीवनीपरक, प्रभावपरक, विवरणात्मक आ सूत्रपरक प्राध्यापकीय शैलीके हतोत्साहित करैत आगा बढबाक आवश्यकता संगैह सिद्धान्तपरक समालोचनाक अपरिहार्यता आब भए चुकल अछि।

मिसले फुकोक संकथनक सिद्धान्त अनुसार राज्यव्यवस्था आ समाजव्यवस्था विभिन्न पात्रसभके वशिभूत बनाके कोनाक किछू गोटा

अपन साम्राज्य मैथिली साहित्यमे कायम कएने छइ, तक्कर तित अनुभव ई स्तम्भकार सेहो कएने अइछ। एकरा तोडबाक अनिवार्य अछि।

वरिष्ठ साहित्यकार रामभरोस कापडिके कथा संग्रह 'एंटीवायरस' के एतह प्रतिनिधि कथासंग्रहके रुपमें प्रस्तुत कयल गेल अछि। संग्रहमें सीमान्तकृत, किनाराकृत, अपहेलित, शोषित, अभिसप्त, सबाल्टर्न, मु हदूबरा आ सुधा लोकैनके विषयवस्तु भेटैछ। ई भ्रमरके तिसरका कथासंग अछि। नेपालीय मैथिली भाषी क्षेत्रमे सभसं बेसी पोथी निकालैवाला व्यक्तित्व ओहे छथि। एक संवादमे ओ कहने छलाह, 'सडचालिसटासं बेसी पोथी प्रकाशित अछि।' ओहिमेस 'एंटीवायरस' एकटा अछि। मैथिलीमे राज्यद्वारा पेलैवाला प्रवृत्ति अखनो अइछे। भ्रमरक साहित्यमे ओइ प्रवृत्तिके फराक शैलीले विरोध भाव देखल जाइछ ।

ताहिना मैथिलीक किछु लेखकक सामन्ती संस्कारवाला प्रतिनिधि पात्र आ शैली हुनकर लेखनीमे कम भेटैछ। एकर पुष्टि डा. मेघन प्रसादक 'मैथिली कथा कोष' सेहो करैत अछि। मैथिली भाषाक कथासभमे सामन्तवाद आ ग्रामीण मुखियावादक अवशेषसभ अखनो देखमामे अबैते अछि। आब अइ तरहे मानसिकताक विरोध सेहो होमे लागल अछि। 'एंटीवायरस' अइ आलोकमे नया स्वादसहित एकटा प्रतिनिधिमूलक उदाहरण भए सकैत अछि। अइ पोथीक कथासभमे एकटा कथाकारक मार्मिकता आ हार्दिकता स्पष्ट रुपसं अनुभव होइछ। अध्ययनक क्रममे मिथिलाक बहुत कथाकारक प्रस्तुति हेतुवाद (रेसनलिज्म) आ व्यक्तिगत बहुलठपन (इन्डिभिज्यूए इंस्यानिटी) देखमामे अबैत अछि। ओकरा तोडबामे 'एंटीवायरस' सफल भेल बुझाइछ। अई कथा संग्रहकक नाममे लिखल गेल 'एंटीवायरस' मे घरनीसं पीडित पतिक पीडा आ बेदनाके मार्मिक ढंगसं प्रस्तुत कएल गेलछ।

कथामे काम करैवाला लोक नइ राखब, राखबो करब त शंका उपशंका करब, अपनेसं कएलापर समय बहुत खर्च कएनिहार महिला पात्रक चरित्र गजब शैलीमे उजागर कएल गेलछ। भान्साघरक आबाज आ कम्प्युटरपर बैसैयवाला पतिके घरनीक रोषसं थकान मेटेबाक प्रयासमे अपन पीडाक डिलिट करैत अपने धूनमे मग्न रहैक बात बेजोड रुपसं आएलछ। कथा पढैवालाके थकान सेहो दूर होमाक सुखानूभूति भए सकैछ।

अई पोथीक दोसर कथाक विषय 'आइ.सि.यू.' के बनाओल गेलछ। अइमे एकगोटा बिमार लोकसं भेट करैक लेल पहुंचयवाला आफन्तजन आ नर्सबीचके संवादमे रोचकता अछि। लेखक बिमार भैयाप्रतिक अनुजक छटपटाहट कून तरहे होइत छैक, तकरा अदूभूत बड्डु मार्मिक शैलीमे चित्रण कएने छथि, कथामे। बुझाइछ, घटना अपने आइख आगा भए रहलैए। पाठकके स्तब्ध आ आतूर बनेबाक सामग्री अइमे पसरल पडल अछि। मुदा कथामे एकैहबेर आबैयवाला पात्रसभ 'लखना', 'नारायणजी'....कथाक अरसगर बना दैत छैक। संक्षेपमे अइ तरहे पात्रक परिचय खडकैत अछि। कथाकार कियैक ओकरासभहक परिचय खोजबाक जिम्मा पाठकके देने छैथ? ई पाठकक लेल अन्याय भेल अछि। जे जेना, अइ कथामे बिमार पात्रके विगत परिछाबैत कथाकार अपन शालिनता जइ तरहे चित्रण कएने छैथ, ओ खूद भावुक त बनले छथि, पाठकके सेहो भावुक बना दैत छथि। कथाकार अपन भैयाक विगत सम्झैत भावविह्वल होइछ आ आईसियूसं निकैलके हरियर गाउन कांटीमे टाङ्गलाक बाद हलका महशुस कएल गेल भाव प्रकट कएने छथि। अन्त्यमे पहुंचैत पहुंचैत 'मोन कतेक हल्लुक होइत अछि, चेम्बरसं बहरा जाइत छी' वाक्य कथाकारक कृतिम भाव प्रकट भेल महशुस होइछ। ओतेह आइसियुसं निकललाक बाद भावुक वा मोन भारी होमाक भाव एमाक चाहि। 'अमृत पान' कथा मौलिक अछि, प्रस्तुति अद्वितीय। अई कथामे बेटीके 'पटनावाली' कहल गेल अछि। अइ प्रस्तुतिमे रोचकतासंगै पाठकके जिज्ञासु बनेबाक प्रयास भेल अछि। अईसं पुरे कथा पढबाक चाहना होइछ। अई तरहे प्रस्तुति कथाक 'गुरुत्वाकर्षण' बढा दैत छै।

मुदा कथा समुचा पढलाक बादो 'पटनावाली' बेटीक नाम नई भेटैक छै, नाम देलासं कथाका प्रसांगिकता अउर बैढ जाइछ। अईमे मधेस आन्दोलनक बात सेहो पडल अइछ। बन्दीक कारण मैथिली संस्कृति आ परम्परागत पर्व तिलासंक्रान्तीमे पडल प्रभावपर निक शैलीमे पढबामे मिलैत छै। बेटीके संक्रान्तिमे चुरा, तिल, मुरहीक लाय नइ पहुंचा सकल विषय जन जनके हियाके हिला दैवाला छैक।

कथामे मधेस आन्दोलनक चर्च होइते कथाकार बेसी भावुक बनल अनुभव होइछ। अइसं विषयान्तर भेल महशुस सेहो होइछ। चायवाला आ ग्राहकके संवादसंगैह मैथिली संस्कृतिसं जुडल विषय कथामे प्राण भइर दैछ। शुरुमे तिला संक्रान्तिमे तिल गुड खेबाक संस्कृतिके कोनाक बढैत सहरीकरणसं अतिक्रमित भए रहल अइछ, तक्कर शानदार प्रस्तुति अप्पन गुरुत्ववलके कायम रखमामे सफल अइछ, कथा। कथासंग्रहमे मौलिकताक स्वाद बेर बेर चखबाक अवसर भेटैछ। पात्रसभहक चयन सेहो निक जकां कएल गेल अछि। पोथीमे बीसटा कथा समेटल गेल अछि। सभटा समयसान्दर्भिकतासं भरल पुरल अछि। पोथीमे समटल गेल कथासभ शीर्षक अनूकूल त अइछे, कथाक शब्द सीमाके सेहो निक जका पालना कएल गेल अछि।

'द्वितीय श्रेणीक एकटा डिब्बा', 'क्वार्टन नं. एफ तीन', 'पराकम्पन', 'परिवर्तन', 'मुनियां टी स्टल', 'अन्न धन लक्ष्मी', 'गंगाप्रसादक स्वायत्तता', 'प्रतीक्षामे', 'दहेज', 'उडान', 'आ आब होरी आबि गेलै', 'इजोरिया रातुक सपना', अन्ततः, 'भेलेन्टाइन डे आ गुलाब', 'मर्निंग वाक', 'सीमापरक भूत' आ 'सपना' कालजयी कथावस्तुसभ अइछ (भ्रमर : २०१९)। कहियो पुरान नई होमेवाला विषयवस्तुक उठान भ्रमर कथासंग्रहमे कएने छथि।

अइमे सं वैदेशिक रोजगारीक विकृतिपर लिखल 'अन्न धन लक्ष्मी' समस्या आ समाधान दूनूके साथ परोसल गेल अइछ। कतेको साहित्यकारक कथासभ खासकके नवसिखुवासभ पाठकके सन्देश दइसं पहिने अपन लेखनीके गला दबा दैत छथि। ओहना समस्या आ

समाधान संगसंगै एनाई कथाक विशेषता होइछ, एकरा निक पक्ष मानल गेल छइ। 'अन्न धन लक्ष्मी' एकर निक उदाहरण भए सकैत अछि। अइ कथाक नेपाली अनुवाद कान्तिपुर दैनिकमे सेहो प्रकाशित भए चुकल अइछ। 'एंटीवायरस' मे फराक फराक शीर्षकमे फराक फराक स्वाद मिलैत अछि।

'उडान' कथाक संवाद रोचक अछि। जन जनसं जुडल यथार्थपरक विषयवस्तु अई कथासंग्रहके प्राण थिक, बेर बेर पढबाक लेल ककरो मोन ललाइत भए सकैत अछि। भ्रमरक नूतन अइ कथासंग्रहक कमजोरी जे ई जनबोली नइ बैन सकल। संस्कृतिभाषा जका जन जनके जिभसं उच्चारण करैमे कठिन होमवाला दरभंगिया आ मधुवनीक संभ्रान्त आ मानक मैथिलीक (जे अखन निर्धारण नइ भेल अइछ) शैली प्रयोग कतहू कतहू कएल गेल अछि। भाषाक शैली जनजिभहक बोली आ सरल भाषिका होमेके चाहि, कथाकार अईमे चुइक गोलाह से अनुभव होइत अछि।

साहित्यकार कापडिके किछु कथा संग्रह

क्र.सं. पोथीके नाम विधा प्रकाशित वर्ष (ईश्व संवत्)

१. तोरा संगे एजबौ रे कुजबा कथासंग्रह १९८४
२. हुगली उपर बैहत गंगा कथासंग्रह २००९
३. एंटीवायरस कथासंग्रह २०१९

साहित्यकार कापडि यात्रा संस्मरण, उपन्यास, डायरी लेखन, नाटक, शोधसहितके विद्यामे सेहो ओतबे कलम सशक्त कलम चलौने छथि। वि.स. २०६९ मे प्रकाशित हुनक 'घरमुहाँ' उपन्यास अत्यन्त चर्चित अछि। ताहिना जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठानसंग वि.स २०७० मे प्रकाशित डायरी 'कोरोनाक संत्रासमे ओझराएल जिनगी (लकडाउन डायरी) पठनीय मात्र नए शिक्षाप्रद आ प्रेरणादायक सेहो ओतबे अछि। मैथिली साहित्यके एकगोट नक्षत्र कापडि द्वारा लिखल

नाटकसब खुबे पढल गेल अछि आ मञ्चल सेहो ओतबे भेल अछि। हुनकर किछु चर्चित नाटकसबमें रानी चन्द्रवती, एकटा आओर बसन्त, महिषासुर मुर्दावाद आदि अछि। साहित्यकार कापडिके उत्कृष्ट नाटकसब नेपाली मे सेहो अनुवाद भेल अछि। शोध क्षेत्रमे सेहो हुनकर योगदान अतूलनीय छइन। जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरु, राजकमलक कथासाहित्यमे नारी, लोकनाट्य ः जट जटिन, मैथिली लोकसंस्कृति(आलेख संग्रह), तराईको फाँटदेखि हिमालको कांखसम्म (आलेख संग्रह), राजा सलहेस (जीवनी), मैथिली लोकसंस्कृति ः विविध आयाम आदि हुनक पठनीय आ संग्रहनीय शोध पोथीसब अछि।

संपादनमे सक्रियता

साहित्यकेर महत्वपूर्ण विद्यामेसँ संपादन सेहो एक अछि। अईमे साहित्यकारक संलग्नताके अनिवार्य मानल जाइछ। जे सर्जक, श्रष्टा अई विद्यामे निपूण अछि, हुनकर साहित्यिक रचना गहिगर, पुष्टकर, पठनीय आ उत्कृष्ट सेहो मानल जाइछ। अई विद्यामे सेहो मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अध्यक्ष कापडि ओतबे निमुण आ प्रारंगत छइन। हुनक संपादनमें प्रकाशित कृति, ग्रन्थ आ पोथीसब उत्कृष्ट भेटैछ। मैथिली पदसंग्रह, लाबाक धान, त्रिशूली, नेपालक मैथिली पत्रकारिता, मैथिली लोकनृत्यः भावभंगिमा एवं स्वरूप, हम और तुम, मैथिली नाटक संग्रह, महाकवि विद्यापति आ नेपाल (निबन्ध संग्रह), लोकनायक सलहेस (निबन्ध संग्रह), लोक गाथा नायक ः दीना भद्री (निबन्ध संग्रह) आदि हुनके संपादनमे प्रकाशित अछि। अईमेसँ अधिकांशके प्रकाशन नेपालक प्रज्ञा प्रतिष्ठान कएने अछि।

रामभरोस कापडी मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृतिके जगेर्ना कएनिहार महत्वपूर्ण व्यक्तित्वसभमे सँ एकगोट थिकाह, जे अपन माटिपानिके आबाजके साहित्य सिर्जनाके माध्यमसंग सदखनि उज्जर बनबैत रहलाए। प्रतिभाके अमिर ओ साहित्यके विविध विद्याके समानान्तर आ निरन्तर अग्रगति दैत रहलाए। तई मैथिली साहित्य आ

आख्यान क्षेत्रमे अर्धशतक सँ बेसी पुस्तक प्रकाशन कए चुकल अछि। ओ कविता, नाटक, कथासहितके विषयमे निरन्तर रचनात्मक कार्य करैत मैथिली भाषासाहित्यमे सेवा दए रहला अछि।

स्वभावजन्य गुण

साहित्यकार एवं प्राज्ञ कापडि अपनाविरुद्ध भेल कोनो भी आक्रमणके ओ ठंडा मिजाससँ टैकल करैमें निमुण छथि। गुटबन्दीमे हुनक विश्वास किन्तूह नई देखल गेल छइन, मुदा ओ सदखनि एकर सिकार रहलाए। बहुत रास बेर ई स्तम्भकारसंग सेहो ओ अपन अई तरहे सिकारक जिक्र कए चुकल छथि। बहुत लोक अपन मोनक बात सत्य भेलाके बावजूदों बोलबाक साहस नई करैत छथि, कियैक त सत्य बोलबाकलेल व्याग्र छाति चाहि। अई तरहे छाति मैथिलीजनमें बहुत कम भेटैछ, ओ छाती कमोवेश साहित्यकार रामभरोसमे देखल गेल अछि। करियाके करिया आ उज्जरके उज्जर कैह देनाई हुनक स्वभाव देखल गेल अछि। मोनक बात ओ बेधडक कैह दैत छथि, तई बहुत रास लोक हुनकासँ खिसियाएल पिताएल रहैत छथि। अपन अई स्वभावजन्य गुणके कारण किछु लोक हुनका 'सामन्ती' के उपमा सेहो देबाक लेल पाछा नए रहैत छैक।

मैथिली भाषासाहित्यमें लेखक लोकइनके आक्षेपमूलक प्रभाव बहुत कम भेटैत छैक। खास ककें सहगोत्री, स्वजाति लोकन्हिमे ई प्रभाव त भेटते नई छै। जौ ब्राह्मण आ ब्राह्मणेत्तरके बात अबैत अछि त आक्षेपक प्रभाव मैथिली साहित्यमे वर्षोंसँ आब भेटैछ। मुदा किछु गोटेके छोडि समालोचना विधाजन्य कार्य मैथिली साहित्यमे बड् कम छैक। बहुत रास लेखकगण स्तुतिगान आ प्रशंसागानके आत्मरति रमैत रहलाके कारण समालोचनात्मक पोथी नगन्य छैक। साहित्यकार रामभरोस सेहो अई क्षेत्रमे चुकल बुझाईछ। पचारटासँ बेसी पुस्तक प्रकाशन भेलाके बादों ई समालोचना विद्यामे हुनक उपस्थिति नय भेनाई नवतुरिया आ नवपिठीके लेल अन्याय अछि। शिरमौर्य साहित्यकारके आन विशिष्ट

साहित्यकार, समालोचक, कवि, निबन्धकार, नाटककार आदिप्रति हुनक धारणा नवपिढीसभ पढबाकलेल आतूर छथि।

ब्राह्मणेत्तर आ कायस्थेत्तरके कारण मैथिली साहित्यमे बहुतोंके दिल आ दिमागमे ईष्याभाव जगबैवाला उपस्थिति अछि। मैथिली साहित्यमे ब्राह्मणवादीसभहक दबदबा, सघन उपस्थिति आ सहभागिताके कारण आन समुदायके लोकसभके प्रभावशाली, गौरवशाली उपस्थिति आ सहभागिता गौण छै। ई एकटा यथार्थ अछि। मुदा अई यथार्थसं उपर छैथ , प्राज्ञ रामभरोस। मैथिली साहित्यमे किनाराकृत समुदाय, जाति आ वर्गसं प्रतिनिधि कएनिहार ओ ब्राह्मणेत्तर आ कायस्थेत्तरके एकगोट रोलमोडेल बनबाक चाहि, मुद्दा नइ बैन पाबि रहल छथि। एकर बहुत रास कारण भएसकैत अछि ,ओहिमे सँ एकगोट कारण ईहो भँ सकैत अछि जे ओ मैथिली साहित्यकारसभमे पाओल गेल पुरातन मानसिकता, मनोभवा, मनोविज्ञान जे अपनासँ पैघ आ आगा बनेबाक दिशि दोसर बढैए नै देनाई छैक ई संकिर्ण संस्कार मैथिली साहित्याकारसभमें गत्तर गत्तर भरल छैक, एकर अपवाद भेटनाई मुश्किल अछि। मुद्दा साहित्यकार रामभरोसमे आनके तुलनामे अई क्षेत्रमे किछु उदार देखल जाइछ। ई स्तम्भकारसहित बहुत नवतुतियाके मैथिली भाषा, साहित्यसँ जोडबाक काज ओ कएने छथि। ओ आनजनका अपन कीर्तनीयाँ, भजनीयाँके पक्षमे नए छथि।

अन्त्यमे, मधेशी, मैथिली किंवा बहुभाषिक समाजके नङ्गा आ कठीन सत्यके उजागार करबाक लेल आब अबेर भए रहल अछि। एकरा लेल प्राज्ञ रामभरोस कापडी के अग्रसर होमे बहुत जरूरी छै। ओ अखन मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानके अध्यक्ष थिकाह, अई क्षेत्रमे हुनक योगदान अतूलनीय र सराहनीय होमाक अपेक्षा बहुत रास लोकके छै। समाजक यथार्थ आ सत्यके साहित्यके विभिन्न विद्या (व्यंग कविता, नाटक आदि) के माध्यमसँ आगा आनबाक मूल उद्देश्यक बनेकाब बेर भँ चुकल अछि।

मैथिली भाषामे प्रकाशकके अभाव छै , पोथी छापैवालाके अभाव छै, कोनो धरानी पोथी छैपके तयार भँ गेल वितरक आ विक्रेताके

अभाव। पोथी खरिदकर्ताके अभाव। मैथिली पोथी खरिदके पढब आदत मैथिलीजनके विल्कुले नई छन्हि। मुक्तमे बाँटीयौं त पोथी लेबाक लेल हाथ प्रसारैवाला सभ बड बेसी भेटत। एहन अवस्थामा मे साहित्यकार रामभरोस ५० ६० टा पोथी प्रकाशित केलाहए, ई बहुतके अपन बसक बात नई छियैक।

राजनीतिकर्मीके भाषासाहित्यप्रति ओतेक इन्ट्रेस्ट नय रहैत छैक। तई ओकरासभके अपन कन्भिन्समे लकें ओ भाषासाहित्यके उन्नति, प्रगतिके अग्रगति आ अग्रदिशा देमाकले सदखनि अग्रमोर्चामे रहैत छथि। मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे हुनक नियुक्ति बहुत पैघ महत्व रखैछ। ओना राजनीतिक नियुक्ति विभिन्न साहित्य संस्था सबमे होइते रहलैए, मुदा मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे हुनक नियुक्ति साहित्य, भाषा, संस्कृति, कला, गीत संगीत क्षेत्र उन्नयन दिशि जाओत, बहुतमे आशा किरिण जगौलक अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

२.१५. चंद्रेश-विविधवर्णी आ बहुरंगी रचनाकार 'भ्रमर'



चंद्रेश-संपर्क-9430640883

विविधवर्णी आ बहुरंगी रचनाकार 'भ्रमर'

राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कतिपय सम्मानसँ सम्मानित, विविधतामे विविधवर्णी आ बहुरंगी रचनाकार छथि श्रीरामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'। ओ लिकक्खर छथि आ जे किछु लिखलनि से जमिकऽ। कही तँ यथार्थपरक ढङ्गे जनजीवनक सम-सामयिक चित्र संवेदनाक संग उपस्थापित करैत छथि। ओ मानवक सुख-दुःख आ जीवनक संवेदनाकेँ मर्मस्पर्शी ढङ्गे उभारलनि। सहजता आ स्वाभाविकता हिनक लेखनक विशिष्टता रहल अछि। ओ समाजमे व्याप्त विसंगतिकेँ उठबैत समकालीन सत्यकेँ देखार करैत छथि। तँ हिनक रचना छद्म आ पाखण्डीपक्षकेँ उघार करैत मानवक हृदयकेँ उद्देलित करैत अछि।

मिथिला-मैथिलीक प्रति अनन्य प्रेम हिनका अदौसँ रहलनि अछि। खासकऽ डा० धीरेन्द्रसँ प्रभावित भऽ जे मैथिलीमे अयलाह से मैथिलीक

रचनाकऽ एकरे भऽ कऽ रहि गेल छथि। ओ समाजक विविधतामे विषमताजन्य विसंगतिकें अपन रचनामे उठौलनि अछि। खासकऽ सीमाक एहि पार आ ओहि पार अर्थात् मिथिला क्षेत्रक सामाजिक राग-विराग पर अपन लेखनीक आधार बनौलनि अछि। ओ देश - काल स्थिति-परिस्थिति पर ध्यान केन्द्रित कऽ अपन रचनात्मकताक माध्यमे सटीकतामे समय-सापेक्ष सन्तुलित कऽ रचनाधर्मिताक निर्वाह कयलनि अछि।

हुनका जखन जाहि वस्तुक खगता बुझयलनि ताहि विधामे लिखलनि। नेपालक मैथिली साहित्यक भण्डार अक्षुण्ण रहैक से जानि-बुझिकऽ अपन रचनात्मक क्षमताकें आरो आगाँ बढ़ौलनि। हिनकामे यथार्थ-चिन्तनक क्षमता बेजोड़ छनि तँ आम जनक पीड़ा ओ विवशताकें व्यक्त करबाक छटपटाहटि अबस्से संघर्षकें स्वर दैत अछि। हिनक रचनामे प्रेमानुभूतिक धार अछि तँ दोसर दिस असमानता, शोषण आ पीड़ादिक भावमे जीवनक - प्रतिरोधी स्वर गूंजित अछि। कतहु - कतहु तँ सहजतामे सामाजिक विद्रूपतासँ टकराइत विसंगतिबोधक बात तेनाकऽ कहि दैत छथि जे मार्मिकतामे विविध आयाम स्वतः प्रस्फुटित भऽ जाइत अछि।

ओ कविता, कथा, नाटक, यात्रा - प्रसंग, निबन्ध, संस्मरण आदि तँ लिखबे कयलनि जे शोधपरक दृष्टि हिनक सेहो महत्वपूर्ण रहल अछि से कहल जा सकैत अछि। हिनक राजकमलक कथा साहित्यमे नारी' 2007 ई० मे शेखर प्रकाशन, पटनाएँ प्रकाशित भऽ आयल अछि। एहिमे राजकमलक नारी विषयक चित्रण अबस्से मोनकें मुग्ध कऽ दैत अछि। ओ स्वयं 'एहि पोथी मादे' मे लिखलनि अछि जे 'राजकमल चौधरीक साहित्य एहन पवित्र गंगाजल अछि, जकरा पीलासँ तृप्ति भेटैत छैक, ओ अद्वितीय अछि। ओना ई पोथी प्रकाशित होयबासँ 23 वर्ष पूर्वहि 1984 ई० मे लिखल गेल जे स्वयं लेखक लिखने छथि। ओ जे नारी चरित्रक प्रारूप बनौने छथि से अछि- (क) परम्परावादी (ख) शोषित (ग) आदर्शोन्मुख (घ) पुश्चली (ङ) प्रकीर्ण। ओ नारीक दुनू चरित्र जेना- 'हुनका ने केबारक भितरक नारी पसीन छन्हि आ ने बाहरी

दुनियांमे आबि कामतुष्टिक हेतु छिछिअएबा पर बाध्य नारी। हुनका एहि दुनूक बीचक नारी चरित्रसँ लगाव छलन्हि'। जेंकि ई पोथी पहिने लिखायल ते हिनक कतिपय रचनाक प्रसंग विचार छूटल अछि। तें की ? राजकमलक प्रति हिनक श्रद्धाभाव अबस्से छिटकि आयल अछि। ओ स्वयं लिखैत छथि जे 'नारी मनोविज्ञानक एतेक सूक्ष्म अध्ययन हुनक कथा, उपन्यास सभमे हमरा भेटल, हम अवाक रहि गेल रही।'। ओ हिनक उपन्यास आ कथा - साहित्यमे नारीक चित्रण एहि पोथीमे कयलनि अछि।

जेंकि राजकमलक सम्पूर्ण साहित्य हिनक लिखबाक वा विवेचन - विश्लेषण करबाक अवधि धर एकठाम पुस्तकाकार नहि भऽ सकल छल तें ओ सभटा पर विचार नहि कयलनि अछि। ओहुना सभटा रचना पर विचार-विमर्श होयब सम्भवो नहि थिक। उपन्यासमे मात्र 'आदिकथा' पर आ कथा साहित्यमे सेहो किछुए कथा पर ओ अपन विचार देलनि अछि। ओ जतबे जे किछु देलनि अछि ताहिमे 'कथ्य एवं शिल्प दुनू क्षेत्रमे हुनक अवदान अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि' तकरा ओ स्वीकारलनि अछि। स्पष्टतः ओ लिखने छथि जे 'यौन समस्यासँ आक्रान्त मनःस्थितिक निर्द्वन्द्व उल्लेख हुनक सफल रचनाकार व्यक्तित्वक परिचायक थिक'।

वस्तुतः राजकमल अपन साहित्यमे धूम मचौने छथि। ओ अपन लेखनमे जनसमाजकेँ झकझोरिकऽ नवयुगक सूत्रपात करबाक सन्देश भरलनि अछि। मानवीय अन्तर्व्यथाकेँ उभारिक संवेदनात्मक गहनतम अन्तःस्थल धरि पैसिकऽ जे प्रहार कलयनि से मनोमस्तिष्ककेँ झकझोड़ैत नवीनतामे नवदृष्टि अनबाक बात अछि से तँ कहले जा सकैत अछि।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' एहि सभ बातकेँ प्रस्तुत कयलनि। ओ राजकमलकेँ चिन्हलनि आ संक्षिप्तेमे सही ओ एहि पोथीकेँ प्रस्तुत कयलनि। ओ राजकमलक कथा साहित्यमे नारी विमर्शक बन्ने नारी अस्मिताक प्रश्न उठाकऽ दलित-शोषित-पीड़ित नारीक चित्रणकऽ सामाजिक व्यवस्थाकेँ चीरीचोंत कयलनि अछि। एहि पोथीक रचनागत

विशेषता यहै जे विभिन्न विद्वतजनक अभिव्यक्तिकें जगजियार क ओ अपन बातकें रखलनि अछि। नारी विषयक बात जखन राजकमलक कथा साहित्यमे उठत तँ एहि पोथीकें अबस्से मोन राखय पड़त। निस्सन्देह गागरमे सागर थिक ई पोथी।

दृष्टिसम्पन्न रचनाकार भ्रमरक सूक्ष्म दृष्टि यहै जे ओ सतत प्रकृति प्रेमक पुजारी छथि। कैक ठाम हिनक संग हम रही तँ बहुत किछु देखबा - भोगबाक अनुभूति भेटल अछि। ओ जतय-कतहु जाइत छथि तँ पहिने 'फोटोग्रैफिक कैमरा ' आ आब तँ 'मोबाइल से आधुनिक रहिते छनि। नीक ओ दामी मोबाइलक भरपूर उपयोग करैत छथि। मुम्बइक पार्क होअय वा कोलकाताक नेशनल पार्क वा स्थान विशेषक किएक ने होअय, ओ सभ ठाम प्राकृतिक सौन्दर्यकें अपन कैमरामे उतारैत ओकर भरपूर उपयोग करैत छथि। प्रस्फुटित फूल होअय वा केचुली - कुम्भी वा प्रवाहित जलधारा वा कोनो पुल वा आकर्षक वस्तु-जातादि ओ झट दऽ फोटो घीचि लैत छथि आ समयानुकूल उपयोग करैत छथि। हिनका लग दुर्लभ फोटो सभ अछि। हिनक अन्वेषणपरक दृष्टि यहै जे जिज्ञासु अनुसन्धाता लोकनिक हेतु ओ आद्यकवि 'विद्यापतिक दर्जनो अप्रकाशित पदसँ भरल अछि नेपाल' लिखिकऽ स्रोतक सम्बन्धमे जानकारी तँ देबे कयलनि अछि जे हुनक दू गोट अप्रकाशित गीतकें पहिने पत्रिकामे आ तकर बाद 'मिथिलाक लोकजीवन: लोक सन्दर्भ 'मे पृ० सं० 205-206 पर प्रकाशित करबौलनि अछि। जेना - (गीत - 1) रागश्री। उत्तर बरस जोगीयक अमल बइसर: जोगी- रिषी दरबार बइसर।।1।। आ (गीत 2) राग काफि। गिरि कैलास हि रंग सदा शिव। रंग होरि हो हर गिजायक संग सदा शिव होरि हो।।1।। ततबे नहि, महाकवि विद्यापतिक नवीन रचना: 'वैद्य रहस्य' सेहो प्रस्तुत कयलनि अछि। सांस्कृतिक चिन्तन कहि 'मिथिलाक लोकजीवन : लोक सन्दर्भ' पोथी मिथिला सेन्टर, अमेरिका' द्वारा 284 पृष्ठमे प्रकाशित भऽ आयल अछि। तीन खण्डमे प्रकाशित विभिन्न विषयपरक ई पोथी अबस्से विभिन्नतामे स्थान विशेष, माटि - पानि, संस्कृति, सभ्यता, राजनीति, लोककला, लोकगाथा, लोकसंस्कृति, नायक, पर्व-त्योहार, देवी-देवतादि, चित्रपरकादिकें समेटने - बटोरमे

राष्ट्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर कही तँ साक्ष्यमूलक दस्तावेज थिक। कारण, मूल्यबोधपरक ई पोथी बनि आयल अछि। लोकजीवन आ लोक सन्दर्भमे एहि पोथीक उपादेयता बनल अछि।

ओ विभिन्न संस्थामे प्रतिनिधित्व कऽ चुकल छथि। ओ जतबे वर्ष जाहि संस्थामे रहलथि तय अपन छाप छोड़ि देलथि। साझा प्रकाश होअय वा नेपालक राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, ओ कैकटा पोथी प्रकाशित करबौलनि जे मूल्यबोधक अछि। जेना - महाकवि विद्यापति आ नेपाल (2068) लोकनायक सलहेस (खण्ड-1 आ 2, 2069) लोकगाथा नायक दीनाभद्री (2070) आदि अछि। लोकगाथा ओ लोकसंस्कृतिपरक विचार - गोष्ठीक आयोजन तँ करबे कयलनि जे नेपाल पृष्ठभूमिक ऐतिहासिक सन्दर्भ सभ लऽ कऽ विभिन्न क्षेत्रक विद्वत्जनकेँ एकठाम एकत्रकऽ विमर्श करबौलनि। साक्ष्यकेँ प्रमाणक संग प्रस्तुत होयबासँ बेसी आपसीमे अर्थात् दर्शक-श्रोता आ वक्ताक बीच गहमागहमीमे झलफल करबाओल। सम्प्रति ओ मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठान'क अध्यक्ष छथि आ एहि संस्थाकेँ पल्लवित - पुष्पित करबामे दम-खम लगौने छथि। समयक प्रतीक्षा अछि।

हिनका मैथिलीक प्रति विशेष प्रेम तँ अबस्से छनि जे आनो भाषा प्रति आदर भाव छनि। ओ 2066 सालमे 'हम और तुम' हिन्दी कविता संग्रह जे पठित कविक कविताकेँ प्रकाशित करबौलनि। मैथिली कविता पोथी 'नहि, आब नहि' (दीर्घ कविता - संग्रह) क बस अब नहीं हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कयलनि। एहिना नेपाली आ भोजपुरीमे सेहो रचना छनि। मूल लेखनमे सम्प्रति 6 गोट कविता - संग्रह, चारिटा कथा-संग्रह, एकटा उपन्यास, 6 गोट नाटक आदि छनि।

हम गछैत छी जे रचना वैह पैघ होइत अछि जे लेखकक कलमसँ निकलितो, लेखकीय मानसिकताक उपजा होइतो अपन छवि-छटा स्वतंत्ररूपेण छिटकाबैत पाठकक मनोमस्किष्ककेँ हौंड़ैत बैसि जाइत अछि। मूल्यबोधक स्थितिए कोनो रचनाक प्राण थिक। तात्पर्य जे अपन दम-खम रखैत स्वतंत्र अस्तित्वपरक रचना अस्मिताधिकेँ जगबैत अपन

पहचान अपने बनबैत अछि। एकटा बात ई हो सत्य थि जे लेखक लिखबा काल जे सोचैत- विचारैत लिखैत अछि सैह पाठको सोचि पाओत से कोनो बात नहि भेल। पाठकीय सोचमे अपन दृष्टि होइत अछि जे लेखकीय बोधसँ फराक भऽ स्वतंत्र चिन्तन-मननमे अपना-अपनीक अर्थ - ध्वनिकें स्पष्टकऽ सकैत अछि आ करिते अछि।

ई लिखबाक प्रयोजन एहि हेतुएँ जे भ्रमर जे किछु लिखैत छथि वा हिनक जे कोनो गतिविधि होइत छनि से सदैव सोचल-विचारल आ नव-नव गतिविधिसँ जुड़ल निष्ठा - भावे होइत छनि। जहिना ओ साहित्यिक-कार्यमे सम्बद्ध छथि तहिना पत्रकारिताक क्षेत्र अङ्ग्रेजने छथि। मैथिलीमे 'गामघर', 'अर्चना' 'आंजुर' आदि प्राकशित कयलनि। वर्ष - 36, अंक-3, क्रमांक- 106, दिसम्बर - जनवरी 2023 'आंजुर' क स्मृतिकें पेटारमे बन्न 'सोमदेव' आयल अछि। 'सोमदेव' पर केन्द्रित 'आंजुर' क ई अंक - अबस्से सोमदेवकेँ चिन्हब-बुझबाक संगहि हुनक जीवनदृष्टि आ रचनादृष्टि पर प्रकाश दैत अछि। शोषित-पीड़ित लोकजीवनक उन्नायक छलाह सोमदेव जे जीवन भरि संघर्ष कयलनि आ कर्म बले साहित्य-साधनाकऽ सपूत भेलाह। मानवीयताक गुण बले ओ महानताक आसन पर आसीन भेल छथि। तहिना भ्रमर अपन लक्ष्य सिद्धिक हेतु सतत नव-नव प्रयोग करैत प्रयोधर्मा बनि अपन औकादि देखा रहल छथि। ओ अपनाक सामाजिक सरोकारसँ जोड़ैत मुक्तिमार्गक अनुयायी छथि।

चीनक उपजा 'कोरोना' सम्पूर्ण विश्वकेँ दलमलित कऽ देलक। जेंकि 24 मार्च 2020सँ नेपालमे 'लॉकडाउन' लगा देलक। लोककेँ घरेमे सुरक्षाक दृष्टिएँ रहबाक लेल बाध्य कऽ देलक। एहि संक्रामक बीमारीक फलस्वरूप एकटा अघोषित युद्ध ठानल गेल तँ एहि सम-सामयिक स्थिति - परिस्थितिजन्य पोथी 'कोरोनाक संत्रासमे ओकरायल जिनगी (लकडाउन डायरी)' रामभरोस कापड़ि भ्रमरक जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठानसँ 2020 ई० मे प्रकाशित भऽ आयल। एहिमे लेखकक 10 अप्रैल 2020 सँ 22 जुलाई 2020 धरिक खेरहा आ 'उपसंहार' अछि। संगहि प्रसंग-अप्रसंग सेहो अछि।

यानि 24 मार्च 2020क प्रसंग | 'कोरोना' नाम सुनितहिं लोकक रोइजा भुटकि जाइत छल। सभ एक-दोसर सशंकित नजरिएँ देखैत छल। साफ-सफाइ, सोशल डिस्टेंसिंग आ मुखड़ा अर्थात् 'मास्क'क उपयोग बेस चलल। बच्चा आ बूढ़ पर खतरा बेस मड़रायल। ओना जुआन - जहान होअय वा चिकित्सक अर्थात् जे चपेटमे पड़ल से सभ खतरा पड़ल। कतेको मूइल, बेरोजगारक संख्या बढ़ल। कर्मसँ मानवताक गुणमे उत्तरोत्तर वृद्धि होइत अछि ताहि कर्मक सुकर्म दृष्टिगत भेल। हीत-मीतक पहचानबोध कराओल। जीवन जीवाक ढंग सिखाओल। कही तँ युगक वास्तविक ओ क्रमबद्ध सत्य, तथ्य ओ कथ्य जगजियार भेल। कही तँ नेपालक आधुनिक इतिहास संक्षिप्ततामे देखार भेल। ते स्पष्टवादितामे लेखनी चमकि उठल अछि। एहि कोरोनाक संत्रासमे ओझरायल जिनगी पोथी अपन सार्थक उपस्थितिबोधमे। मानव जीवनक हिस्सा बनिक आयल ई बीमारी। लेखकक सामर्थ्य-शक्ति आ संघर्ष चेतना सेहो चित्रणमे झलकि आयल अछि। जे समाजक सत्यता जगजियार भेल ते लोकक विचार, संवेदनाक संग समय सापेक्ष नव अनुभूति दृष्टिगत भेल।

भ्रमर ई पक्ष विशेषे रहल अछि जे ओ ताकि - हेरिकऽ साहित्यकार बनयबाक प्रयास करैत छथि। एहि लेल ओ लोककें उत्साहित करैत छथि। रचना लिखाकऽ अपन पत्रिकामे वा आनो ठामक पत्रिकामे प्रकाशित करयबाक प्रयास करैत छथि। ओ जतेक नव रचनाकार बनेलथि आ ओहि नव रचनाकारक रचना लिखबाकऽ प्रकाशित कयने वा करबौने छथि से भविष्यक नव पीढ़ीकें बनयबामे योगदान अबस्से भरपूर रहब कहल जेतनि। साहित्यिक परिवेश ओ वातावरणक निर्माण ओ अपन कर्मठता आ सक्रियताक संग सार्थकता हेतु करैत छथि। कही तँ ओ अपन पाछाँ एकटा बेस पैघ जमाति ठाढ़ कऽ देलनि।

ई सत्य थिक जे हिनक जीवन-यात्राक कटु-मधु अनुभवमे बहुतो बात घटित भेल अछि। हिनक चेतन-अवचेतन मोनमे सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक पक्षमे घटित घटना- प्रामाणिकताक संग उभरितो ओ सदैव अपन काजमे वक जकाँ ध्यान लगौने रहल छथि। सहबाक ई सामर्थ्यबोध

ओ अतिरिक्त रूपमे अर्जित कयने छथि। किएक तँ नेनपनेसँ हिनक रौद्र रूप नुकायल नहि रहल अछि। जिद्दी तँ वैह जे ओ अपन मोनमे जे बात ठानि लैत छथि से कैयेकऽ छोड़ैत छथि। उपेक्षा, अपमान आदि होइतो ओ आब अंगेजितो नहि छथि। एकमात्र लक्ष्य जे कर्मबलें आगाँ बढ़ी। मान-सम्मान तँ ओ ततेक पाबि नेने छथि जे ढेर-ढाकी प्रशस्तिपत्रादि घरमे ढेरिआयल छनि। मिथिला - मैथिलीक नाम पर ओ धन-सम्पत्तिक परवाह नहि कयने छथि। दनादन पोथी आ पत्र - पत्रादि प्रकाशित कयने छथि।

देखल जाय तँ निस्सन्देह कहल जायत जे समय - साक्ष्यक साक्षी बनैत अपन रचनाधर्मिताबलें भ्रमर अपन युगक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर छथि। ओ अपन प्रतिभा बलें जीवनक बीचसँ विभिन्न सामाजिक घटनादिक उठाकऽ जीवन-पक्षकें मजगूती प्रदान कयलनि अछि। ओ सामाजिकता आ मानवीय चिन्ताकें अपन अनुभूति प्रवणता बलें नैतिकता आ इमानदारीपूर्वक उठाकऽ रचना जगतक जे स्वरूप गढलनि अछि से हुनका साहित्य जगतक सिरमौर बनबैत छनि।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

२.१६. अयोध्यानाथ चौधरी- "भ्रमर"क बहुआयामिक व्यक्तित्व



अयोध्यानाथ चौधरी

"भ्रमर"क बहुआयामिक व्यक्तित्व

गत बर्ष जनकपुरक प्रसिद्ध वेलकम होटलमे आयोजित एकटा पुस्तक समारोहमे बैनर पर लिखल' राम भरोस कापड़िक पचासम् कृति' देखि मोन जिज्ञासा भावसँ तरंगित भ' उठल। एकदम सुपरिचित व्यक्तित्व तथापि हमरा ई जानकारी नव बुझबाजोग भेल। ओना हुनका द्वारा सम्पादित- प्रकाशित" आँजुर" पत्रिकाक बाहिरी आ भीतरी आवरण पृष्ठ पर कतेक बेर हुनकर लिखित किताबसभक फोटो अभरैत रहैत छल मुदा एतेक रास किताब भ' गेल हेतनि तकर अंदाज नहि भ' सकल छल। एहि बीच जानकारी भेटल जे हुनकर दूटा किताब एखनो प्रेसमे छनि ताहिसँ अपनहुँ लोकनि हुनक निरन्तर लेखन प्रवृत्तिसँ आश्वस्त भ' सकैत छी । मुदा लेखनमे मात्र नहि,ओ मिथिला- मैथिली सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजन, मिथिला- मैथिली सम्बन्धित आन्दोलन आदिमे सेहो ओतबे बढि- चढिकय भागीदारी देखबैत देखल गेलाह अछि । से राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय दुनू स्तर पर। आ जनतब कराबी जे तकर मूल्यांकन सेहो पूर्ण रूपमे भेल छनि । ओइ मामलामे ओहन भाग्यशाली कम्मे भेटताह। उदाहरणस्वरूप नेपालमे मधेश प्रदेश द्वारा पहिल आ नव-गठित तीन सदस्यीय' मधेश प्रज्ञा- प्रतिष्ठान'क प्रमुखक जिम्मेवारी किछुए दिन पूर्व सम्हारलनि अछि । ओना एहिसँ पूर्वमे सेहो ओ नेपालक केन्द्रीय सरकार

द्वारा गठित" नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान" सन महत्वपूर्ण निकायक प्राज्ञ-सदस्यक रूपमे सेहो कार्य क' चुकल छथि । ततबे नहि, ओ नेपालक केन्द्रीय सरकार अन्तर्गत दोसर महत्वपूर्णसाहित्यिक आ प्रकाशन सम्बन्धित संस्था" साझाप्रकाशन "क अध्यक्षक रूपमे सेहो ओ अपन गहन जिम्मेवारी निर्बाह क' चुकल छथि । ई सब हुनकर कार्य- कुशलता आ चातुर्यक यथेष्ट प्रमाण अछि ।

आब आबी हुनक कृतिसब पर दृष्टिपात करी । हुनक पहिल प्रकाशित रचना" इमान्दार बालक" नामक एकटा बालकथा छल जे 1964 ई. मे मिथिला मिहिर साप्ताहिक, पटनामे छपल छल। अर्थात हुनक साहित्यिक यात्रा आइसँ 54 वर्ष पहिने शुरु भेल जे एखन धरि ओहिना गतिमान अछि । हुनकासँ प्रायः एकोटा विधा छुटल नहि अछि जकरा क्रमिक रूपमे नीचाँ देबाक प्रयास कएल गेल अछि ।

हुनक कवितासंग्रहमे बन्न कोठरी, औनाइत धुआँ (2029 साल), नहि,आब नहि(2036 साल) , मोमक पघलैत अधर(गीत गजल), अप्पन अनचिन्हार(1990 ई.), अन्हरियाक चान(गजल संग्रह, 2070 साल, आ युद्धभूमिक एसगर योद्धा(2075 साल) आदि छनि । हुनक दीर्घ कविता' नहि, आब नहि' क नेपाली अनुवाद' भयो, अब भयो' आर हिन्दी अनुवाद' बस, अब नहीं' शीर्षकमे भेल अछि । हुनक कथासंग्रहमे तोरासंगे जयबौ रे कुजबा(1984 ई.), हुगली उपर बहैत गंगा(2065 साल) आ एन्टी भाइरस(2076 साल) क नामलेल जा सकैत अछि । हुनक एकमात्र उपन्यास' घरमुहाँ' (2029 साल) अछि जकर अंग्रेजीमे अनुवाद भ' प्रकाशित होबय जा रहल अछि । हुनक एकटा' चीन जे हम देखल' (2070 साल) एकटा यात्रावृत्तान्त सेहो अछि जाहिमे चीन भ्रमणक संस्मरण अछि । हुनक कोरोना कालमे लिखल गेल एकटा लकडाउन डायरी सेहो अछि जे' कोरोनाक संत्रासमे ओझरायल जिनगी(2070 साल) नामसँ प्रकाशित अछि ।

ओ बहुत रास नाटक सेहो लिखने छथिजेना रानी चन्द्रावती(2045 साल) , एकटा आओर वसन्त(2052 साल) , महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक(2054 साल) तथा भैया अएलै अपन सोराज(नाटक संग्रह2067 साल) आदि । हुनकर नाटक सभक नेपाली अनुवाद' भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु(2064 साल) नामसँ सेहो प्रकाशित अछि । हुनक किछु शोध परक पुस्तकसभ सेहो प्रकाशित अछि जेना' जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरु(2056 साल) , राजकमलक कथा साहित्यमे नारी(2064 साल) , लोकनाट्य: जट- जटिन(2064 साल) , Cultural Heritage of Janakpur (2062 साल) हुनक किछु आलेख संग्रह सेहो प्रकाशित छनि जेना' मैथिली लोकसंस्कृति' (2066 साल), तराईको फांट देखि हिमालको कांख सम्म'(2067) , मिथिलाक लोकजीवन: लोक सन्दर्भ(2079) , समयको अन्तराल पछ्याँउदै(2066)आदि । ओ एकटा' राजा सलहेस' (2074) नामक जीवनी सेहो प्रकाशित कयने छथि।

विविध बिषयक किछु किताब सेहो लिखने छथि जेना' आजको धनुषा(2039 साल), जनकपुर लोकचित्र(2046) , ठेकान पर(विचार संग्रह) , समय- सन्दर्भ(2068 साल) आदि ।

उपर्युक्त विवरणसँ'भ्रमर'क साहित्यिक अवदानक एकटा ब्यापक चित्र बनैत अछि । मुदा एहने ब्यापक अछि हुनक पत्रकार व्यक्तित्व जकरा सम्पूर्ण व्यक्तित्वक एकटा महत्वपूर्ण अंगके रूपमे ओकरा छोड़ल नहि जा सकैत अछि । हिनकर पत्रकारिताक इतिहास सेहो लगभग ओतबे पुरान अछि । ओ2026 साल अर्थात लगभग53 बर्ष पहिने' वैदेही' साप्ताहिकक कार्यालय प्रतिनिधिक रूपमे पत्रकारिताक शुरूआत कयलनि । तकर बाद2049 सालमे नेपालक प्रतिष्ठित दैनिक अखबारक प्रारम्भेसँ5 बर्ष धरि जनकपुर संवाददाताक रूपमे कार्यरत रहलाह। अपने सम्पादनमे गत38 बर्खसँ नेपालक एकमात्र मैथिली साप्ताहिक' गामघर'क सम्पादन आ प्रकाशन करैत आबि रहलाह अछि

। 'ऑजुर' नामक मैथिलीक द्वैमासिक पत्रिका विगत 35 बर्षसँ सम्पादन- प्रकाशन करैत अएलाह अछि । 2054 सालसँ किछु बर्ष धरि एकटा नेपाली दैनिक 'सुप्रभात'क सम्पादन- प्रकाशन सेहो कयलनि । आ 2055 सालसँ अद्याबधि 'जनकपुर एक्सप्रेस' नामक नेपाली दैनिक सम्पादन- प्रकाशन करैत आबि रहलाह अछि ।

एकर अतिरिक्त ओ किछु पुस्तकाकार संग्रह सभक सम्पादन सेहो कयलनि जेना 'मैथिली पद्यसंग्रह' (प्रकाशन: नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान: 2051 साल), लाबाक धान(कवितासंग्रह), ' त्रिशुली' (स्व. मथुरानन्द माथुर लिखित खण्डकाव्य, 2049 साल) नेपालक मैथिली पत्रकारिता(2044 साल), मैथिली लोकनृत्य: भाव- भंगिमा एवम् स्वरूप(नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान(2061 साल), अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल(2065 साल), हम और तुम(हिन्दी कवितासंग्रह, 2066 साल), मैथिली नाटकसंग्रह (2067), महाकवि विद्यापति आ नेपाल(साझा प्रकाशन, 2068), मैथिली लोक- संस्कृति संगोष्ठी प्रतिवेदन(2069 साल), लोकनायक सलहेस(निबन्ध संग्रह- खण्ड1 तथा खण्ड2 , साल 2069), दीनाभद्री(निबन्ध संग्रह 2070 , नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान), अहाँ जे कहलहाँ(साक्षात्कार संग्रह, 2071) आदि ।

मतलब जे राम भरोस कापड़ि' भ्रमर ' कसाहित्यकार आ पत्रकार- दुनू व्यक्तित्व समानरूप सँ, समानान्तर रूपसँ निरन्तर गतिमान छनि । ओ सर्वदा सक्रिय रहैत छथि। एकर अतिरिक्त हिनक व्यक्तित्वक एकटा आर महत्वपूर्ण पक्ष छनि- राष्ट्रिय-अन्तर्राष्ट्रिय स्तरक साहित्यिक-सांस्कृतिक सभा-सम्मेलनमे सक्रिय सहभागिता । ओ विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगाक आजीवन सदस्यक हैसियतसँ करीब करीब प्रतिवर्ष नेपाली साहित्यकारलोकनिक टीमक नेतृत्व करैत छथि आ ताहि हिसाबसँ भारतक अनेक विशिष्ट शहरसबक भ्रमण क' चुकल छथि । ओहि संस्थान द्वारा प्रायोजित अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक सफल आयोजन काठमाण्डूमे एक बेर आ जनकपुरधाममे दू बेर करबा चुकल छथि । कोनो सभा- सम्मेलनक आयोजनमे हुनकर ब्यबस्थापकीय

क्षमताक प्रशंसा करैटा पड़त । मुदा तकर लाभ सेहो पर्याप्त रूपमे भेटि चुकल छनि आ भेटैत रहैत छनि । हमर मतलब कार्यक समुचित मूल्यांकनसँ अछि । ओ दर्जनों पुरस्कार आ सम्मानसँ विभूषित भ' चुकल छथि ।

सबटा प्राप्त सम्मान आ पुरस्कारक विवरण उल्लेख नहि क' हम किछु मात्र इंगित कर'चाहब, जेना नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रदत्त प्रथम' मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार' (2052 साल), विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा' मिथिला विभूति' सम्मान, शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा' शेखर सम्मान' , नेपाल मैथिली साहित्य परिषद, जनकपुर द्वारा' वैदेही प्रतिभा पुरस्कार', अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन, मुम्बई द्वारा' मिथिलारत्न' सम्मान, मधुरिमा नेपाल द्वारा' मधुरिमा सम्मान' , चेतना समिति, पटना द्वारा' यात्री चेतना पुरस्कार' , साझा प्रकाशन द्वारा' साझा लोक संस्कृति पुरस्कार(2068 साल) , नेपाल सरकार द्वारा मैथिली भाषा पर देबय जायवला सर्वोच्च' नेपाल विद्यापति भाषा साहित्य पुरस्कार' (2069 साल), रायपुर(छत्तीसगढ, भारत) द्वारा' मिथिला विभूति सम्मान' (2069) आदि । एहि सभक अतिरिक्त राष्ट्रपति द्वारा" सुप्रवल जनसेवा श्री तृतीय" (2077 साल) आ नेपाल सरकार द्वारा गद्याख्यान/ नाटकक हेतु देल जायबला" महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा पुरस्कार" (2077) विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि ।

नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञक रूपमे चीन, बांगलादेश आ भारतक साहित्यिक भ्रमणक सुअवसर प्राप्त करब सेहो एकटा सौभाग्यक बात अछि । एकर बाद हुनका सम्बन्धित किछु विशेष उल्लेखनीय बातक जानकारी कराबी । बहुत उल्लेखनीय बात सबमे एकटा विशेष उल्लेखनीय योगदान इहो अछि जे हुनकासँ पहिने साझा प्रकाशन मात्र नेपाली किताब प्रकाशित करैत छल, मुदा ओ जखन अध्यक्ष भेलाह त' पहिल बेर" बगियाक गाछ" शीर्षकसँ एकटा मैथिली बाल कथासंग्रह प्रकाशित करौलनि । दोसर महत्वपूर्ण बात जे पहिल बेर काठमाण्डूमे ओ अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन(2067 साल) आयोजन कैलनि जकर उद्घाटन नेपालक राष्ट्रपति आ विसर्जन नेपालक उपराष्ट्रपति कैलनि ।

तेसर जे काठमाण्डूमे आयोजित सार्कस्तरीय कविगोष्ठीमे ओ सर्वप्रथम मैथिलीक कविक रूपमे नेपालक प्रतिनिधित्व कैलनि । चारिम जे ओ पहिल बेर नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यक रूपमे प्रधान सम्पादकक जिम्मेवारी वहन करैत मैथिलीमे " आडन " पत्रिकाक शुभारम्भ कैलनि ।

उपर्युक्त विवरणसँ मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृति तथा मैथिली पत्रकारितामे हुनक विशेष अवदान दिश संकेत करैत अछि । कोनो तरहक साहित्यिक- सांस्कृतिक कार्यक्रम, सभा- सम्मेलन, गोष्ठी आदिमे हुनक ब्यबस्थापकीय क्षमताक प्रशंसा करहिटा पड़त। आयोजनक सम्पूर्ण नवशा जेना दिमागमे बैसल रहिते छनि । ककरा कोन जिम्मेवारी देलगेलत' ओकरा पर बरसि जयताह। ओ कार्यकर्ता आर निरुत्साहित भ' जाइए। आ ताहिसँ ओकरासँ हुनक सम्बन्धमे ठंढापन आबि जाइत अछि । एकर अनुभूति जखन हिनका महिना, दू महिनाक बाद होइत छनि, तखन ओ अगे भ' क' फोन करताह, " की यौ, कत' गायब रहैत छी? एकबेर भेट होअओ ने । एना जे गायब भ' जेबै, त' काज चलतै? ताबत् धरि ओहो जे बिक्षुब्ध बनल रहैत छथि सेहो सामान्य भ' जाइत छथि आ सम्बन्धक गाड़ी पूर्ववत गतिमान भ' जाइत अछि । तँ एकरा गुण कही की अवगुण?

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

२.१७.अजित कुमार झा-घरमुहाँ: मधेशी आन्दोलन आ सामाजिक समरसताक दस्तावेज



अजित कुमार झा- संपर्क-9472834926

घरमुहाँ: मधेशी आन्दोलन आ सामाजिक समरसताक दस्तावेज

विदेह अपन श्रृंखला मे अहि बेर एक एहन विभूति केँ ऊपर विशेषांक निकालबाक नेयार केने अछि जे दुनु पारक मिथिला, मैथिली एवं मैथिलक मध्य सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक क्षेत्र मे सेतुक कार्य क' रहल छथि। जनकपुर धाम बिनु मिथिलाक चर्च अधूरा अछि। मानलहुँ जे नेपाल मे ई सब मधेशी कहाइत छथि मुदा हमरा सब लेल त' अपन सहोदरे छथि। जनकपुर धाम सँ पुनौरा केँ भिन्न कोना मानि सकैत छी। भनहि दुनुक मध्य सीमा रेखा घीचि देल गेल अछि मुदा दुनुक अन्तर्मन मे एक्कहि तरहक सभ्यता ओ संस्कृति अछि आ ई सब अहिना सम्भव नहि होइत छैक, अहि केँ लेल सेतुक आवश्यकता होइत छैक आ

ताहि मे सँ एक छथि नेपालक धनुषा केर बघचौरा गामक मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ बहुआयामी साहित्यकार श्री राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' जे वर्तमान मे जनकपुर धाम मे रहैत छथि। लगभग पाँच दशक सँ निरन्तर माँ मैथिली केर सेवा मे लागल छथि। साहित्यक लगभग सभ विधा मे उत्कृष्ट रचनाक हिनकर अपन संसार छन्हि। विदेह पर बहुत किछु उपलब्ध छन्हि जकर आनन्द निःशुल्क उठाओल जा सकैत अछि। संपादन मे सेहो निष्णात छथि। हिनक रचना संसार त' बड्ड पैघ छन्हि मुदा एखन हम चर्चा करब हिनक उपन्यास "घरमुँहा" केर।

जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, जनकपुर धाम सँ सन् 2012 मे प्रकाशित हिनक पहिल उपन्यास "घरमुहाँ" मधेश आन्दोलनक व्यथा कथा अछि। अपन रचना प्रसंग मे श्री भ्रमर जी लिखने छथि : ' मैथिली मे समालोचकक कमी छैक आ ताहुमे नेपालक रचना पर लिखबाक ककरा पलखति छैक। नेपाल मे त' आर अकाले छैक। तखन रचनाक मूल्यांकन भ' नहि सकल तँ अपन लेखन केँ आनक आँखिए किंवा पाठकक आँखिए तौलबाक अवसर नहि भेटल।' मुदा हिनकर रचनाक मूल्यांकन त' अहि पारक वरिष्ठ मैथिली साहित्यकार सब निरंतर करैत रहलनि अछि आ जे भी कमी रहि गेल छल तकर पूरा करबाक प्रयास विदेह क' रहल अछि।

'भ्रमर' जी केर उपन्यास "घरमुहा" मधेशी आन्दोलनक पृष्ठभूमि पर लिखल एक अद्भुत कृति अछि। नेपालक दक्षिणी भागक मैदानी (तराई) क्षेत्र केँ मधेश आ अहि तराई मे रहय वाला भारतीय मूल केँ लोग जे मैथिली, थारु, अवधी एवं भोजपुरी भाषी छथि तिनका सब केँ एतह मधेशी कहल जाइत छैक। कहबाक कोनो प्रयोजन नहि जे हिनकर सबहक खानपान, रहन सहन सब अपने सन छन्हि। मुदा एतह हिनका सब सँ संवैधानिक भेद भाव केँ कारण अहि आन्दोलनक प्रयोजन पड़लै। आखिर पहाड़ी आ मधेशी मे भेदभाव किएक? अपन अधिकार केर प्राप्ति हेतु कतेको शहीद भ' गेलाह। नेता सब केँ कि छैक, पिसाइत त' अछि आम जनता चाहे ओ मधेशी होइक आ कि पहाड़ी?

जुलुश सड़क पर नारा बाजी करैत आगू बढ़ि रहल अछि आ लोगक करमान लागल छैक। जखन कोनो भी पहाड़ी केर घर अथवा दोकान देखाइ पड़ैत छैक अहि भीड़ मे सन्धिआयल उपद्रवी तत्व अपन हाथ साफ क' लैत अछि। मधेशी आन्दोलन उग्र रूप धारण क' चुकल छल। इम्हर घर केँ भीतर पहाड़ी मास्टर साहेब रमेश उपाध्याय अपन घर मे अहुरिया काटि रहल छथि। स्कूल, कालेज, दोकान आ अन्य सब बन्द छल मुदा पेटक धधकैत आगि कत्तहु शान्त रहौ? आ अहि केँ लेल चाही रुपैया आ मास्टर साहेब केँ हाथ खाली छलनि। धीया पुता केँ लेल चिन्ता होइत छन्हि तँ तैयार भ' क' घर सँ निकलि बैंक जयबाक नेयार केने छथि। मास्टर साहेब केर पत्नी सरिता हिनका बैंक जाय सँ रोकबाक प्रयास करैत छथिन्ह मुदा मास्टर साहेब कहैत छथि : 'अहाँ व्यर्थ चिन्तित होइत छी। हमरा केओ किछु नहि कहत। भरल शहर मे त' हमर विद्यार्थी अछि। ककरो हम बिगाड़ने नहि छियै त' के की करत!' खिड़की सँ हुलकी मारि स्थितिक टोह लेबाक प्रयास करैत छथि आ आन्दोलनी भीड़ केँ उपद्रव देखि निकलबाक हिम्मत नहि जुटा पबैत छथि। मास्टर साहेब केँ अपन शहर डेराओन लागि रहल छलनि आ एहन मे फोनक घंटी सुनि भयभीत भ' जाइत छथि मुदा हिम्मत जुटा क' फोन उठाबैत छथि। भय दूर होइत छन्हि किएक त' ओम्हर सँ अपन मीत जगमोहन केँ आवाज सुनि हिनका बल भेटि जाइत छन्हि। सुख दुःख केर साथी अपन मीत पर हुनका पूरा भरोसा छलनि। ओम्हर हिनकर मित्र मधेशी आन्दोलन मे जी जान सँ लागल छथि मुदा अपन पहाड़ी मीत मास्टर साहेब केर सुरक्षा हुनका लेल चिन्ताक विषय छल। अहि संकट केँ समय मे जगमोहन अपन मीत केँ सपरिवार अपना घर पर आबय लेल जिद्द पर अड़ल छथि मुदा मास्टर साहेब केँ होइत छन्हि जे जाँ ओ अपन घर छोड़ि मीतक घर पर चलि जेताह त' आन्दोलनक धार कमजोर पड़ि जेतैक। जगमोहन केँ पुरना दिन सब मोन पड़ैत छन्हि तँ अपन मीतक लेल आन्दोलन केर राह सँ हटय लेल सेहो तैयार भ' जाइत छथि मुदा मास्टर साहेब सप्पत दैत अपन मीत केँ रिकि लैत छथि। जगमोहन मोन मसोसि क' रहि जाइत छथि। ओना मास्टर साहेब केँ मोन होइत छन्हि जे अहि आन्दोलन मे ओ अपन मीत जगमोहन अधिकारी केँ साथ देथु आ सड़क पर उतरि मधेशी आन्दोलन जिन्दाबादक नारा लगाबथि मुदा पहाड़ी छथि

आ घर मे नेपाली बजैत छथि एहन मे मधेशी सबहक केहन प्रतिक्रिया रहतनि से चिन्ताक विषय छन्हि।

लगातार आठ मास सँ आन्दोलन जारी छल। सबहक जीवन अस्त-व्यस्त भेल छलै। कोनो भी आन्दोलन हेतु पूँजी केर आवश्यकता होइत छैक आ अहि कार्यक बीड़ा उठौने छलथि दक्षिण बारी टोलक कहबैका कामेश्वर सिंह। हिनक पुत्र राजीव जेँ कालेज मे पढैत छल से अहि आन्दोलन मे जी जान सँ जुटल छल। जुलुश मे शामिल उपद्रवी तत्व केँ देखि राजीव केँ चिन्ता सेहो होइत छलै। सरकारक तरफ सँ वार्ता केर आश्वासन भेटैत छैक आ ई खबर सुनि मास्टर साहेब केँ होइत छन्हि जे चिन्ता टरल मुदा सब 'बुढ़ियाक फूसि'। वार्ता विफल होइत छैक आर आन्दोलन तीव्र मुदा मास्टर साहेब केँ पूरा भरोसा छलनि जे एक-न'-एक दिन सरकार केँ झुकहे पड़तैक आ मधेशी सब केँ न्याय भेटि क' रहतैक चाहे अहि लेल वार्ताक कतेको दौड़ चलतैक। हिनका लेल चिन्ताक मुख्य विषय छलनि सामाजिक समरसताक लोप भेनाइ। पहाड़ी लोग सब केँ धमकी भेटनाइ शुरु भ' गेल छलै आ लोग औने पौने दाम मे अपन बाप दादाक बनाओल घर आ जमीन केँ बेचि पलायन करय लेल मजबूर होइत छथि।

वार्ताक कतेको असफल दौड़ केँ उपरांत 30 अगस्त 2007 क' 26 बूँदा पर सहमति बनि जाइत छैक। आन्दोलन बन्द होइत अछि। विजय जुलुश निकलैत अछि। मुदा नेपाल सरकार मधेशी सबहक खुशी मे फेर ग्रहण लगौलक आ तकर नतीजा होइत छैक जे मधेशी आन्दोलन पुनः धधकि उठैत छैक। अनिश्चितकालीन नाकाबंदीक घोषणा होइत अछि। सोरह दिनक नाकाबंदी सँ राजधानी काठमांडू मे हाहाकार मचि जाइत छैक आ बाध्य भ' क' नेपाल सरकार केँ झुकय पड़ैत छैक आ आठ बूँदा सहमतिक उपरांत संविधान सभाक निर्वाचनक तैयारी प्रारम्भ होइत अछि। नीँक संख्या मे मधेशी चुनाव जीति क' अबैत छथि आ नेपाल मे एकटा न'ब अध्यायक श्री गणेश होइत छैक।

दुनु पक्षक सहमतिक उपरांत जे मास्टर साहेब मधेश जिन्दाबादक नारा लगौने छलथि आ संगहि नीँक दिनक परिकल्पना केने छलथि से वर्तमान परिस्थिति मे श्रापित भ' कुहरि रहल छलथि। संपूर्ण मधेश मे विभिन्न समूहक नाम पर चंदा उगाही, अपहरण, धमकी देनाइ शुरु भ' जाइत अछि। सशस्त्र आन्दोलनक नाम पर आम पहाड़ी केर जीवन नर्क भेल जा रहल छल। वास्तविकता त' ई छल जे संपूर्ण आन्दोलन गुंडा तत्व केर द्वारा 'हाइजैक' भ' जाइत छैक। अपनो सबहक देश मे एखन धरि जतेक भी आन्दोलन भेल अछि तकर अन्तिम परिणाम इएह भेल अछि। मास्टर साहेब केँ फोन पर लगातार दस लाख रुपैया देबाक लेल धमकायल जा रहल छन्हि। मास्टर साहेब अपन घर जमीन सब बेचि अपन परिवारक संग कोनो सुरक्षित स्थान पर पलायन करबाक योजना अपन पत्नी सरिता केँ समझाबैत छथि। अतेक आसान काज त' नहि छैक अपन बाप दादाक डीह पर सँ पलायन केनाइ मुदा इतिहास गवाह अछि जे मजबूरी मे लोग की नहि करैत अछि? इम्हर मास्टर साहेब तैयारी मे जुटल छथि आ ओम्हर कालेज सँ घुरैत काल हिनकर बेटी किरण केर अपहरण भ' जाइत छन्हि। अपहर्ता दस लाख रुपैया नहि देला पर अथवा पुलिस केँ कोनो तरहक सूचना देला पर हिनकर बेटी किरण केँ जान सँ मारि देबाक धमकी देने छलनि। अपन मोनक व्यथा मास्टर साहेब ककरा कहितथि? हुनकर मीत जगमोहन सेहो कत्तहु बाहर निकलल छलथि।

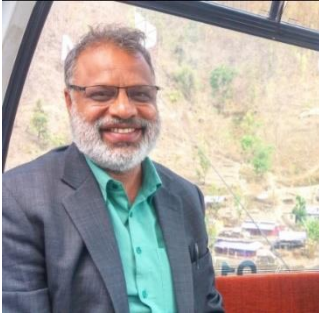
किरण केर प्रेमी राजीव केँ अहि बातक किछु भनक लगैत छैक त' ओ अपन स्तर पर खोजबीन करैत अछि आ अपहर्ता सबहक पर्दाफाश करय मे सफल होइत छैक आ मास्टर साहेब सँ भेंट करय अबैत छथि त' जगमोहन सँ ज्ञात होइत छन्हि जे ओ अपन घर बेचि क' अपन परिवारक संग सँझुका बस सँ काठमांडू लेल विदा भ' गेलाह। ओ अपन मीत केँ ऊपर भरोसा नहि क' सकलाह आ सुरक्षित स्थान केँ लेल भारी मोन सँ प्रस्थान क' गेलाह। राजीव, ओकर पिता कामेश्वर सिंह आ जगमोहन मास्टर रमेश उपाध्याय केँ रोकय लेल निकलैत छथि। अपन प्रभाव सँ कामेश्वर सिंह बस रोकबाबय मे सफल होइत छथि आ मास्टर साहेब केँ बस सँ उतारल जाइत छन्हि। अहि अपहरण मे के शामिल छल

आ इंसानी रिश्ता कोना तार तार भ' रहल अछि तकर अद्भुत वर्णन भेल अछि अहि उपन्यास मे जे बिनु पढ़ने नहि समझि सकैत छी। मास्टर साहेब केँ घर घुरि चलबाक लेल कामेश्वर सिंह आ जगमोहन अनुनय विनय करैत छथि मुदा जखन बेघर भ' गेलाह त' आब केहन मोह? मुदा एहि उपन्यासक एक सुखद अन्त होइत अछि आ मास्टर साहेब केँ जखन अपन घरक मादे सही जानकारी भेटैत छन्हि तखन घर घुरय लेल मानि जाइत छथि आ उमटाम लादल गाड़ीक घरमुहाँ बैल जँका मास्टर रमेश अधिकारी केर डेग फरहर आ जी हल्लुक बुझा रहल छलनि।

अहि उपन्यासक उद्गार मे साहित्यकार श्री राजेन्द्र विमल जी बहुत सटीक लिखने छथि : "मैथिलीक ख्यातनामा आख्यान कार श्री राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क पहिल उपन्यास 'घरमुहाँ' नेपालक मधेश आन्दोलन सँ उपजल उमड़ल जन आकांक्षा, मोहभंग, विकृति, पीड़ा, भावनात्मक उद्वेलन, विक्षोभ आ जटिलता केँ घोर यथार्थ परक चित्रावली उरेहैत समन्वय दर्शन संग मर्मस्पर्शी इति पबैत अछि।"

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

२.१८. रमेश रञ्जन-एकटा आर वसन्त : तात्कालीन समय आ समाजक प्रतिनिधि नाटक



रमेश रञ्जन

एकटा आर वसन्त : तात्कालीन समय आ समाजक प्रतिनिधि नाटक

कइएक दशक पश्चात एकटा नाटकक संस्मरणकेँ शब्द देबाक प्रयत्न क' रहल छी। अतितमे प्रवेश आ ओहिकेँ तात्कालीन समयक सँग विवेचन थोड़ दुरुह कार्य मानल जाइत अछि। ओहूना संस्मरणात्मक निवन्धमे घटनात्मक विवरण आधिक्य भेलासँ निरश साहित्य रचनाक संभावना रहिते टा छै। हम ई बात बूझितो एहने प्रयत्न क' रहल छी।

बिक्रम सम्वतक पाँचम दशकमे नेपालक मैथिली क्षेत्रक सर्वाधिक सत्रिय लेखक, पत्रकार रामभरोस कापडि भ्रमर एकटा आर वसन्त नामक नाटक लिखलनि। नाटक विषय वस्तु रहै वालविवाह आ ताहिसँ उत्पन्न भयावह परिणति। विवाहसँ जोड़ल बिषय वस्तु होएबाक कारण ओहि नाटकमे प्रमुखतासँ दहेजक सामाजिक प्रभावकेँ लाओल गेल रहै। माने ई दुनू तात्कालीन अवस्थामे भिन्न विषयसँ बेसी एकदोसरकेँ परिपूरक विषय जकाँ भ' जाइक। तत्कालीन समय मिथिलाक सामाजिक संरचनाकेँ सभसँ बेसी प्रभावित कएने रहैक ई बिषय तँ बहूत रास लेखक साहित्यक विभिन्न विधामे ओहि विषयमे साहित्य रचना केलनि।

एहि नाटकक लेखन आ प्रदर्शनसँ पूर्वहू नेपालक भूमिमे महेन्द्र मलंगिया अपन पहिल नाटकक रुपमे लक्ष्मण रेखा खण्डित लेखन कएने छलाह आ ओहि नाटककेँ नेपाल आ भारतक मैथिली क्षेत्रमे व्यापक प्रदर्शन भेल छलै। स्वभाविक छै जे जखन एकटा आर बसन्तक लेखन भेलै त नेपालक साहित्यिक परिवेशमे एहि नाटक प्रति पाठक र रङ्गकर्मी उत्सुक रहए।

ओहि कालखण्डमे हम स्वयं सेहो रङ्गकर्मसँ सक्रियतापूर्वक आवद्ध छलहुँ। हमर सम्बद्धता मिथिला नाट्यकला परिषदसँग छल। जनकपुर परिसरक सर्वाधिक प्रभावशाली ओ समूह एहि नाटकक मञ्चन दिस उत्सुक नइ भ' सकल। एकर कारण विवेचनमे नइ जाइ, मुदा एहि नाटकक पाठ हमरा पढ़बाक अवसर उपलब्ध भ' गेल रहए। हमरा तखनो लागल रहए जे एहि नाटकमे विषयवस्तुक समसामयिकता छै। पात्र आ परिवेश मौलिक छै, संवाद चोटगर आ पात्रोचित छै। मञ्चपर एहि नाटकक प्रदर्शन आवश्यक छै। किछुए दिनक अन्तरालमे एहि नाटकक प्रदर्शन कएल गेलै। जनकपुर आ काठमाण्डौंमे भेल प्रदर्शन अपेक्षाकृत तात्कालीन अवस्थामे नव मानल जाएबला नाट्यकर्मी सभक समूह आकृति एहि नाटकक प्रदर्शन कएने छल। स्वभाविक छै प्रदर्शनमे आवेश रहै मुदा प्रदर्शनमे परिपक्वताक आओर बेसी आवश्यकता रहै।

मूलतः हम ई कह' चाहलहुँ अछि जे एहि नाटकक प्रदर्शन देखबाक अवसर भेटल। आब नाटक प्रदर्शनक क्राफ्ट कतेक प्रभावशाली रहै, रङ्गमञ्चमे प्रयोग होमएबला विभिन्न अवयवसभ अर्थात लाइट, साउण्ड, प्रोप्स, अभिनेताक कार्य वा समग्रमे निर्देशकक कार्य कतेक प्रभावशाली छलै ताहि रुपकेँ विश्लेषण एखनुक दृष्टिए थोड़े जटिल छै। मिथिला क्षेत्रमे प्रभावशाली आ कार्यक स्तरपर व्यावसयिक रङ्गमञ्च क' रहल समूहसभ सेहो प्रविधि प्रयोगक दृष्टिए कमजोरे छल। अर्थात प्रविधिसँ बहुत परिचित नइ भ' पाएल छल।

जनकपुरमे मिनापक बाद आकृतिमे युवा रङ्गकर्मी लोकनि आवद्ध भ' उत्साहक सँग कार्य क' रहल छलाह। मूलतः रङ्गमञ्च आवेश आ

शौकक आधारपर सक्रिय छलै। हमरासभ अधिकांश मैथिल मिथिलाक ग्रामीण रङ्गमञ्चसँ परितिच छी। खासक' पर्व, त्योहार आ उत्सवमे गामसँ बाहर रहनिहारसभ ओहि अवसरपर नाटक करैत छलाह। जाहि नाटकक प्रदर्शन रूपकें थोड़बो स्मरण कएल जाए त भेटि जाएत, पारसी थिएटरक रूप। ओना त बहूत रास हिन्दी नाटक होइत छलै मुदा मैथिली नाटक सेहो प्रदर्शन शैलीगत स्तरपर आमरूपमे ताहिसँ भिन्न नइ छलै। ओहि चरणमे जनकपुर सन जगहपर सेहो गामसँ आएल युवा सभ छलाह, जिनक आधुनिक रङ्गमञ्चसँ खासे परिचिति नइ छलनि आ तें पारसी शैलीक नाटक करैत छलाह। एकटा आर बसन्तक पाठ याथार्थवादी नाटकक जकाँ रहितो प्रदर्शनमे आधुनिक रङ्गमञ्चक प्रविधिसँ वञ्चित रहल। या ई कही जे पारसीक प्रदर्शनात्मक शैलीक चपेटमे रहल नाटक।

एहि नाटकक पाठपर बात करी त विषय वस्तु समान्य रहितो नाटकक कथोपकथनमे विशिष्टता देखाई दैत छल। मिथिलाक समाज छलै ओहि नाटकमे, अर्थात समाजक जे विभिन्न रूप आ चित्र भेटै छै मिथिलाक एकटा गाममे ओ अत्यन्त प्रभावशाली आ सहजताक सँग उपस्थित छल। जेना अभिजात्य सामन्त परिवार जकरा लग अपना जीवनपद्धतिमे आडम्बर छलै, लालच छलै आ समयके अपना मुट्टीमे नियन्त्रित रखबाक अनवरत प्रयत्न करैत देखल जाइ छलै। निर्धन आ कमजोर छलै जकर जीवन जटिल छलै। जीविकाक हेतु सङ्घर्ष क' रहल छल। वैवाहिक आ संस्कारिक कार्यकें निर्वहन पैघ चुनौतीक रूपमे छलै। ओ कहना दायित्वमुक्त होएबाक विवशतामे रहैत छल। स्वभाविक छै जे एहिसँ सामाजिक त्रासदीक जन्म हेतै जे एहि नाटकमे जनमैत छै। एहि नाटकक कालखण्डसँ आओर अतितमे जाइ त वालविवाह, विधवाविवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह सन सामाजिक कुरुपताक ई रूपसभ आर भयावह देखाइत छै। एहन वैवाहिक प्रथासँ सामाजिक विकृतिक चरम निकृष्टता उत्पन्न भेलै मुदा एहनो वर्ग छलै जे एहन प्रथाकें महिमा मण्डन सेहो करैत छलाह। अभिजात्य वर्ग अपन अन्तर कुरुपताकें पर्दाक माध्यमसँ छेकने छलाह। मुदा श्रमिक वर्ग लाञ्छित होइत छल। अर्थात लाञ्छना मात्र नइ, एहि प्रकरणमे कतेको

परिवारक विनाश भ' जाइत छलै। एहि नाटकक नाटककार एहि द्वन्द्वकें समधानिक' पकड़लनि अछि।

एकटा गरिब बाप अपना बेटीक ब्याहक हेतु व्याकूल अछि। मुदा ओकर व्याकूलता व्यक्तिगत व्याकूलता मात्र छै। बजारक दर भाउ अनुसार ओ दहेजक भुक्तान करबामे असर्मथ अछि तें ओ बेटीकें गराक घेघ बूझि साठि दैत अछि कोनो रोगी आ कि बेस उमेरगर पुरुषक वस्तु जातक रुपमे। नाटकीय घटना कोनो अप्रत्याशित नइ अछि। ओहि वीमार पुरुषक मृत्यु होइ छै आ ओ कान्या पुनः बापक गराक घेघक रुपमे नैहरमे रहबाक लेल वाध्य अछि।

नाटकक कथा एकदमसँ सिनेमाई घटनाक्रम जकाँ आगा बढ़ैत अछि। एकटा अभिजात्य परिवारक युवा जे विवाह करबा योग्य उमेरक अछि आ ओहि युवाक विवाहे प्रसङ्गसँ एहि नाटकक प्रारम्भ होइत छै आ कि ई कही जे नाटकक अधिकांश समयावधि एहि विषयपर केन्द्रित रहैत अछि। ई युवक गामक सोच, परम्परासँ भिन्न प्रगतिशील आ परम्परा भंजककें रुपमे देखल जाइत अछि। जकरा ओहि नायिकसँगे वाल्यअवस्थाक प्रेमपूर्ण संस्मरणसभ छै, जे विधवा होएबामे ओकर दोष नइ देखैत अछि। जे ओहि लड़कीकें अपशगुन नइ मानैत अछि। पुनः ओएह दुनूक भेंट, दुनूमे पुनः अन्तरंगता, चर्चा, किछु नाटकीय घटनाक्रममे श्रील, सस्पेंस आ पुनः युवाद्वारा युवतीकें स्वीकारोक्ति। इएह कथानक छै।

एहन विषयवस्तु जकरा प्रभावमे अधिकांश अछि, जकर साक्ष्य आ भोक्ता सम्पूर्ण समाज अछि आ जकर पक्ष आ विपक्ष परम्परा, संरचना आ समय अछि, तेहन विषयपर सिर्जना करब चुनौती त छै। अनेकों तरहक आरोपकें सामना कर' पड़ै छै। हमरा बुझने एकटा सर्जक एहन आरोपकें परबाह नइ करैए आ तें रचना करैए। भ्रमरजी एहन चिन्ता आ दुविधासँ दूर छथि तें निरन्तर रचनारत छथि। अहू नाटकमे ओ सामाजिक समस्याक विरुद्ध परिवर्तनक परिकल्पना करैत छथि। एकटा क्रान्तिकारी चेतना प्रवाहित करैत छथि। हुनक दृष्टिकोण छनि चिन्तनक जड़ता आ

शासकीय दम्भक गर्भमे क्रान्तिक जन्म भ' सकैए। वर्ग चेतना छै। जे ओहि चेतनाकेँ ग्रहण करत ओएह परिवर्तनक कठिन मार्गपर आगा बढि सकैए। परिवर्तनक संवाहक बनबामे पारिवारिक पृष्ठभूमि वाधक होएबाक कथनमे जे सत्यता होइक मुदा एहि नाटकक माध्यमसँ भ्रमर एहि मान्यताकेँ स्थापित कर'मे सक्षम होइत छथि जे विचारकेँ ने त अतित, ने त पृष्ठभूमि छेक सकैए।

एहि नाटकक सन्दर्भमे जखन चर्चा आगा बढबैत छी त हमरा युरोपिय समाजक परिवर्तनक कालखण्डकेँ थोडे संस्मरण भ' अबैए। मार्क्स जीबैत रहथि आ युरोपिय समाजक सामाजिक, राजनीतिक घटनापर बड़ तीव्र नजरि रखने रहथि। बहुतरास लेखक साहित्यकार वा कलाकर्मी लोकनि सेहो अपन सिर्जन आ प्रदर्शनद्वारा युरोपक कठिनकालकेँ अझिव्यक्त क' रहल रहथि। ओहि त्रममे स्वयं मार्क्स कहैत छथि जे युरोपमे पूँजीवाद आ पूँजीक नियन्त्रक कोना सत्ता नियन्त्रण क' लेलक अछि। गद्दीपर कियो अछि मुदा सत्ता त यर्थाथतः पूँजीपतिक हाथमे छै। एहि बातकेँ अतेक स्पष्ट आ प्रभावी ढंगसँ कोनो वैचारिक वा राजनीतिक अध्येता लोकनि अपनाकेँ सम्प्रेषित नइ क' सकलाह जतेक बाल्जाक अपना उपन्यासक माध्यमसँ करैत छथि। साहित्यमे तात्कालीन समयक इतिहासवोध रहैत छैक। तँ इतिहास आ साहित्य एकदोसरक परिपूरककेँ रुपमे सँगसँग यात्रा सेहो करैत अछि। ओना साहित्य इतिहासक सम्बन्धकेँ एतेक सहजताक सँग व्याख्या नए कएल जा सकैए। तथापि एहि प्रसङ्गकेँ एहिठाम उल्लेख करबाक इएह कारण अछि जे नाटककार भ्रमर एहि नाटकमे एहन उपकथासभकेँ सायास लओलनि अछि जे नेपालक तात्कालीन समयक एकटा ऐतिहासिक घटनाक्रमक सामान्य रेखाचित्र भेटैत अछि। सामान्य कहबाक तात्पर्य ई जे एकर सघन रुप त इतिहासमे मात्र खोजल जा सकैए मुदा साहित्य कतेको स्तरपर समयकेँ मूखर रुपेँ अभिव्यक्त क' रहल रहै छै जकरा साहित्यक पाठककेँ चिन्हित कर' पड़तै।

एहि नाटकमे नेपालक राजनीतिक परिवर्तन आ ओहि परिवर्तनक प्रभावकेँ उपकथनद्वारा प्रभावी ढंगसँ उठाओल गेल छै। खासकए बिक्रम

सम्बतक चालिस दशककेँ अन्तमे नेपालमे व्यापक परिवर्तन झोलै। सक्रिय राजतन्त्र सीमित शक्तिसँग मात्र अपनाकेँ कहूना सुरक्षित कएलनि। एकटा देशक मूल सत्ताक परिवर्तन कोनो सामान्य घटना नइ होइ छै। स्वभाविकेँ एकर प्रभाव राजतन्त्र संस्थाक पृष्ठपोषक शक्तिपर सेहो पड़लै, शक्तिविहिनताक अनुभूतिसँ ओहन शक्ति विचलित छल। परिवर्तनक अकांक्षी, समाजक श्रमिक, दलित, वञ्चित वर्ग किछु बेसिए उत्साहमे छल। राजनीतिक परिवर्तनक सामाजिक प्रभावकेँ एहि नाटकमे अत्यन्त कुशलताक सँग लाओल गेल अछि। नाटकक सामन्त पात्र बेरबेर एकटा बात उल्लेख करैत अछि जे जमिन्दारी चलाएब आब कठिन भ' गेलै। ओ गामक श्रमिक वर्ग जे कहियो जमिनदारक दयापर जीवन निर्वहन करैत छल आब ओहि मालिककेँ टेरनाई छोडि देलकैए। सक्ता आ शक्ति जकरा लग छै तकरा नइ गुदानब त विद्रोह छै। नाट्यकार राष्ट्रिय स्तरपर भेल राजनीतिक परिवर्तनकेँ प्रभाव आमजन कोना ग्रहण कएलक वा आमजन कतेक सचेत राजनीतिक स्कुलिड क' लेलक अछि जे देशक शीर्ष सत्ताकेँ विस्थापित करबाक क्षमता प्राप्त क' लेलक से स्पष्ट कलनि अछि। एहि नाटकमे राप ताप विहिन सामन्त पात्र जेना वृद्ध बाघ सन स्थितिमे अछि जे अपना गुफामे कैद अछि आ ओतिसँ हुमरि रहल अछि। विवश, कमजोर आ कातर बाघ।

नाट्यकार एहि द्वन्द्वकेँ मात्र नाट्यरूप नइ दैत छथि ओ वस्तुतः स्पष्ट नइ भ' पाबि रहल छथि जे परिवर्तन जनपक्षमे छैहो की नइ ! ओ नौकरशाहक गैरजिम्मेवार प्रवृत्तिक आलोचक छथि। नौकरशाह जनताप्रति विनम्र व्यवहार नइ रखैत अछि। ओ कामकेँ बदलामे अतिरिक्त रकमक असूली करैत अछि वा समग्र नौकरशाह अनियन्त्रित आ अराजक भ' गेल अछि, जकरा नियन्त्रण कएनिहार कियो देखाइ नइ दैत अछि। नौकारशाहक जनताप्रति अनउत्तरदायी व्यवहार आ गलत आर्थिक उगाहीक लेल नाट्यकार अमूर्त रूपमे राजनीतिक परिवर्तनकेँ जिम्मेवार मानैत छथि। माने पहिने सभकिछु ठिक छलै, सम्पूर्ण तन्त्र अनुशासित छलै। एखन सभकिछु अराजक छै, प्राकारान्तरसँ एहि भाष्यकेँ स्थापित करबाक प्रयत्न छै। एहन प्रयत्न मोटामोटी कएक प्रसङ्गमे प्रयत्नपूर्वक करैत देखाइत छै। माने गाममे चोरक गतिविधि

बढि गेलैए त ताहिके लेल राजनीतिक परिवर्तनमे खोट देखाईत छै। बूझब जरुरी ई छै जे नेपालक ओ परिवर्तन मात्र सत्ता परिवर्तन नइ रहै। ओ व्यवस्थाक परिवर्तन रहै। सयौं वर्ष स्थापित मान्यता, संरचना आ चेतनाकेँ एकटा परिधिक भितर लाएल गेल रहै। जे स्वतन्त्र स्वच्छन्द विचरण करैत अछि तकरा लेल सीमा निर्धारण असह्य होइते छै। तात्कालीन सत्ताक श्रेष्ठताक मान्यता रखनिहार मुखर विरोध करबासन अवस्थामे नइ अछि मुदा ओ शान्त विद्रोहक लेल किछु खास संरजाम जुटा रहल अछि। माने साहित्यक माध्यमसँ एहन भाष्यक स्थापनाकेँ खतरनाक प्रयत्न मनल जा सकैए। वर्तमानकेँ कुरूप देखाएब माने अतित त सुन्दर छलै ताहि मान्यताकेँ स्वतः स्थापना होइत छै। साहित्यक माध्यमसँ विशिष्ट शस्त्र निर्माण जाहिसँ राजनीतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक पुनरुत्थानकेँ पुर्नजीवन देल जा सकै। प्रत्येक राजनीतिक परिवर्तनकेँ बाद लगभग सभ देशमे एहन विमर्श देखल जा सकैए। वौद्धिक आ सिर्जनात्मक रूपसँ सेहो पुर्नउत्थानक प्रयत्न आ अग्रगमनक प्रतिवादक स्वभाविक द्वन्द्व देखल जा सकैए।

एहि नाटकमे चोरक प्रसङ्ग बड़ प्रभावशाली ढंगसँ राखल गेलैए। चोरक गिरोह मात्र चोरी नइ करैत अछि। ओ एकटा वैचारिक द्वन्द्व सेहो ठाढ़ करैत अछि। गामक नाट्य अवस्थितिमे सामन्त आ अपराधी बिच सम्बन्धक प्रगाढ़ता एकटा नव नाट्य विडम्बनाक स्थापना करैत छै। एहि प्रसङ्गमे मध्यम वर्गक वर्गिय चरित्र सेहो बड़ा ढंगसँ मूखर भेलैए। ओ परिवर्तनकेँ आधारभूत शक्ति अछि मुदा ओ ततबे अवसरवादी सेहो अछि। ओ सङ्घर्ष बादक उपलब्धीक सभसँ पैघ हिस्सेदार अपनाकेँ मानैत अछि। एहिमे कोनो तरहक अवरोध नइ देख' चाहैए। ओ तत्काल लाभक हेतु परिवर्तनकेँ संस्थागत हुअ' देब'सँ पहिनहिं आलोचक बनि जाइत अछि। परिवर्तन प्रतिगमनक घेरामे फँसैत चलि जाइत छै। मध्यम वर्ग अपना अधैयर्ताक कारण समूचा परिवर्तनकेँ संकटग्रस्त बना दैत छै।

नाटकमे हरेक समस्याक कारक परिवर्तन दिश सङ्केत कएल जाइत छै ई नाटकक कथाक सहज विकासक्रम नइ छै। नाट्यकार अत्यन्त सजग रुपें उपकथाक माध्यमसँ मूल कथाक अङ्गक रुपमे एहन विषयकेँ

दृश्याङ्कित करैत छथि। स्वभाविक छै जे एहन नाट्यअवस्थिति थोड़ेक अविश्वसनीय बुझाइत छै। एकटा आर बसन्त सेहो एहन अवस्थासँ गुजरल अछि। नाटक नायिकापर स्वभाविक छै जे बहूतोक नजरि हेतै। ओकर रूप आ यौवन बहूतोकें आकर्षित करैत हेतै। कियो स्वयं भोगक इच्छा रखैत हएत कियो ओहि भोग्याक मध्यमसँ आर्थिक उपार्जनक प्रयत्नमे हएत। एहनसन नाटकीय घटनाक्रममे एकटा एहन अवस्थाक निर्माण होइत छै जत' चोर, अपराधी आ कथित भलादमी नाटकक नायिकाकें बेचक' आकर्षक रकम उगाहीक निष्कर्षपर पहुँचैत अछि आ ताहि हेतु आवश्यक प्रयत्न सेहो प्रयोग करैत अछि।

नाटकक नायिका नाटकक प्रारम्भिसँ चरम यातना भोगिरहल अछि। नैहर, सासुर आ पुनः नैहरक दुखःपूर्ण यात्रामे ओहि पात्रप्रति दर्शक वा पाठकक साहानुभूति आर्जन करैत अछि। मुदा ओहि पात्रसँगे अप्रत्याशित घटना होइत छै। जे कि घटनाक्रमकें रहस्यमयी बनबैत छै। नायिकाक अपहरण आ बेचबाक प्रकरण आगू बढ़ैत छै। महिला बेचबिखनक विषय नेपालक पहाड़ी क्षेत्रक हेतु आम छै मुदा मिथिला क्षेत्रक हेतु ई अवस्था अत्यन्त अविश्वसनीय जकाँ लगै छै। नेपालमे राणा शासनक उदयसँगे ब्रिटिश शासकसँगे ऐतिहासिक सम्बन्ध रहलै। भारतमे सिपाही विद्रोहकें दबएबाक लेल नेपालसँ सेना गेल रहै पश्चात नियमित रूपमे भारतीय सेनामे नेपालक गोर्खा रेजिमेन्टक रूपमे एखनो भर्ती कायम छै। तहिना नेपालक तात्कालीक शासक ब्रिटिश फौजक हेतु नेपालसँ यौनकर्मीक रूपमे लड़की भेजल जाइत छलै जे प्रथा पहाड़क खास क्षेत्रमे एखनो कायम छै मुदा मिथिला वा तराईक भूभागमे लड़की बेचबाक घटना प्रायः नइ देखाइत छै। एहि नाटकमे नायिकाकें बेचबाक सन्दर्भमे अरबक शेषकें हाथे बेचबाक बात उल्लेख छै जे कि नाट्यकारक अप्रत्याशित परिकल्पना जकाँ बुझाइत छै। तराईक भूभागसँ श्रम करबाक हेतु खाड़ी देशसभमे युवा त जाइत रहल अछि मुदा युवतीकें ल' जएबाक घटना खासे चर्चामे नइ छै। तखन प्रश्न उठै छै जे किएक नाट्यकार एहन परिकल्पना कएलनि। महिला ताहूमे कमजोर वर्गक महिलाक सँगे यौन शोषणक भयावह चित्रसभ त एहिठामक शोषक सामन्त वर्गद्वारा होइत रहलैए। मैथिली साहित्यमे एहन घटनाक

प्रधानताक कतेको साहित्य छै। संभवतः एहिसँ भिन्न नाट्य अवस्थिति निर्माण करबाक लेल एकटा भिन्न घटना नाटकक हेतु आवश्यक बुझने होएताह। मुदा नाटक जाहि परिवेश आ घटनाक्रमकेँ ल' क' बुनल जा रहल छलै ताहिमे ई घटना विश्वासक क्षयीकरण दिस ल' जाइत छै।

जे होइक मुदा समस्याक आ सन्दर्भ कोनो समाजक बदलैत रहै छै। कोन कथा कालजयी अर्थात समकालीनताकेँ जोगाक' राखत आ कोन घटना एकटा कालखण्ड प्रतिनिधि रचना भ' क' रहि जाएत तकरो निर्धारण नाटकक विषय, संरचना, शिल्प निर्धारण करैत छै। एहि नाटकक जँ निष्कर्षपर पहुचल जाए त बात इएह छै जे लेखक अपना समयक इतिहासक आवाजकेँ रचनामे लबैत अछि। रचनाकारक अपन निजता सेहो ओहिमे रहितै छै मुदा ओहि कथ्यक गूँज अनुगूँज होइत छै जकरा लेखक अपना भाषामे रुपान्तरित करैत अछि। वस्तुतः लेखक एकटा व्यक्ति अछि मुदा ओ ओही समाजसँ कोनो ने कोनो रुपमे शैली ग्रहण करैत अछि। भ्रमर जी सेहो तात्कालीन समाज, संस्कृति आ राजनीतिसँ अपन चेतना आ विचारधाराक आधारपर कथ्य आ शैली ग्रहण कएलनि आ एकटा नाटकक सिर्जना कएलनि। जे नाटक चारि दसकक बादो विमर्शक हेतु आकर्षित करैत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१९. विनय भूषण-इजोतक आश जगबैत भ्रमरक गजल



विनय भूषण

इजोतक आश जगबैत भ्रमरक गजल

साहित्यक कोनो विधक नव व्याकरणक निर्माणमे साहित्यकारक महत्वपूर्ण भूमिका रहैत अछि । समय, परिवेश आ स्थानसँ प्रत्येक रचनाकारक रचना बेस प्रभावित रहैत अछि । कविता, कथा, उपन्यास वा नाटकक स्वरूप पर कोनो कालखंडक प्रभाव पड़ब कोनो नव बात नहि । रचनाकारक रचना-प्रक्रियामे हुनका आगाँ ठाढ़ रहैत अछि विशाल पाठकगण । रचनाकार ई चाहैत अछि जे ओ जे बात कहऽ चाहैत अछि ओहि बातसँ पाठकगण बूझि सकय । पाठकगणसँ जे बात ओ कहय चाहैत अछि, ओहिमे सामाजिक सरोकार संगुंफित रहैत अछि । जखन रचनाकार अपन रचना-प्रक्रियासँ सामाजिक सरोकार सँ जोड़ैत अछि, तखन हुनक आँखिक आगू ठाढ़ रहैत अछि सामाजिक स्वरूपक विशाल, ताना-बाना । ओ समाजमे होइत सकारात्मक परिवर्तनसँ अपन सहमति अभिव्यक्त करैत अछि, संगहि समाजक किछु नकारात्मक

परम्परासँ ओ अपन असहमतिसँ अभिव्यक्त करैत अछि । रचनाकारक अन्तरक जे भाव होइत अछि, से रचनामे स्वतः अभिव्यक्त भऽ जाइत अछि । अपन हृदयमे जनमैत अनेकानेक वैयक्तिक भावमे सार्वजनिक भाव भऽ जयबाक जे व्यग्रता रहैत अछि, यैह व्यग्रता कोनो साधरण लोकसँ विशिष्ट रचनाकार बना दैत अछि । मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार श्रीरामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक रचना प्रक्रियामे उक्त भाव-बोध सँ सहजहि अनुभव कयल जा सकैत अछि । हम एकरा अपन दुर्भाग्य मानि रहल छी, जे हुनका द्वारा सृजित समस्त साहित्यिक कृतिसँ हम नहि पढ़ि सकलहुँ । पोथीक अनुपलब्धता आ अपन जटिल जीवन-संघर्षसँ एकर कारण कहल जा सकैत अछि । मुदा, विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल हिनक अनेकानेक रचनासँ पढ़बाक सौभाग्य अवश्य प्राप्त होइत आबि रहल अछि । हुनक रचना सभमे मिथिलाक गौरवमय अतीतक भाव-विह्वल वर्णन, लोकक सुख-दुखक अभिव्यक्ति मनुकखताइक संरक्षणक कछमछी अलोपित होइत प्रेमसँ बचाऽ लेबाक छटपटाहटिसँ सहजहि अनुभव कयल जा सकैत अछि । एखन हुनक गजल संग्रह 'अन्हरियाक चान' हमर आँखिक सोझँ अछि । एहि संग्रहक अध्ययन-मनन हमरा अभिभूत कऽ रहल अछि । 'गजल'सँ शिल्प व शास्त्रीय-विधन पर चर्चा करबासँ पहिने हुनक एकटा उक्तिसँ उद्धृत करब हमरा आवश्यक बुझाइत अछि- 'हमरा गजल लिखबाक लेल कोनो सुध नहि रहए । स्वतः स्फूर्त लिखाइत रहल । हम शुरूएमे कहि दी जे हमर गजलसँ शास्त्राय तराजू पर तौलबाक काजो नहि हो जे हमरा नीक लागत । कारण मतला, रदीफ, काफियाक समन्वय जे जतेक भऽ सकल होइ ओ स्वतः आवेगमे आएल शब्दक बन्दसँ संभव भऽ सकल अछि ।'

हिनक उक्त वक्तव्य आजुक 'गजल'क स्वरूप आ रचना-प्रक्रियासँ स्पष्ट करऽ मे पूर्ण समर्थ अछि । गजल पद्य-विद्या व काव्य-विधक एकटा विशिष्ट विध अछि । एहि मे छोट-छोट पाँतिक माध्यमसँ बहुत रास बातसँ अभिव्यक्त कयल जा सकैत अछि । एकटा गजल अनेकानेक कविताक संकलन होइत अछि । हिनक वक्तव्यक अनुसार आजुक गजलमे गजलक व्याकरणक न्यूनतम शर्तसँ सम्मिलित कयल जा सकैत अछि

। 'न्यूनतम शर्तसँ हमर अभिप्राय ई अछि जे गजल-रचनाक क्रममे भावसँ सुरक्षित रखबाक लेल मात्राक गणना आवश्यक नहि अछि । हुनक शब्दमे 'बहरक व्याकरणमे हम कहियो नहिगेलहुँ आनहियेवर्णसँगनिकऽ शेरमे बैसएलहुँ' आइ जाहि तरहक गजल लिखा रहल अछि ओहि गजल सभसँ हिनक उक्त वक्तव्यक कसौटी पर कसल जा सकैत अछि ।

जे-से हमरा हिनक गजलमे अभिव्यक्त भाव आ विचारसँ अभिव्यक्त करब हमर मुख्य उद्देश्य अछि । हिनक एहि संग्रहमे भाव आ विचारक जे विविधता अछि से चमत्कृत करैत अछि । हिनक गजलमे शाश्वत प्रेम आ मनुक्खक जीवनक सुख-दुख नीक जकाँ शब्दब(भेल अछि । मिथिलाक संस्कृतिक प्रति हिनक अपार प्रेमसँ बहुत रास गजल सभमे अनुभव कयल जा सकैत अछि । विलुप्त होइत मनुक्खताइसँ हिनक असहमति सेहो अनेकानेक गजलक मुख्य विषय बनि पाओल अछि । सभ्यताक विकासक संग-संग लोकक जीवन-यापनक स्वरूप आ जीवनशैलीमे जाहि तरहे ँ आपकताक क्षरण भेल अछि ताहिसँ गजलकार बेस दुखी छथि । हिनक गजलमे जे मिथिलाक गौरवमय अतीत आ मिथिलाक गामक प्रति अनुराग अभिव्यक्त भेल अछि, तकरा एहि पाँतीमे बूझल जा सकैत अछि-

माटि अइ धरतीफेर लगा अपन माथसँ

मोक्ष भेटय जे इच्छित अपन गाम थिक ।

जाहि धरती केर कोरामे सीता पलए

अन्नपूर्णा हँसथि से अपन गाम थिक ।

जनक आ जानकीक चर्चा एक दिस मिथिलाक गौरवमय अतीत दिस संकेत करैत अछि । हिनका अपन गाममे मिथिलाक दर्शन होइत अछि ।

इहो कहल जा सकैत अछि । जे सम्पूर्ण मिथिला हिनका लेल अपन गाम अछि । एहि गजलमे मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासक सुगंध तँ अछिये संगहि मातृभूमि-प्रेमक प्रति समर्पणक भावसँ सेहो देखल जा सकैत अछि ।

एहि संग्रहमे गजलकार प्रेमक स्वरूप आ ओकर महत्वसँ रेखांकित करबामे पूर्णतः सफल भेल छथि । प्रेमसँ स्पष्ट करबाक लेल अनेकानेक पाँतीमे बिम्ब आ उपमाक उपयोग कयल गेल अछि । ई बात सत्य अछि जे आजुक वैश्वीकरणक युगमे मनुक्खक जीवनक अनेकानेक अनिवार्य तत्व सभक ह्रास भेल अछि । ओहि तत्वमे प्रेम एकटा एहन तत्व अछि जे लोकसँ लोकसँ जोड़ैत अछि । भ्रमरजीसँ बुझाइत अछि, विच्छिन्नताक एहि विकट परिस्थिति सामाजिक सौहार्दिक संरक्षणक लेल प्रेमक संरक्षण आवश्यक अछि । ओ कहैत छथि-

आबियौ ने छातीमे ठाम बड़ बाँकी छै ।

स्वागत मे रागक सचार लेनय ठाढ़ छी ।

गजलकार प्रेमक अभावमे स्वयंसँ बहुत बेसी असहज महसूस कऽ रहल छथि । प्रेममे विश्वासक बहुत बेसी महत्व अछि । हुनका बुझाइत छन्हि जे विश्वासक टांग टूटलाक बाद औनाइत जखन किओ ककरोसँ प्रेम करैत अछि, ओहिमे कोनो तरहक संदेहक स्थान नहि होइत अछि । हुनका बुझाइत छन्हि जे कोनो कठिन समयमे ओ सदिखन हुनकर मदति करबाक लेल सहर्ष तैयार रहताह । प्रेममे भाग्यसँ बेसी आपसी सौहार्दक महत्व होइत अछि । जँ कोनो क्षण प्रेमसँ असफल होइत देखल जाइत अछि, ओतय निश्चित रूपसँ कोनो ने कोनो धेखाक संभावना बनैत अछि । ई धेखा लोकसँ बेचैन कऽ दैत अछि । एहि परिस्थितिमे करुणाक धर

निसृत होमऽ लगैत अछि । गजलक एहि पाँतीमे एहि भावसँ देखल जा सकैत अछि-

विश्वासे जँ टूटि गेल तँ आहत करेज ल

कत्त-कत्त रने-बने अबगाहब ई जिनगी ।

जखन एक बेर किओ प्रेम कऽ लैत अछि, तखन ओहि प्रेममे किछु बाधक नहि भऽ सकैत अछि । जे सुच्चा प्रेम करैत अछि, ओ ओहि प्रेममे पूर्णतः एकाकार भऽ जाइत अछि । जखन मोन प्रेमक वीशभूत भऽ जाइत अछि तखन भाव आ शब्द गजलक स्वरूप लऽ लैत अछि । प्रेम शाश्वत होइत अछि । 'भ्रमर' जीक शब्दमे-

अहाँ आगाँ मे छी तन्तु जुड़ल रहैए

आह ! परोछो भेने ई क्रम टुटैए नहि

एहि ठाम एकटा आओर शेरसँ उद्धृत करब हमरा आवश्यक बुझाइत अछि-

आब तँ अपनोसँ ऐनामे चिन्हब कठिन भेल,

आन पर नजरि टिकए की खास अछि प्रिय ।

प्रेमसँ अभिव्यक्त करबाक लेल जाहि भाषा, शिल्प आ शब्दक चयन भ्रमर जी कयने छथि, से अचक्के पाठकसँ अचंभित कऽ सकैत अछि । लगैत अछि जेना प्रेम भ्रमरजीक हृदयक अभिन्न अंग भऽ गेल अछि सैह भाव हुनका अपन भाषा, संस्कृति, मैथिल आ आन दलित, पीड़ित आ उत्पीड़ित लोकक प्रति प्रेम करबाक लेल प्रेरित करैत छन्हि । हुनक गजलमे प्रयुक्त बोधाम्य बिम्ब आ भावक संयोजनसँ बुझबाक लेल किछु पाँतीसँ उद्धृत कयल जा सकैत अछि । जेना-

समुद्रक ढाहीमे उबडुब करैत मोन

बोझ असगरिये छाती पर उघलियै कोना ।

प्रेमक समुद्रमे जखन-भावक ज्वार-भाटा आबैत अछि तँ मोन उद्वेलित भऽ जाइत अछि । 'छाती' पर 'बोझ' एकटा अद्भूत बिम्ब अछि । सिनेह गछपक्कु आम जँका होइत अछि । जहिना डमरस पाकल आम रसक वृद्धि होयबाक कारणे फाटि जाइत अछि तहिना प्रेमक पाकल आम फाटि गेल अछि आ ओहिसँ सिनेहक रस टभकि रहल अछि । एहि बिम्बमे उपमा अलंकारक अनुपम प्रयोगसँ अनुभव कयल जा सकैत अछि । हुनके शब्दमे-

गछपक्कु आम जकाँ टभकै सिनेह जकर

जोड़ल नहि जा सकय, एहन बनल फाट ओ ।

प्रेम तँ सार्थक जीवनक महत्वपूर्ण तत्व अछिये, संगहि जीवनक अन्यान्य तत्व सभसँ सेहो 'अन्हरियाक चान' गजल संग्रहमे सफलतापूर्वक अभिव्यक्त कएल गेल अछि । हुनक विचार मे जिनगीक तरंगक गायन आ हृदयक भावक अभिव्यक्ति गजल थिक । प्रेम आ सिनेहक गीत जिनगीक महत्वपूर्ण गीते थिक । लोक चुपचाप समयसँ गुनैत हो वा अपन सुख-दुखसँ अभिव्यक्त करैत हो एहि अभिव्यक्तिमे जिनगीक सार सन्निहित अछि । सुख-दुख जीवनक अनिवार्य अंग अछि, तँ लोकसँ एहिसँ क्षुब्ध नहि होयबाक चाही । हुनके शब्दमे-

नरमे गरम केर खेल चलैत रहत सदखन

पचएबाक सामथ्र्ये थिक तरंग जिनगी केर ।

इमान मनुक्खताइक महत्वपूर्ण तत्व अछि । इएह इमान लोकसँ मनुक्ख बनबैत अछि । ई बिडम्बना अछि जे आइ लोक नैतिक मूल्य सँ बिसरि रहल अछि । स्वार्थ आ भोगक लिप्साक कारणे ँ लोकजीवन समस्त नैतिक मूल्यसँ तिलांजलि दऽ रहल अछि । आपसी सौहाद्र नष्ट भऽ रहल अछि । अविश्वास, धेखा आ लोकक स्वकेन्द्रित रहि जएबाक मानसिकतासँ भ्रमर जी बेस परेशान भऽ जाइत छथि । हुनका बुझाइत छन्हि जे सर-सम्बन्धी आ हितमीतसँ जखन लोक अलग भऽ जाइत अछि तखन सत्य आ इमान सन नैतिक मूल्य लोकसँ जीवन जीवाक संबल दैत अछि । एक गोटे गजलमे नैतिक मूल्यसँ सम्बन्धित उक्त भाव बहुत नीक जकाँ अभिव्यक्त भेल अछि-

बाप माय हरदम नहि, इमान रहैछ संग मे

इमानदारीमे बट्टा लागल मीत ई नहि चाही ।

एकटा साहित्यकर्मीसँ अपन दायित्वक बोध रहैत अछि । भ्रमरजीसँ पता छन्हि जे लोकक मोनमे अनेकानेक भटकाव रहैत अछि । समय जहिना-जहिना करवट बदलैत अछि, तहिना-तहिना लोक अपन गौरवमय अतीतसँ बिसरऽ लगैत अछि । धेखा आ अविश्वासक अन्हार मे लोक औनाय लगैत अछि । जीवन-संघर्षसँ बाट पर चलैत लोकसँ किछु ने किछु गलती जरूरे भऽ जाइत अछि । एहि स्थितिमे लोकसँ बेसी परेशान नहि होयबाक चाही । अत्यंत आत्मविश्वासक संग गजलकार कहैत छथि-

सुतल अतीतसँ पुनि जगायब हम ।

भोतिआयल बटोही ठाम पर लागब हम ।

संघर्ष जीवनक सत्य अछि । जे प्रतिब(लोक छथि से एहि संघर्षसँ कखनहुँ विचलित नहि होइत छथि । कवि कहैत छथि जे जँ इजोत नहि भेटैत अछि, तखन अन्हारेमे इजोतक खोजक लेल प्रयास करबाक चाही । भोगलिप्सासँ बहुत-बहुत दूर रहि संघर्षशील लोकसँ महल-अटारी, चानीक थारी, गद्दा, कृत्रिम इजोतक भ्रम व अहंकार आकर्षित नहि करैत अछि । अपितु श्रम, फक्कर जीवन, टूटल एकचारी, रातिक अन्हार, अलमुनियाक पचकल-फूटल थारी आ स्वाभिमानसँ अंग्रेजि कऽ समाज आ समाजक, लोकक जीवनसँ सुन्दर बनयबाक लेल संघर्षरत रहैत अछि । एहि भावसँ एहि पाँतीमे देखल जा सकैत अछि-

ध्रुव सत्य थिक जे मंजिल पयबे अभिष्ट सदखन

तँ सहज सुखद एकपेरियाक असबारी छनित के हमर ।

वर्तमानमे चारूकात संदेह आ अविश्वासक सामाज्य स्थापित भऽ गेल अछि । स्वार्थ मनुक्खसँ धेखा करबाक प्रवृत्तिसँ स्वीकार करबाक लेल बाध्य करैत अछि । मुँह पर प्रशंसा करब आ परोछ भेला उत्तर ओहि लोकक खिध्ंास करबाक प्रवृत्ति मनुष्यक हृदयमे जगह बना लेने अछि । सामाजिक जीवन जीअऽ बला लोक संघर्षक कारण अपन सभ किछु त्यागि दैत अछि । मुदा, कुलोकक कुदृष्टि भ्रमरजीसँ दुखित करैत अछि । जेना-

हम चली जतऽ जाहि बाटपर नित दिन

काँटक इत्र छीटय हमर अपन ।

समाजक श्रमजीवी लोकक जीवनमे दुखक अंबार रहैत अछि । हुनक जीवन-स्तरसँ सुधरबाक लेल प्रत्येक समाजसेवी आ बु(िजीवी प्रयासरत रहैत छथि । क्षुद्र सामाजिक कार्यकर्ता आ बु(िजीवी कविसँ क्षुब्ध् कऽ दैत अछि । गरीबक मसीहाक उपाधिसँ विभूषित लोक सेवाक नाटक करैत अछि । यैह कारण अछि जे एखनो धरि समाजक गरीब लोक आओर बेसी गरीब भेल जा रहल अछि । धनिक आओर बेसी धनिक भेल जा रहल अछि । सत्य ई अछि जे एहि धरती पर जे लोक सुख ओ ऐश्वर्यक भोग करैत अछि, तकर आधार यैह श्रमजीवी मजूर अछि । कविक कलम प्रेरक मुद्रामे कहि उठैत अछि-

मजुरक मरखाह गरीबीसँ नाथि कऽ तँ देखू

अपन भरल बरबारी अन्न कने बाँटि कऽ तऽ देखू ।

इजोरियाक चान गजल संग्रहक प्रत्येक गजलक एक-एक पाँति उद्धरणक योग्य अछि। एहि संग्रहक विभिन्न गजलमे मनुक्खक जीवनक सुख-दुख, बदलैत समाज, महत्व, दया-प्रेम-करुणाक भाव समाजक सर्वहारा वर्गक प्रति सहानुभूति, मिथिलाक गौरवमय अतीत, सांस्कृतिक अरिस्मताक संरक्षण आ अन्यान्य जीवन-मूल्य आ सांस्कृतिक चेतनाक संरक्षणक भावसँ अत्यंत सहज आ कलात्मक ढंग आभव्यक्त कयल गेल अछि। आइ जखन चारूकात घृणा, द्वेष, भ्रष्टाचार, धेखा, झूठ-फरेब, स्वार्थ आ अन्यायक अन्हारक साम्राज्य पसरल अछि, तखन भ्रमरजीक सार्थक गजलमे आशाक चानक उपस्थितिक अनुभव कयल जा सकैत अछि । ई समीक्षा आओर नमहर भऽ सकैत छल, मुदा समीक्षा-आलेखक सीमासँ देखैत एखन एहि समीक्षासँ विराम दऽ रहल छी । अन्तमे अपन अतृप्त मोनसँ संतोष देबाक लेल एहि पाँतीसँ उद्धृत करब आवश्यक बुझैत छी-

अन्हरियाक चान जकाँ लुक झुक करैत मन

छिटकल आभाक संग रभसैत उड़ैत मन ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२०.आशीष अनचिन्हार-कलंकित चान



आशीष अनचिन्हार-संपर्क-8876162759

कलंकित चान

"जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान" द्वारा बर्ख 2013 (दिस.मे) श्री राम भरोस कापड़ि "भ्रमर"जीक कथित गजल संग्रह- "अन्हरियाक चान" प्रकाशित भेल अछि। पोथीक भूमिकामे भ्रमरजी स्वीकार करै छथि जे गजलक व्याकरणपर ओ गजल नै लिखने छथि संगे-संग ओ समीक्षककें सेहो हिदायत देने छथिन्ह जे ओ व्याकरणक तराजूपर ऐ गजल सभकें नै तौलतथि। एकर मने ई भेल जे भ्रमरजी अपने मानै छथि जे हुनक

गजल "अजाद गजल " आ समीक्षक तँ अजाद गजलक समीक्षा करबाक लेल स्वतंत्र छथि। संगे-संग भ्रमरजी भूमिकाक समीक्षा करबाक लेल कोनो प्रतिबंध नै लगने छथि तँए समीक्षक भूमिकाक समीक्षा करबाक लेल सेहो स्वतंत्र छथि।ओना भ्रमरजी गजलमे व्याकरणक मजूगत स्थितिसेँ परिचित छथि आ तँए ओ अपन सीमाकेँ देखार केलाह जे की स्वागत योग्य गप्प अछि। तँ चलू शुरू करी भ्रमरजीक अजाद गजलक समीक्षा आ तकर बाद हिनकर भूमिकापर। अजाद गजलक कान्सेप्ट---

जखन कोनो भाषामे कोनो खास विधाकेँ करीब 500-600 बर्ष भ' जाइत छै तखन ओइमे परिवर्तन जरूरी भ' जाइत छै। उर्दू गजलकेँ (जँ भारतीय फारसी गजलकेँ जोड़ि देखी तँ) करीब 500-600 बर्ष भेल छै तँए 1960-70केँ दशकमे उर्दूमे अजाद गजल आएल। एकर मतलब कहल गेलै जे गजलमे बहर कोनो जरूरी नै हँ काफिया भेनाइ आवश्यक अछि (बिना रदीफकेँ सेहो गजल होइ छै से धेआन राखब जरूरी)। ओनाहुतो बिना काफियाकेँ गजल नै होइत छै से सभ जनै छथि। जँ ए अधारपर देखी तँ भ्रमरजी बहुत रास कथित गजल फेल भ' जाइत अछि मने भ्रमरजीक कथित अजाद गजल सेहो अजाद गजल कहबा योग्य नै अछि। किछु उदाहरण देखू (पोथीक पहिल कथित अजाद गजलक पहिल दू पाँति एना अछि)---

ई जनक केर नगरी अपन गाम थिक

ई मिथिला बैदेहीक अपन गाम थिक

मने काफिया गायब। जँ काफिया गाएब तँ गजल नाम्ना विधे गाएब।
खएर एहन-एहन दोष ऐ पोथीक गजल संख्या -
4,5,6,9,12,14,20,22,23,24,28,29,32,33,34,35,36,39,41

मे भेटत। ओना आन गजलमे किछु एहन तँ छै जकरा काफिया नै बल्कि तुकांत कहब बेसी समीचीन। ईहो मोन राखब जरूरी जे ऐ पोथीमे कुल 44टा कथित गजल अछि।

जँ हम नेपालीय परिसरक हिसाबसँ ऐ पोथीकेँ देखी तँ हमरा ई कहबामे कोनो संकोच नै जे राजेन्द्र विमल जीक गजलकेँ अजाद गजलक श्रेणीमे तँ राखल जा सकैए मुदा भ्रमरजीक गजल तँ अजादो गजलमे स्थान पेबाक योग्य नै अछि। सोझ तरहेँ कही तँ भ्रमरजीक ऐ पोथीमे संकलित सभ रचना आन विधा तँ भ' सकैए मुदा गजल, कथित गजल वा अजाद गजल केखनो नै भ' सकैए।

मुदा जत' भ्रमरजी अपन गजल महँक दोष स्वीकार करबाक हिम्मति राखै छथि ओतए विमलजी अपन गलतीकेँ स्वीकार करबासँ हिचकै छथि।ई चारित्रिक अंतर दूनू गोठमे छनि से जिनगी भरि रहतनि तकर कोनो गारंटी हमरा लग नै अछि। तँ आउ आब पोथीक भूमिकापर (चूँकि व्याकरणपर हमरा नै जेबाक अछि तँ देखू भ्रमरजीक किछु बिंदु)--

1) भ्रमरजी अपन भूमिकामे लिखै छथि जे " हमरा एखनो धरि पना नै अछि, हम कतेक गजल लिखने छी। साढ़े चारि दशकक साहित्यिक यात्रामे कतेको गजल लिखाएल हएत...." भ्रमरजीक उपरोक्त कथन मात्र दंभ भरबाक लेल अछि। मनुख मात्र सभ चीजक हिसाब-किताब रखैए। भ्रमरजी सेहो रखने हेता मुदा लगा देलखिन अज्ञात संख्याकेँ जोर जे हमरा अपन गजल संख्या तँ पते नै अछि मने एते लिखलहुँ जे.....

2) भ्रमर जी फेर ओहीमे लिखै छथि जे " एहि बीच हमरा मोनमे आएल जे गजल जे काव्यविधामे बेछप रूपेँ रहेत अछि....." मुदा ई काव्य विधा गजल भऽ सकलनि।

ऐ पोथीमे सभसँ आपत्तिजनक बात ई अछि जे प्रस्तुत पोथीमे "बाल-गजल" तँ संकलित अछि मुदा बाल गजलक संदर्भमे कोनो चर्चा नै बेटैत अछि। ज्ञात हो कि मात्र 2012सँ मैथिली बाल गजल शब्दावली प्रचलित अछि। अनचिन्हार आखर ओ विदेहक संयुक्त प्रयासक प्रतिफलन अछि ई बाल गजल मुदा भ्रमर जी बाल गजलक संबंधमे कोनो चरचा नै केने छथि। जेना चरचा केलासँ छोट भ' जेता तेना। ओनाहुतो हम ऐ प्रसंगकेँ अनचिन्हार आखर ओ विदेहक लोकप्रियतासँ जोड़ि क' देखैत छी। ओना भ्रमरजी प्रस्तुत पोथीक बाल गजलकेँ तेना सेट केने छथि भूमिकाक संदर्भमे जेना बुझाइत हो जे ओ मिथिला-मिहिरेक जमानासँ बाल गजल लिखैत होथि। इतिहासकेँ भ्रमित करैत ई पोथी कतेक सफल हएत से कहब मोशकिल।

(ई आलेख हमर शब्द-अर्थ-शक्ति नामक पोथीमे संकलित अछि जकरा हम मात्र एहि लेल देलहुँ जे पाठक समग्रतामे भ्रमरजीक रचनाकेँ बूझि सकथि-लेखक)

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२१.विनीत ठाकुर-बहुआयामी व्यक्तित्वक एकटा सुधर स्वरुप:रामभरोस कापड़ि भ्रमर



विनीत ठाकुर

बहुआयामी व्यक्तित्वक एकटा सुधर स्वरुप : रामभरोस कापड़ि भ्रमर

एखन मैथिली भाषाकेँ मानक स्वरुपक सन्दर्भमे नीक बहन छिडिआएल छैक। एक दिश ई मत आबि रहल अछि जे मानक स्वरुपक नामपर मैथिलीकेँ नब्बे प्रतिशत बजनिहारसँ दुर कएल जा रहल छैक आ नेपालमे मगही एवं बज्जिका भाषाक प्रवेश आ विस्तार तकरे परिणाम थिक। एहिसँ लोक कटि रहल अछि। ठेठिया, देहाती कहैत कहैत आब मगही आ बज्जिकामे फँटाए लागल अछि।

दोसर मत छैक लोक जे बजैत अछि सएह मैथिली थिक। भाषा वैज्ञानिक लोकनि तकरा स्थापित करथु। एहिसँ नब्बे प्रतिशतक भाषा वितृष्णा सेहो कम हएतैक आ अनपेक्षित रुपें मगही आ बज्जिकाक प्रभाव विस्तारकेँ रोकल जा सकैत अछि।

आ एहि दुनू मतक विचमे विगत पचास वर्षसँ मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृतिक सेवामे लागल एकटा एहन नाम उभरि क आएल अछि जे सभ विवादकेँ कात करैत मैथिलीकेँ एकटा विराटफलक पर समावेशी भाषाक रुपमे स्थापित करबाक निरन्तर अभियानमे लागल अछि: रामभरोस कापड़ि भ्रमर।

नेपालीय मैथिली साहित्यक पुरोधा व्यक्तित्व भ्रमर चौसठि वसन्त पार क चुकल छथि। बारह वर्षक उमेरमे मिथिला मिहिरक नेनाभुटकाक चौपाडिमे इमानदार बालक कथाक प्रकाशनक संग साहित्यमे पदार्पण कएनिहार भ्रमर ब्राह्मण, कायस्तक भाषाक अनावश्यक विवादकेँ समाप्त करैत मैथिली वास्तविक रुपें मिथिलामे बजनिहार सभक भाषा थिक, एकर उन्नति, विकासक जिम्मेवारी सभक छैक तकर स्थापित उदाहरण बनल रहलाह अछि।

एखन धरि तीन दर्जनसँ उपर मौलिक, अनुवादित, सम्पादित पुस्तकक रचना क चुकल छथि। अर्चना (२०३० साल), अंजुली (नेपाली मासिक २०४२), आँजुर (२०४५ साल) आ गामघर साप्ताहिक (२०३९ साल)क सम्पादन प्रकाशन क पत्रकारिता क्षेत्रमे सेहो अपन वर्चस्व स्थापित क चुकल छथि। साहित्य आ पत्रकारिताक अद्भूत समागम हुनक व्यक्तित्वमे आकंठ लब लब भरल अछि आ दुनू क्षेत्रमे हुनक व्यक्तित्व स्थापित भ चुकल अछि। बरु लोक जखन भाषा, साहित्य आ पत्रकारिताक गप करैत अछि त उदाहरणक रुपमे भ्रमरजी आगाँमे ठाढ़ क देल जाइत छथि।

हिनक वचपन जन्म स्थान बघचौरामे वितलन्हि। २००८ साल श्रावणमे पिता स्व. रामगुलाम कापरी आ माता स्व. दुखनी देवीक दोसर सन्तानक रुपमे हिनक जन्म भेलनि। धन, वीत्तमे कमि नहि छलनि, मुदा जाहि वर्ग आ समाजसँ आबद्ध छलाह, पढब लिखब कठिन मानल जाइत छलैक। तथापि पिता स्व. रामगुलाम कापरी ओइ परोपट्टामे पंच केँ रुपमे सम्मानित छलाह। कोनो झगडा नहि फरिछाइ त हुनके बजा लेल जाइत छलनि आ ओ समाधन करैत रहलाह। पढनाइक नाम पर ताहि समयक

देहाती पढाइ विटगरहा आदिमे निपुण छलाह। रामायण नियमित पढथि, खेत, खरिहान आ जन बनक व्यवस्थापनमे कुशल छलाह। परोपट्टामे धान आ रुपैआक लगानी चलैत छलनि। स्वभाविक छैक नीक इज्जत छलनि।

से अपन धीआपूताकेँ पढएबालेल ओ उत्सुक रहथि। मुदा दुनू बालक सुकुमार कापड़ि (जेठभाय) आ भरोसी कापड़ि (तहिया इएह नाम रहनि) चटिया बनबाले तैयारे ने होथि। तखन घर पर बहादुर नामक एकटा पहाडी नोकर रहैक जे कान्हपर लादि दुनू भाइकेँ गुरुजीक चटिसारमे ल जाइनि आ तखन निचाँ माटिपर, तकरा बाद पाटी पर अ, आ, इ, ई सँ विटगरहा धरि सिखौन रहनि। चटिसारसँ नीकलि बेलही स्कूलमे तीन वर्ग धरि पढलाह आ तखन जनकपुरक सरस्वती मा.वि.मे ४ कक्षामे नाम लिखाओल गेलनि। ओत्तहिसँ एस.एल.सी.आ जनकपुरक रा.रा.ब. कैम्पससँ मैथिलीमे एम.ए.क पढाइ पुरा कएलनि।

एहि विच रा.रा.ब. क्याम्पसमे हिन्दी, मैथिली पढएबाक हेतु भारतसँ प्रो. धीरेन्द्र आबि गेल रहथि आ संयोगसँ ओ हिनके मकानकेँ बगलमे रहैत छलाह। सम्पर्क भेलनि। बच्चेसँ ई पत्र पत्रिका पढैत छलाह बालक, पराग, चन्दामामा, होइत होइत धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सारिका आ मिथिला मिहिर। लिखबाक रुचि रहनि, भाषा निश्चय हिन्दी रहनि।

से एक दिन एकटा कथा लिखलनि इमान्दार वालक, हिन्दी मे। प्रो. धीरेन्द्र देखलकनि आ एउटा नमहर शिक्षा देलकनि- बाउ हम हिन्दी आ मैथिली दुनू विषयमे एम. ए. छी। मुदा हिन्दीकेँ पार नहि पाबि सकलहुँ अछि। अहाँक मातृभाषा मैथिली अछि, ताहीमे लिखू।

भ्रमरजी संस्मरण सुनबैत भावुक होइत कहैते छथि -हमरा नहि बुझना गेल छल मैथिली कोनो भाषा होइछ आ जे हम सभ बजैत छी। हम कहने रहियनि- सर हम केना लिखबै मैथिली। ओ कहलनि- जरुर लिखबै। अहाँ जे बजै छी सएह लिखू हम देखा देब कोना शुद्ध लिखल जाइछ।

तखन इमान्दार वालकक मैथिली अनुवाद कएलनि आ तकरा लाल कलमसँ प्रो. धीरेन्द्र जे रंगलनि से एक्को पंक्ति सदर नहि रहल। मुदा सएह रंगलहा करेक्सन हुनका मैथिली प्रति चुनैती बझएलनि जे हुनक वालमनपर कठोर प्रभाव छोडलक आ ओ तकरा बाद पाछा नहि देखलनि। मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ पत्रिका मिहिरक नियमित लेखक बनलाह आ मैथिलीमे निकलैत कोनो पत्रिकामे हिनक रचना आदरसँ छापल जाए लागल। डा.मेघन प्रसाद अपन शोधग्रन्थ मैथिली कथा कोष(१९९६)मे सभसं बेसी कथा लिखनिहार(५८कथा)मे हुनको नाम सामेल कएने छन्हि।

अपन साहित्यिक जीवनक एहि पचास वर्षमे ओ सम्मानो कम नहि पौलनि। नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठानसँ पहिल बेर मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार (२०५३ साल)मे रु. ५०,००० टकाक संग भेटलनि। विद्यापति सेवा संस्थान (१९९६ ई.), मिथिल विभूति सम्मान देलकनि तँ अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, मुम्बईमे मिथिला रत्नसँ सम्मानित कएल गेलाह। रायपुरमे मिथिला विभूति सम्मान, पटनाक चेतना समितिसँ यात्री चेतना पुरस्कार, शेखर प्रकाशनसँ शेखर सम्मान हिनक उपलब्धि रहलनि अछि।

नेपालमे विद्यापति भाषा, साहित्य पुरस्कार (२ लाख टकाक संग) राष्ट्रपति हाथे भेटलनि तँ नेवारी साहित्यक दू गोट महत्वपूर्ण संस्था नेपाल भाषा परिषद आ गंकी धुस्वाँ वसुन्धरा प्रतिष्ठान क्रमशः केशवलाल वाख सिरपा पुरस्कार आ गंकी धुस्वाँ वसुन्धरा पुरस्कारसँ सम्मानित कएलकनि जे कोनो मैथिली भाषी साहित्यकारक हेतु पहिल छल। ई सभ पुरस्कार, सम्मान हिनक कर्मठता, संघर्ष ओ साहित्य साधनामे निरन्तर प्रतिबद्धतापूर्वक समर्पणक कारणे भेटलनि। किछुए दिन पूर्व नेपालक श्रेष्ठ समाचारपत्र गोरखापत्र हिनक अन्तरवार्ता छपने छल तँ एकरे प्रकाशन युवामंच हिनक वचनक प्रसंगकेँ विवरण सचित्र प्रकाशन कएलक। ई कोनो मैथिलक हेतु गौरवक विषय भ सकैछ।

अपन एकाकी लेखन यात्राक कारणे बाधा, व्यवधान नहि अएलनि से बात नहि। स्वाभिमानी स्वभावक कारणे ललो - चप्पोमे नहि लागि पढब आ लिखब धरिमे सिमित रहने किछु लोककेँ अखरैत रहलनि हिनक स्वभाव आ तएँ समय समय पर भाडाक दूत सभकेँ ठाढ क हिनक मान मर्दनक जोगाड भिडाओल जाइत रहल मुदा हिनक काजे एतेक विस्तृत आ गहिर भ गेल छैक जे ओ सभ विपरीत विचारक लोक उडन छू भ जाइत रहल अछि आ भ्रमरजी अपन स्थानपर अडिगे नहि रहैत छथि बरु कद काठीक हिसाबेँ आर विस्तृत क्षेत्रमे स्थापित भ जाइत छथि।

कहबाक अर्थ विरोध आ गोलैसीक घेरामे पाडबाक काज कएनिहार तखन देखिते रहि जाइत अछि जखन नेपाल सरकार हिनका जनकपुरसँ उठा क एक्केबेर नेपालक सरकारी प्रकाशन संस्था साझा प्रकाशनक गरिमामय पद अध्यक्षक आसन पर आसीन क दैत छनि। कोनो मैथिल, कोनो मधेशी पहिल बेर एहि पद पर मनोनित होइत छथि। ततबे नहि ओ अध्यक्ष पद पर रहिते नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे परिषद सदस्य नियुक्ति क देल जाइत छथि नेपालक प्रधानमन्त्री द्वारा। ई दुनू पद कोनो भाषा प्रेमीक हेतु, शौभाग्यक पद थिकै, जाहिपर भ्रमर छः वर्षसँ उपर आसीन भ चुकलाह अछि। आ दुनू ठाम ओ मैथिलीक काज कएलनि। साझामे मैथिली भाषाक पुस्तक प्रकाशनक काज शुरु कएलनि, प्रज्ञामे आँगन पत्रिकाक शुरुआतक संग मैथिली लोक संस्कृतिसँ सम्बद्ध अनेको महत्वपूर्ण गोष्ठी आ पुस्तक प्रकाशन कयलनि। जे सलहेस, दीनाभद्री, जट जटिनक रुपमे चर्चित प्रकाशन अछि। साझा प्रकाशनसँ वालकथा संग्रह बगियाक गाछ सँ मैथिली प्रकाशन शुरु भेल जे हिनके एकटा आओर वसन्त एवं अन्य नाटक, हिनकेँ सम्पादनमे विद्यापति आ नेपाल ग्रन्थक प्रकाशन भेल। तदनुरूप नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास, भगजोगनी, पैसा आदि मैथिली रचनासभ आएल।

भ्रमर जी निरन्तर सधानारत् छथि। पत्रकारिता करैत छथि, मैथिली पत्र पत्रिकाक अतिरिक्त एकटा दैनिक समाचारपत्र जनकपुर एक्सप्रेस डेढ दशकसं नेपालीमे सेहो निकालैत छथि। अपन पत्र पत्रिकाक हेतु निरन्तर लेखनक काज जारी रखितो वाहिरी लेखनक हेतु आएल आग्रहकेँ

प्राथमिकताक संग पुरा करबाक हेतु निरन्तर लेखनमे जूटल रहैत छथि। ओ मैथिली पत्रपत्रिका भ सकैछ, ओ काठमाण्डूक नेपाली पत्रपत्रिका भ सकैछ, तहिना काठमाण्डूसँ प्रकाशित होइत द पब्लिक मासिक हिन्दीक पत्रिका भ सकैछ। हुनक लेखनी अविरल, चलैत रहैत अछि।

इएह अटुट लेखनक प्रभाव छैक जे तीन दर्जन पोथी द मैथिलीक भण्डारकेँ भरलन्हि अछि। आ से विभिन्न विधामे। जे खगता देखलनि, ताहीमे भीडि गेलाह। उपन्यासक खगता रहैक त मधेश आन्दोलनकेँ आधारबना घरमुँहा मौलिक उपन्यास लिखलनि, जकरा हालेमे पचास हजार टकाक गंकी धुस्वां बसुन्धरा पुरस्कारसँ पुरस्कृत कएल गेल। लगभग तैतालिस वर्ष पूर्व नेपालक पहिल आधुनिक कविताक संग्रह बन्न कोठरी : औनाइत धुआँ (२०२९ साल) प्रकाशित कएलनि। तकरावाद कविता, गीत, गजल आदिक आनो संग्रह समयक अन्तराल संग अवैत गेल- मोमक पघलैत अधर, (गीत गजल), अप्पन अनचिन्हार (१९९० ई.), अन्हरियाक चान (गजल, २०१३ ई.) प्रकाशित भेल। विहारक मैथिली अकादमी हिनक पहिल कथा संग्रह तोरा संगे जयबौ रे कुजबा (१९८४ ई.) प्रकाशित कएलक जे कोनो नेपालीय मैथिली साहित्यकारक पहिल संग्रह छल। दोसर कथा संग्रह हुगली उपर बहैत गंगा (२०६५ साल) आएल। तेसर कथासंग्रह एण्टी भाइरस २०७६मे आएल। नाटकमे हिनक अपन फूट स्थान छन्हि। कतेको नाटक मंचित भेल, प्रशंसित भेल। रानी चन्द्रावती प्रारंभिक नाटक अछि तँ एकटा आओर वसन्त अत्यन्त चर्चित नाटक रहल जे वैदेही दरभंगाक एकटा पुरे अंकमे छपल १०९४ ई. मे। महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक (२०५४ साल), भैया अएलै अपन सोराज (२०६७ साल) आएल।

किछु सोधपरक पुस्तक सेहो अछि- राजकमलक कथा साहित्यमे नारी चरित्रक अध्ययन। ठेकान पर (विचार संकलन), विविधात्मक सामग्रीक संग समय सन्दर्भ, विदेश यात्रापर चीन यात्राक प्रथम पुस्तक लिखलनि चीन जे हम देखल (२०१४ ई.) सन सन विविध विषयक पोथी प्रकाशन क बहुतो नव नव तथ्यसँ अवगत करौलनि। साक्षात्कार संग्रह अहाँ जे

कहलहुँ अनलाक बाद भ्रमरजी वहुतो मैथिली सेवकके एकठाम राखि हुनक चिंतन विचारसँ मैथिली पाठक सभकेँ अवगत करौलखिन्ह।

हिनक अन्य पुस्तक छन्हि मैथिली लोक नृत्य, भाव भंगिमा एवं स्वरुप (२०६१ साल), मैथिली पद्य संग्रह (२०५१), त्रिशूली (मथुरानन्द चौधरी माथुर (२०४९), नेपालक मैथिली पत्रिकारिता (२०४४), अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल (२०६५), मैथिली नाटक संग्रह (२०६७), लावाक धान(कविता संग्रह) सम्पादित पुस्तक सभ अछि। अन्यमे अंग्रेजीक तजभ अगतिगचब िजभचष्टबनभ या लभउब ि (२०६२), आजको धुनषा (२०३९), समयको अन्तराल पछ्याउँदै नेपालीक रचना अछि।

अनुवादमे नहि आब नहि (मैथिलीक एक मात्र दीर्घ प्रेम काव्य)क हिन्दी में बस, अब नही क नामसँ गोपाल अशक अनुवाद कएने छथि तँ नेपाली मे सुप्रसिद्ध गद्य- पद्य लेखक मनुब्राजाकीक अनुवाद भयो अव भयो (१९९० ई.) प्रकाशित अछि। तहिना भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु धर्मेन्द्र विह्वल द्वारा अनुवादित नाटक संग्रह अछि त घरमुहाँ उपन्यासक भोजपुरीमे उमाशंकर द्वेवेदी द्वारा कएल अनुवाद प्रकाशित अछि। जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरु (२०५६) आ तराइको फाँट देखि हिमालको काँख सम्म (२०६७) नेपालीक मौलिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक आलेख संग्रह अछि। हालेमे हिनक चर्चित निबन्ध संग्रह मिथिलाक लोक जीवन: लोक सन्दर्भ आएल अछि।

हुनक अरिपन नामसँ गीति कैसेट बहार भ गेल छन्हि, जाहिमे नव गोट गीत राखल गेल अछि। फिल्म बनओलनि एकटा आओर वसन्त। ई फिल्म नेपाल टेलिभिजनसँ प्रसारित भ चुकल अछि, होइत रहैत अछि।

ओ पूर्ण मौलिक लेखक छथि, पत्रकार छथि। पैतृक सम्पत्तिकेँ जोगा क रखलनि, अपन अरजल भव्य भवन बना साहित्य साधनामे रत् छथि। हिनक आवास भ्रमरकुञ्ज जनकपुरक रेलवे स्टेशनसँ उत्तर सहजहि नजरि पर आबि जाइछ, जत्त साहित्य मनिषी लोकनिक निरन्तर आवाजाही लागल रहैत अछि।

अपन लेखनीक बलपर पायाक एहि पार ओहिपार समान रुपें समादृत भ्रमर अपन इतिहास स्वयं रचलनि अछि। अपन प्रकाशनक माध्यमसँ आनो साहित्यकारकेँ सोझा आनि नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहासके पुष्ट कएलनि अछि। हुनक मूल्यांकन जेना हएबाक चाही से संभव थिक नहि भेल हो, तकर कारण पुछलापर ओ महज मुस्किया दैत छथि, मुदा एकटा आरोप त लगिते छैक मैथिली मंच सभपर दश प्रतिशत लोकक कब्जा रहैत अछि, लर जर रहैत अछि आ भ्रमर सन सेवक साहित्यकार कतौ कात क देल जाइत छथि। मुदा भ्रमर स्वयंकेँ हरतरहें सन्तुष्ट मानैत छथि- हमर उपलब्धि कोनो तरहें कम नहि, ई त सुधी समाजक मूल्यांकनके कारण भ सकल अछि ने तखन विभेद कथीक।

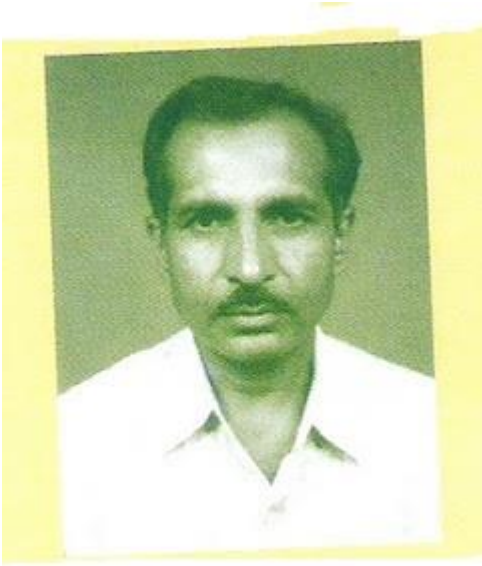
बहुत गोटे ई भ्रमर क बडप्पन मानैत छथि। सत्य ई अछि हुनका अपन स्थान बनएबामे खासे परेशानी आ अटुट परिश्रमक कर पडल छन्हि जे सम्भवतः आन पक्षकेँ सहज होइतैक। देखल इहो जा रहल छैक जे बहुत कम लिखि क सबसं बेसी प्राप्त कएनिहारो सभ अछि। किछु गोटे एम्हर अनेरे गुट खडा क एकके विरुद्धमे दोसरके महिमामण्डित करबाक काज सभ सेहो शुरु क चुकल छथि जाहिसं समस्त मैथिली साहित्य प्रभावित भ रहलैक अछि। एहनमे भ्रमरसन एकाकी साधनालीन सभक हेतु त सेवे एकमात्र आधार छैक मूल्यांकनके जे देर सबेर भेवो कएलैए।

तैयो अपन माटि पानिसँ जुडल, वाहिरी आडंबर आ चेला चाटी प्रथासँ दूर भ्रमरजी विविध व्यक्तित्वकेँ एकठाम जोडि क रखने छथि आ तकर प्रदर्शन हुनक व्यवहार आकृतिमे स्पष्ट रुपें परिलक्षित होइत अछि।

एखन ओ मधेश सरकार द्वारा गठित उभ्रमस्तरीय मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अध्यक्ष बनाओल गेलाह अछि आ भाषा, साहित्य, संस्कृतिक क्षेत्रमे काजके आगा बढएबाक हेतु अपस्यांत छथि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२२.डा. योगानन्द झा-भैया अएलै अपन सोराज: विहगंम दृष्टि



डा. योगानन्द झा

भैया अएलै अपन सोराज: विहगंम दृष्टि

आधुनिक साहित्य व्यक्तिगत ओ सामूहिक जीवनक चुनौतीसबहक प्रत्युत्तरक रुपमे सुस्थापित भेल अछि आ साहित्यिक परिकल्पना स्वपनलोकसँ क्रमशः दूर भेल जा रहल अछि। आजुक साहित्य शैली विशेषमे मानव जीवनक व्याख्या किंवा लोकरञ्जनक साधनाटाक रुपमे सीमित नहि अछि। अपितु ई निरनतर लोकजीवनक हितक हेतु नव नव विकल्प ओ दिशानिर्देशक प्रति प्रतिबद्ध अछि। तँ आजुक साहित्यकार लोकजीवनक भविष्यक हेतु चिन्तनशील देखि पड़ैत छथि आ

लोकजीवनमे व्याप्त मलिनता, असमानता, निष्पूरता ओ अहङ्कारक उन्मुलनकेँ अपन हथियारक रुपमे प्रयोग करैत देखि पडैत छथि।

आधुनिक साहित्यक गतिविधिक ई चेतना अपन बहुआयामी स्वरुपमे श्री रामभरोस कापडि भ्रमर जीक "भैया अएलै अपन सोराज" पोथीमे सङ्कलित दसो एकाङ्की नाटकमे अत्यन्त प्रस्फूटित भेल अछि। एहिसबमे एकाङ्की नाटकक समस्त मर्यादाक पालना करैत लोकमङ्गलक जे चित्र रुपायित भेल अछि ताहिसँ ई स्पष्ट अछि जे नाटककार समाज, राष्ट्र ओ विश्वमानवक उन्नयनक हेतु प्रतिबद्ध लेखनसँ संपृक्त छथि तथा विभिन्न अमङ्गलकारी तत्वकेँ ताहि रुपमे उपस्थिति करवामे सक्षम छथि जाहिसँ दर्शक स्वयं ओकर निदानक मार्ग हेरि सकथि।

एहि संग्रहक दू टा नाटक लोकगाथापर आधारित अछि क्रमशः *भैया, अएलै अपन सोराज* आ *लोक नाट्य जट जटिना*। "भैया, अएलै अपन सोराज" मे दीना भद्रीक गाथाकेँ आधार रुपमे ग्रहण कएल गेल अछि। गाथाक अनुसार दीना भद्री नामक दुई गोट मुसहर भाई छलाह जे कनक धामि नामक सामन्तक एहि हेतुएँ विरोध कएने छलाह जे ओ लोकसभसँ बेगारी खटबैत छल। दीना भद्री कनक धामिकेँ मारि कऽ बेगारी प्रथासँ लोककेँ उबारने छलाह आ जन जनमे पुजित भेल छलाह। आइयो ओ मुसहर जातिक लोकदेवताक रुपमे पुजल जाइत छथि। कनकधामी तँ मारल गेल मुदा सामन्ती व्यवस्था एखनो कोनो रुपमे जीवन्त अछि। सामन्तलोकनि नहि केवल दलित वर्गक श्रमक शोषण करैत रहलाह अछि अपितु एहि वर्गक नारीलोकनि यौनशोषणक हेतु सेहो बदनाम रहलाह अछि। क्रमशः युगचेतना बदललैक अछि आ शोषित वर्ग एहि अनीतिपूर्ण व्यवस्थाक प्रति असन्तोष, विरोध ओ विद्रोहक भावनासँ संवलित होईत गेलाह अछि। एकरे परिणाम थिक जे आब वेगारी प्रथा इतिहासक वस्तु भऽ गेल अछि। तथापि नाटककार एहि प्रसङ्गक पुनरावृत्ति कऽ वस्तुतः शोषक ओ शोषित वर्गक ऐतिहासिक संघर्षक गाथाकेँ संरक्षित करैत समसामयिक जीवनमे पर्याप्त शोषण चक्रक अभिव्यजना ओ तकर निदानक मार्ग संकेत कऽ देलनि अछि।

एहि एकाङ्कीमे पुरुष १ आ पुरुष २ कृषक मजदुर अछि जे जोरावर सिंह सामन्तक जमीन्दारीमे रहैत अछि। ई सभ बेगार सँ तँ अकछल अछिए, अपन बहु बेटीक इज्जतक रक्षाक हेतु कोनो त्राताक बाट ताकिरहल अछि। जखन एकरा दुनूकें विदीत होईत छैक जे दिना आ भद्री नामक दूटा पहलमान एकरे जातिक छैक आ ओ दुनू जोरावरक अत्याचारसँ लोककें त्राण दिएयवाक हेतु तत्पर भेलैक अछि तँ दूनू बेस प्रसन्न होईत अछि। जोरावरक लठैतसभ गाम गमतिमे अत्याचार करैत छैक। तत :पर दीना भद्रीक सँग जोरावरक मल्लयुद्ध होईत छैक आ ओ मारल जाइत अछि। एहन अनाचारीक मृत्युपर जनता जर्नादन प्रसन्न होइत अछि। वस्तुतः ई एकाङ्की लोकपरम्पराक प्रति नाटककारक व्यामोहटाक निदर्शन थिक। एहिमे युगिन चेतनाक सम्यक उपस्थापन नहि देखि पडैत अछि। जट जटिन मिथिलाक प्रसिद्ध लोकनाटक थिक। ई लोकनाट्य महिलालोकनिद्वारा अभिनीत होइत छल। कहल जाइछ जे जखन वर्षा ऋतु समाप्त भेलाक बादो वर्षा नहि होइत छलैक, तँ ग्राम्य नारीलोकनि इन्द्र भगवानकें प्रसन्न करबाक हेतु टोना करैत छलीह। एहि टोनाक क्रममे जट जटिन लोकनाट्य महिलालोकनि दू दलमे विभक्त भऽ खेलाइत छलीह। मान्यता ई रहैत छलनि जे कुटल जाइत बेङ्गक करुणापूर्ण आवाज सुनि इन्द्रदेवता पघलि जाइत छलाह। आ वर्षा होमऽ लगैत छलैक। कुटल बेङ्गक अवशेष कोनो हडाहि माउगिक आडनमे फेकिदेल जाइत छलैक जे अपनासँग कएल गेल एहि व्यवहारक हेतु महिलालोकनिकें गारि पढैत छलीह। ओ जतबें खौझा खौझा कऽ गारि पढैत छलीह। लोक मान्यताक अनुसार वर्षा ताहि वेगसँ होइत छल।

कृषि कर्मक हेतु वर्षाक महत्ता जगजाहिर अछि आ ताहि हेतु जट जटिनक लोकनाट्य खेलएबाक परम्परा अति प्राचीन कहल जाइत अछि। एहि नाट्यक दुनू पात्र जट आ जटिनक लोक जीवनक शुद्ध दम्पति अछि। जकर नोक झाँक एहि नाट्यमे युगल गीतक रुपमे प्रस्तुत भेल अछि। नाटककार मिथिलाक एहि लोकसाहित्यकें संरक्षित कऽ लेबाक दृष्टि जे एकर सङ्कलन कएलन्हि अछि आ एकर मूल रुपकें यथावत रखबाक प्रयास कएलनि अछि। एहि नाट्यमे नट नटीन प्रायेग

प्राचीन नाट्य परम्पराक अनुसरणमे भेल अछि। महिषासुर मुर्दाबाद एहि नाटक संग्रहक एकल नाटक थिक। जाहिमे एकेटा युवक अपन आत्माक संग गप्प करैत देखल जाइत अछि। नाट्य प्रयोगक दृष्टि जे ई एब्सर्ड प्रकृतिक एकाङ्की अछि। जाहिमे व्यङ्ग्य, आक्रोश ओ श्रव्यद्वारा युगीन यथार्थक चित्राङ्कन कएल गेल अछि। समसामयिक जीवनक ई यथार्थ थिक जे आइ समाजमे आनक बहु बेटीक इज्जति लुटनिहार, दहेजलोभी अभिभावक, गरीबक मखौल उडौनिहार, महाजनी वृत्तिसँ समाजक शोषण कएनिहार, अनाचारी भ्रष्टाचारीलोकनिक चलती छनि आ ओलोकनि कानुनकेँ अपना कब्जामे कऽ निद्वन्द्व विचरण करैत छथि, जखन कि अन्यायक विरोध कएनिहारकेँ इएह कानुन फाँसीक फन्दाधरि पहुँचा दैत छैक। नाटककार शोषण होइत वर्गपर शोषित वर्गक विजयक पक्षघाती छथि आ ई सङ्केत दैत छथि जे कोनो एकटा शोषककेँ हलाल कऽ देने शोषण समाप्त होमऽबाला नहि छैक किएक तँ एकटा शोषक मरैतदेरि दोसर शोषक तैयार भऽ जाइत छैक। अवश्य, जँ शोषितलोकनिसभके सेहो समाप्त कएल जा सकैत छैक।

तहिना पेटक खातिर सडक नाटक किंवा नुक्कड नाटक थिक जे विना अधिक नाटकीय उपकरण ओ रङ्गशालाक सुनियोजित व्यवस्थाक कतहु खेलल जा सकैछ। आजुक व्यस्त जीवनमे नाटक आ रङ्गमञ्चके सामान्य दर्शकलग स्वयं पहुँचबाक चाही, ताहि दृष्टिसँ जे एहि कोटिक नाटक अभिनव प्रयोग थिक। एहि नाटकमे प्रजातन्त्रीय व्यवस्थामे भ्रष्टाचारक विभिन्न आयामपर कसगर चोट कएल गेल अछि आ दर्शकलोकनिकेँ समाज ओ राष्ट्रमे व्याप्त विसङ्गतिसँ परिचय करा ओकर निदान सोचबाक हेतु मार्ग प्रशस्त कएल गेल अछि। एहि नाटकमे ई दर्शाओल गेल अछि जे कोना तस्करीक माल तस्कर ओ नेतालोकनिबलें एक देशसँ दोसर देश पहुँचि जाइत अछि, कोना प्रशासकलोकनि भ्रष्टाचारक श्रृङ्खलासँ आबद्ध छथि आ जनसामान्यक शोषणमे लागल छथि, कोना नेता लोकनि टिकट पएबाक लेल कुत्सितसँ कुत्सित कर्म करबाक लेल तत्पर रहैत छथि। कोना जनताक रखबारलोकनि जनताक कल्याणक मददिक अंश अपने खा गेल करैत छथि आ शिक्षाजगतमे माफियालोकनि पाइक

बलपर मेधावी छात्र लोकनिक स्थानपर कमजोरो छात्रकेँ मेधा सूचिमे आगाँ बढा देबाक धन्धामे लिप्त रहैत छथि।

नेता जी आबिरहल छथि एकाङ्की सेहो प्रजातन्त्रीय शासनक विभिन्न विसङ्गतिक दिग्दर्शन करबैत अछि। एहि नाटकमे नाटककार जनताक समस्याक मूलकेँ स्पष्ट करबाक उदेश्यसँ कथा सूत्र जोडलनि अछि। नाट्यारम्भमे सूत्रधार ओ नटी कलाकारलोकनिक हड़तालसँ सीदित देखि पडैत छथि। ईलोकनि कथानक तकबाक प्रयासमे छथि। तावत् एकटा जुलुसक स्वर सुनि पडैछ। जाहिमे महँगीक समस्या अत्यन्त सामान्य बुझना जाइत छनि आ चुँकि लोक ऐकरा तेना कऽ कऽ अडेजि लेने अछि जे ई नाटकक विषय रुपमे ज्वलन्त नहिँ बुझना जाइत छनि। ततःपर भ्रष्टाचारक विरुद्ध जुलुस देखि पडैत छनि। आ भ्रष्टाचारक समस्याकेँ कथानकमे लऽ नाटक खेलबाक मानसिकता बनबैत छथि। मुदा ईहो आब ज्वलन्त समस्या नहिँ बुझना जाइत छनि। कारण लोक कोनो प्रकारक सरकारी काजक हेतु घुसक लेन देनके अडजि कऽ एकटा स्विकृति दऽ चुकल छैक। ततःपर शान्ति सुरक्षाक हेतु प्रशासनक विरोधमे जुलुस देखि पडैत छनि। तखन ओ अपन नाटकक हेतु शान्ति सुरक्षाक समस्याकेँ कथानक रुपमें ग्रहण करऽ चाहैत छथि। किएक तँ इहो समस्या जडिआएल बुझना जाइत छनि। मुदा तखने बेरोजगारलोकनिक एकटा जुलुस देखि ओ बेरोजगारीएकेँ ज्वलन्त समस्या मानि कथानकक सृजन करबाक ब्यौत करऽ लगैत छथि। मुदा पुनः एकटा सरकारी जुलुसपर नजरि जाइत छनि। जाहिमे विरोधिसबहक विरोधक समस्या, कर्मचारीलोकनिक हड़तालक समस्या, शान्ति सुरक्षाक भङ्गक समस्या आदिक प्रतिरोधात्मक स्वर सुनि पडैछ आ एहि समस्यासबकेँ नाटकीय स्वरुप प्रदान करबाक मन बनबैत छथि। एहितरहँ एहि एकाङ्कीक माध्यमे नाटककार प्रजातन्त्रीय व्यवस्थामे उत्पन्न विभिन्न समस्यासबहक सडोर कऽ ई प्रदर्शित करबाक प्रयास कएलनि अछि जे आइ ततेक समस्या अछि जे सबपर फूट फूट कऽ नाटक खेलल जा सकैछ। कानो समस्या ककरोसँ कम नहिँ अछि मुदा सबसँ बडका समस्या थिक जुलुस जे प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाक देन थिक। एहि समस्याक कारणे लोकजीवन अस्त-व्यस्त रहैत अछि। मुदा

ई कोनो समाधान प्रस्तुत नहि कऽ पबैत अछि। अवश्य जुलुश कएनिहारकेँ एकटा आत्मसन्तोष होइत छैक। जे ओ अपन अधिकारक प्रयोग कऽ पाबिरहल अछि। आ एहि जुलुशक समस्याक मूलमे छथि राजनेतालोकनि जे मूल समस्यासँ जनताकेँ भ्रमित कऽ अपन स्वार्थ साधनमे लागल छथि। तएँ प्रजातन्त्रमे जाहि एकमात्र चरित्रक चारुकात सबटा समस्या घुमैत अछि, से थिकाह नेता जीलोकनि। यावतधरि हिनकालोकनिक चरित्रमे सुधार नहि होयत, ताधरि प्रजातन्त्र लोककल्याणकारी नहि भऽ सकैछ आ ने कोनो समस्याक समाधान भऽ सकैछ। एहि तरहँ एहि नाटकमें वास्तविक जीवनक उदघाटन कऽ अभिनव कलाक माध्यमे एकटा विशिष्ट विचारधाराक अभिव्यक्ति भेल अछि जे लोकजगतकेँ प्रेरित प्रभावित करवाक दृष्टिए सफल अछि।

हम घुरी अयलहुँ मीत क्षेत्रवादसँ ग्रस्त नेपालक लोकजीवनक अन्तःकथापर आधारित अछि। क्षेत्रक आधारपर नेपालक लोक दू भागमे बँटल अछि। पहाडी आ मधेशी। पहाडीलोकनी पहाडपर रहैत छथि आ मधेशीलोकनि तराइमे। पहाडीलोकनि, मधेशीलोकनि प्रति नीक भाव नहि रखैत छथि। जकर कारणे नेपाली मानस दू भागमे बाटि गेल अछि। स्वभावतः पहाडी ओ मधेशीक राष्ट्रीयता एक रहलाक बादो दुनूक बीच दुरी बढ़ल अछि। जे पारस्परिक सर्घषक रुप लऽ लेलक अछि। एहि संडघर्षक कारणे पहाडीलोकनि मधेशीलोकनिक बीच आ मधेशीलोकनि पहाडीलोकनिक बिच उत्पीडित होइत छथि। उत्पीडनक अतिरेक तखन होइछ जखन मधेशमे बसल कोनो पहाडीके अपन चल अचल सम्पति अल्प मूल्यमे बेचि प्रव्रजन करवाक स्थिति बनैत छैक। रामेश्वर पहाडी अछि मुदा बहुत दिन सँ मधेशीलोकनिक बिच बसल अछि आ ओकरासभक सँग आत्मियता बनौने अछि। मुदा राजनितिक षडयन्त्रक कारणे ओकरा प्रव्रर्जित होएवाक स्थिति बनैत छैक। मुदा ओकर मधेशी मीतकेँ ई पसिन्न नहिँ छैक। दुनूके बीच अन्तरङ्ग सम्बन्ध छैक। अन्ततः ओ पहाडी अपन जन्मभूमिक परित्याग नहि कऽ पबैत अछि आ पुनः अपन वासस्थलपर घुरि अबैत अछि। छहोछित राष्ट्रीयता बीच मानवीय संवेदनाक उपस्थान एहि नाटककेँ अत्यन्त स्तरीय बना देलक अछि।

सुलीपर ईजोत प्रतीक नाटक थिक। एहिमे इजोत प्रतिनिधित्व करैत अछि मानवक सुखी, सम्पन्न, सुन्दर ओ आकर्षक जीवन, अन्हार प्रतिनिधित्व करैत अछि ओहि समस्त विसङ्गतिक जे मानव जीवनकेँ दुःखमय बना देने अछि। सुली थीक ओ स्थान जतऽ विसङ्गतिसभसँ संघर्षक कऽ सुलीधरि पहुँचबाक आवश्यकता छैक। आई

गरीबी, बेरोजगारी, हत्या, भ्रष्टाचार, लूटि, बलातकार, चितकार, दहेज प्रथा, चोरी, डकैती, अनाचार, आदि विभिन्न समस्या मानव जीवनकेँ दुभर कएने छैक। ई समस्यासब यावत दुर नहि हएत मानव नीकजकाँ जीबि नहि सकैछ। मुदा ई समस्यासब दूर हएत कोना, ताहिहेतु हाथपर हाथ धऽ बैसलासँ काज नहि चलि सकैत छैक। एकरालेल चाही कर्मण्यता आ साहस। ई साहस ने तऽ ओहि सुविधाभोगी समाजलग छैक जे कानमे तुर ठुसि अपनामे मस्त अछि आ ने क्रान्तिदर्शी ओहन लोकलग जे समाजिक जड़ताकेँ तोडवाक स्वाङ्ग मात्र रचैत अछि। वस्तुतः जखन मजदूर आ किसान अपन आजीविकाक प्रति बफादार रहैत संघर्षशील हएत तखने समाजिक विदुरपता सबपर विजय प्राप्त कऽ अन्हारकेँ परारास्त कऽ सकत आ सम्पन्न जीवन जीवि सकत। नाटककार श्रमिक वर्गक प्रतिष्ठा करैत पुरुष २ सँ कहवैत छथि हर आ पालो सिढीक दुन ठाढ़ हैत। बड़का पैना पौदान। आ पालोमे जे बान्हल अछि ताहि जौरसँ पौदान बान्हल जाइत। एना कऽ चहरि पहुँचि जाएब इजोतधरि। वस्तुतः ? इ नाटक समाजिक राजनितिक जगतमे प्याप्त विद्रुप्तसँ संघर्ष करवाक आवहन करैत अछि। आ बौधु बाजु उठल ग्राम्य जीवनमे चलैत कूटनीतिक पर्दाफास करैत अछि। एकर नायकमे अछि बौधु जे एकटा चाहक दोकान चलबैत अछि। एहि दोकानक कारणे ओ गामक गतिविधिसँ परिचित होइत रहैत अछि। अयोधि चौधरी गार्मप्रधान अछि। जकरा समयमे गाममे सुख - शान्ति व्याप्त छैक। मुदा किछु लोककेँ ओ नहि सोहाइत छैक। एहन स्वार्थी तत्व ग्रामक प्रधानविरुद्ध षडयन्त्र करैत अछि। ओसभ ग्रामप्रधानक एकटा मित्रकेँ ग्रामप्रधान बनबाक हेतु चुनावमे ठाढ़ करबा दैत अछि। परिणामतः दुनु मित्रक टोलमे वैमनस्य भऽ जाइत छैक। मुदा बौधु षडयन्त्रकारीसभक पोल खोली दैत अछि आ गाम पसाही लगबासँ बाचिँ जाइत अछि।

एहितरहें नाटकमे ग्राम्य जीवननक विद्रुपताविरुद्ध उभरैत जनचेतनाकेँ साकार कयल गेल अछि।

संग्रहक सर्वाधिक पैघ एकाङ्की अछि सुरज उगवासँ पहिने । ई सात दृश्यमे विभाजित अछि। ई एकगोट रोमानी अर्थात स्वच्छन्दवादी नाटक थिक। एहिमे प्रेमक स्वच्छन्दतापर बेस बल देल गेल अछि। आ ओकर मार्गमे उपस्थित होबऽबला विघ्न बाधाक सामाना अत्यन्त सहज ढङ्गसँ होइत देखाओल गेल अछि। एहि नाटकमे नायक ओ नायिका विवाहमे विघ्न-बाधा होइतो अत्यन्त हर्ष आ उल्लासक वातावरण प्रदर्शन भेल अछि।

एकर नायक अशोक पढ़ि लिखि क नोकरी कऽलगैत अछि मुदा एहि हेतुएँ नोकरी छोड़ि दैत अछि जे ओकर मालिक अवैध व्यापारमे लागल रहैत छैक। आ तकरे ताकछेम करवाक लेल ओकरा नियुक्त कएने रहैत छैक। नोकरी छोड़लाक बाद ओ बेरोजगार भऽ गामक सङ्गीसभक कुसङ्गतिमे रहऽ लगैत अछि आ व्यक्तिगतरुपेँ स्वच्छ रहितो अपन नरेशि मित्रसभक कारणे बदनाम होइत चलिजाइत अछि जाहिसँ ओकर माता पिता दुःखी रहऽ लगैत छथिन। बेर-बेर कोशिश कएलाक बादो अशोककेँ नोकरी नहि भेटि पबैत छैक आ ओ अपन पेंशनधारी पितापर आश्रित रहऽ लगैत अछि।

अशोकक पिता अपन सकल अचल सम्पति अशोकक पढाइमे बिलहि देने छलाह। आ किछु कर्जा भऽ गेल छलनि जकर कारणे गोराइत हुनका आ हुनका पत्नीकसँग दुर्व्यवहारपर उतरि जाइत अछि। अशोककेँ ई नहि नीक लगैत छैक आ ओ गोराइतसँ भीडि जाए चाहैत अछि। ओ मुलक कतोक गुणा सुदि जोड़ि कऽ ओकरा पैतृक घराडी हडपबापर तुलल छैक। युवा वर्ग एहि महाजनी वृत्तिक प्रतिरोध करऽ चाहैत अछि मुदा अन्धविश्वासमे जकडल ओकरासभक माता पिता अत्याचारी महाजनकेँ बेरपर ठाढ़ होएबाक कृपा करवाक कृतज्ञताक कारणसँ नहिँ करऽ दैत छैक। मुदा अशोककेँ अपन माता पिताक अपमान नहिँ सकल जाइत अछि। ओ गोराइतक डेउढ़ी जा जुमैत अछि। मुदा ओतऽ गोराइतक बेटी

ओकरा गोराइतसँ भेट होबऽ दैत छैक। आ अपन गहनासब प्रदान कऽ ओकरा ऋणमुक्त भऽ जाए कहैत छैक।

गोराइतक बेटी लक्ष्मीसँ अशोक गहना नहि लैत अछि। लक्ष्मी अशोककेँ अपन पिताक महाजनी वृत्तिक विरुद्ध संघर्ष करवाक हेतु सङ्गठित प्रयास करबाक मन्त्रणा दैत छैक आ ओहिमे आवश्यकता पड़लापर अपनो सहयोग देवाक वचन दैत छैक। अन्ततः अशोक लक्ष्मीसँ विवाह कऽ लेबाक निर्णय लैत अछि आ लक्ष्मीयो ताहिहेतु तैयार भऽ जाइत अछि। दुनुक विवाहमे गोराइत विघ्न बाधा उत्पन्न करऽ चाहैत अछि मुदा कन्याक बालिग रहबाक कारणे आ ओकर स्वीकृतिसँ विवाह होएबाक कारणे आ विवाह रोकि नहि पबैत अछि। आ एहिँतरहे महाजनक अन्यायी वृत्तिक अन्त होइत छक।

एहि नाटकमे महाजनी वृत्तिक जतेक सुन्दर ओ सजीव उपस्थापन भेल अछि, ततेक ओकराविरुद्ध संघर्षक नहि आ ने फलदायी प्रेरक। लक्ष्मी आ अशोकक प्रेममे ततेक असहजता अछि जे वस्तु विन्यासेपर प्रश्न उठि सकैत अछि। तथापि रङ्गमञ्चीय दृष्टिसँ ई नाटक सिनेमा शैलीक सफल नाटक थिक।

मैथिली नाट्य साहित्यक इतिहास अत्यन्त प्राचीन अछि। संस्कृत नाटकमे मैथिलीक गेय पदावलीक सम्मिलनकेँ जँ मैथिली नाटकक इतिहास मानी तँ आठसओ वर्ष पुरान अछि। नेपाल मैथिली नाटक ओ रङ्गमञ्चक एकटा महत्वपूर्ण केन्द्रक रुपमे सत्रहम अठारहम शताब्दी धरि जानल जाइत रहल। मुदा परवर्ती कालमे ओहिठामसँ मैथिली नाटकक स्रोत जेना सुखा गेल छल। मुदा श्री भ्रमर जीक प्रयाससँ बुझना जाइत अछि जे आधुनिक मैथिली नाटक अपन सकल सम्भारक सँग नेपालमे पल्लवित पुष्पित भऽ रहल अछि आ युगानुरूप अन्यान्य भाषाक समकक्ष लेखनक प्रतिस्पर्धामे लागल अछि। एहि नाटकसंग्रहसँ ई स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे भ्रमरजी प्रयोगधर्मी नाटककार छथि, नाट्यशैलीक विविध प्रयोगमे सिद्धहस्त छथि खाहे ओ पारम्पारिक शैली हो किंवा अत्याधुनिक।

भ्रमर जीक एकाङ्की नाटकसबमे अधिकांश वस्तु विन्यास प्रासङ्गिक अछि। एहिसबमे वर्तमान जीवनक विभिन्न समस्यादिसि लोकक ध्यानाकृष्ट करबाक सामर्थ्य छैक। ईसबटा रङ्गमञ्चीय दृष्टि सफल एकाङ्की अछि। नाटककार रङ्ग प्रभावकेँ उत्कर्षधरि पहुँचएबाक हेतु रङ्गभाषाक प्रयोग कएलनि अछि, जे हुनक निर्देशकीयताकेँ स्फूर्त करैत अछि। पात्रोचित भाषाक प्रयोग कयलनि अछि जे हुनक निर्देशकियताकेँ स्फूर्त करैत अछि। पात्रोचित भाषाक व्यवहारसँ एकाङ्कीमे कतहुँ असहजता ओ भारीपन बुझना जाइत छैक। लोकानुरञ्जनक अपेक्षा गम्भीर वैचारिक अभिव्यक्ति प्रदान कऽ भ्रमरजीक एकाङ्कीसब लोकजीवनक समस्त नाकारात्मक पक्षक विद्रुपताकेँ उद्घाटित करबामे सफल सिद्ध अछि तथा नव निर्माणक पक्षपाती अछि। अवश्ये हिनक ई साहित्य समाज आ देशक हेतु कल्याणकारी अछि जाहिमे सस्त लोकप्रियता आ बाजारुपनक अभाव तँ अछिए, प्रचार आ उपदेशकक थोपल बौद्धिकता नहि अपितु कलात्मक लोकोपदेश अछि। समग्रतामे हिनक संग्रह समाज ओ राष्ट्रक प्रति हिनक प्रतिबद्ध लेखनक विशिष्ट नमुना थिक।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठार।

२.२३. गजेन्द्र ठाकुर- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर एकटा समग्र दृष्टि



गजेन्द्र ठाकुर

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर एकटा समग्र दृष्टि

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' सर्वहारा वर्गकेँ गरिमा देलन्हि, जखन महेन्द्र मलंगिया आ जातिवादी रंगमंच शोलकन आ राड़ युक्त शब्दावली अपन स्लैपस्टिक ह्यूमर बला नाटक मे दऽ रहल छल, तखन भ्रमर जी ई केलन्हि, से आर महत्वपूर्ण छल।

जँ नाटक पढ़बामे उद्वेलित नै करत तँ निर्देशक ओकर मंचनक निर्णय कोना लेत? आ जे पढ़बामे नीक लागत से भऽ जायत नाटकक पठनीय तत्वक आग्रही? आ जे जातिवादी अछि, जे 'स्लैपस्टिक ह्यूमर' लिखै छथि से भेला नाटकक मंचीय तत्वक आग्रही? २१म शताब्दीमे मलंगियाजी 'ओकर आंगनक बारहमासा'मे निम्न वर्गकेँ राड़ कहै छथि, कएक दशक बाद ई धरि सुधार आएल छन्हि जे ओ आब ओइ वर्गकेँ निम्न वर्ग कहि रहल छथि, ई सुधार स्वागत योग्य मुदा ऐ दीर्घ अवधि लेल बड्ड कम अछि। मलंगियाजी अपन जाति-आधारित वाक्य संरचना, आ भ्रष्ट-हिन्दी मिश्रित वाक्य रचना कोना घोसिया सकितथि जँ भगता आ निम्न वर्गक छद्म संकल्पना नै अनितथि, ई तथ्य ओ बड्ड चतुराइसँ नुकेबाक प्रयास करै छथि, आ तँ ओ मेडियोक्रिटीसँ आगाँ नै

बढ़ि पबै छथि। आ तँ हुनकामे ऐ नाट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह तँ छन्हि मुदा सामर्थ्य नै आबि पबै छन्हि। विष्णु शर्माक पंचतंत्रमे नीक कथा सभ अछि मुदा ओ अकारण शूद्र आ स्त्रीक पाछाँ पड़ि जाइ छथि, से नारायण पण्डितकेँ ओकर पुनर्लेखन कऽ हितोपदेश लिखय पड़लन्हि। रंगमंच निर्देशककेँ सेहो ऐ तरहक भाषाक पुनर्लेखन कऽ मंचन योग्य शब्दावली बनेबाक चाही।

भ्रमरक गरिमामय भाषा लोकक गरिमाक मान रखैत अछि।

मुदा पहिने भ्रमरक लघुकथा सभपर एकटा दृष्टि:

तोरा संगे जयबौ रे कुजबा (१९८७)

ऐ संग्रहमे १२ टा लघुकथा अछि।

पहिल लघुकथा **भगजोगनीक** जबर्दस्त प्रारम्भ भेल। ग्लैमर गर्ल रेखा घर गृहस्थीक लेल चिन्तित, ई देखि कऽ प्रोटैगोनिस्ट अभि अचम्भित छथि। समाजसँ परिवारसँ जे ओकरा अठारहे उन्नैस बर्खमे पठा देलकै काठमाण्डो, कमाइ लेल। ओकरासँ खिन्न छलि रेखा। पति बनारसमे ओकरे कमाइपर पड़ल रहै छल, आ ओकर फैशनक खर्च पूरा करै छलै ओकर संगी शेखर, व्यापारी। मुदा कथाक अन्त कमजोर भऽ गेल अछि।

अन्हारमे भोतिआयल एकटा सिपाही उत्कृष्ट कथा अछि। गणेश आ गणेश सन लोकक स्केच। 'हमरे हरिपुर बला बट्टेदारसँ माडल दाउरा, सुरवाल, टोपी आ बाबूक पुरना जूता पयरमे आ आँखिमे टूटल बाँहिबला चश्मा, जकरा ओ डोरीसँ बन्हने रहैक।'

'भोतिआयल बाटक बटोही', 'नोरक बुन्न' आ 'असक्क' व्यक्तिक मनक विचार आ निराशाकेँ नीकसँ वर्णन करैत अछि। मुदा सर्वहाराक दर्द 'माटिक दरद'मे जइ प्रकारेँ आयल अछि, से अद्भुत अछि।

'मनःस्थितिक दंश' कथाक गढ़नि अद्भुत अछि। बहुरियाक पति नाइट ड्यूटी, सिकरेटीपर जाइ छै। कमजोर छै। ससुर ओकरा घरमे पड़सै छै,

मुदा से ओकरा बादमे पता चलै छै, पहिल राति तँ ओ आदंकमे रहैए, ओकरा संग सम्भोगो भेलै आकि ओ सपनाइ छलि सेहो नै पता। कथा आगाँ बढै छै। आर शिल्पगत विशेषता अबै छै। मुदा फेर अन्त होइत-होइत कथा कमजोर भऽ जाइए।

टीस दसम कक्षाक छात्राक कथा अछि, ओ किछु बनऽ चाहै छथि, मुदा..

जेना टीस गीताक कथा अछि तहिना मौसी मौसीक कथा अछि जे आइ जा रहल छथि, मुदा हुनका मोनसँ कियो निकालि नै पाबि रहल अछि।

आँचरमे बर्खा बुन्नीक बीच प्रोटैगोनिस्ट सोचि रहल छथि। भयंकर बर्खा, अड़ियानधान कऽ देतै। सरस्वती, सुनीता, गीता। सरस्वतीक सासुर नीक नै भेलै, गीता लेल लड़का प्रोटैगोनिस्ट ताकथु। स्मृति.. बर्खा बुन्नीक बीच।

पांकमे मॉडर्न रेखाक कथा अछि। मुदा कथा उद्देश्यहीन भटकैत रहैत अछि। तोरा संगे जयबौ रे कुजबा टाइल कथा अछि मुदा पांक सन ईहो स्त्री पुरुष विमर्शकें नै फरिछा पाबैए। बैकप्लैस आस जगबैत रहैए मुदा पाठक पियासले रहि जाइ छथि आ से प्यास तखन आर तीव्र भऽ जाइए जखन एतेक सशक्त पाँति कथाकार अन्तिममे आनै छथि।

तोरा संगे जयबौ रे कुजबा

बड़ सुख होयतै-

हथिया चढ़ि घुमबै जहान रे..

भ्रमरक नाटक

फील्डवर्कक आधारपर जँ लोककथाक संकलन, मोहाबराक संकलन नै करब तँ अहिना हएत जेना मलंगिया जीक नाटकमे होइए। अहाँ एक वर्गक प्रचलित मोहाबरा 'दस ब्राह्मण दस पेट, दस राड़ एक पेट' मोहाबराक संकलन कऽ लेब मुदा दोसर वर्ग द्वारा प्रयुक्त 'दस ब्राह्मण एक पेट..' केर संकलन नै कऽ सकब। महेन्द्र नारायण राम लिखै छथि जे लोककथामे जाति-पाइत नै होइ छै, मुदा मलंगियाजी से कोना

मानताह? भगता सेहो हुनकर कथामे एबे करै छन्हि। आ असल कारण जइ कारणसँ ई मलंगिया जीक नाटकक अभिन्न अंग बनि जाइत अछि से अछि हुनकर आनुवंशिक जातीय श्रेष्ठता आधारित सोच। हुनकर नाटकमे मोटा-मोटी अढ़ाइ-अढ़ाइ पन्नाक घीच तीरि कऽ कइएकटा दृश्य होइत अछि, जइमे अन्तिम दू-तीन दृश्य धरि ओ छोटका जाइतक (मलंगियाजीक अपन इजाद कएल भाषा द्वारा) कथित भाषापर सवर्ण दर्शकक हँसबाक, आ भगताक भ्रष्ट-हिन्दीक माध्यमसँ छद्म हास्य उत्पन्न करबाक अपन पुरान पद्धतिक अनुसरण करै छथि। नाट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह तँ अन्तिम दू-तीन दृश्यमे ओ करैत छथि मुदा सामर्थ्य नै आबि पबै छन्हि। “पचपनिया मैथिली” मे सुभाष चन्द्र यादव लिखैत छथि- “डॉ. रमानन्द झा ‘रमण’ अपन नोटबुक मे टिपने छलाह- ‘ब्राह्मण कहैत छथि सोइत छी, सोल्हकन कहैत अछि बाभन छी। हम की कही जे की छी?’ एहि टीप मे सोल्हकन लेल जे निरादर व्यक्त भेल अछि, से आर किछु नहि; जातीय विद्वेष आ घृणाक भाषिक अभिव्यक्ति थिक।” चन्द्रेश “रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ : विचार, संवेदना आ चेतना [विदेह अंक ३७०]” मे लिखै छथि- “किएक तँ नेपालक मैथिली नाटककेँ नाटक बुझले नहि जाइक। दोसर, जे संस्था मिनाप नाटक करय ताहिमे कोनो एकटा खास व्यक्तिक मात्र नाटक खेलायल जाइक। एही वर्चस्ववादी रीतिकेँ तोड़बाक आ मानसिकताकेँ जाग्रत करबाक उद्देश्येँ ओ एक समयमे नाटक लिखबा पर जोर देलनि।” ई एकटा खास व्यक्ति मलंगिया जी थिका, मलंगिया जी नेपाली राजशाही कालमे लेखकीय प्रतिबद्धताकेँ नै निमहा सकला आ राजनैतिक रूपसँ सत्ता पक्षक नाटक लिखलनि आ खयाल रखलनि जे दर्शक हँसय मात्र सर्वहारापर, सत्ताधीशपर नै। प्रा. परमेश्वर कापड़ि “‘मुर्दा’ नाटकक युगीन-सन्दर्भ [रमेश रञ्जन- मुर्दा, साल २०६९]” मे लिखै छथि- “डॉ. धीरेन्द्र आ मलंगिया... अपनाके राजनीतिसँ एतर रखने रहलाह। । तँए हिनका सबके रचनामे, रचनाधर्मितामे, राजनीतिक द्वन्द्वक लबलेस नहि देखाइ दैत अछि।” अही आलेखमे परमेश्वर कापड़ि रमेश रञ्जन आ मलंगिया जीक मादे लिखै छथि- “रमेशजी, मलंगियाके लगमे बहुत दिन धरि रहि रङ्गमञ्चीय सङ्घति करितो, यथार्थ ई अछि जे हिनकापर मलंगियाजीक कोनो छांह-भास नहि पड़ल बुझाइछ। दोसर यथार्थ तऽ इहो अछि जे

मलंगियाजीसँ हटल रहले अवस्था आ संस्थामे ई महत्वपूर्ण कृतिक रचना कए सकलथि। हमर कहबाक अभिप्राय ई अछि जे मलंगियाजी आ मिनापसँ जहिया रमेशजी अलग भऽ कऽ संकल्पसँ आबद्ध रहथि तहि ए एकर रचना (मुर्दा, नाटक, वि.सं.२०५० सालमे) भेल अछि। ध्यातव्य अछि जे मिनाप एखनधरि एकर मञ्चन नहि कऽ सकल।”

ऐ परिस्थितिमे भ्रमर मैथिली नाटककेँ सम्वादक माध्यम बनौलनि, ओकरा लेल एकटा भाषा गढ़लनि जे सर्वहारा लेल अपमानजनक नै वरन गरिमामय छल। राजशाहीक तरमे रहितो आ नेपालक नागरिक रहितो (मलंगियाक कार्यस्थल नेपाल छल मुदा ओ भारतक नागरिक छला) ओ लोकगाथाक माध्यमसँ राजनीतिक विषयवस्तु अपन रचनाधर्मितामे अनलनि।

“भैया, अएलै अपन सोराज” केर पुरुष-१ आ पुरुष-२ सामन्तक बेगारी खटेबाक विरोधमे अछि आ पार्श्वसँ गीत उठै छै-

सभ दिन आई खढ़ कटाबै छै

सात साओ मुसहरबा से

सातो साओ मुसहरकेँ घरमे छागरे पोसल छै, दीना भद्री राजा भरथरीक गीत गबैत योगी रूपमे प्रवेश करै छथि।

तहिना ‘महिषासुर मुर्दाबाद’ एकल नाटक अछि, जइमे पुरुष-१ अपनो आ पार्श्वसँ बाजल अबाजोक अभिनय कऽ सकैत अछि। एकटा केँ मारने बहुत रास जनमि कऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि, से काज अपूर्ण छै ओइ पात्रक, आ तँ ओ फाँसी पर अखन नै लटकऽ चाहैए।

लोक नाट्य: जट जटिन (२००७) (शोध) हुनकर फील्डवर्कसँ जुड़ल रहबाक प्रमाण अछि। आ तँ हुनका नेपालीय मैथिलीक लोकनाट्यधर्मि शेक्सपीयर कहल जाइत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

२.२४.नित्यानन्द मण्डल-अपने रङ्गमे रङ्गाएल रामभरोस सर



नित्यानन्द मण्डल

अपने रङ्गमे रङ्गाएल रामभरोस सर

केहन सुदर्शन स्वरूप । अत्यन्त चमकैत ओजपूर्ण आभासँ लावालव भरल अप्रतिम आकर्षणयुक्त सौरभपूर्ण सौम्य नयनाभिराम मुस्किआइत मुखाकृति पर साटल नयनक उपनयन साहित्यसँ होइत छै जे निरन्तर अपना वेगक प्रवाहमे निश्चल सरिता जेकाँ बहैत रहैत छै विना रोकटोक अपन मणि जडित मस्तिष्कक आलम्ब पर अंकुरित बौद्धिकताक आयातनकेँ जीवन आ जगतक क्षितिजधरि आलोकित करव भागिरथी सत्प्रयाससँ समाज,साहित्य आ संस्कृतिक लेल अपन जीवनकेँ विषमे डुबाइयोक नीलकंठ जेकाँ विषपान कऽ श्रोता, पाठक आ दर्शककेँ अपन सृजनसँ अमृतपान, रसपान करौनिहार जनिक समकालिन समालोचक लोकनि सप्रेम, सस्मान, सस्नेह कहैत रहनि जे कापडिके चानि पर फुटनि खापडि, आइ वाहए कापडिसर मैथिली साहित्यकेँ श्रृवृद्धिमे महत्वपूर्ण योगदान दैत मिथिलावासीक माथ सगौरव उच्च क देलखिन्ह । कापडि सर माने रामभरोस कापडि सर ।

हुनक साहित्यिक आ सञ्चारक सुरभी सभ्यता आधारित मिथिला होइक वा अस्मिता अभिप्रेरित मधेसक कोन्ह-कोन्हधरि पसरिल छनि । हुनका पोरपोरमे मिथिला आ मधेश सजिव अछि । तँ नेपालमे संघियता

अएलाक बाद मधेश प्रदेशमे गठित मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक पहिल अध्यक्षक कमान सम्हारने छथि । मधेशप्रदेशमे रहल विभिन्न भाषाभाषिक साहित्यअनुरागी, भाषाप्रेमी, कलापारखी लोकनि हिनका उपर साहित्यक सभविधामे नीक महत्वपूर्ण काज होइक से पलक विछओने अछि ।

वस्तुतः मैथिली साहित्यक एहन कोनो विधा नहि जे हिनकासँ बाम गेल होइक ।

कविता, गीत, गजल, लेख, आलेख, निबन्ध, शोध, रिपोर्टाज, समिक्षा, कथा, उपन्यास, नाटक, फिल्म, गीति क्यासेट आदि हिनक बेमिसाल कृतिसभ अछि । नहि आब नहि दीर्घ कविता, तोरे संगे जएबो रे कुजबा, हुगली उपर बहैत गंगा, एण्टी भाइरस कथा संग्रह, ठेकान पर आलेख संग्रह, सीता फिल्ममे प्रसिद्धगीतक लेखन, जटजटिन, जानकीक महिमा, हमर गरीवीए हमरा वरदान लगैए, मेहनतिके रोटी पकवान लगैए आदि गीत, जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका साँस्कृतिक सम्पदा आ एकर अँग्रेजी अनुवाद सेहो, राजकमल आ स्त्री पर शोध, मधेश आन्दोलनपर केन्द्रित घरमुँहा उपन्यास, आदि उल्लेखनीय कृति अछि । गामघर आ आँजुर मैथिली पत्रकारिताक एकटा एहन राजमार्ग बनल जाहिपर सयौंके संख्यामे एखनुका नामी हस्ताक्षर लोकनि ओहिठामसँ डेगाडेगी चलबाक सुरुआत कएने रहलबात ककरोसँ नुकाएल नहि अछि जाहिमे अपनेक शोणित आ रक्ततर्पणक सुफल थिक जे आइयो ओ दुनू पत्रिका पाठकक मनमस्तिष्कमे जीवित अछि, आ चलि रहल अछि । जनकपुरधामसँ कान्तिपुरक वास्ते पहिल व्यक्तित्वके रुपमे काज करब, मधुपर्क, गरिमा, गोरखापत्र, राजधानी, नागरिक, हिमाल खबर, अग्नीपथ, यूवा मञ्च आदिमे समाचार विचार प्रकाशित होएब अपनेक कलमक जादुगरी अछि । हिन्दुस्तान, आज, ईनकलाब, हिमालीनी, द पोलिटिक्स, विविध भारत लगायतमे हिन्दी भाषामे विचार आ समाचार सम्प्रेषण । सोनामाटि, देशकोस, घरबाहर, समयसाल, अंतिका, फुलपात, पल्लव, मिथिला टाईम्स, मिथिला दर्शन आदिमे छायल रहलाह । जनकपुरधामक दोसर अफसेट प्रविधिक पत्रिका सुप्रभात, जनकपुर एक्सप्रेस आइयो

लोकक ठोर पर अछि । एकटा आओर बसन्त टेलिफिल्म लेखन, निर्माण, कार्यक्रमक आयोजन, ओरिआओन, व्यवस्थापन आ सम्पादक अद्भूत कला ओ सहजने छथि जेकर परिणाम छै जनकपुर फिल्म फेस्टीभल, अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन, साहित्य कला उत्सव आदि । नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ मात्र नहि मैथिली विकास कोषक संस्थापक, रुपरंग आदि संस्थासभके सेहो गठन आ सञ्चालन करबामे हिनक योगदानक चर्चा नहि करब थोड़ हएत । नेपालक राष्ट्रिय अखवार मात्र नहि स्थानीय डेली एक्सप्रेसमे निरन्तर सत्य संवाद नामक स्तम्भपर कलम चलबैत आवि रहलाह अछि । इण्डोनेपाल राईट्स मिट, ओहीपर आयोजन होबएबाला विद्यापति समारोह, लोकार्पण आ साँस्कृतिक मञ्च सभ पर हिनक उपस्थिति गरिमामय मानल जाइत अछि ।

वस्तुतः ओ एकटा एहन व्यक्ति, जे कहियो दार्शनिक चिन्तक जेकाँ, कहियो चमत्कारिक वक्ता जेकाँ, कहियो चुम्बकीय लेखक जेकाँ । कहियो पश्चिमी दर्शन, चिन्तन आ रोमान्टिसिज्मक एकटा पात्र जेकाँ । कहियो पूर्वीय धर्म, अध्यात्म, दर्शन आ अनुशासनक ज्ञाता जेकाँ । जीवैत रहलाह अछि । ओ जीवनक प्रत्येक क्षणमे हरेक रङ्ग सभक हिसाब किताबक आँकलन मात्र नहि कएलनि, ओही रङ्ग सभमे जीवाक उत्कट उत्कण्ठा जीजीविषा पोसलनि, आओर अपने रङ्गमे रंगा जाएबाला व्यक्तित्व । मुँह मिसरी बोल करैला, सुदर्शन स्वरूप, कला, साहित्य आ सञ्चारक संगम, अक्षर, आवाज आ अन्दाजक त्रिवेणी, बहुविधावादी सशक्त हस्ताक्षर आदरणीय रामभरोस कापडि भ्रमर सर ।

कहियो उमेरसँ उफनाएल, उमटाम मातल जे अक्सर मौकाक तलासमे रहैत अछि जे ककरा कोना अपन शब्दक वाणसँ धरती धरा दी । मुदा असलमे कहीं त एकटा एहन अभिभावक जे साँचेके प्राध्यापक बनबाक कहियो लौल नहि कएलनि मुदा मैथिलीबाला नहि नेपालीबाला लोकनि सेहो हिनक कृतित्व आ व्यक्तित्व पर शोध करैत रहलाह । अर्थात् ज्ञान, चिन्तन, बोली आ लेखनमे लय भेल लोक । सार्वजनिक

मञ्चसभक सम्बोद्धनमे एकदम प्रेमिल सम्बोधन, मुदा विचरण समाज, राजनीति, जीवन जगतक विशाल आ गहिरा समुद्रसभमे कल्पनाक सतरंगी पाँखि लगा उडान भरैत आ हेलैत डुबैत, नँखसिक होइत । अद्भुत फिचर लेखनशैली । चिन्तन आ तर्ककेँ सरल रूपमे रेखांकन करबाक जादुगरी कुशलता । ताहिके बहुत ही उदारतापूर्वक राखबाक बेजोड़ कला ।

हुनक तोरा सँगे जएबो रे कुजबा, हुँगली उपर बहैत गंगा, एकटा आओर बसन्त, सुरुज उगवासँ पहिने, पेटक खातिर, महिषासुर मुर्दावाद, सुलीपर इजोत, बन्नः कोठरी औनाइत धुँवा, लकडाउन डायरी, नहि आव नहि, दीर्घकविता, हालहिँमे मिथिलाक लोकजीवनः लोक सन्दर्भ पोथी एकटा नव कीर्तिमान स्थापित करबामे सफल भेल अछि । हिनक रचना सबमे जीवन, जगत आ प्रेम व प्रणय लवालव भरल अछि जे सर्वाधिक रुचिकर अछि । जाहिँमे नायक नायिकाक हाउभाउ, स्पर्श, नृत्य आदिसँ द्रवित होएव, श्रवित होइव आ दु तीन दिनधरि मोन गुदगुदाएल रहव । पाठकक स्वाभाविक प्रतिक्रिया । हिनक कथासभमे जाँघ वा वक्षस्थलक बात मात्र नहि होइत अछि, ओहिमे लोभ, मोह, काम, क्रोध, समाज आ राजनीति उपर चोटगर प्रहार सेहो रहैत अछि । बुद्धक मन्त्रसभ, कुरान, वेद, उपनिषद्, बाइबल... की की नई रहैत अछि ? लेखनमे विम्बसभक प्रयोग जादुगरी । तामझाम, हैसियतक प्रदर्शन, आडम्बरकसँग पूजापाठ करएबाला ढाँगी पण्डित पुरोहित, मौलाना, पादरी सभसँ लऽ कऽ समाजक अन्य पाखण्डी राजनीतिज्ञ आ स्कुल शिक्षकधरिक चर्तीकला उपर विलक्षण व्यंग्यवाण प्रहार करब हिनक मौलिक शिल्प छनि । हिनक सौन्दर्यचेत आ जीवनक खास रङ्ग रूपसभकेँ बेर बेर निघारबाक मोन होएव अस्वाभाविक नहि । हुनक बहुत चर्चित व्यंग्य आ विचारप्रधान श्रृंखला गामघर आ डेली एक्सप्रेसमे प्रकाशित रचना आदि बहतोकेँ ठोर पर शीर्षक आ गुदी कण्ठस्थ रहैत अछि । कहियोकाल अपना मुडमे रहलासँ अपन समकालीन सँगीसभ बीचक संवाद, चौल, नोकझाँक, झील, बात कटौबलि आ ठट्टा गज्जवक होइत अछि । तखन एना लगैत रहैत अछि जेना जीवनक सभ रङ्गसभ ओहि ठाम पृथ्वीलोक पर उतरि आएल होइक

। जेना दार्शनिक, आध्यात्मिक आ मानवीय चेतक बहस,विमर्श आ छलफल शानदार,वजनदार आ दमदार होइत जा रहल होइक । जनिक ठट्टामे सेहो अनन्त गहिराई होइत छैक, ओ परिहास आ विनोदप्रियता सेहो ! गहिर सौन्दर्यचेत आ मानवीय प्रेम । चेतनासँ भरल आ माजल एकटा प्राज्ञ पावरफुल चस्मा, बज्र दाँत आ अट्टाहासक मनकारी हँसनाई लाजबाब ।

पच्छिला समयमे अभिव्यक्तिक अन्तरिक्षमे अँखिगर,आसन्न जनगणना आ प्रदेशक भाषाक नामाकरण आ भाषाक जगेर्नाक लेल माहिर अभियन्ताक रुपमे सामाजिक सञ्जाल आ विभिन्न मिडियामे खुबे सक्रिय देखल गेलाह अछि । अंग्रेजीमे कहल जाइत अछि जे गिभ अ ड्याम ! मैथिलीमे बाल मतलब । विना रोकटोक, कहएबाला बात ठाहिँ प ठाहिँ कहवाक चाही, लिखबाक चाही । बात जानिसाफ,दु टप्पी, विना कोनो हिचकिचाहट गलत तत्वक विरुद्ध आवाज उठाएब । जाहिँसँ लोकके दुःख हएतनि तकर कोनो फिकिर,परवाह नहि । एहिँसँ केओ गलत बुझामत वा अपन हित नहि होइत से कहियो नहि बुझि सकलनि । अर्थ अनर्थक किछु गप्प कथिला नहि होइ ताहिँपर डाइरेक्ट प्रहार करब जे जीवनकेँ रङ्ग सभमे भोगैत अछि बिना ढोंग, बिना घमण्ड, बिना तथाकथित सामाजिक भय ! सीधा अर्थ नहि भेटव, हिनक गहिँर आ गम्भीर रचनामे । तथापि लयमे बहएबाला स्वभाव हिनका 'पब्लिक इन्टेलेक्चुअल' अर्थात् कतौ कोनो विषयमे लगातार सूचनायुक्त प्रवचन देनिहार विद्वान् आ विद्वतायुक्त विद्वता, विचार आ चिन्तनमे हुनक उचाई आ आयातन अतुलनीय अछि । बौद्धिकता, चिन्तन आ विचारक तहमे(समानस्तर) बात नहि मिलला पर ककरोसँग अडि जाएब हिनक स्वाभाव सर्वजनिन भऽ गेल अछि ।

एहिसभ बातक पुष्टि करबाक बेगरता नहि । लोक हिनक कृतित्व आ व्यक्तित्वसँ नीक जेकाँ परिचित अछि । कहवामे कोनो हर्जा नहि जे नाटक लेखन, टेलिफिल्म(एकटा आओर बसन्त), पत्रकारिता(गामघर,,कान्तिपुर,सुप्रभात, जनकपुर एक्सप्रेस, कथासँग्रह,कविता,निबन्ध सयपत्री,आँगन,संस्मरण आदि)क

यात्रा, सार्वजनिक मञ्च आयोजन व सञ्चालन जनकपुर फिल्म फेस्टीभल, अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन, जनकपुर साहित्य उत्सव) आदिमे सराबोरि डुबलासँ, रसास्वादन आ परेखलासँ सहजै भेटि सकैत अछि । बड सुअदगर लयमे हिनक मुखाकृतिक जादुटोना किनका नहि सम्मोहित करैत हएतनि । आओर की कहूँ ? माफ कएल जएतैक जे हिनक भागीरथी सत्प्रयाससँ साहित्य आ सञ्चारमे प्रवाहित अनेकानेक कृति आ रचनाक उल्लेख नहि कऽ सकल हएब, हमर छोट मस्तिष्क जे कैद कएने रहय तकर शब्दमे गढबाक चेष्टा कएल । भ्रमरसरक प्रति हमर कहब इएह रहत अपनेक व्यक्तित्व आ कृतित्वक परिछाहीमे हमर ई शब्दचित्र स्वीकारल जाए ।

मैथिली भाषा एवं साहित्यमे अतूलनीय योगदानक कदर आ सम्मान स्वरूप परमादरणीय रामभरोस कापडि 'भ्रमर' सरके नेपालक महामहिम राष्ट्रपतिद्वारा 'सु प्रबल जनसेवा श्री तृतीय पदक' प्राप्त करबाक सौभाग्य प्राप्त भेलनि । वास्तवमे निरन्तर ५० वर्षधरि अपन जीवनक सर्वाधिक हिस्सा मैथिली, नेपाली, हिन्दी साहित्य, पत्रकारितामे व्यय कएनिहार व्यक्तित्वकेँ सम्मान करब संस्था स्वयंमे सम्मनित होएब अछि ।

कहबाक कोनो बेगरता नहि जे ओ वर्ष हिनका लेल सुखद रहलनि आ मैथिलीक लेल हर्षक, एहिदुआरे जे नेपाल सरकारद्वारा सुप्रबल जनसेवाश्री तृतीयसँ सम्मानित होइतेदेरि लगालग फेर नेपाल सरकारक संस्कृति, पर्यटक एवं नागरिक उड्डयन मन्त्रालयद्वारा वर्ष २०७७ के 'महाकवि देवकोटा पुरस्कार'क लेल चयनित भेलाक समाद सुनि सगर मिथिला अत्यन्त हर्षित, आह्लादित आ विभोर भेल । तँ परमादरणीय वरिष्ठ पत्रकार आ साहित्यकार श्री रामभरोस कापडि 'भ्रमर' सरके नमन सहित हार्दिक बधाई एवं शुभकामना । छक्के पर चौकाक वर्षात । समय घुरैत छै, समय चिन्हैत छै आ समय एवं समाज लगानीकेँ मूल्यांकन सेहो करैत छै देर सवेर । सबुर करबाक चाही । देर है अन्धेर नई चाहे हुरार कतबो नाँगरि फरफरबो ।

मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सम्प्रति अध्यक्ष भेला पर फेरसँ अनेकानेक शुभकामना, अशेष मंगलकामना आ अपनेक जीवन सार्थक, सृजनमय आ सुखमय हुआए से असंख्य कामना ।

-नित्यानन्द मण्डल, जनकपुरधाम, नेपाल

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

ऐ अंकक अन्यान्य रचना

३. गद्य खण्ड

३.१. जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

३.२. जगदीश प्रसाद मण्डल- शॉर्ट कट रास्ता (लघुकथा)

३.३. नन्द विलास राय- भौँटबेच्चा

३.४. रबीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- ३१-३५ म खेप

३.५. कुमार मनोज कश्यप-अन्हार सऽ लडैत

३.६. निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-१९)

३.७. संतोष कुमार राय 'बटोही' मंगरौना (धारावाहिक उपन्यास १२म खेप)

३.८. आचार्य रामानन्द मण्डल-जाति बनाम जातिवाद/ धरम संकट मुक्त

३.९. डा. किशन कारीगर-पुरुस्कारी गुर्गा पुरुस्कार बँटा डकैत

३.१०. लाल देव कामत- कथाकार नन्द विलास राय जी के कथा पोथी 'असल पूजा'/पोथी समीक्षा- "सझिया रोपनि"

३.११.कुन्दन कर्ण- मैथिली बीहनि कथा- रीढ़

३.१२.आशुतोष कुमार झा- जीवनक सीख

३.१. जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)



जगदीश प्रसाद मण्डल

सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

'सुचिता' धारावाहिक रूपेँ छपब प्रारम्भ भेल 'मिथिला दर्शन'मे, जे पहिने प्रिंटमे छपब बन्द भेल आ मात्र पी.डी.एफ. मे ई-प्रकाशित हुअय लागल आ फेर सेहो बन्द भऽ गेल। आ तँ 'सुचिता'क सेहो छपब/ ई-प्रकाशित हएब बन्द भऽ गेल। अही आलोकमे ई उपन्यास धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित कएल जा रहल अछि।- सम्पादक।

दोसर पड़ाव

दिनक तीन बजे। विलासदेव सुति उठि कऽ हाथ-मुँह धोइ दरबज्जापर बैसबे कएल छला कि सुखदेव लोटामे पानि, कटोरीमे पीसल भाँग नेने पहुँचलैन। कटोरीमे राखल भाँगकेँ विलासदेव अपन हाथक आँगुरक चुटकीसँ देखए लगला जे भाँगक पीसान नीक अछि कि नहि। किए तँ विलासदेवकेँ ई बुझल छैन जे भाँगक नीक पीसान तखन मानल जाइए जखन ओ पानिमे अलैग जाइए। माने ई जे भाँगक जेहेन पीसान होइए

तेहेन ओइमे नशाक मात्रा ओते बेसी होइए। चुटकीसँ देखला पछाइत विलासदेव बुझि गेला जे भाँगक पीसान नीक अछि। तहीकाल विलासदेवक लंगोटिया संगी निशाकान्त सेहो पहुँचला।

निशाकान्त आ विलासदेव संगे-संग गामक स्कूलमे पढ़ने छैथ। दुनूक जन्म सुभ्यस्त परिवारमे भेने नोकरी-चाकरीक खगता नहियँ छेलैन, तँए आगू पढ़बकें ओते जरूरी दुनूक पिता नहि बुझलैन। तँए आगू नहियँ पढ़लैन। अपन जमीन-जत्थाक कागज-पत्तर देखब, महाजनीक बही-खाताक हिसाब-बारी करब, बस एतबे खगता छेलैन।

पिताक अमलदारीमे जहिना विलासदेवक तहिना निशाकान्तक परिवारमे महाजनीक कारोबार चलैत रहैन। माने रूपैओ-पैसा आ अन्नो-पानिक सूदि-सबाइ दुनू परिवारक खानदानी पेशा छल। ओना, भैयारीमे विलासदेव असगरे छैथ मुदा निशाकान्त तीन भाँइक भैयारीमे छैथ। पिताकें मुइला पछाइत निशाकान्तक परिवारमे सम्पैतिक बँटवारा लऽ कऽ तेहेन विवाद उठल जे महाजनीक संग-संग आधासँ बेसी जमीनो मुकदमेवाजीमे चलि गेलैन। मुदा विलासदेवकें से नहि भेलैन। असगर भैयारी रहने दियादी विवाद नहि उठलैन। निशाकान्तकें देखिते विलासदेव बजला-

“आउ-आउ भयार..!”

निशाकान्त बजला-

“भयार, की हाल-चाल अछि?”

विलासदेव बजला-

“हाल-चाल की रहत..! समये तेहेन दुरकाल भऽ गेल अछि जे सदिरखन मनमे अबैए- एहेन जिनगीसँ मरबे नीक। की समय छल आ अखन की भऽ गेल से बुझिये ने पेब रहल छी..!”

तैबीच सुखदेवकेँ आगूमे ठाढ़ देखि विलासदेव मुँह घुमाकऽ बजला-

“बौआ, एतबे भाँगसँ काज नहि चलतह। जेते अनलह तेते आरो नेने आबह। तैबीच हम दुनू भयार गप-सप्य करै छी।”

पिताक बात सुनि सुखदेव मने-मन विचारलक जे अपना-ले जे रखने छी माने आधा पिता-ले अनने छल आ आधा अपना-ले जे रखने छल, ताबे सएह आनिकऽ दऽ दइ छिएन आ ताबत पत्तीकेँ पानिमे भीजैले दऽ देबइ। बिनु भीजल पत्तीकेँ पीसलासँ ओ रस थोड़े औत जे भीजलमे अबैए। सएह केलक।

भाँगक गोला देखि विलासदेव सुखदेवकेँ कहलखिन-

“बौआ, अपने ने ओहिना भाँग खा लइ छी, मुदा जखन दरबज्जापर भयार चलि एला तखन ओहिना खाएब उचित हएत। कनेक दूधो आ चीनियोँ नेने आबह। पाकल केरा तँ घरमे नहियँ हैतह। तइ ले अनेरे चौकपर कथीले जेबह। चीनियोँ-दूधसँ काज चला लएह।”

पिताक बात सुनि सुखदेव आँगनसँ दोसर लोटामे दूध आ चीनीक डिब्बा आनि भाँग घोड़लक। दुनू लोटा भाँग, दुनू भयार माने विलासदेव आ निशोकान्त पीब लेलैन। भाँग पीब ढकार करैत विलासदेव बजला-

“बौआ सुखदेव, दू कप चाह नेने आबह।”

ओना, चाहक नाओं सुनि निशाकान्त कने तारतम्य करए लगला मुदा बुझल रहबे करैन जे बिनु चाह पीने थोड़ेक देरीसँ भाँग अपन रंग अनैए मुदा चाह पीने से नहि होइए, लगले रंग आबि जाइए।

सुखदेवक हाथमे चाहक कप देखि विलासदेव बजला-

“बौआ, चाह रखि एकबेर आरो आँगन जा आ पानक सभ समचा आनि ऐठाम रखि दहक, भऽ गेलह तोहर छुट्टी। पछाइत हम दुनू भयार गप-सप्प करैत रहब।”

पानक सभ समान सुखदेव आनि पिताक आगूमे रखि अपन भाँगक ओरियानमे चलि गेल। तैबीच दू-दू घोंट चाह दुनू गोरे पीब लेलैन। भाँगक रंग कनी-कनी दुनूक मनमे मुड़ियारी दिअ लगल रहैन। जइसँ दुनूक मन थोड़ेक फुहराम सेहो हुअ लगलैन। तेसर घोंट चाह पीब विलासदेव बजला-

“भयार, की जुग-जमाना छल आ अखन की भऽ गेल। होइए जे एहेन जिनगीसँ मरबे नीक..!”

निशाकान्त कचहरिया लोक। माने कोट-कचहरीक आबा-जाहीसँ जहिना बजै-भुकैक ढंग बदल गेल छैन तहिना बोली-वाणीक शिकारी सेहो बनियँ गेल छैथ। मुदा से विलासदेव नहि छैथ। कोट-कचहरीसँ कहियो भँट नहि भेल छैन, भँटो केना होइतैन, ने कहियो एकोटा केसमे मुद्दई बनि ठाढ़ भेला आ ने मुद्दालह बनला। मुदा निशाकान्त अपन भैयारीक विवादमे कोट-कचहरी जाइत-अबैत पक्का खेलाड़ बनि गेल छैथ। माछ फँसबैक घुमौआ जाल जकाँ भाषाक घुमौआ जाल फेकैत निशाकान्त बजला-

“भयार, कहलो गेल अछि ने जे ‘वंश बढ़ै तँ बक्खो हुआए।”

जिज्ञासा करैत विलासदेव बजला-

“से की भयार?”

विलासदेवक जिज्ञासा देखि निशाकान्त बुझि गेला जे जाल सुतरल। जहिना वेपारी सभ अपन पूजी लगा पहिने गहिंकीक मन मोहैए, माने नमुना देखा-देखा कऽ पटियबैए, तहिना निशाकान्त अपन समांग सबहक निन्दा करैत बजला- “भयार, जहिना बेसी समांग बढ़लासँ परिवारमे अगराही लगैए, जेना हमरा परिवारमे लागल तेना तँ भगवान अहाँकेँ नहि केलैन। केतेक सुन्दर परिवार अहाँक अछि। बेटा आई.ए.एस. कऽ लेलैन। आब की चाही। ‘बढ़हि पुत्र पिताक धर्म..।’ अहीं सन-सन धरमात्माक परिवारमे ने राधारमण सन बेटाक जन्म होइए।”

ओना, राधारमणपर विलासदेवक मन भीतरसँ जरल छेलैन्हे मुदा आगूमे चाह-पानक आकर्षण अपना दिस खींच नेने छेलैन। ताबे तक दुनू गोरे आधासँ बेसी चाहो पीब नेने छला। जइसँ भाँगक लहकी, सेहो मनमे लहकए लगल छेलैन। परिवारक विचार विलासदेवक मनसँ हटि चाह दिस आबि गेल छेलैन। बजला-

“भयार, अपना सभ की चाह पीबै छी, लोककेँ पीबैत देखै छिए तँ मनकेँ बुझबै छी। एकबेर सासुर गेल रही। मैझला सार मलेटरीमे रहैए ओ गाम आएल छल। ओ जे चाह पीयौलक ओहन चाह ने जीवनमे कहियो पीने छेलौं आ ने भरिसक कहियो पीब।”

विलासदेवक बात सुनि निशाकान्त बजला-

“भयार, ठीके अहाँ कहै छी। ऐठाम, अपना सबहक गाम-घरमे जे चाहपत्ती अबैए ओ कोनो चाहपत्ती छी, जहिना धानमे खखरी होइए तहिना चाहक खखरी छी। एकबेर असाम गेल रही। ओइठाम बाधक-बाध चाहक खेती देखलिये। अपना सब जकाँ कि ओकरा सबहक बाध अछि। पहाड़ी इलाका छै। बड़का-बड़का पहाड़ो अछि आ खेतो-पथार कि अपना सभ जकाँ चौरस अछि। ओम्हर ऊपर-निच्चाँ, ले-ऊँच खेत सभ छै, जइमे चाहक खेती होइए।”

निशाकान्तक बात सुनि विलासदेव जिज्ञासा करैत बजला-

“सुनै छी, ओम्हर-आसाम-मे अपना सभसँ बेसी बरखो होइए?”

विलासदेवक विचारमे रंग भरैत निशाकान्त बजला-

“से कि कोनो चोराएल बात सुनने छी। अपना सबहक के कहए जे दुनियाँमे सभसँ बेसी बरखा ओइठाम होइए।”

‘बरखा’ सुनि विलासदेव बजला- “तखन तँ अपना सभसँ नमहर-नमहर धारो-धूर हएत आ पनिआह फसलो माने पनिगर जजातो अपना सभसँ बेसी होइत हएत?”

निशाकान्त बजला-

“ब्रह्मपुत्र धारक जे नाओं सुनै छिये ओ असामेमे ने अछि। ओही धारककातमे एकटा पहाड़ छै जइ पहाड़पर कामरूप कामाख्याक मन्दिर अछि। ओही इलाकामे ने देशक आन इलाकाक लोककेँ गदहा-हरिन, गाए-माल बना खेतमे चरबैए।”

तैबीच दुनू गोरे चाह पीब पानो खा नेने छला। भाँगक खुमारी दुनू गोरेकेँ चढ़ि गेल छेलैन। विलासदेव बजला-

“केहेन धार अछि ब्रह्मपुत्र?”

निशाकान्त बजला-

“केहेन धार अछि ब्रह्मपुत्र..! कहै-सुनै जोकर अछि। मोटा-मोटी यएह बुझू जे अपना सभ जैठाम रहै छी, एकरा गंगा-ब्रह्मपुत्रक मैदान कहल जाइ छै। ओहन मैदान जइमे गंगा सन पवित्र आ ब्रह्माक सन्तान सन लोक बसैए। तखने बुझि लियौ जे केहेन धार अछि। जेकरा हिमालय पहाड़ कहै छिए, तेकर उत्तर होइत पहाड़सँ उतरल अछि। पहाड़क काते-कात पूब मुहँ तिब्बत होइत बहैत आगू जा दच्छिन मुहँ भेल अछि। वएह धार ब्रह्मपुत्र छी। देखबै तँ भ्यौन-डेरौन बुझि पड़त। तेहेन भयंकर धार अछि..!”

विलासदेव बजला-

“छोड़ू धार-धूरक गप। जेतए छै से अपन जानत। ओम्हर पानो लोक खाइए आकि एक नम्बर चाहेटा पीबैए?”

निशाकान्त बजला-

“जेते पान ओ सभ खाइए तेते अपना ऐठामक लोक थोड़े खाएत। अपना ऐठाम तँ लोक गीत गबैकाल पान खाइए आ बाँकी समय दाँत टुटै दुआरे नहियँ खाइए। बाधक-बाध सुपारी गाछ देखबै। ओम्हरेसँ अपना सभ दिस सुपारी अबैए। जेकरा असामी सुपारी कहै छिए।”

निशाकान्तक बात सुनैत-सुनैत विलासदेवक मन घुमिकऽ परिवारपर चलि एलैन। परिवारपर अबिते बजला-

“भयार, अहाँ कहलौं जे हमर समांग, सभ बक्खोओसँ बदत्तर अछि तइसँ की नीक हमर बेटा-राधारमण-अछि।”

विलासदेवक बात सुनि निशाकान्त सोचलैन जे अस्सल बात आब उठल। तँए किछु आरो अपन परिवारक निन्दा किए ने करी जइसँ विलासोदेव अपन करबे करता। जखन अपन परिवारक निन्दा केनाइ शुरू करब तखन ओइ बीचमे टँढ़-सोझ करैत चलब जइसँ गोटी नीक जकाँ बैसत...। निशाकान्त बजला-

“से की भयार?”

एक तँ विलासदेवक मन राधारमणपर जरले छेलैन तैपर भाँगक निशा सेहो नीक जकाँ चढ़ि गेलैन। बमछैत बजला-

“भयार, बेटा-बेटी केतबो पढ़ि-लिखि लिअए मुदा जँ ओ माता-पिताक विचारमे नहि रहल तखन ओकर पढ़बक कोन मोल रहल।”

विलासदेवक विचारमे बीह फाइत निशाकान्त बजला-

“भयार, नहि बुझलौं अहाँक विचार। बेटा-बेटीकेँ माए-बापक विचारमे रहब, कोनो कि नव विचार छी। सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि आ आगूओ सभ दिन होइत रहत। शास्त्र-पुराण कि कोनो झूठ कहने अछि।”

निशाकान्तक विचारसँ विलासदेवक मन जेना आरो कडुआ गेलैन तहिना बजला-

“भयार, की कहब! राधारमण ओही दिन चित्तसँ उतैर गेल जइ दिन अपना मने विवाह कऽ लेलक। अहीं कहूँ जे जैठाम बीस लाख रूपैयाक कारोबार छल, माने बीस लाख रूपैया दहेजमे दऽ रहल छल। ओ परिवारकेँ घाटा लगौलक कि नहि। भैयारीमे लोकक नेत भाइये देखि ने घटै छै।”

ओना, निशाकान्तकेँ बुझल छेलैन जे विलासदेव आ राधारमणक बीच वैचारिक मतभेद छैन, मुदा तइ सभसँ अनबुझ बनि निशाकान्त गोटी चालैत बजला-

“नीक जकाँ नहि बुझलौं भयार?”

विलासदेव बजला-

“राधारमण जखन आई.ए.एस.क परीछा पासो ने केने छल, तइसँ पहिलुके बात छी। ओकर विवाह करैक विचार भेल। बुझले अछि जे तीनू भाँइक भैयारीमे ओ सभसँ जेठ अछि। अपना जीबैत जँ तीनू बेटाक विवाह-दान नइ कऽ लेब, आ अपने कोनो राजा-दैब भऽ गेल तखन तँ अनेरे ने मुइला पछातियो एकटा कलंक कपारपर चढ़ले रहत जे फल्लौं अपना धिया-पुताक बिआहो-दान ने करा सकल। उनके भरोसे जनमौने अछि।”

सह दैत निशाकान्त बजला-

“ई की कोनो अहींटा-क संग होइत। सभकेँ एहेन कलंक लगिते छै। समाजक मुँहकेँ कियो रोकि देत।”

निशाकान्तक बात सुनि विलासदेवकेँ बुझि पड़लैन जे भयार अपन विचारानुकूल विचार दऽ रहल छैथ। तँए आरो सभ बातकेँ किए ने बिकछा-बिकछा विचार लऽ ली...। विलासदेव बजला-

“भयार, की कहब! बेटाक किरदानीसँ समाज हमरापर हँसि रहल अछि मुदा अकलहूथ बेटा-ले धैनसन..!”

विलासदेव शब्दक गहीर पन्ना ताकि जहिना चौरीमे (माने गहीरगर खेतमे, जइमे पानि बसैत होइ आ ओइमे अनेरूआ केशौर फड़ैत होइ, भलँ ओकर ऊपरका खोंइचा देखैमे कारी लगैत हुअए मुदा ललौन सेहो होइए) केशौर उखाड़ि खाइत तहिना निशाकान्त अपन पन्ना उखाड़ि बजैक मन बनौलैन मुदा तहीकाल सुनयना चाह नेने विलासदेव लग अबै छेली कि हिरणीक आँखि जकाँ निशाकान्तक आँखि चमैक उठलैन। सुनयनाकेँ देखि निशाकान्त बजला-

“भयार, घरवाली देलैन तँ भगवान हमरा देलैन। जहिना सुनै छिए ने जे जखन समुद्र मथन भेल, जइमे विष-अमृत दुनू निकलल। परोसनिहार वारीक केहेन जे किम्हरो लपक-लप अमृत परैस देलक आ जखन सठि गेलै तखन लपक-लप विष परसलक। सहए भेलैन हमरो घरवालीकेँ बनबैकाल विधाताकेँ। गणेशजी जकाँ जखन नमहर पेट आ नमहर माथ देलखिन तखन ओही आकारक ने आँखियो दितथिन, तेहने घरवाली हमरो कपारमे लिख देलैन।”

ओना, विलासदेव भाँगक निशामे उधिया लगल छला तँए निशाकान्तक बात नीक लगै छेलैन मुदा सुनयनाक मन कडुआ उठलैन। कडुआ ई

उठलैन जे ऐठाम हम दुनू परानी माने पति-पत्नी छी मुदा निशाकान्त तँ से नहि अछि। सृष्टिक जे रचना-प्रक्रिया अछि एहेन बात बजैक की प्रयोजन। बढ़ियाँ बात जे दुनूकेँ दोस्ती छैन, अपना जगहपर छैन, केना धिया-पुतामे लोकक आम-लताम चोरा कऽ तोड़ै छला, तइसँ हमरा कोन मतलब। मतलबक बात तँ ई अछि जे बुढ़हाकेँ बेटापर तामस-पीड़ा चढ़ल छैन, तेकरा समरस करैत दुनूक बीच समभाव पैदा करैक ने छैन। सुनयना बिना किछु बजने, दुनू कप चाह रखि चोटे आँगन दिस घुमि गेली।

सुनयना आँगन पहुँचलो ने छेली कि सुखदेव आएल। सुखदेवकेँ देखिते विलासदेव बजला-

“भयार, गाहीक-गाही बेटा भगवान भलँ नहि दैथ मुदा जँ एकोटा बेटा श्रवण कुमार सन भऽ जाए तँ बुझी जे दस हजार बेटाबला राजा सगरसँ नीक। बेटा-बेटीक जन्म माए-बाप दइए मुदा माता-पिताक मृत्युक भार तँ बेटे-बेटीक सिर पर रहैए। एक सीमानपर हमरा खुट्टा गाड़ि देलैन। हम तँ ओतबे दिनक ने जवाबदेह भेलिए, जाबे आँखि तकै छी। से जँ बाँहि पुरैबला बेटा भऽ जाए तँ वएह ने नर्को-स्वर्गक दुआरि लग तक पहुँचा सकैए। ई नहि ने जे मुहमे ऊकसँ आगि लगा उतरी तोड़ि फेक दिअए तइसँ ओ श्रद्धाक पात्र भेल।”

अपन सुतरैत शतरंजक गोटी देखि निशाकान्त बजला- “भयार, कोनो हम फुसि बजै छी सेहो बात नहि अछि। दुनियाँ जनैए जे जहिना अहाँक पिताकेँ पचास बीघा जमीन छेलैन तहिना हमरो पिताकेँ रहैन। दुनू गोरेकेँ गामक मालिक लोक बुझै छेलैन, बेर-कुबेर, दू-सेर आ दू-टाकासँ ठाढ़ो होइ छेलखिन। मुदा देखिते छी जे तेहेन करांगकुल भाए सभ भेल जे अखन तीन बीघापर आबि अँटकल छी। मुदा पिताक अमलदारी-समैयक खानदानी मलिकाना दोस्ती तँ दुनू गोरेक बीच अछिए।”

निशाकान्तक विचारकें विलासदेव अपन विचारमे पुरबैत बजला-

“भयार, राधारमण गामसँ अपन परिवार लऽ कऽ दुनियाँ निकलल तँ निकलल। गामक सम्पैत तँ हमर भेल। जाबे हम जीबै छी ताबे तक जहिना माए-बापक जिनगीमे सुख भोगलौं तेहने सुख ने बेटो-बेटी तहिना पुरबए, सएह ने चाहिये। भलँ नै कमाइ-खटाइए तँ की हेतइ। माए-बापक सेवा तँ करैए। अखन जे जमीन हम बेचब, तइमे एक हिस्सा माने तिहाइ जमीन तँ राधारमणेक जेतइ। तइ ले ऐ दुनू भाँइ-सुखदेव आ वामदेव-क की बिगड़त।” मुँह चटपटबैत विलासदेव आगू बजला-

“भयार, आइ जे सुखदेव भाँग पीयौलक एहेन जँ सबदिन पियाबए तखन ने।”

तैबीच सुखदेव बाजल-

“चाचाजी, मलिकाना दोस्ती की कहलिये?”

अपन चालक चालबाजी पकैड़ चलाक जकाँ चलाकीक डारिपर सँ निशाकान्त सुखदेव दिस तकैत बजला-

“बौआ, जहिना तूँ भयारक बेटा छुहुन तहिना हमरो भयार-भातिजे ने भेलह। बेटा-भातीजमे कोनो अन्तर होइए। जहिना लोक अपन बेटाकें बुद्धिपरक विचार दैत बुधियार बनबए चाहैए तहिना ने हमहूँ चाहब। तहूमे तँ जे आइ भाँग पिपौलह से तेहेन पिपौलह जे मन शिवजी-महादेवक दरबारक दरबारीक रूप पकड़ा देने अछि, तैठाम हमरा अपनो तँ अपनत्वक भार माथपर आबिये गेल किने?”

निशाकान्तक अलंकारी भाषाक अर्थ सुखदेव नहि बुझि पौलक मुदा शब्दक तुक-तकिया सुनि ताक-तकैत तकनहार तँ भइये गेल। बाजल-

“चाचाजी, जहिना अंगदकेँ-माने रामायनिक बालिक बेटा-केँ, सुग्रीव सन चाचा भेटलैन जइसँ रामक दर्शनक संग सुग्रीवक साम्राज्य स्वीकारि लेलैन तइसँ अहाँ भिन्न हमरा बुझै छी। तहूमे ज्ञान-रूप धारमे नहानक बेर। ओना, लोकक बीच ईहो चलैन अछि जे कुघाट-सँ-कुघाटक केहनो कुघटिया किए ने हुअए मुदा मुँहक ज्ञान तँ दैवी ज्ञान छीहे किने तँए ओकरा ग्रहण करैमे राहु-केतुक कोनो दोष नहि।”

ओना, सुखदेवक विचार सुनि निशाकान्त खुशियाएल मुस्की मारि-मारि तरे-तर मुसुक मुस्की मारै छला। जेकरा सुकदेव अपन विचारक बड़हपन बुझि रहल छल, मुदा निशाकान्त मने-मन भिन्नाक छिन्ना सेहो देखि रहल छला। बजला-

“बाउ सुकदेव, मलिकाना दोस्ती भेल, जेना हमरा-तोरा परिवारक बीच अछि।”

निशाकान्त अपन ओ बंशी पाथए चाहि रहल छला जइ बंशीमे दुनू दिशा घाव बनल रहैत। चाहे उनटा लागे आकि सुनटा लागै, ताकि पुनटा करब असान हएत। पुनटा भेल पुण्यपूर्ण।

तैबीच सुखदेव बाजल-

“चाचाजी, तइसँ की भिन्न हमरा बुझि रहल छी। हम तँ जहिना पिताकेँ बुझै छिएन तहिना अहूँकेँ ने बुझै छी।”

सुखदेवक विचार सुनि निशाकान्त मने-मन चपचपेला। चपचपेला ई जे जहिना भारी वजनबला रंगा (रांग) केँ पानि जकाँ आगिपर पघिला कौड़ीक (समुद्री कौड़ी, जइसँ पचीसियो खेल आ तांत्रिक सभ सेहो चित्ती-कौड़ी भाँजि साँपकेँ पकड़ैए आ बाल-बोध खेलबो करैए।) मुहमे देलापर ठंढाइते भरिया जाइए तहिना भरियाइत निशाकान्त बाजए लगला-

“बाउ..!”

तहीकाल वामदेव सेहो पहुँचल। वामदेवकेँ देखिते निशाकान्त वाउए ‘वाउए’पर अपन विचारकेँ मनमे मोड़ि अँटका लेलैन। मन मानि गेल छेलैन जे एक तीरसँ दू शिकार किए ने पकड़ब। भाय महाभारतक लड़ाइमे धनुषसँ पहिने एकतीर निकलै छल आ जेना-जेना आगू बढ़ैत जाइत छल तेना-तेना संख्यामे वृद्धि होइत-होइत दस-दस हजार भऽ जाइ छल, तैठाम अपने भलँ अर्जुन कि भीष्मपितामह नइ छी, मुदा एकटा मनुख तँ छीहे। तखन दुइयोटा शिकार नइ पकड़ सकब। भलँ करूणा रोग महामारीए किए ने छी मुदा व्याकरणक तँ गणेशजी जकाँ करूणाक जानकार अछिए, तँए एकलैंगिक बनि बिमारीकेँ अधा-अधी तँ अपने कऽ नेने अछि तैठाम जँ अधेक पाछू सौंसे दुनियाँ-बेहाल छी तेकर हाल की अछि, सेहो ने सभ सुनत। मुस्की दैत निशाकान्त बजला-

“बौआ, कमलपुर गाममे अपने दुनू गोरेक परिवार सभसँ धनिको आ सभसँ इज्जतदारो पिताक अमलदारीमे रहल। ओही बराबरीक दोस्ती दुनू परिवारमे अछि। जहिना तोहर बाबा आ हमर बाबू एकठाम बैस खेबो-पीबो करैथ आ सभ तरहक काज-उदममे हमरो परिवारक सभ अबै छेला आ हमरो ऐठाम जाइ छेला, पनरह-पनरह दिन रहै छेला। मुदा आइ तँ ओ जुग नहि रहल, नवका-नवका लोको भेल आ लोकक संग सम्पैतियो भेल आ तैसंग नव-नव विचारो तँ भेबे कएल अछि। जहिना तोहर पिताकेँ माने भयारकेँ अपने परिवारक फिरिसानीसँ पलखैत नहि होइ छैन तहिना

हमरो भइये गेल अछि। तँए कनी आबा-जाही कमि गेल अछि।”

निशाकान्तक विचारमे विलासदेव अप्पन बड़हपन देखि रहल छला, तँए सुनन्तू बेटा लग बजन्तू बनि बजला-

“भयार, की कहूँ। बिनु कमेने-खटेने जेहेन पितृभक्त बेटा होइए तइमे छदामो भरि कमी दुनू बेटामे-सुखदेव आ वामदेव-नहि अछि। ओना, मनमे कोनो एहेन भरमाबैबला भ्रमरक बास भऽ गेल होइ, से तँ हनुमान जकाँ कियो छाती फारि नहियँ देखए देत, से तँ सम्भवो नहियँ अछि। भाय, छाती तँ छाती छी, कखनो अपन छत्ती बनि छत्रवास बना बास करैए तँ कखनो छातीमे मुक्का मारि बेटो-मृत्युक संतोख सेहो करते अछि। मुदा किछु अछि तैयो तँ दुनू बेटा तँ हमरे ने कहौत।”

ओना, विलासदेव अपन जिनगीक नापसँ बाजल छला, किए तँ एकटा कचहरिया संगीक विचार मनमे जेना बैस गेल छैन तहिना बेर-बेर बजै छैथ जे कोट-कचहरीक खेल जहिना जिनगी भरि एक्के शब्दमे अटकौने रहैए तहिना ने परिवारोमे होइए। दस-बीस बर्खक जिनगी तँ लोक टिटहीक टाँहियोसँ निमाहि सकैए। जेहेन जे करैए से तेहेन पबैए। से कि कोनो हमरेटा बुझल अछि आकि सभकेँ बुझल छै। आब कियो अक्लबहर बनए आकि अकलथूक। से तँ ओकर ने काज भेल...।

विलासदेवक बात सुनि निशाकान्तक मन तरसा जकाँ धीरे-धीरे तरसए लगलैन, मुदा दुनू भाँइक अगवानी देखि निशाकान्त अपन तरसकेँ तरसेमे समेटि मनकेँ मारि चुपचाप, उजरा बौगुला जकाँ लटकलहाक पाछू दौड़ैत रहैए तहिना निशाकान्त सेहो अपने जिनगीक समरूप अपन भयारोकेँ बनबए चाहि रहल छला। किए तँ जहिना अपने निशाकान्त तीनू भाँइक भयारीमे गामक पनचैतीसँ लऽ कऽ कोट-कचहरीक मर्दन करैत पचास बीघाक फाँट सत्तरह बीघा होइए तैठाम बनरबाँटमे पड़ि तीन-तीन

बीघापर तीनू भाँइ ठाढ़ छैथ। भाय, धनेक उमकी ने धनीकक धनकेँ ढाहैए। तँए कि मानो-मरजादा तइ लागल ढहि जाइए? से तँ नइ ढहैए, ओ तँ जुआनी मंत्रक सूत्र छी जे जेहेन पकड़ैए से तेहेन पबैए।

निशाकान्त बजला-

“भयार, बापक हम बड़ दुलारू बेटा छेलिएन। ढेरबा तक माने जखन दुरागमन भऽ गेल तहिया तक, जहिना माइयो तहिना पितोजी सभदिन बकलेले-ढहलेल कहैत रहला आ तैसंग किछु-किछु सिखैबतो छेला। मुदा आइ जँ अपन पान-सात बर्खक कोचिंगक बेटा-पोताकेँ किछु अढ़ेबो करबै आकि सिखेबो करबै से अहाँक बोलो-बाइन बुझत तखन ने। ओइ अबोधक कोन दोख अछि। दोख अछि ओकर माए-बापक ने जे बच्चाक जिनगीक हिसाबसँ अपन जिनगीक रस्ता नहि बना सकला।”

जहिना अलबौक विलासदेव तहिना दुनू बेटा, तैठाम निशाकान्त सन उपदेशक। जे अपने परिवारकेँ ढाहि अपन पैत्रिक सम्पैत-खेत-पथार-केँ पचहत्तर प्रतिशत दान जकाँ गमा चुकल छैथ, जीवनमे ऐसँ बेसी भइये की सकैए। पचीसो प्रतिशत तँ अपनो जीवन-ले लोककेँ चाहबे करी। निशाकान्तक मनमे ईहो उठैत रहैत जे निसभेरो राति, माने अन्हारक घनघोरो समयमे तँ शुक्ल पक्षक इजोरियाक चान जकाँ ओहनो समयमे ने चान्दनी राति बना चानिपर चमैक अपन परिचय दैते अछि। तेतबे किए, घनघोर अन्हारमे सेहो ज्ञानचक्षुसँ प्रकाशपूँज प्रकाशमान होइते अछि।

अपन टुटैत जिनगी आ जिनगीक विचारधारा ग्राहकक ग्रास बनियेँ गेल छैन, मुदा जहिना साँपक मुँहमे पड़ल बेंग, जेकर आधासँ बेसी भाग किए ने मृत्युक अन्तक सीमा पार कऽ देने होइ, मुदा जँ मुँह उघार रहत माने साँपक मुहसँ बाहर रहत, तहूकाल जँ कोनो फनिगाकेँ उड़ैत देखत तँ लपकबे करत। एहने अवस्थामे पड़ल विलासदेवक जिनगी बनि गेल

छैन। जिनगी सोल्हन्नी रोगग्रस्त भऽ गेल छैन। शारीरिक रोग जे होनि मुदा मानसिक रोगसँ मरनासन्न भऽ गेल छैथ। मुदा तैयो...। मौखिक परीक्षा जकाँ निशाकान्त बजला- “बौआ, भोरका पान जकाँ मुँहक पान रसविहीन भऽ सिठिया गेल अछि तँए पहिने एक गिलास पानि पीयाबह, पछाइत पानो खुअबिहह। नइ तँ एक भाँइ गिलास-लोटामे पानि आनह, जइसँ भयारो पीब लेता आ एक भाँइ पान लगाबह। पानक सभ समान लगमे छहे।”

जहिना दुनियाँमे कियो पहिने अपन ज्ञान दान बेटाकेँ करए चाहैए तहिना ने अनका अढ़बैसँ माने काज अढ़बैसँ पहिने बेटाकेँ अपन बुद्धि अढ़बतो अछि। ओना, दुनू बेटाक-सुखदेवो आ वामदेवो-क मन दुनू भयारक बात-विचार सुनि दहला-भँसिया रहल छेलैहे। तैबीच सुखदेव ओम्हर पानि आनए आँगन गेल आ इम्हर विलासदेव फुसफुसा कऽ बजला-

“भयार, ऐ अबन्ड बेटाकेँ माने वामदेवकेँ, सदिकाल सिखबै छिए जे बौआ माए-बापक उद्धार जेठके बेटासँ होइ छै आकि छोटके बेटासँ। राधारमणक जे हाल अछि से देखबे करै छहक, तखन तँ तौही ने बँचलह। बीचक जँ राजा सगर जकाँ दसो हजार बेटा रहत तेकर कोनो मानि अछि। एते तक कि जिनगी भरि बाप-माइक देहपर थूको फेकत तेकरो मानि नहियँ अछि।”

पिताक बात सुनि वामदेवक नजैर उठल। जे निशाकान्त परेखि लेलैन। अपन नजैरमे निशाकान्त नजरपन भरैत, माने नजैरिक पानि भरैत बजला-

“भयार, सासुरमे जे मोहरमाला देने अछि, तेकर जानकारी समाजो आ परिवारोकेँ अखने दऽ दियौ जे वामदेवे मुँहमे आगियो देत आ श्राद्धो-कर्मक भार ओकरे दइ छिए। तँए अपनबला मोहरमाला वामदेवक भेल।”

पानि पीब पान खा दुनू भयार-विलासदेव आ निशाकान्त-पुनः परिवारक गप-सप्प शुरू केलैन। अखुनका एस्टाएल नहि, विग्रहक टाइल मारैत निशाकान्त बजला-

“भयार, गाममे अहाँ-जोकर कएटा बाप भेल अछि जे अपन बेटाकेँ आई.ए.एस. बनौलक!”

अपना जनैत निशाकान्त टाइल मारि बाजल छला मुदा तीनू बापूत-विलासदेवक संग आ दुनू भाँइ सुखदवो आ वामदेव-क मनमे राधारमणक प्रति जे धारण धऽ नेने छल, ओ आरो धराह बनि गेल। जइसँ विपरीत भावक जन्म तीनूक मनमे जगि गेल। अखन तक निशाकान्त अपन परिवारक तीनू समांगक जिनगीक कथा तेना रत्ती-बत्ती सुना चुकल छला जइसँ रामायणिक राम-लक्ष्मणक भैयारीक सम्बन्ध नहि बनि सकल, बनबो केना करैत एक राम पिताक दंश झेलनिहार, दोसर दहेजक दंश झेलनिहार भेला। तैठाम सीताराम केना राधारमण बनि सकैए। राधारमण-ले तँ किछु आराधए पड़ै छै किने।

विचारक द्वन्द्व तीनू बापूतक मनकेँ तेना ने घुड़िया-पुड़िया रहल छल जे तीनूक बकारे हरण भऽ गेल छल। पगलाएल राम जहिना चिड़ै-चुनमुनीक संग गाछो-बिरीछकेँ सीताक परिचय पुछए लागल रहैथ। जे ‘हे खग, हे मृग मधुकर श्रेणी, तुम देखे सीता मृगनयनी?’ तहिना शान्त वातावरण देखि निशाकान्त दोसर टाइल मारैत बजला-

“भयार, आब अहाँक भाग्य जगि गेल। ‘बढ़हि पुत्र पिताक धर्म’ अहाँक सोल्होअना धरम राधारमणमे चलि गेल जइसँ ओकर भाग उग्र भऽ जगि गेल आ दुनू भाँइ-सुखदेव-वामदेव-क भाग्य सेहो ओकरे मे माने राधारमणमेमे चलि गेल, फलाफल दुनू भाँइ बिनु पानि चढ़ल लोहा जकाँ कहियौ आकि कुम्हारक आवाक अध-पक्कू वर्तन जकाँ कहियौ,

कँचकुहक कँचकुहे रहि गेल।”

‘कँचकुह’ सुनि वामदेव बाँहिक शर्ट समटैत बाजल-

“भयार काका, अहाँ दुनू भयार जँ पीठपर ठाढ़ रहब माने पीठपोहू बनल रहब तँ एक भैयारीकेँ के कहए जे सत्तरहटा भैयारीकेँ सीखा सकै छी।”

ओना, निशाकान्त मने-मन बुझैत जे टीनक गरमी केतेकाल। कम-सँ-कम पहिने भानसो करैजोग बरतन बनह तखन अपनाकेँ खान-द्रव कहाएब। छी कागज जकाँ आ अपनाकेँ गमै छी जे सोन-चानी जकाँ हमहूँ स्वर्ण द्रव्ये छी। मुदा निशाकान्तक अकास चढ़ल मन एकाएक धरतीपर अतरलैन। उतैरते मनमे एलैन जे केकरो कहने टीन द्रव्य नहि भऽ सकैए सेहो तँ नहियँ अछि। समूह रूपमे टीनोमे भानस होइते अछि। कनी ओकरा आगिपर चढ़ा, जखन ओ आगिये जकाँ लाल भऽ जाए तखन हाथक आँगुरसँ छुबि कऽ देखियौ जे आन द्रव्य, भलँ ओ सोने किए ने होइ, ओइसँ कम शक्ति टीनोमे छै। उपदेशक जकाँ निशाकान्त सुखदेवो आ वामदेवोक उपदेशी बनि भयारकेँ कहलैन-

“भयार, दुनियाँ जे बुझह, मुदा अपनो तँ इमान-धरम अछिए, चाहे अपन बेटा-बेटी हुअए आकि दुनियाँक, मुदा अपन जे मानवीय कर्तव्य अछि, तेकरो जँ उठा कातमे फेक देब, सेहो तँ नीक नहियँ भेल।”

अपन भारक भारपन विलासदेवकेँ सेहो बुझि पड़लैन। जइसँ मनमे एकटा स्वर्ण-रूपा विचार अनायास जगि गेलैन। बजला-

“भयार, गणेशजी सन गुरू आ अष्टावक्र सन ज्ञानी कियो किए ने होथि मुदा वेद विहीत विचार जे ‘पिता पहिल गुरू छैथ’ तेकरा कियो झुठिया

देत?"

नहलापर दहला फेकैत निशाकान्त बजला- "भयार, ताशक गेम-गेम खेलमे भलें नहलापर दहला फेक दहला दियौ मुदा 'ट्वेन्टी एट'मे नहले दहलाकेँ नमबैए। खाएर समय पेब अहिना टिटही अकासमे टिटियाइए तइसँ लोककेँ कोन मतलब। मतलब तँ एतबे ने अछि जे अपन परिवारक नमहर इतिहास अछि, जहियासँ मनुख घर बना परिवारक संग रहए लगला तहियाक परिवार छी।"

निशाकान्तक विचारमे विलासदेवकेँ इतिहासक कोन पन्ना भेट गेलैन से तँ विलासदेवे बुझता, मुदा मनक चपचपीमे चपचपाइत मुस्की दैत बजला-

"भयार, सभ दिन दुनू भाँइकेँ कहै छिए जे 'बौआ, हजारो धर्मस्थान आकि हजारो सरोवरक घाट पर किए ने नहाएल होइ, मुदा बेटा-बेटी लेल माए-बापक सेवा सभसँ पैघ धर्मक काज छी। पिताजी जखन जीबै छेला, भरि दिनमे तीनबेर मद्यपान सेहो करै छेला। समयसँ पहिने मुस्ताइज भऽ हुनका मद्यपान करबैत रहिऐन। ओ त्रिकालदर्शी छेला। जखन मन उदार भऽ जाइ छेलैन तखन कहै छेला- 'बौआ विलास, जहिना तूँ सेवा करै छह तहिना तोरो पचास बीघा जमीन अरैज देने छिअ। मरैबेर मडुओ भरि मनमे सोग-पीड़ा ने अपने रहत आ ने तोहर रहत। जँ कियो कहनिहार कहत जे अहाँक परिवार देशक भार बनल अछि। से ओकरे कहने भऽ जेतइ। जहिना अपन देश छी तहिना ने अपन दिनो-दुनियाँ अछि, जइ पाछू लागि अपन जीवन धारण केने छी।"

दुनू भाइ-सुखदेवो आ वामदेवो-क मन तेहेन मिथि-मालिनिक मथानीमे मथा गेल जे जहिना दुनियाँक हजारो बाटमे हजारो सुख-दुख नचैत अपन छर्त्त पकड़ लइए तहिना छर्त्त पकड़ैत सुखदेव बाजल-

“भयार चाचा, अहाँक सोझामे कहै छी जे जहिना सभ अपन माए-बापक माने माता-पिताक सेवा दुनियाँमे कऽ रहल अछि तइसँ की हम कम छी। जहिना दुनियाँमे देखै छी तहिना करै छी, तइ ले जँ पिताजी मने-मन तकलीफ सहता से किए सहता। हुनको ने बुझए पड़तैन जे जखन आब मोबाइलसँ पढ़ौनी सेहो शुरू भऽ गेल अछि, तखन स्कूल जेते खुजल तेकरो हिसाब नइ होइ सेहो केहेन हएत।”

ओना, धारक धारामे जहिना खत्ता-खुत्तीक सड़ल-जमल जमौठ पानि किए ने मिलैत होइ मुदा धाराक प्रवाहमे ओकरोमे एहेन गतिक संचार तँ भइये जाइ छै जइसँ ओकरोमे शुद्धता आबिये जाइ छै। अही अनुकूल सुखदेव बाजल। किए तँ जीवनक एक परिस्थिति ओहन अछि जे अभावक जिनगीमे लोक नहि पढ़ि पबैए। मुदा जे परिवार आर्थिक दृष्टिएँ सम्पन्न अछि, जइ परिवारमे आई.ए.एस. भऽ सकैए, तैठाम सहोदरे दोसर-तेसर भाए श्रमचोर केना बनि गेल अछि। जे सुखदेव अपनो ने बुझैए। जहिना ग्रहन लगलापर वा अकासमे सुर्ज-चान-तारा वा पानिक वादलक घटमान देख, देखनिहार ऊपरे-घाड़े ने देखैत रहि जाइए। ओ थोड़े बुझैए जे सुर्ज केना कतियाएल देखि पड़ैए आ कि आने ग्रह-नक्षत्र किए कतियाएल। ओ तँ वएह देखि सकैए जेकरा हृदयमे ज्योतिषक ज्योति प्रज्वलित होइन। कहैकाल तँ सभकेँ सभ कहै छिए ‘श्रवण कुमार जे माए-बापक सेवा केलैन ओ इतिहास-पुराणक अद्वितीय घटना छी।’ मुदा श्रवण कुमारक जीवनधारा आ माता-पिताक जीवनधारा की छेलैन, केहेन छेलैन आ केते प्रवाहित छेलैन सेहो ने सबहक समक्षक प्रश्न भेल। खाएर जे भेल ओ त्रेता जुगक घटनामे चलि गेला। आब कि गुरुद्वारमे बौगुला जकाँ धियान करैक बेवहार रहल, आब तँ मोबाइलसँ ज्ञानक संचरण हुअ लगल अछि।

निशाकान्त मने-मन विलासदेवोक आ दुनू भाँइ-सुखदेवो आ वामदेवो-क नब्ज नीक जकाँ पकैड़ नेने छला। झूठ केना सच बनैए आ सच केना झूठ बनैए, अही सीमापर अपनाकेँ ठाढ़ करैत निशाकान्त बजला-

“भयार, ई देहे व्याधिक घर छी।”

बजैक क्रममे निशाकान्त वैचारिक विषय तँ रखि देलैन, मुदा अपन मिसियो भरि टिप्पणी नहि देलैन जे अही व्याधिसँ ने मनुख व्याधाक रूप पकैइ व्याधिसँ निवृत्ति भऽ सकैए। आकि जिनगी बनौने छी चाहक दोकानदारक आ अकासमे उड़ैत इंजन केना लसैक गेल? दिन-राति जँ से चिन्ता करत तखन ओ ई केना बुझत जे समाजमे माने गाममे, पचास रूपैआ आमदनीक परिवार अपन भेल तँए हमरा दुनू दिस देखए पड़त। एक दिस आमदनीक बढ़ोतरी केना हएत तँ दोसर दिस अपन परिवारकेँ अपना आमदनीपर असथिर करैक सेहो अछि। जँ से नहि हएत तँ परिवार पाओल जाएत किने।

गप-सप्पकेँ अन्तिम सीमा दिस बढ़बैत निशाकान्त बजला-

“भयार, हम जहिना अपना बेटा-बेटीकेँ बुझै छी तहिना अहूँक धिया-पुताकेँ बुझै छी। भलँ दुनू भाँइ-सुखदेवो आ वामदेवो-मानए वा नहि मानए, मुदा अपनो तँ किछु कर्तव्यकेँ निमाहैत बजलौं। आब अबेर भऽ गेल। पता लगल जे राधारमण जा रहल अछि, कहना भेल तँ बेटे-भातिज ने भेल, घरसँ जखन निकैल दुनियाँ दिस बढ़त तँ कम-सँ-कम एतबो असीरवाद देब जरूरी अछिए किने जे कहितिऐ, बौआ गाम-घरक चिन्ता मिसियो भरि नहि करिहह। हम सभ अपन बुझि लेब।”

राधारमणक प्रति निशाकान्तक प्रतिक्रियाक आकलन तीनू बापूत विलासदेव एक-दोसर दिस देखि-देखि करए लगला। मध्यम वर्गक परिवारक मनुखकेँ सामाजिक-आर्थिक दुनू दृष्टिँ तेना वैचारिक ढाँचामे ढालल गेल जे ओ श्रमहीनक संग भोगी-विलासी सेहो बनि गेल। जइसँ परिवारक ढाँचामे व्यवधान उपस्थित भेल आ धीरे-धीरे मृत्युक कगारपर पहुँच गेल।

एक तँ कचहरिया लोक निशाकान्त, तहूमे गामक सभ जनैत जे निशाकान्त सन इरखादार दोसर गाममे कियो ने छैथ, अपन चौदह बीघा खेत बेचि कोटे-कचहरीक ज्ञान हाँसिल केने छैथ, तैसंग एहेन सेहो छैथ जे सहोदरे भाइक संग सभ किछु केलैन।

सामंजस करैत निशाकान्त बजला- “भयार, एकटा राजा एकटा जोगीकेँ अपन दुनू बेटाक सेवा करैक भार देलैन। जोगीकेँ विचारैमे धोखा भेलैन, एकटाकेँ अपने जकाँ जोगी बनौलैन, जे अपना घरमे रहत। दोसरकेँ राजसी जीवनसँ मण्डित केलैन। जखन दुनू जुआन भेल तखन जोगी दुनूकेँ राजाक सामने उपस्थित केलैन। हलैस कऽ राजा-जोगीकेँ अपन हिस्सामे लऽ लेलैन। अपसोच करैत जोगी घर घुमला।”

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.२. जगदीश प्रसाद मण्डल- शॉर्ट कट रास्ता (लघुकथा)



जगदीश प्रसाद मण्डल

शॉर्टकट रास्ता

आइ छअ माससँ सुविचार भाय मनरोगसँ पीड़ित भऽ तरे-तर गुमसाड़ि रहल छैथ, मुदा मुँह उठा केकरो लग किछु बाजि नहि रहला अछि। बजबो केना करता? सोगो तँ सोग छी जइसँ सभ किछु-ने-किछु पीड़ित अछि। कियो पुत्र सोगसँ पीड़ित अछि, तँ कियो धनसोगसँ पीड़ित अछि। मोटा-मोटी एना बुझियौ जे एक्को पाइ लोक एहेन नइ छैथ जे पीड़ित नइ छैथ। आइ अस्पतालेमे की देखै छिए जे एकदिस मदपानसँ चूर डॉक्टर साहैब रोगीक इलाज करए बैसल छैथ तँ दोसर दिस भाँग-गाजाक मातल टेम्पूबला अपन रोगी लऽ पहुँचैए, तैठाम जँ रोगी लग डॉक्टर साहैबकेँ पहुँचैसँ पहिने विवाद नहि होइन, सेहो प्रकृतिक प्रतिकूले ने कहौल जाएत।

पूर्णिमाक प्रातक दिन, माने पूर्णिमा भेलाक एक दिनक पछाइत, सुविचार भाय कमलानन्द काकाकेँ अपन भातीज दिया समाद पठौलैन जे जेतेक जल्दी भऽ सकैन तेतेक जल्दी भँट दैथ। ओना, एहेन विचार शिष्टाचारक

विपरीत भेल मुदा परिस्थितिवश अनुकूलो भेल। सुविचार भाय अपन मनसोगसँ तेतेक पीड़ित भऽ गेल छैथ जे आँखिक सूत बैस गेल छैन तँए श्रवण कुमारक पिता जकाँ आन्हर भऽ गेल छैथ। ओना, समाद पठबैसँ पहिने सुविचार भाय एते सतरकी कइये नेने छेला जे सोझे भेंट करए कहबैन से केतौसँ उचित नइ हएत। तँए पुत्री सोगक चर्च सेहो भातीजसँ कऽ नेने छेला।

कमलानन्द काका सुविचार भाइक समाद सुनि गुम्म भऽ गेला। आदमी मारफद जँ कोनो जल्दबाजीक समाद अबैए तँ ओकर महत्व आन दोसर माध्यमक समादसँ बेसी होइते अछि। किए तँ आदमीक समदियाक माने भेल संगे नेने आएब। तहूमे आजुक बदलल परिवेशमे, अखन तँ माता-पिताक श्राद्ध आ गयाक पिण्डदान मोबाइलोसँ दैछना पठा हुअ लगल अछि।

अठारह-उन्नैस बर्खक सुशीलक मुहँ समाद सुनि कमलानन्द काका पुछलखिन-

“बौआ, नीक जेकाँ नइ बुझलौं।”

जहिना कोनो नवयुवक जे आइ.ए.एस.क संकल्पकेँ मनमे रोपि अप्पन जीवनकेँ साधना दिस मोड़ि साधक बनि साधना करैए तँ ओ निश्चये सफलताक सीढ़ी प्राप्त करिते अछि, तहिना माने ओहने नवयुवक जकाँ सुशील बाजल-

“बाबा, चाचाजी एतबे बजला जे पुत्रीक सोगसँ तेते पीड़ित भऽ गेलौं जे आगू दिस किछु सुझि नहि रहल अछि।”

सुशीलक संगे कमलानन्द काका विदा भेला।

कमलानन्द काका आ सुविचार भाय एक-दोसराक जीवनक संगी छैथ। दुनूक जन्म एक्के दिन भेल छैन। मुदा समाजक जे बेवहारिक चलैत अछि तइ अनुकूल कमलानन्द 'काका'क रूपमे आ सुविचार 'भाय'क रूपमे छैथ।

दस कट्टाक करीब हटलेसँ कमलानन्द काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर सुविचार भायकेँ बैसल देखि नेने छला, मुदा मुँह बन्न ऐ दुआरे रखने रहला जे जिनका लग एलौं हेन से ने पहिने टोकता, मुदा जे टोकतैन तिनकर तँ आँखियेक सूत बैस गेल छैन तखन देखबे केना करतैन। ओना, कमलानन्द कक्काक मनमे उठि गेल छेलैन जे जैठाम एलौं से तँ घरवारीक सीमामे भेला, ओ अपन परिवारक सीमा-सरहदक बेवहार केहेन रखता से तँ हुनकर परिचय भेलैन। तैबीच अप्पन मान-रोच राखब नेनपन भेल। अप्पन मन कमलानन्द कक्काक मानि गेल छेलैन। तैबीच धीरे-धीरे कमलानन्द काका सुविचार भायसँ लगा तीनियेँक दूरपर पहुँचला। जोरसँ खखास केलैन। सुविचार भाइक मन तेना भावनामे भवित भऽ गेल छेलैन जे आँखिक संग कानो सुन्न भऽ गेल रहैन। मुदा तैयो मनमे एहेन विचार तँ रहबे करैन जे कमलानन्द काका जइघड़ी ने पहुँचला अछि। समयक योगसँ मुहूर्त बनियेँ गेल अछि। कनी फरिक्केसँ सुविचार भाय ठुनकैत बजला-

“आब हम नइ जीब, तँए आखरिये दिन बुझू।”

सुविचार भाइक विचार कमलानन्द काकाकेँ कोनो भाँजेपर ने चढ़लैन। भाँजोपर केना चढ़ितैन, एक्के दिनक जन्म दुनू गोरेक अछि, अखन पचासो ने टपलौं हेन, तखन एहेन विचार मुहसँ निकालब सोहंतगर थोड़े भेल। प्रेमचन्द भाइक अप्पन नजैर छेलैन तँए ओ पचासक निच्चैँ, माने

चालीसकेँ घपचालीस कहलैन। फेर अपने मन कमलानन्द कक्काक मानि लेलकैन जे भरिसक कोनो तेहेन सोगमे सुविचार सोगा गेल अछि जइसँ विचलित भऽ गेल अछि। जहिना कोनो ढेरबा बच्चा घरसँ बौड़ा बोन-झाड़मे पड़ि जाइए आ बौराइत-बौराइत कोनो एहेन कुठामपर चलि जाइए जैठाम मरब छोड़ि दोसर रस्ता नइ रहैए..।

जइ हिसाबसँ माने जइ मार्मिक भावसँ सुविचार भाय बाजल छला तेकर विपरीत भाव कमलानन्द कक्काक मनमे जगि गेल छैलैन। जगिते मन तमतमा गेलैन जइसँ ठोर पटपटेलैन, एहेन जे बुड़िवाण अछि जे संगे-संग रहितो एतबो ने बुझि सकल जे कुम्हारक कँचको बरतनसँ तनुक अपन जीवन अछि, जे कखनो हवा भरल बैलून जकाँ खुस्स-दे सटैक जाएत।

कमलानन्द काका भाव बदैल बजला- “की समय अपना सबहक छल आ अखन की भऽ गेल अछि..!”

सुविचार भायकेँ सेहो अप्पन ओ दिन मोन पड़ि गेलैन जइ दिन बेटी बिआह अपनासँ बीस परिवारमे कराएब सोचलैन। तैसंग एकटा धारा मनमे प्रवाहित भेलैन जइमे अप्पन कर्तव्यक संग बेटीक बेटपनक बोध भेल रहैन। बोध ई भेल रहैन जे जखन पाँच बेटाक बीच एकटा बेटी अछि, ओकर पिता तँ हम ओहिना छिए जहिना बेटाक छिए। तँए बिना कोनो मथहानि केने बेटीकेँ बी.ए. पास करौलैन। बी.ए. पास करौला पछाइत डॉक्टर लड़काक संग विवाह सेहो करौलैन।

सुविचार भाइक जमाए डॉक्टरी कऽ रहला अछि। मुदा जखन सुनलैन जे जमाए एकटा ओहन लोकसँ अनेरे उलैझ गेला जे जान लइपर तुलल छैन, तखनसँ डरे सुविचार भाइक मन थरथर काँपि रहल छैन जे की सोचि बेटीकेँ पोसलौं आ दोसराक घर हँसी-खुशीसँ विदा केलौं आ आइ की देखि-सुनि रहल छी। यएह सोग सुविचार भायकेँ तरे-तरे सड़ैन करैत

मरनासन्न बना देने छैन।

जीवन-वनक बीहमे सुविचार भाय तेना ओझरा गेल छैथ जे कोनो बाटे ने सुझि रहलैन अछि। मन मसोसिकऽ बजला-

“काका, ऐ जीवनसँ मृत्यु नीक।”

सुविचार भाइक विचार कमलानन्द काका विचारए लगला जे कखन कोन तरहक मृत्यु जीवनसँ नीक होइए आ कोन तरहक अधला? कियो नीकसँ अधला बनैए तँ कि ईहो फूसि थोड़े छी जे कियो अधलोसँ नीक होइते अछि। मुदा विचारकेँ बदलैत कमलानन्द काका बजला-

“दुनू नीको अछि आ अधलो तँ अछिए। कियो जीवन ले मरैए तँ कियो मरैले नइ जीबैए सेहो बात नहियँ अछि, सेहो तँ अछिए। जीवन-मरणक गप-सप्प छोड़ह, अपन वेदनाक की कारण छह तैपर आबह।”

सुविचार भाय बजला-

“काका की कहब, बजैमे लाज होइए.! मुदा अहाँ लग नइ बाजब तँ धर्मराजक घर दोखी बनब।”

कमलानन्द काका बजला-

“अखन अलंकार छोड़ह, धर्मराज आ धर्मक विचार पछाइत करिहह, अखन बाजह जे की भेलह हेन?”

सुविचार भाय बजला-

“बड़ लीलसासँ बेटीक सेवा कए घर बसेलीँ मुदा ओ घर उजैर रहल अछि..!”

सुविचार भाइक विचार कमलानन्द कक्काक मनमे मेघक बादल जकाँ उमड़लैन-घुमड़लैन। उमड़लैन ई जे सोगो तँ सोग छी, हजारो रंगक अछि मुदा सेवा कएल बेटा-बेटीक घर उजड़ैत देखि कोनो माता-पिताकेँ सोग हएब सोभाविक अछि।

सुविचार भाइक विचार सुनि कमलानन्द कक्काक अपने मन विचार देलकैन जे किए ने बेटीक उजड़ैत दशाकेँ एक नजैर पहिने देखि-सुनि ली। बजला-

“कनी फड़िछाकऽ बाजह।”

सुविचार भाय बजला-

“काका, जमाए डॉक्टर छैथ से तँ बुझले अछि?”

कमलानन्द काका बजला-

“किए ने बुझल रहत। पिता प्रोफेसर छेलखिन, माए डॉक्टर।”

सुविचार भाय बजला- “अपना दुनू गोरेक जन्मो एक्के दिन भेल आ अखन तक संगे-संग चलियो रहल छी, मुदा अहाँ लग अखन तक एकटा

विचार, जहिना कृष्णक दरबारमे अपन गरीबीक तण्डुल सुदामा नुकौने छेलैथ, तहिना हमहूँ नुकौने रहल छी से पहिने कहि दइ छी।”

कमलानन्द कक्काक मनमे पवित्र शीतलपवन जकाँ सिंहकलैन। सिंहकलैन ई जे जीवनक दुनू दिस ढलान अछि, माने आगूओ दिस आ पाछुओ दिस, दुनू ढलानक बीच मनोदशाक विचार सेहो ढलकैत-फलकैत रहैए, तैठाम विचारमे संगपन अबिते अछि।

तैबीच अप्पन नुकाएल बेथाकेँ खोलैत सुविचार भाय बजला-

“काका, मनमे ओही दिन ठनकाक चोट जकाँ लागल जइ दिन सुनलौं जे जमाए समैधकेँ मारलैन.!”

ओना, कमलानन्द काकाकेँ तरी-सँ-घटी धरिक जानकारी प्रोफेसर साहैबक विषयमे छैन्हे मुदा जहिना कबीर दास कहलैन जे ‘बिनु डंडी के पलड़ा तौलत है संसार’, तहिना ने सभ मनुक्खकेँ अप्पन-अप्पन तराजूक दुनू पलड़ा आगूएमे छैन, अपना-अपना नजरिये तौलै जाउथ। जीवन जीवन छी, ठट्टा नहि। जे जीवन जेतेक क्रियाशील रहत ओ जीवन ओतेक बेसी तुष्टि देत, मुदा जे जीवन परजीवी भऽ गेल, ओइ जीवनक फल एहेन भेटब अनुचित नहियेँ कहल जा सकैए। जे जीवने ओहन बनि गेल जइमे माए केतौ, बाप केतौ आ बेटा-बेटी केतौ रहत ओइमे वैचारिक केतबो प्रगाढ़ता किए ने हुअए मुदा बेवहारिक कमी रहबे करत।

रूपलाल माने सुविचार भाइक जमाए, बच्चेसँ परिवार-समाजसँ हटल रहला। जखन कि माए-बाप स्वयं समाजक प्रबुद्ध बेकती, मुदा हुनका अपनो सन्तानपर मोह-माश्रुर्य नहि भेलैन जे अपन सन्तानकेँ कमसँ कम अपना स्तर तक बनाइये सकै छी। माता-पिताकेँ नीक आमदनी, बेटा हाथमे ओते पाइ दऽ दइ छेलखिन जे हाइये स्कूलसँ रूपलालकेँ शराब

पीबैक चहैट लागि गेलैन। मेडिकलक छात्र होइत-होइत मातो-पिताकेँ अखड़ए लगलैन, मुदा बेटा तँ जवान भऽ गेलैन। एहेन स्थितिमे कहुना पढ़ाइ समाप्त भेला पछाइत नोकरियोक जोगार कऽ देबै आ बिआहो-दान करा अप्पन माता-पिताक दायित्व पूरा करब। अप्पन मनक विचारमे भरल कमलानन्द काका रहबे करैथ, बजला- “दायित्व पूर्ति होइसँ पहिने प्रोफेसर साहैब ग्लानिसँ भरि गेला।!”

जहिना पैघसँ पैघ देहक रोग हुअए आकि मनक, जखन सच बात माने ओइ बिमारीक सही कारण बुझिमे अबैए, तखन रोगक पीड़ा स्वतः किछु-ने-किछु कमबे करैए।

हृदय खोलि सुविचार भाय बजला-

“काका, बेटी सुनयनाक की गति हएत।!”

ओना, कमलानन्द कक्काक मनमे अनेको प्रश्न बरखा-बूनक बुलबुला जकाँ मनमे उठबो करैन आ अपने फुटि-फुटि प्रवाहितो हुअ लगलैन। मुदा विचारकेँ समेटिते मनमे उठि गेलैन, अखन तक अपना ऐठाम जेतबो खोलिकऽ बेटाकेँ राखल गेल तेतबो बेटीकेँ नहि। जीविकोपार्जनक कोनो अधिकार बेटीक हाथमे नइ रहल, जइसँ ओकर आत्मशक्ति जगैत, मुदा जे अछि तहीमे ने सभ छी। बेटी सुनयनाक चर्च सुनि कमलानन्द कक्काक मन दहैल गेल छेलैन, जइसँ मनमे उठि गेलैन जे अखन तक जे बेटीक जीवन परिवार-समाजमे रहल ओ ओहन रहल जेना बन्हौटा गाएकेँ खाइले दियौ वा नइ दियौ मुदा दुहैकाल बड़का बाल्टीन लऽ कऽ पहुँच जाउ, सएह स्थिति बेटी-जातिक परिवार-समाजमे रहल अछि। समाजो तँ समाज छी, एक दिस जहिना नैतिक प्रवचन अकासमे गुंजायमान होइत रहैए तहिना दोसर दिस पैघ-सँ-पैघ अपराध नइ होइए सेहो केना नइ कहल जाएत। अपना ऐठाम किसानी जीवन एहेन रहल

अछि जे किसान किसानीपर आश्रित छैथ, अधिकांश ओहन किसान छैथ, जिनका किसानी करैक ओकाइत-खेतसँ साधन धरि-नइ छैन आ जे किसानी नइ करै छैथ हुनके सभ साधन छैन। ओना, बटाइ सिस्टम सेहो अछि मुदा ओहो बेढंग अछि। खाएर जे अछि, कमलानन्द काका बजला-

“सुविचार, काल्हि दिन की हएत तेकरा मनसँ भगावह। आजुक की स्थिति अछि तैपर धियान दहक।”

ओना, कमलानन्द कक्काक मनमे एहेन विचार हिलोर मारिते रहैन जे जे जीवन जेतेक शॉर्टकट रास्तासँ चलत ओ ओते जीवनसँ दूर रहत। जीवन जीबैले जहिना समुद्र पार करैक सूत्र अर्जुन आ हनुमान दुनूकेँ बुझल रहैन मुदा दुनूक दू रास्ता रहैन, तहिना जीवनक पूर्ण रास्ता आ शॉर्टकट रास्ताक बीच किछु-ने-किछु कमी-बेसी हेबे करत मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे हीय हारि सुविचार भाय बजला-

“समाज जेना पार-घाट लगाबैथ।”

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.३.नन्द विलास राय- भौँटबेच्चा



नन्द विलास राय

भौँटबेच्चा

नेवालालजी रिटायर शिक्षक। भरि दिन चौक-चौराहापर रंग-बिरंगक भाषण झाड़ैत रहै छैथ। नैतिकता, निष्ठा आ चरित्रक बात करैत रहै छैथ। एमकी भेल पंचायत चुनावमे मुखिया पदक तीन-तीनटा उम्मेदवारसँ भौँट दइक नाओंपर ढौआ लेलखिन। मुदा भौँट ते कोनो एक्केटा उम्मेदवारकेँ ने देने हेथिन। राम कुमारजी मुखिया पदक उम्मेदवार छला। विवेकजी जे नेवालालजीक बेटाक संगी छैथ, तिनके समक्ष रामकुमारजी भौँटक नाओंपर नेवालालजीकेँ पाँचटा भौँटक लेल पनरह साए टका देने छेलैन।

आइ भोरमे चाहक दोकानपर आंगनवाड़ी केन्द्रक चर्च उठल तँ

नेवालालजी लगला भाषण झाड़ए। ओ कहए लगला- “एक्कोटा आंगनवाड़ी केन्द्र नहि चलैए। केन्द्रपर बच्चासभक बीच पोषाहारक वितरण सेहो नहि होइए। स्कूलो सभक सएह हाल छै। सभक नैतिक पतन भऽ गेल हेन। सभ बेइमाने भऽ गेल हेन। केकरोमे चरित्र बाँचले ने अछि।”

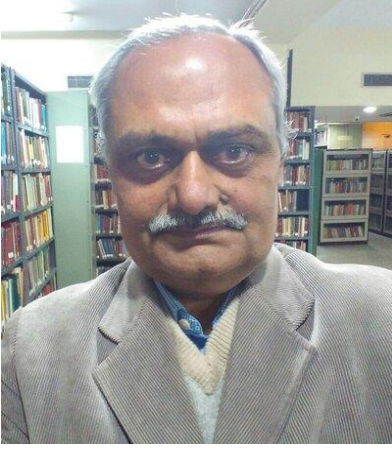
जखन नेवालालजी चाहक दोकानपर ई भाषण झाड़ै छला तखन विवेको रहए। विवेककेँ नहि रहल गेलै ओ नेवालालजीकेँ कहलकैन-

“धुरजी, अहाँ की भाषण झाड़ै छी। अपन मुँह ऐनामे देखियौ। रिटायर शिक्षक छी। पच्चास हजार टका पेंशन भेटैए आ भौँटक नाओंपर उम्मेदवारसँ पाइ लइ छी। अहाँ ते भौँटबेच्चा छी। अहाँ की नैतिकता आ चरित्रक बात करब।”

नेवालालजी किछु नहि बजला- “निच्चाँ मुहँ मुड़ी गौंतेने ओइठामसँ विदा भऽ गेला।”

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com **पर पठार।**

३.४.रबीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- ३१-३५ म खेप



रबीन्द्र नारायण मिश्र

मातृभूमि (उपन्यास)- धारावाहिक

खेप ३१-३५

३१

एहिबेर बहुत दिनपर नागबाबा लखनपुर पहुँचलाह । स्वास्थ्यसँ किछु हरस्त लागि रहल छलाह । उतेरबारिटोलक मंदिरपर हुनकर डेरा छल । शीलाक पिता मधुकान्त बैदकेँ नागाबाबाक अएबाक सूचना भेटलनि । ओ दौरल हुनकासँ भेंट करबाक हेतु पहुँचलाह ।

"बाबा दण्डवत्" -बैदजी नागबाबाकेँ प्रणाम कए हुनके पांजरमे बैसि जाइत छथि । कनीके कालमे गोविंद, माधव किछु आओर युवक संगे पहुँचलाह । ओहि समय बैदजी शीलाक समाचार पुछि रहल छलाह ।

"जयन्तसँ भेंट भेल रहए । ओएह शीलाक बारेमे किछु-किछु कहैत रहथि ।"

"की कहलथि?"

"की कहू?"-से कहि नागबाबा चुप रहि गेलाह । ओना बैदजीकेँ तँ सभबात बुझले रहनि । ओ गलती कए गेल रहथि । आब पछताइए कए की हेतनि? केहन हँसैत-बजैत शीलाक भविष्यकेँ अंधकारमय कए देलाह,से सोचि-सोचि ओ दुखित भए गेल रहथि । कतबो केओ कहनि कोनो दबाइ नहि खाथि । कोनो डाक्टर-बैद लग नहि जाथि । अपन एकमात्र संतानक दुखसँ भीतरिआ कष्ट रहनि जकर कोनो समाधान हुनका नहि बुझाइन । एहन स्थितिमे नागबाबाक आगमनक समाचार सुनि ओ जेना-तेना हुनका लग पहुँचल रहथि ।

"शीलाक आब ओहिठाम रहबाक कोनो लाभ नहि छैक। दिन-प्रतिदिन ओकर स्थिति खरापे भेल जा रहल अछि । तँ हमरा हिसाबे तँ ओकरा गामे लए आनू ।-नागबाबा कहैत छथि । शीलाक खिस्सा सौँसे गाममे पसरि गेल रहैक । मुदा केओ की करैत? बिआह भए गेलाक बाद बेटीक स्थिति माता-पिताक वशमे नहि रहि जाइत छैक । कानून जतेक समाधान नहि दैत अछि ताहिसँ बेसी समस्या उतपन्न कए दैत अछि । पश्चिमक संस्कृतिक अनुकरण कए लोक बिआह विच्छेद कए लिअ । मुदा समाज ओकरा डेग-डेगपर प्रताड़ित करबासँ बाम नहि होइत अछि । जएह-सएह वक्र दृष्टिसँ देखए लगैत अछि । जँ ओ नैहरमे वापस आबिओ गेलथि तँ अपने परिवारमे पाहुन भए जाइत छथि। कानून द्वारा प्रदत्त पैतृक संपत्तिक अधिकार कागजेमे समेटल रहि गेल अछि । सएह सभ सोचि लोक चाहैत अछि जे बेटी जेना-तेना सासुरेमे रहए ।

मुदा शीला संगे तँ बहुत पैघ धोखा भए गेल रहैक। ओकरा संगे तँ ओकर घोरोबला नहि रहैक । ओ पहिनहिसँ विधर्मीसँ बिआह कए लेने रहैक । बैदजीक मोनमे अपराधबोध तँ होइते रहनि ,मुदा ताहिसँ की होएत? नागबाबाक हावभाव देखि हुनका बुझबामे कसरि नहि रहलनि जे असलियत की अछि । तैओ मोनमे कतहु उम्मीद रहनि जे की पता किछु नीक भए गेल होइक ?तँ ओ बहुत आशासँ नागबाबाक अएबाक समाचार सुनितहि हुनका लग आएल रहथि । लग-पासमे बैसल युवकसभकेँ सेहो शीलाक खिस्सा बूझल रहनि । ओ संभ सेहो चाहथि

जे शीलाक मदति कएल जाए। मुदा से कोना कएल जाए? नागबाबा मुँहे शीलाक कोनो स्पष्ट समाचार नहि सुनलाक बाद हुनकर सभक चिंता आओर बढ़ि गेलनि ।

"हमरा तँ मोन होइत अछि जे अखने जानकीधाम जा कए शीलाक ससुर आ ओकर पतिकेँ जहलमे बंद करबा दी ।"- गोविंद बजलाह ।

"मुदा ताहिसँ होएत की? - माधव कहलखिन।

" तँ की हमसभ मूकदर्शक बनल रही आ एकटा निर्दोष स्त्री अन्याय सहैत रहि जाए ।"

"तोहरसभक हिसाबे की कएल जाए?"-बैदजी बजलाह ।

" हमसभ पाठशालाक समस्याक समाधानक हेतु जयन्तसँ भेंट करबाक हेतु जानकीधाम जाएब । एहि हेतु काल्हि बैसार होएत । ओही बैसारमे शीलाक समस्याक बारेमे सेहो चर्चा कएल जाए आ तकरबाद सभगोटे चलब । ओतहि सोझा-सोझी बात फरिछा जेतैक । एकटा स्त्री संगे एतेक अन्याय कए ओ निचैन नहि रहि सकैत छथि ।"

"बात तँ तूँ सभ वाजिब कए रहल छह। मुदा बैदजी क सहमतिएसँ किछु कएल जएबाक चाही । " -नागबाबा बजलाह ।

"हम समाजसँ बाहर थोड़े छी । जे सभक विचार, सएह हमरो विचार ।"

साँझमे होबएबला बैसारक हकार देबाक भार टुनटुनकेँ देल गेलनि । टुनटुन स्कूटरपर चढ़ि कए एकटा छौंड़ाक संगे चिकर-चिकरि कए कहलथि -"सुनैत जाउ,आइ साँझमे मंदिरपर बैसार अछि । नागबाबा सेहो रहताह । सभगोटे अवश्य आएब ।"

केओ -केओ पुछलकैक -"कथीक बैसार छैक?"

गौवासभसँ सबाल-जबाब करब ओकर काज नहि रहैक । ओ तँ मात्र हकार देबाक हेतु गेल रहए । हकार देलाक बाद ओ वापस होइत रहए की सुधाकर भेटि गेलखिन । इसारा दए रुकबाक हेतु कहलखिन । स्कूटरक आगूमे ठाढ़ भए गेलथि । चारूकात सुधाकरक लठैतसभ घेरि लेलक । हारिकए ओकरासभकेँ स्कूटरसँ उतरए पड़लैक ।

"कथीक बैसार छैक?"-सुधाकर पुछलखिन ।

"पाठशालाक पुनर्निर्माण करबाक चर्चा हेतैक ।"

"हमर डीह-डाबरपर पाठशाला बनबए चललाह अछि । हरगिज नहि होबए देबह । जकरा जानक काज नहि होइक सएह ओहि बैसारमे जाए ।"-सुधाकर चिकरि-चिकरि कए सौंसेगामकेँ ई बात सुना देलखिन ।

दोसर दिन साँझमे आरतीक बाद उतरबारिटोलक मंदिरक परिसरमे बैसार शुरु भेल । बैसारमे उतरबारिटोल उमड़ि गेल छल । मुदा दछिनबारिटोलक मात्र दुइए गोटे अएलाह ,मधुकान्त बैदजी आ सुधाकरक वयोवृद्ध पिता देवीकान्त ।

नागबाबा सामान्यतः शांत रहैत छलाह । मुदा कहि नहि ओहि दिन बैसारमे ओ एकाएक बहुत उग्र भए गेलाह । भेलैक ई जे बैसार शुरु होइतहि सुधाकर सदल-बल पहुँचि गेल । ओकर लठैतसभ चारूकातसँ मंदिर परिसरकेँ घेरि लेलक । ओना लठैतसभ तँ सुधाकरक संगे रहिते छलनि मुदा ओहि दिन किछु बेसिए गोटे अनने रहथि ।

"सभगोटे कान खोलि कए सुनि लिअ । आइ नौ-छौ भइए कए रहत । रोज-रोजक ई झंझटिसँ मुक्ति जरूरी अछि । अन्यायोक्त एकटा सीमा होइत अछि । हमर पूर्वजक देल घराड़ीकेँ ई सभ पाठशाला बनाबए हेतु अमादा छथि । ई कतक न्याय थिक ।"

"हमहु एही गामक छी । एहिठाम पाठशाला कोनो आजुक नहि अछि । हमसभ नेने रही तखनो एतए पाठशाला छल आ हमरसभक बाबा जखन नेना छलाह तखनो छल । अहाँक घराड़ी ई कोना भए गेल?"- नागबाबा बजलाह ।"

"तोहर बुद्धि सठिआ गेलह अछि । जमीन-जायदादक निर्णय कागजसँ होइत अछि, चिचिएलासँ नहि । ई जमीन बाबा हमरासभक नामे लिखि गेल छथि । एहिपर ककरो कोनो अधिकार नहि अछि ।"-से कहि ओ अपन जेबीसँ एकटा कागज निकालि कहैत छथि-

"जकरा देखबाक होने से देखथु । ई पाठशालाक जमीनक रजिष्ट्रीक कागज अछि । तथापि यदि केओ झंझट करबापर अड़ल होथि तँ तकरो इलाज हम तैयार रखने छी ।"-सुधाकर ई बजले छलाह कि लठैतसभ लाठी भाँजए लागल ।

"एहन अन्याय नहि करह । जयन्त सन विद्वान एतए पाठशाला चलबए चाहैत छथि । ओ विद्वान छथि । समाजक उपकार कए सकैत छथि । हुनकर आग्रह मानबाक चाही ।"- सुधाकरक पिता देवीकान्त

बजलाह ।

“एह! विद्वान छथि । हमरा सभटा पता अछि । जानकीधाममे शीलाक संगे...” -ओ एतबे बाजल होएताह कि बैदजी चिकरलाह-

“खबरदार! पाजी नहितन । शीला...” किछु आओर बजितथि ताहिसँ पहिनहि हुनकर आबाज अवरुद्ध भए गेल । ओ धराम दए खसलाह । चारूकातसँ लोकसभ हुनका घेरि लेलक । लठैतसभ कात भए गेल ।

“बैदजी नहि रहलाह।”-गोविंद बाजल । बैदजीकेँ हृदयाघात भए गेलनि । चारूकात हाहाकार मचि गेल । परिस्थिति हाथसँ बाहर होइत देखि सुधाकर लठैतक संगे भागल ।

३२

गाममे भेल बैसार आ ओहि कारणसँ शीलाक पिता बैदजीक आकस्मिक निधनक समाचार जयन्त धरि पहुँचल । समाचार सुनितहि हुनका ठकबिदोर लागि गेलनि ।

“आब की होएत? शीलाकेँ ई दुखद समाचार केना देल जाएत? ”-जयन्त नागबाबाक चेलाक संगे बैसल बतिआ रहल छलाह । ओएह गामसँ समाद लए कए आएल छलाह ।

“नागबाबा कतए छथि?”

“ओ अखन गामेमे छथि ।”

“गामक की हाल छैक?”

“गाममे बहुत तनाव अछि । उतरबारिटोलक लोकसभकेँ नागबाबा रोकि देलखिन नहि तँ ओहीदिन बहुत किछु भए गेल रहैत ।”

“एहनमे हमरा लोकनिक ओहिठाम गेनाइ संभव होएत?”

“मुदा नहिओ गेनाइ तँ समाधान नहि अछि ।”

“तखन की कएल जाए?”

“हमरा हिसाबे तँ कालीकान्तकेँ सभबात कहल जाए । ओएह किछु समाधान कए सकैत छथि ।”

“बात तँ सही कहि रहल छी । मुदा कालीकान्तकेँ ई सभ कहबामे हमरा बहुत संकोच भए रहल अछि ।”

"अहाँ अपने किएक कहबनि । आचार्यजीकेँ पठा देल जाए । ओ सम्हारि सकैत छथि।"

"सही कहलहुँ । मुदा शीलाकेँ कोना ई समाचार देल जाएत? ओ तँ पहिनेसँ बहुत परेसान छथि ।"

"मुदा हुनका जानकारी देनाइ तँ अनिवार्य अछि । गाममे हुनकर पिताक लास हुनकर प्रतीक्षा कए रहल अछि।"- से कहि नागबाबाक चेला अपन आश्रम चलि गेल ।

जयन्त आचार्यजीसँ भेंट करबाक हेतु बिदा भेलाह । आचार्यजी आश्रमक गेटेपर भेंट भए गेलखिन ।

"की बात छैक? अहाँ बहुत परेसान लागि रहल छी?"

जयन्त आचार्यजीकेँ सभबात कहलखिन ।

"हमरा लोकनिकेँ कालीकान्त लग चलक चाही । हुनका सभ बात कहबनि । ओएह रस्ता निकालताह।"

"ठीक छैक । मुदा शीलाकेँ कोना सूचित कएल जाएत?"

"कालीकान्त लग चलू ने । सभ भए जेतैक ।"

जयन्त आचार्यजीक संगे कालीकान्तक ओहिठाम बिदा भेलाह

।

३३

आचार्यजीक संगे जयन्त कालीकान्त लग पहुँचलाह । कालीकान्त अपन ओसारापर बैसल चाह पीबि रहल छलाह । गौरी सेहो ओहीठाम बैसल छलीह । भोरुका अखबार आबि गेल रहैक। ओहि अखबारक मुख्यपृष्ठपर लखनपुरमे भेल कांडक समाचार छपल छल । कालीकान्त ई समाचार पढ़िए रहल छलाह कि आचार्यजीक संगे जयन्तकेँ देखलकिन ।

"बहुत सही समयपर आबि गेलहुँ । "

"की बात भेलैक?"

"अखबारमे जयन्तक गामक घटनासभक समाचार छपल छैक। सएह पढ़िकए चिंतामे पड़ि गेल छी ।"

"ओही विषयमे अपनेसँ चर्चा करए आएल रही । सुनबामे आएल जे

शीलाक पिताक देहावसान भए गेलनि आ गाममे लोकसभ शीलाक प्रतीक्षा कए रहल छथि ।"

"ओ तँ ज्योतिषीजीक संगे भोरे निकलि गेलीह । सुधाकरक मारफत हुनका समाचार भेटि गेल रहनि ।"

"जयन्त सेहो जाए चाहैत छथि ।"

" ओहिठामक माहौल तँ बहुत खराब छैक । कहीं किछु अनिष्ट ने भए जाए?"

" जयन्तक गेनाइ जरूरी छनि । शीलाक परिवारसँ हिनका लोकनिक बहुत घनिष्टता रहलनि अछि ।"

ई सभ गप्प-सप्प भइए रहल छल कि गौरी आ चंद्रिका सेहो आबि गेलीह ।

चंद्रिका अड़ि गेलीह जे ओहो जयन्तक संगे जेतीह । कालीकान्तकेँ बुझेबे नहि करनि जे हुनका कोना मनाओल जाए? कारण एहि माहौलमे हुनका लखनपुर गेनाइ कोनो तरहे उचित नहि बुझाइनि । जखन चंद्रिका नहिए मानलखिन तँ तय भेल जे सभगोटे संगे जेताह । मुदा जयन्त मना कए देलखिन ।

" अहाँ अखन किछु दिन रुकि जाउ । श्राद्ध होबए दिऔक । तकरबाद आबि जाएब । "

"जयन्तक बात सही बुझाइत अछि । हमरा लोकनिक अखन ओहिठाम गेलासँ परेसानी बढि सकैत अछि।"-कालीकान्त बजलाह ।

दोसरदिन अहल भोरे जयन्त आचार्यजीक संगे लखनपुर बिदा भेलाह । रस्ताभरि हुनकर मोन भकुआएल रहनि ।

"जयन्त एतेक किएक सोचैत छी? अहाँ तँ विद्वान छी । जीवन-मरण तँ चलिते रहैत अछि । एकरा स्वीकार केनहि कुशल थिक।"-आचार्य बजलाह ।

"सबाल जीवन-मृत्युक नहि अछि । जाहि तरहें हिनकर मृत्यु भेलनि से बहुत दुखदायी अछि । एकटा लफङ्गा सभकेँ परेसान केने अछि आ सभ मुँह ताकि रहल अछि ।"

"सभ चीजक समय होइत छैक । ओकरो जबाब भेटतैक आ भेटबे करतैक ।"

"से तँ ठीक अछि । मुदा हमरो लोकनिक किछु कर्तव्य बनैत अछि कि

नहि? की हमसभ मात्र नियतिकेँ दोख दए समय काटैत रहि जाएब । समस्याक जड़ि ओ पाठशालक जमीन थिक जाहिपर जबरदस्ती सुधाकर कब्जा कए लेने अछि । ओही विषयपर चर्चा करबाक हेतु बैसार भेल छल । मुदा की सँ की भए गेल ।"

"आब तँ आगूएक सोचबामे फएदा अछि । कोनो समाधान तखने भए सकैत अछि ।"

"तकर माने जे सुधाकर जकरा चाहए मारि दैक, परेसान करैत रहैक आ हमसभ भाग्यक पलटी लेबाक प्रतीक्षा करैत रही ।"

"फिलहाल श्राद्ध होबए दिऔक । तकरबाद कालीकान्त सेहो अएबे करताह । हुनका सामनेमे विमर्श कएल जाएत। सुधाकर कतबो बलगर होथि, मुदा कालीकान्तक आगू ओकर एकटा नहि चलतैक। जखन एतेक दिन धैर्य रखबे केलहुँ तँ थोड़ेक दिन आओर सही । पाठशालाक समाधान सेहो हेबे करतैक ।"

दुनूगोटे गप्प-सप्प करैत लखनपुरक सीमामे प्रवेश कए रहल छलाह । धारक कातमे बैदजीक चिताक आगि मिझा गेल छल । शीलाक लखनपुर पहुँचएमे विलंब भेलनि । लोकसभ गाममे लासकेँ बेसी काल रखनाइ उचित नहि बुझलक । बैदजीक संस्कार शीलाक गाम पहुँचबासँ पहिनहि गौवासभ कए देलखिन। ज्योतिषीजी शीलाकेँ लखनपुर पहुँचा कए चोट्टे अपन गाम चलि गेलाह । ई समाचार हुनका धारक कातमे टुनटुन देलखिन । टुनटुन संगे ओ सभ बैदजीक दरबाजापर पहुँचलाह। ओहिठामक दृश्य बहुत दुखद छल। ओसारापर एकसरि बैसलि शीला कनैत-कनैत बेहाल छलीह । जेना-तेना बैदजीक श्राद्ध संपन्न भेल ।

सुधाकर तँ ओहि दिनक घटनाक बाद जे निपत्ता भेलाह से घुरि नहि अएलाह । थानासँ पुलिस हुनकर पता लगबैत कैक दिन आएल । मुदा सुधाकरक किछु पता नहि चललैक । संभवतः ओहोसभ खानापुरिए कए रहल छल। गाममे सभकेँ एहि बातसँ आश्चर्य लगैक जे शीलाक घरबला ससुरक श्राद्धोमे नहि अएलाह। लखनपुरसँ अपन गाम वापस होइत काल ज्यतिषीजीकेँ की भेलनि की नहि तकर किछु पता नहि चलि सकल। मुदा ओ महिपुर नहि पहुँचि सकलाह। रस्तेमे रहि गेलाह । लोकसभ बाजए जे लखनपुरक चओरमे हुनका जिन गछारि लेलकनि।

गोविंद जयन्तसँ भेंट करए आएल रहथिन । संगमे माधव आ

उतरबारिटोलक किछु युवकसभ रहथि। आचार्यजी सेहो ओतहि छलाह । नागबाबा सेहो रहथि । सभकेँ एकठाम बैसल देखि शीला सेहो ओतहि आबि गेलीह।

" यद्यपि बैदजीक मृत्यु आकस्मिक भेल, मुदा तकर पाछू की छल? एही अत्याचारीक दुर्व्यवहारसँ ओ बहुत दुखी भए गेलाह आ हुनका हृदयाघात भए गेलनि । पुलिसमे प्राथमिकी लिखाओल गेल । आइ कैक दिन भए गेल । केओ पकड़ल नहि गेल । पुलिस-थाना मात्र खानापुुरी कए रहल अछि । कोनो ठोस कारबाइ नहि भए सकल।"-गोविंद बजलाह ।

"शीला एकसरि छथि । सभसँ पहिने हिनकर सोचल जाए । तकरबादे आगू बढ़नाइ उचित होएत ।"- माधव बजलाह ।

" आब तँ जे हेबाक छलैक से भइए गेल । मुदा तकरा पकड़ि कए बैसल तँ नहि रहल जा सकैत अछि । अहाँसभ हमरा लेल चिंता नहि करू । हमर भविष्य तय भए चुकल अछि । हम आब कतहु नहि जाएब । ई हमरो गाम अछि आ हमरो किछु करबाक हक अछि । पाठशालाक काज आगू करू । हमहु ओहीमे जे संभव होएत योगदान करब ।"- शीला बजलीह ।

" हमरा लोकनि आइ साँझमे मंदिरपर बैसार करब आ ओतहि आगूक रस्ता तय होएत ।"-गोविंद बजलाह ।

३४

दोसर दिन बैसारसँ पहिने मंदिर लग झमटि कए कीर्तन भेल। ओना ओहिठाम कीर्तन होइते रहैत छल। मंगल दिन रहबाक कारणे विशेष आयोजन भेल रहैक । सौंसे उतरबारिटोलक जबान,बूढ़,नेनासभ एकठ्ठा रहए। कीर्तन समाप्त भेलाक बाद प्रसाद वितरण भेल । लोक तकरबाद चलि जाइत । मुदा कीर्तन शुरु होबएसँ पहिने गोविंद कहि देने रहैक जे कीर्तनक बाद बैसार हेतैक आ सभगोटे ओहिमे सामिल होएत । लोकक अस्मितासँ जुड़ल बहुत रास बातसभ रहैक ।

आब ओ समय नहि रहि गेल रहैक जे लोक अनेरे सहैत रहतैक । देशमे लोकतंत्रक बिहाड़ि बहि रहल छैक । समाजमे तकर प्रभाव स्पष्ट देखा रहल छैक । गेलैक ओ समय जे गरीब-गुरबाकेँ खानदानी कर्जक

एबजमे भरि जिनगी बेगार करए पड़ैत छलैक । आब तँ बोनिओ देलापर जन नहि भेटैत छैक । किएक भेटौक? सभक स्थिति सुधरलैक । सभक बाल-बच्चा देश-विदेश काजपर चलि गेलैक । दिल्ली,पंजाब आ कतए-कतए नहि पसरि गेलैक । किछुगोटे तँ देसक सीमानोकें तरपि गेल । अरब चलि गेल, किछुगोटे तँ पढ़ि लिखि कए अमेरिका,जर्मनी धरि अपन पैठ बना लेलक । ताहिठाम आब सुधाकर सन लोक लठैत बलें कतेक दिन टिकि सकैत अछि? ई बात उतरबारिटोलक लोकसभ नीकसँ बुझैक जे जँ ओ सभ लागि पड़तैक तँ सुधाकरकें कहए,केहनो बदमासकें ओ सभ लाइनपर आनि देतैक । मुदा ओहोसभ बेसी फसाद नहि करए चाहलक । सोचलक जे समयसँ सभ ठीक भए जेतैक, मुदा से कहाँ भेलैक? सुधाकरक मोन बढ़ैत गेलैक । जयन्त सन सरल ओ विद्वान व्यक्तिकें तबाह करए पर लागि गेल ।

कहबी छैक जे 'विद्वान सर्वत्र पूज्यते' । जयन्तमे ततेक विद्या छनि जे जखन जतए चाहथि अपन जगह बना सकैत छलाह । कालीकान्त हुनका अपना संगे रखबाक हेतु कतेको बेर कहि चुकल रहथि । मुदा मत्तृभूमिक सिनेह कही,मोह कही जे कही ओ एहि संकटसँ गुजरि रहल छथि । हुनका तँ दुपहर रातिमे लठैतसभ साफे कए देने रहैत । मुदा धन कही उतरबारिटोलक रखबारसभकें जे जानपर खेपि कए ओहन खराब मौसममे हुनका बचओलक ।

ई बात सभ लोकसभक मोनमे छलैहे,हाल-हालमे नव घटना सेहो भेलैक । शीलाक पिता बैदजीकें सभक सामनेमे बैज्जत कएल गेलनि जकरा ओ नहि सकलाह आ ठामहि रहि गेलाह । शीला आब निठ्ठाह एसगरि भए गेलीह । यद्यपि ओ बिआहल अछि,ओकर पति जीवित छथि । पहिने ऐकटा बिआह केने छलाह,ओहो विधर्मीक संगे,तखन एकर जिनगी बरबाद करबाक कोन औचित्य छल? मुदा ओ सएह केलाह । शीला आब तय कए लेलक अछि जे गामेमे रहत आ जयन्तक काजमे सहयोग देत,समाजक सेवा करत जाहिसँ भविष्यमे ककरो संगे एहन घटना नहि होइक ।

बैसार प्रारंभ भेल ।

नागबाबा,आचार्यजी,जयन्त,शीला,गोविंद,माधव मंचपर रहथि । आश्चर्यक बात रहैक जे दछिनबारिटोलक एक आदमी नहि आएल रहैक

। बैसार शुरु होइतहि सुधाकर अपन लठैतक संगे दन-दन करैत हाजिर भए गेलाह । सभ अकचका गेल । ई कतएसँ आबि गेलाह?सुधाकरक पाछू-पाछू एक दर्जन सिपाही सेहो अएलैक । ओहिमेसँ सेसर सिपाही आगू बढ़ल आ नागबाबा दिस हथकड़ी बढ़बैत कहलकैक-
"अहाँकेँ गिरफ्तार कएल जाइत अछि ।"

केओ किछु बुझैत,किछु सबाल-जबाब करैत ताहिसँ पहिनहि हुनकर हाथमे हथकड़ी लागि चुकल छल। स्वयं ओहो छगुन्तामे छलाह । नागबाबाक ई हाल देखि उतरबारिटोलक युवकसभ छरपल । ओकरासभकेँ अंदाज लागि गेलैक जे एहिमे सुधाकरक कुचक्र अछि। तनाव बढ़ैत देखि पुलिसबला माइकपर घोषणा केलक-

"खबरदार! जँ केओ पुलिसक काजमे बाधा करब तँ जहल जाएब ।"

-से सभ बजैत पुलिस नागबाबाकेँ पुलिस जीपमे बैसा लेलक आ लेने चलि गेल । सुधाकर आ ओकर लठैतसभसेहो पाछू-पाछू चलि गेल । लोकसभ देखिते रहि गेल ।

एहि तरहेँ नागबाबापर पुलिसक आक्रमणसँ उतरबारिटोलक लोकसभ बहुत उत्तेजित रहथि । गोविंद आ माधव आगू फनलाह । हुनका पाछू-पाछू बीस-पचीसटा युवक फानल। ककरो हाथ मे लाठी ,ककरो हाथमे बरछी तँ ककरो हाथमे भाला छलैक । सभ सुधाकरकेँ पछोड़ करबाक हेतु छटपटा रहल छल । हालात काबूसँ बाहर होइत देखि जयन्त उठलाह आ माइकपर कहैत छथि-

"हम आइसँ आमरण अनसन प्रारंभ कए रहल छी । जाधरि नागबाबा बाइज्जत बरी नहि हेताह, जाधरि पाठशाला अपन पूर्वस्थानपर नहि बनि जाएत ताबे हम अन्न-जल ग्रहण नहि करब।"

जयन्तक एतेक बजितहि सभ सन्न भए गेल । युवकसभ थकमका गेलाह । सभ एक-दोसर दिस देखए लागल। ककरो किछु फुरेबे नहि करैक जे आब की कएल जाए ? सभकेँ एहि तरहेँ परेसान देखि आचार्यजी माइक धेलनि -

"मानलहुँ जे सुधाकर आ हुनकर समर्थक बहुत अत्याचार कए रहल छथि आ पुलिस-प्रशासनक लोक सेहो हुनके संगे ठाढ़ बुझाइत छथि, तथापि हमरा लोकनिकेँ धैर्य बनओने राखक चाही कारण हमसभ एतए ज्ञान

वितरित करबाक सरंजाम स्थापित करए अएलहुँ अछि ने कि हिंसावादकेँ प्रश्रय देबाक हेतु । नागबाबाकेँ पुलिस पकड़ि कए लए गेलनि । मुदा ई सभ कतेक दिनधरि चलत? नहि चलि सकत , न्याय हेबे करतैक । अस्तु, हमर प्रार्थना अछि जे अहाँसभ कानून अपना हाथमे नहि ली । "

"एकतरफा सहनशीलताक लोक गलत अर्थ लगबैत अछि, आचार्यवर! ई तँ हमसभ सद्यः देखिए रहल छी । कहिआसँ जयन्त पाठशालाक हेतु प्रयत्नशील छथि । मुदा भेल की? हुनकर पैतृक हककेँ पचा लेबाक भरिसक प्रयत्न सुधाकर करैत रहलाह आ पाठशालाक जगहपर अपन व्यक्तिगत घर बना लेलाह आ हमसभ मूकदर्शक भेल छी । ऊपरसँ नागबाबाकेँ पुलिस पकड़ि लेलक ।"-गामक युवकसभ बाजल ।

"आचार्यजीक कहब अपना हिसाबे ठीके छनि । तँ हम शांतिपूर्ण प्रयास कए रहल छी । हमर अनशन करबाक निर्णय अटल अछि। अहाँसभ कृपया शांत रहू आ शांतिपूर्ण आंदोलनमे सहयोग करू।"-जयन्त बजलाह ।

आचार्यजीक आग्रह आ जयन्तक आमरण अनशनक घोषणाक बाद युवक लोकनि अपन-अपन हाथसँ हथिआर फेकि देलाह । गोविंद आ माधव किछु आओर युवकसभक संगे थाना बिदा भेलाह । नागबाबा थानामे नहि रहथि । हुनका पुलिस जिला मुख्यालय लेने चलि गेल कारण ओहिठाम रखबामे अशांतिक संभावना बुझलैक । स्थानीय पुलिससभसँ पता लगलैक जे बीसो साल पूर्व एकटा हत्याक मामलामे नागबाबाकेँ पकड़ल गेलनि अछि ।

भेल ई रहैक जे अपन युवावस्थामे नागबाबा समाजमे परिवर्तनक हेतु अग्रसर रहैत छलाह । ताहि हेतु गाम-गाम घुमि कए गरीब, असहाय लोकसभक संगठन बनओने छलाह । ओकरासभकेँ अपन अधिकार हेतु निरंतर जागरुक रहबाक हेतु प्रेरित करैत छलाह । समाजक समृद्ध लोकसभकेँ ई कतहु नीक लगैक? ओसभ हिनका खिलाफ षड़यंत्र केलक ।

नागबाबा एकदिन अहल भोरे अपन खेतमे कुसिआर काटए गेल रहथि । ओहिमे पहिनेसँ ककरो हत्या कए फेकि देल गेल छल । नागबाबा लास देखितहि चिकरए लगलाह । चारूकातसँ बदमाससभ मौकाक ताकमे छलहे, ओहिठाम जमा भए हिनके नाम लगा देलक ।

पुलिसमे हिनकर नाम लिखा गेल । बादमे जाँच-पड़तालमे हिनकर खिलाफ किछु सबूत नहि भेटलैक । पता नहि एतेक दिनक बाद कोना ओहि मामलाकेँ सुधाकर जगा देलक जाहि कारणसँ हुनका तंग कएल जा रहल अछि ।

उतरबारिटोलक हेतु तँ नागबाबा भगवाने छलाह । समस्त जीवन ओ हुनका लोकनि सामाजिक, आर्थिक विकासक हेतु प्रयत्नशील रहलाह । सन्यासी रहितहुँ ओ अपन गाम-घरसँ संपर्क बनओने रहलथि । धनकेँ नागबाबा जे जयन्तक जान बाँचल आ ओ शारदाकुंज पहुँचि एतेक शिक्षा ग्रहण केलथि । सुधाकर एहूबातसँ हुनकासँ तमसाएल रहैत छल । "ने नागबाबा रहैत ने ई दुष्ट जीबैत ।"-कखनो काल सुधाकर ई बात बजबो करए।

सभक मोनमे आक्रोश भरल छल । ऊपरसँ जयन्तक अनशनक घोषणासँ संपूर्ण समाजमे जबरदस्त प्रतिक्रिया भेल । दोसर दिन अखबारसभक मुखपृष्ठमे ई समाचार छपल । चारूकातसँ फोन आबए लागल । पुलिसक करमान लागि गेल ।

सभ केँ प्रयास रहैक जे जयन्त अनशन तोड़ि देथि ,मुदा ओ किछु बजबे नहि करथि,मौन भए गेलथि। उतरबारिटोलक युवकसभ दिन-राति जयन्तक रक्षामे लागल रहैत छलाह । पुलिस तँ पहरा दैते छल। लोकक आबा-जाही लागले रहैत छल । जयन्तक अनशनक दस दिन भए गेल। हुनकर स्वस्थ गड़बड़ेबाक भयसँ प्रशासनक अधिकारी लोकनि बहुत चिंतित रहथि । मुदा जयन्त अपन निर्णयपर अडिग छलाह।

“चाहे जान रहए की जाए । मुदा अपन निर्णयसँ हम नहि हटबा।” ओ ई बात बेरि-बेरि स्पष्ट कए देलाह ।

जयन्तक अनशन आ एहिसँ जुड़ल घटनाक्रमसँ अखबारक पन्ना भरल रहैत छल । कालीकान्तकेँ सेहो पता लगलनि। ओ सपरिवार लखनपुर पहुँचि गेलाह । हुनका संगे सएसँ बेसी लठैतसभ सेहो आएल । कालीकान्त ई सुनने रहथि जे कैक पुस्त पहिने हुनकर पूर्वज लखनपुरेमे रहैत छलाह । हुनको पूर्वजसभ जयन्तक पूर्वज द्वारा स्थापित पाठशालामे पढ़ल रहथि । आइ सद्यः ओ लखनपुर गाममे छलाह । अपन पूर्वजक गाममे गजबक आनंद लागि रहल छलनि ,मुदा गामक माहौलसँ

ओ ततबे दुखी छलाह । जयन्तक प्राण संकटमे देखि हुनकर समस्त परिवार आ मित्र मंडली परेसान छलाह । चंद्रिका कैकबेर जयन्तसँ गप करबाक प्रयस केलीह मुदा ओ मौनमे रहबाक कारणसँ किछु नहि बाजथि । चारू कात चिंता पसरि गेल छल । सरकारी महकमा सेहो परेसान छल । सभ समस्याक जड़ि सुधाकर बुझाइट छल । सभकेँ इच्छा रहैक जे हुनका पकड़ल जाए आ नौ-छौ कएल जाए। मुदा सुधाकर कहि नहि कतए निपत्ता भए गेल छल ।

जयन्तक अनशनक समाचार गाम-गाम पसरि गेल । पाठशालासँ पढ़ल विद्वानसभ समस्त प्रांतमे पसरल छलाह । काने-कान ई घटनाक समाचार सभठाम पसरि गेल । नित्यप्रति गाम-गामसँ लोकसभ लखनपुर मंदिरक लग-पास जमा होइत गेल । सभक मुँहमे एतबे बात रहैक-"आब की होएत? जयन्तक जान बचि सकत की ओ अनशन करिते चलि जेताह?

३५

जयन्तक अनशनक समाचार नागबाबाकेँ जहलमे पता चललनि । से सुनि ओहो अनशन शुरु कए देलनि । जेलर बाबू सहित तमाम आला अधिकारी हुनका बुझेबाक प्रयास केलक मुदा ओ एकहि बात कहथि-"जहिआ जयन्त अनशन तोड़ताह,तहिए हमहु अनशन तोड़ब । अहाँसभ हुनकासँ गप्प करू । हमरा किछु कहलासँ कोनो फएदा नहि होएत।"

जेलक अधिकारीसभक परेसानी बढि गेलैक मुदा किछु करब ओकरासभक हाथमे नहि रहैक । सभकेँ एतबे छगुन्ता रहैक जे नान्हिटा आदमी सुधाकर एतेक शक्तिशाली केना भए गेल जे थानासँ लए कए ऊपरधरिसभ ओकरे बात सुनैत अछि? जँ से नहि होइत तँ स्थिति एतेक खराब नहि भेल रहैत । सुधाकरक सामर्थ्यक रहस्य बुझब ककरो वशमे नहि रहि गेल छलैक । एतेक दिनसँ लखनपुरमे घमाचौकरी भए रहल अछि मुदा सुधाकरक किछु नहि बिगड़ल । ओ लापता अछि,से अछि आ जखन मोन हेतैक लठैतसभक संगे लाठी भजैत हाजिर भए जाएत । बाहरे प्रशासन! लगैत अछि जे बहुत ऊपरधरि सुधाकरक घालमेल चलि रहल अछि। ई बात दछिनबारिटोलक लोकसभकेँ किछु-किछु अंदाज

रहैक । तँ ओ सभ चुप रहैत छल । सुधाकरक इलाज तँ उतरबारिटोलक युवकसभ करएबला छल,ओ सभ हथिआर पकड़ि लेने छल मुदा जयन्त अड़ि गेलाह। ओ अनशनपर बैसि गेलाह । कहि नहि शांतिपूर्ण समाधानक हुनकर ई प्रयास कतए धरि पहुँचत?

ओमहर जहलमे नागबाबाक स्थिति नित्यप्रति खरापे होइत गेलनि । जेलरबाबू कतबो प्रयास केलक ओ अनशन करिते रहि गेलाह । हुनका अस्पतालमे लए जएबाक विमर्श भए रहल छल । संभवतः दोसर दिन प्रातभेने ओ सभ ओहि प्रयासमे लागि जाथि। ऊपर अधिकारीसभक आदेशक प्रतीक्षा भए रहल छल। मुदा से समय नहि आएल । ओही राति अचानक हुनका हृदयाघात भेलनि। कनीकाल ओ घीं-घीं केलाह आ सभ खतम । रातुक बात रहैक,सभ सुति रहल छल । ककरो ध्यान नहि गेलैक । नागबाबा एहि दुनिआसँ बिदा भए गेलाह । भोर भेने जेलक सिपाही हुनका पड़ल देखि उठाबक प्रयास केलक ।

मुदा ओ रहितथि तखन ने ..। सौँसे जेलमे फसाद भए गेल । नागबाबा नहि रहलाह । अखबार,रेडिओ सभपर समाचार आबए लागल । कनीकेकालमे ई समाचार लखनपुरधरि सेहो पहुँचि गेल।

-रबीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, बएस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अडेर डीह, मातृक: सिन्धिया ड्योढ़ी, वृति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०१७ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४. फसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देबाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम

आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास); प्रकाशन
वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)
२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)
२३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप
जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर
पठाउ।

३.५.कुमार मनोज कश्यप-अन्हार सऽ लड़ैत



कुमार मनोज कश्यप

१ टा लघुकथा

अन्हार सऽ लड़ैत

लॉन मे बैसल रौद सेकैत रही तखने गेटक कॉल-बेल बाजल। गेट खोललहुँ - एकटा उन्नैस-बीस बरिसक छौंड़ा ठाढ़। कऽल जोड़ि बाजल - 'सर ! आहाँ ओहि ठाम हमरा कोनो काज भेटि सकइयै ?'

- ' कोन काज?'

- ' जे भेटत.. धिया-पुता के ट्यूशन पढ़ेनाई सऽ लऽ कऽ शारीरिक श्रम .. सभ किछु!'

- 'हमरा लऽग एखन एहन कोनो काज अछि नहीं। आहाँ कतहु आर पुछियौ।'

- 'सर! आहाँ के कोनो परिचित!'

ओकरा पर दया आबि गेल। लागल जे निश्चये ई कोनो बेसी खगता मे अछि। तखने दोसर दिस मोन मे बिजलौका जकाँ चमकल जे आई काल्हि चोर सभ चोरि सऽ पहिने रेकी कऽ कऽ सभ जानकारी जुटा लैत छै... अपनत्व बढ़बैत छै आ आराम सऽ वारदात के अंजाम दैत छै। फेर

मोन मे आयल हाव-भाव आ चेहरा-मोहरा सऽ तऽ लुच्चा-लंपट नहिं लगैत अछि। नेपाली घर गेल अछि; कियै ने गाड़ी ताबत रोज एकरे सऽ धोआ ली एकरो दू पाई भऽ जेतै आ हमरा अपने गाड़ी साफ नहिं करऽ पड़त। गाड़ी धोबा काल हम ओतहि ठाढ़ रहबै तऽ ई एम्हर-ओम्हर ताक-झाँक नहिं कऽ सकत। बस एकरा अपन काज सऽ काज। यैह सोचि कहलियै - 'हमरा लऽग आन कोनो काज तऽ अछि नहिं। हँ, एखन नेपाली गाम गेल अछि ताबत आहाँ कऽ रऽ चाही तऽ हम अपन गाड़ी धोबा के काज आहाँ के दऽ सकैत छी" ओ सहर्ष तैयार भऽ गाड़ी धोलक आ काल्हि फेर भोरे एबाक बात कहि प्रणाम कऽ कऽ चलि गेल।

गाड़ी ओ बेस नीक जकाँ धोने छल.... रगड़ि-रगड़ि कऽ। एहन साफ सऽ तऽ नेपाली कहियो ने धोने हैत! हम गाड़ी के चारू कात घुमि कऽ देखऽ लगलहुँ। एकटा पोस्टकार्ड खसल भेटल। लिखल छलै - 'नीरा! एखन तक हमरा कोनो काज नहिं भेटऽ लै। काज भेटितै हम पाई पठेबाक जोगार करबौ। ताबे डॉक्टर-दवाई तऽ नहिं भऽ पेतौ; मुदा देसी-घरेलू दवाई सऽ माय के जीया कऽ रखनाई तोहर पैघ जिम्मेदारी छी। हिम्मत नहिं हारिहैं। भगवान संग छथुन। तोहर भैया - अमोल।'

हम ओहि चिट्ठी के हाथ मे लेने शून्य मे तकैत रहलहुँ आ फेर पर्स जेब मे रखैत पोस्ट ऑफिस दिस बिदा भऽ गेल रही ।

-कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति: भारत सरकार के उप-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टावर-4, टाइप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-१९)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम् ए, नैहर - खराजपुर, दरभङ्गा, सासुर - गोढ़ियारी (बलहा), वर्तमान निवास - राँची, झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग में बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँऽ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

अग्नि शिखा (भाग- १९)

पूर्व कथा:

राजा पुरुरवा उर्वशी सऽ विदा लऽ पृथ्वी पर वापस जाई के बात कहैत छथि। पुनः हुनका सऽ भेंट करवाक लेल अबई के वचन दऽ अमरावती में अपन निवास जाइत छथि।

आब आगू:

राजा पुरुरवा के स्वर्ग सँऽ भूमंडल पर आएल तीन मास बीत गेल छल। राज्य कार्य में पुरुरवाक मोन आब पहिले सन नहि लगैत छलनि। सदिखन हुनकर ध्यान उर्वशी पर लागल रहैत छलनि। कखनो-कखनो ओ विरह वेदना में व्याकुल भऽ जल बिनु मीन सन तड़पऽ लगैत छलथि, मुदा अतेक शीघ्र ओ स्वर्ग लोक कुना कऽ जा सकैत छलाह? भला कोन कारण देखबितैथ स्वर्ग लोक जयवाक ? एहेन कुनो कारण हुनका नहि भेटि रहल छलनि। देवेन्द्र के कुनो संदेश एखन धरि नहि आबि रहल छल। आब ओ कोन उपाय करथि उर्वशी सँऽ मिलन केर, हुनका नहि बूझना जाइत छलनि। उर्वशी के विरह के कारण ओ लगन

पूर्वक पृथ्वीक शासन व्यवस्था सम्हारवा में समर्थ नहि भऽ पाबि रहल छलाह।

राजा पुरुरवा एक दिन अपन राज प्रासाद में चुपचाप बैसल उर्वशी के ध्यान में निमग्न छलाह। ताहि समय राज्य ज्योतिषी के पदार्पण भेल। अचक्के हुनक दृष्टि पुरुरवाक सीधा राखल हथेली पर चलि गेलनि। कुतूहल वश ओ ध्यान पूर्वक पुरुरवाक हथेली के निरीक्षण करऽ लगलाह। प्रसन्नता हुनक मुख पर छलकि उठल। ओ प्रसन्न भय बाजि उठलाह -

"राजन् बुझना जाइत अछि आहाँ के जीवनसंगिनीक साथ अति शीघ्र भेटय बला अछि"।

राजा के मुख पर उदास सन मुस्कान प्रगट भेलनि फेर ओ गंभीर होइत राज ज्योतिषी सऽ पूछलथि -

"कतेक दिन में अपनेक बात सत्य होयत ब्राह्मण देव"?

"अधिकतम छःमास! मुदा एक गोट समस्या देखि रहल छी राजन्"!

"ओ कथि थिक देवता"?

"दांपत्य सुख बहुत कम अछि राजन् अपनेक हथेली में। आहाँ के पत्नी के वियोग में आधा उम्र बिताबय पड़त राजन्"।

राज ज्योतिषी केर बात सँऽ राजा के उत्साह समाप्त भय गेल। हुनका भरतमुनि केर श्रापक स्मरण आबि गेलनि। पुनः दुःखी भय गेलाह राजा पुरुरवा। ओ गुमसुम भऽ गेलथि। राज ज्योतिषी कक्ष में व्याप्त मौन के तोड़लथि -

"मुदा अपनेक जीवनसंगिनी कोनो साधारण रमणी नहि होयतीह राजन्"।

कुतूहल वश पुरुरवा पूछलथि - "फेर"?

"कुनो दिव्य नारीक योग अछि"।

पुरुरवा पुनः गंभीर भऽ गेलथि। हुनक मोन में उर्वशीक स्मरण तीव्र वेग सँऽ हिलकोर मारऽ लगलनि। मोन में टीस सन उठऽ लगलनि। मुदा अपन आंतरिक व्यथा के ओ संयम सँऽ नियंत्रित कऽ लेलथि। अपन व्यवहार सँऽ मोनक व्यथा प्रगट नहि होमय देलथि राज ज्योतिषी पर।

राज ज्योतिषी सँऽ एम्हर-ओम्हर के राज्य सँऽ संबंधित बात होमय लगलनि। पुरुरवा हां - हूं में अनमनायल भाव सँऽ जवाब दैत रहलथि।

हुनक ध्यान तऽ स्वर्ग लोक में बैसल अपन प्रेयसीक निकट पहुंचि गेल छलनि।

चरिम दिन इन्द्रक संवाद आयल। तीन दिन उपरान्त विशेष कार्य वश देव सभा होमय के छल। ओहि सभा में पुरुरवाक उपस्थिति आवश्यक छल, स्वर्गक अर्ध-शासक होयवाक कारण। भला हुनक अनुपस्थिति में कुनो विशेष कार्यवाही कोना भय सकैत छल ?

पुरुरवा के उपयुक्त अवसर भेट गेल उर्वशी सँऽ भेंट करवाक। ओ शीघ्र स्वर्ग जयवाक तैयारी करऽ लगलाह। तत्पश्चात ओ विदा भेलाह अमरपुर के दिशा में। रथ हुनका गंतव्य पथ पर तीव्र गति सऽ लऽ गेलनि। स्वर्ग में पहुंचि ओ सर्वप्रथम देवेंद्र सँऽ भेंट केलथि, तत्पश्चात नंदनकानन में जाकय उर्वशी सँऽ भेंट कय अपन विरह वेदना के शांत कय हृदय तृप्त केलथि।

तत्पश्चात कतेक दिन तक देव सभा भेल जाहि में राजा सम्मिलित भय कार्य निष्पादन केलथि। सभा समाप्त भेलाक उपरांत पुरुरवा के पुनः पृथ्वी पर आबय पड़लनि।

आब ओ प्रत्येक मास स्वर्ग लोक जाय लगलाह। कारण स्वयं इन्द्र के कहनाम छल -

'स्वर्गक शासन व्यवस्था के संचालन में राजा पुरुरवा के अनुमति एवं सहयोग आवश्यक हैत'।

स्वर्ग लोक जाय पर ओ उर्वशी सँऽ भेंट अवश्य करथि। दिन प्रतिदिन उर्वशी-पुरुरवाक प्रेम प्रगाढ़ सँऽ प्रगाढ़तम भेल गेल। प्रेमाग्नि के ज्वाला दुनू के हृदय में तीव्र सँऽ तीव्रतम होइत गेल।

- -

राजा पुरुरवाक रथ वायु वेग सँऽ आकाश मार्ग सऽ चलल जा रहल छल। पुरुरवा ओहि रथ में सवार छलाह। हुनकर मोन अत्यंत प्रसन्न छलनि। मोन में उछाह छलनि। "पिया मिलन केर आस" - मनुष्य के स्वर्ग तक झीकि लऽ जाइत अछि! राजा पुरुरवा तऽ ओहुना स्वर्गक शासन के अर्ध अधिपति छलाह।

मंद सुगंधित पवन मन-प्राण के शीतलता प्रदान कऽ रहल छल। आकाश में छिटपुट बादल एम्हर-ओम्हर घूमि रहल छल। एहि कारण पृथ्वी हुनका धुंध में लपटायल मात्र एक गोला दृष्टिगत भय रहल छल। ओ प्रसन्नता में

किछु-किछु गुनगुनाइत जा रहल छलाह । बहुत रास मूल्यवान उपहार हुनक रथ में भरल पड़ल छल। उर्वशी के देवाक वास्ते बड़ हुलास सँऽ ओ ई सभ उपहार तैयार करबौने छलाह। रथ तीव्र गति सँऽ अपन मार्ग पर चलैत रहल।

आब रथ दूसर दिशा में घूमि गेल । किछु काल धरि ओहि दिशा में चलैत रहल । राजा पुरुरवा रथ के गति तीव्र केलनि। ओ शीघ्र! अति शीघ्र अपन गंतव्य पर पहुंचि जाय के चाहैत रहथि । दसो दिशा में नीरवता व्याप्त छल। अचक्के हुनक दृष्टि दक्षिण दिशा में घूमि गेलनि । ओम्हर किछु रथ उरैत हुनका दृष्टिगोचर भेल । राजा पुरुरवा आश्चर्यचकित भऽ गेलाह। 'ई रथ तऽ दानव निर्मित लगैत अछि ' - राजा पुरुरवा मोनहि मोन सोचलनि।

'मुदा दानव के आकाश मार्ग में तऽ होयवाक नहि चाही' - मोन में सोचैत राजा पुरुरवा अपन रथ ओहि दिशा में घुमा लेलनि। पुरुरवा के रथ आब पूर्व दृष्ट दानव निर्मित रथ के पाछू लागि गेल। आब अनेक रथ हुनका देखवा में आबय लागल, जे पंक्ति बद्ध भय चलि रहल छल। पुरुरवा के मोन में आशंका होमय लागल -

'ई तऽ दानव के रथ अछि, अवश्य एहि सभ रथ के लऽ कऽ स्वर्ग लोक सऽ दानव आबि रहल होयत'- सोचलथि पुरुरवा। रथ आब अत्यंत निकट पहुंचि गेल छल। ओ अगिलका रथ के रुकवा हेतु तीव्र स्वर में आवाज लगौलथि, मुदा ओ सभ आओर तीव्र गति सँऽ भागऽ लागल। ई देखि राजा के अनहोनी के आशंका होमय लागल।

पुरुरवा अपन रथ के गति आओर तीव्र कय दानवक रथ सँऽ आगु निकालि लेलथि। आब हुनक दृष्टि एक रथ सँऽ टकरायल। अरे! ई की भेल ! ओहि रथ में तऽ राजा के अपन प्रेयसी उर्वशी छलीह। संगहि छलीह उर्वशीक प्रिय सखी चित्रलेखा! राजा के एक झलक उर्वशी के भेट गेलनि! राजा के झलक पाबि एक करुण चित्कार निकलि पड़ल उर्वशी के कंठ सँऽ अपन रक्षा हेतु!

ओह! दानव राज केशि चोर सन स्वर्गक दुनू अप्सरा के हरण कय पड़ा रहल अछि! हठात् पुरुरवा के मस्तिष्क में ई बात बिजली सन चमकि उठल ! राजा झट अपन तलवार निकालि लेलथि! ओहि रथ सऽ पहिलहि तलवार निकलि गेल छल। दुनू के मध्य युद्ध होमय लागल। देखितहि-

देखइत में आग्नेयास्त्र के प्रयोग करऽ लागल केशि। किछु क्षण पुरुरवा किंकर्तव्यविमूढ सन भऽ गेलाह। केशि के द्वारा आग्नेयास्त्रक प्रयोग करवा सँऽ क्षुब्ध भऽ राजा पुरुरवा अपन तलवार फेंकि शीघ्र दिव्य अस्त्रक प्रयोग करऽ लगलथि। आब दुनू के मध्य घनघोर युद्ध होमय लागल । एहि अप्रत्याशित आक्रमण सऽ ओना तऽ दानवराज किछु घबड़ा गेल छल मुदा दानवक हौसला बुलंद छल,कारण शत्रु नितांत असगर छल। घमासान युद्ध होमय लागल।

पुरुरवा एहि युद्ध सँऽ कनिको विचलित नहि भेलथि। ओ तऽ क्रोध सऽ उन्मत्त छलाह। आखिर दानवराज केशि हुनक प्रियतमा पर अपन कुदृष्टि रखने छल! अपन प्रियतमा पर उठय वला हाथ के कटवा हेतु ओ अपन पूर्ण शक्ति सँऽ युद्ध कऽ रहल छलाह। अनेकों राक्षस अपन प्राण गंवाओल । आब बहुत कम दानव दृष्टिगोचर भऽ रहल छल। पुरुरवा के उत्साह एवं युद्ध के गति अत्यंत तीव्र वेग में आबि गेल छल। राजा आब मायास्त्र के प्रयोग केलथि। दानव के अनेकों पुरुरवा दृष्टिगोचर होमय लगलाह । ओ सभ वास्तविक पुरुरवा के चिन्हित नहि कय सकलाह,आ वास्तविक पुरुरवा के छोड़ि कऽ अन्य छाया पुरुरवा सँऽ युद्धरत भय गेलथि ।

आब राजा अपन बरछी निकालि लेलथि आ इकर प्रयोग केशि पर केलथि। ओकर छाती सऽ रक्त के धार झरना सन झहड़ लागल। केशि जतेक बेरि तलवारक वार कएल ओ पुरुरवा के कवचबद्ध बाहु सऽ टकराकऽ वायु में विलीन होमय लागला । आब केशि मूर्छित भय रथ में खसि पड़ल।

अपन राजा के मूर्छित पाबि दानव गण भयानक हुंकार भरय लागल। ओ सभ पुरुरवा के अखन धरि रथ तक आबै सऽ रोकि रहल छल। पुनः आग्नेयास्त्र के प्रयोग राजा पुरुरवा द्वारा कएल गेल । आब जतेक गनल-चुनल दानव गण बचल छलाह ओ सभ वायुमंडल में नर्तन करैत खसऽ लागल।

पुरुरवा अपन रथ सऽ उछाल मारि केशि के रथ में प्रविष्ट भय गेलथि, एवं केशि के रथ सऽ निकालि भूमंडल के दिशा में फेंक देलथि। पुनः ओकर रथ सऽ उर्वशी एवं चित्रलेखा के अपन रथ के दिशा में उछालि देलथि। ओ दुनू सखी आश्वस्त भय रथ में बैस गेली। आब पुरुरवा स्वयं

एक उछाल भरल आ अपन रथ में प्रविष्ट भऽ गेलाह। रथ पुनः चलनाई प्रारंभ कएल। आब ओ विपरीत दिशा में (स्वर्गक दिशा में) जा रहल छल ।

उर्वशी अपन प्रियतम के पाबि भाव-विभोर भऽ रहल छलीह। हुनक प्रसन्नता के कुनो सीमा नहि छल। यह स्थिति पुरुरवा के छल । उर्वशी के सुरक्षित अपन रथ में आनि राजा अति प्रसन्न छलाह । प्रसन्न मुख हँसइत राजा कहलथि -

"यदि हम सही चिन्हि रहल छी तऽ आहाँ सम्भवतः चित्रलेखा थिकहुँ। आहाँ दुनू सखी पाताल लोकक यात्रा पर भ्रमण के वास्ते जा रहल छलहुँ? हँ ! स्वर्ग लोक में आब आहाँ सभ के देखऽ के लेल किछु नहि बचल छल" ?

चित्रलेखा - "राजन् आहाँ के हंसी सूझैत अछि,आ हम सभ अत्यंत भयग्रस्त भऽ गेल छलहुँ" ।

"ई चोर कोना पकड़लक आहाँ दुनू सखी के" ?

"ई हमरा नहि उर्वशी सऽ पूछब तऽ ठीक रहत। किएक सखी!तों चुप किएक छह, राजन् के प्रश्न के जवाब दहुन" !

"हम!हम!हम कहियनि? हँ राजन् ! वास्तव में दोष हमर छल" ।

"हम यह तऽ पूछैत छी! ओकर हाथ में कोना पड़लहुँ आहाँ दुनू" ?

उर्वशी के मधुर स्वर गुंजित होमय लागल। पुरुरवा के कर्ण गह्वर में हुनक आवाज अमृतक बून्द सन टप-टप टपकऽ लागल। ओ निरंतर अपन दृष्टि उर्वशी पर जमौने छलाह । उर्वशी राजा के निरंतर अपन मुख के निहारैत देखि लज्जा वश बीच-बीचमें अपन आँखि के पलक के पर्दा सऽ झाँपि लेथि। वातावरण में उर्वशी के आवाज गुंजित भऽ रहल छल,आ राजा हुनक मधुर स्वर सुनि अपन सुध-बुध बिसारने जा रहल छलाह -

"अपन कक्ष में बैसल -बैसल जखनि हमर मोन कुण्ठित होमय लागल,हम चित्रलेखा लग पहुंचलहुँ। ओकरा नींद सँ जगाओल,पुनः भ्रमण करवाक योजना बनाओल" ।

"वाह कतेक नीक बात ! जवाब नहि आहाँ के सौंदर्यमयी देवी-गण!अर्ध रात्रि-प्रहर आ घूमऽ के शौक! आ उहो केकर! सुंदरता के देवी-गण के! वाह-वाह! की कहब ! की आहाँ सभ के ज्ञात नहि,कि जे केओ देखत आहाँ सभ के। आहाँ के सुंदरता ओकर तऽ प्राण हरण कऽ लेत। अगर

ओ किछु शक्ति राखैबला होयत तखन बलपूर्वक आहाँ के उठा कऽ अपन शयनागार के श्रृंगार बनाओत" ।

"जाऊ! छोड़ि दिय! हम नहि बतायब आब आगु किछुओ । आहाँ तऽ हमर हंसी उड़ाबय लगलहुँ।आहाँ हमरा बना रहल छी" । उर्वशी हृदय में प्रसन्न होइत मुदा ऊपर सऽ मधुर क्रोध देखाबैत बजलीह -

"नहि-नहि आहाँ कहु ने। आहाँ के बनेवाक सामर्थ्य तऽ ब्रह्मा जी के नहि छलनि,तखन हमरा कोन हिम्मत जे आहाँ के बनायब" ?

"कहि दहुन चित्रलेखा आब तों बता दहुन,हम नहि बाजब किछु" - उर्वशी मान देखाबैत बजलीह ।

"नहि गे दाई हम नहि कहबई किछुओ ! हम दू गोटे के बीच बाजऽ वाली के छी" - चित्रलेखा मुस्काइत कहलीह ।

"की हम आ तों अलग-अलग श्रेणी के थिकहुँ" ?

"अवश्य! पहिले नहि छलहुँ,मुदा आब भऽ गेलहुँ"।

"भला से कोना" !

"एकर प्रत्यक्ष प्रमाण साक्षात राजा पुरुरवा छथि। ताहू सऽ बढि कऽ आहाँ दुनू के एकहि सुर में धड़कैत हृदय अछि जे,एकहि कथा कहि रहल अछि " ।

"अच्छा आब हम बुझलहुँ,अहुँ उर्वशी के हृदय के धड़कन चिन्हि गेलहुँ अछि! "

राजा पुरुरवा मुस्काइत बाजि उठलाह।

"हँ!ओ अपन धड़कन संग एकहि नाम लैत रहैत छैक,आ ओ नाम आहाँक थिक राजन्" ।

चित्रलेखा के मुख सँ ई बात सुनि उर्वशी गंभीर भय गेलीह।

घबड़ाउ जूनि सखी,हम तऽ आहाँ के राजदार थिकहुँ। आहाँ के ई बात कुनो तेसर के कान तक नहि पहुंचत" ।

,"हम तऽ सुनिये लेलहुँ ! नहि की! तेसर कान तक तऽ बात जा पहुंचल" ।

- पुरुरवा हंसैत-हंसैत बजलाह।

"कथि सुनलहुँ आहाँ" ? - उर्वशी पूछलथि।

"वैह....वैह.....कि.....आहाँ.....पुरुरवा के मुख सऽ आवाज नहि निकलि पाओल घबराहट में ।

"आय....आय.....आय..... " -

अपन जीह निकालि कऽ नकल उतारऽ लगलीह उर्वशी पुरुरवा के। ई देखि चित्रलेखा आ पुरुरवा दुनू गोटे हंसऽ लग लथि । आब उर्वशी संकोच वश एंव लज्जा सऽ अपन दृष्टि झुका लेलथि। किछु देर तक मौन व्याप्त रहल हुनका तीनू के मध्य,पुनः चित्रलेखा बाजलथि -

"स्वर्ग लोक तऽ संकट सऽ पुनः घेरा गेल बुझाईत अछि। आब तऽ हमर सबहक प्रतिष्ठा खतरा में पड़ल अछि" ।

"नहि आब एहेन किछु नहि होयत,किएक तऽ उत्पातक जड़इ केशि मरि गेल अछि" । - राजा पुरुरवा हुनका दुनू के आश्वस्त केलथि ।

चित्रलेखा मौन भऽ गेलीह । उर्वशी मौन भंग केलथि -

"ई दुर्घटना मात्र आहाँ के कारण भेल " ।

"की! कथि कहलहुँ ! हम थिकहुँ एकर कारण! हमरा कारण भेल ई दुर्घटना ! ई कोना कहि सकैत छी आहाँ" ? - पुरुरवा पूछलथि।

"हँ! हमर हृदय के चोरी केलहुँ आहाँ!हम ओकर तलाश करैत पहुंचलहुँ उद्यान में,आ ओतहि ई दुर्घटना भऽ गेल " - उर्वशीक एहि बात पर चित्रलेखा आ पुरुरवा दुनू हंसऽ लगलथि।

"आहाँ अपन हृदय के विषय में चित्रलेखा सऽ पूछि लितहुँ तऽ चोरक नाम ई बता दितथि,तखन आहाँ के चोर के तलाश करवा हेतु उद्यान में जाय के आवश्यकता नहि होइत" ।

पुनः एक बेर सम्मिलित ठहाका पसरि गेल। एहि प्रकार सऽ हंसी-दिल्लीगी सऽ परिपूर्ण बात करैत-करैत ओ आनंद पूर्वक कखनि आ कोना अमरावती पहुंचि गेलथि किनको ज्ञात नहि भऽ सकलनि। किछु काल पूर्व के दुर्घटना के ओ सभ आनंद मय वातावरण में बिसरि गेल छलाह।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

३.७.संतोष कुमार राय 'बटोही' मंगरौना (धारावाहिक उपन्यास १२म खेप)



संतोष कुमार राय 'बटोही'

'मंगरौना' (धारावाहिक उपन्यास- बारहम खेप)

आब हम थाकि गेलहुँ अछि। दौड़ैत-दौड़ैत बेदम भऽ गेलहुँ हम। आब हमरा सँ नहि होयत । बुझना जायत अछि- पाएर टुटि गेल। नान्हिटा सँ दौड़ रहल छी। अखनो धरि बटोही बन छी। बटोही नाम आब हमरा नीक नहि लागि रहल अछि। 2002 मे हमर मित्र आओर गुरुजी डॉ० किशन कारीगर हमरा ई नाम देलाथि , परञ्च आब बुझना जायत अछि ई नाम राखि कऽ हम पैघ गलती केलहुँ अछि। आब कतेक दिवस धरि दौड़ैत रहू ? मोन थाकि गेल अछि। बटोही आब नहि रहब हम।

किशनजी केर प्रति हम आभारी छी। वो मंगरौना गामक एकटा पैघ विद्वान छथि। हालिया पर हुनकर जिनगी छन्हि। रेलवे केर नौकरी सँ वो रिजाइन दऽ देलथिन्ह। हमरा विचारे ई हिनकर पैघ गलती छलन्हि। पत्रकारिता सँ हिनका बड़ प्रेम छलन्हि। देशक राजधानी दिल्ली में करिअर बनबै केँ कोशिश केलाथि , परञ्च मासकम्युनिकेशन मे डिग्री रहलाक बादो बेसी दिन धरि वो सक्सेस नहि भेलाथि। रेडियो जर्नलिज्म

मे पीजी डिप्लोमा छन्हि। बीएड आओर एमएड छथि । पीएच-डी केर डिग्री छन्हि, परञ्च हुनकर विचार किनको सँ नहि मिलैत छन्हि। वो मंगरौना गामक मार्क्स छथि।

किछु शुरुआत तँ करैत छथि, परञ्च वो काज मँझधार मे फँसि जायत छन्हि। संस्था आओर संस्थान बनेबाक हिनका सँ कियो सीखिए सकैत छी। आजु धरि ओ अपन सिद्धांत पर अडिग छथि। अपने आप केँ घर मे बन्न केने रहैत छथि। किनको सँ मेलजोल नहि। गामक विद्वता केर ई गति हमरा बटोही बनौने अछि।

ई गौड़गामा गाम छियैय। जनता हरिहर दत्त उच्च विद्यालय, गौड़गामा सँ 1999 मे वो द्वितीय श्रेणी सँ उत्तीर्ण भेलाह अछि। हमरा सँ ओ एक क्लास सिनियर छथि। हरेराम , बासुदेव, आनंद, अजय, अमर ठाकुर आओर लालबोध ई सभ कियो एक बैच केर विद्यार्थी छथि।

लालबोध जी केर दिल्ली एनसीआर मे अपन एम्ब्रैडरी केर फैक्ट्री छन्हि। अपन मशीन बैठौने छथि। ओ बी ए एम ए करबा मे विश्वास नहि केलाथि। डि जा इन में कोर्स कऽ के बिजनेस करबाक हिनकर मोन भेलन्हि। नहु-नहु गति सँ ओ आगा बढ़ि रहल छथि। दोसर केर फैक्ट्री मे डिजाइनर केर नौकरी छोड़लाक बाद पहिने एकटा कपड़ा मे जड़ी काज केर मशीन गड्ढा कॉलोनी मे लगौलाथि। आब वो दोसर मशीन लगौलाथि। मोन हरखित भेल। सुभाष केँ शादी केर रिसेप्शन मे दिल्ली मे होटल मे मिलल छलाथि। इ मंगरौना गामक नाम कऽ रहल छथि।

गरीब आओर माय-बापक मुइलाक बाद की हाल होएत छै से हरेराम केर जिनगी सँ बुझि सकैत छी। तीनि भैयारी मे हरेराम सबसँ छोट छथि। सबसँ नम्बर आओर माँझिल कोलकाता मे स्थापित भऽ गेलाह। हरेराम पढ़बा मे नीक रहैत, परञ्च गरीबी प्रतिभा केँ मारि देलकन्हि। बंबई मे काज करबा लेल गेल छलाथि। एकटा आँखि पहिनेह भगवान लऽ लेने छलन्हि। किछु घटना मे ततेक ने मारि लगलैन्ह जे हिनकर शरीर बेदम भऽ गेलन्हि। आब ओ घर ओगरने छथि। मजूरी करके जिनगी कटैत

छथि।

आनंद केर जिनगी ओना कोना भ गेलैन्ह, नहि पता अछि। कॉमर्स राखि कऽ वो दरभंगा मे अल्लाह मोहल्ला मे गनौर भगत लॉज मे वो पढ़ैत छलाह। कॉमर्स केर नीक विद्यार्थी भऽ गेल छलाह, परञ्च हुनका की भेलन्हि ? ओ दिमागी रूपेण बीमार छथि। राँची सँ सेहो ईलाज भेलन्हि , परञ्च वो ठीक नहि भेलाह। लोक कहैत छै जे ठाकुरजी केँ शिष्यत्व ग्रहण केलाक बाद ओ बेसी सोचऽ लगलथिन्ह , तँ बताह भऽ गेलाह। भगवान जानै पता नहि हुनका की भेलन्हि... !!

आनंदजी भरि गाम घुमि अबैत छथि आओर अपन दलान पर आबि कऽ बैस जायत छथि। ई हिनकर डेली केर रूटिन छियैन्ह। एक दिन दुर्गा स्थान मे हम पढ़बैत रही, ओ आबि कऽ कापी पर किछु लिखि देलथिन्ह । विद्यार्थी सभ डेरा गेल छल, परञ्च वो एकटा भजन केर मुखड़ा लिखने छलाथि।

हम पुछलियैन्ह- की समाचार अछि आनंदजी ?

वो किछु नहि बजलाह। मुँह बिचकबैत चलि गेलाथि। गामक प्रतिभा केर अइ प्रकारेण दुर्गति होयत देखि कऽ किनको क्रेज फाटि जायत। आनंद जी आब जिनगीभरि ओहिना रहताह। हुनका सँ छोट भाई केँ दूटा बालक भेलैन्ह, परञ्च वो ओहिना रहि गेलाह।

बासुदेव जी गणित विषय सँ पीएच-डी केने छथि। प्लस टू विद्यालय बायोप्सी मे शिक्षक भेलाह अछि। दुर्गा पूजा समिति केर कोषाध्यक्ष छथि। 2011 सँ वो अइ पद केँ संभालने छथि। हिनकर ब्याह झंडाबरदार भेल रहैन्ह। वो कहैत छथि घर मे कियो उड़ि-बीड़ि लगौने अंछि। भगता सभ लग दौड़ लगाबैत छथिन्ह। हुनकर कनिया दरभंगा मे अंग्रेज रहैत छथि ।ओ अंग्रेज मंगरौना मे रहैत छथि। वो फेर ब्याह नहि करताह आओर हुनकर कनिया सेहो अखन धरि दोसर ब्याह नहि केलीहए। वो अपन जिनगी केँ जेना माँ दुर्गा केँ अर्पण कऽ देलथिन्ह।

मंगरौना गाम मे बासुदेव जी ओहिना रैह जेताह मने। हिम्मत कऽके पुछलियैन्ह - की दोसर ब्याह नहि करब सर ? हुनकर आँखि लाल-पीयर भऽ गेलैन्ह। ओ कहलाथि - अइ गप केँ चर्चा नहि उठायब। जिनगी मे एकटा ब्याह केलहुँ। आब दोसर नहि करब। देखैत नहि छियैय घर मे कियो आगि लगौने अछि। ई आगि लगौल छियैय कि मोन वहम ?

आनंद आओर जनार्दन के जोड़ी गाम मे खूब जमैत छलैह। गाम मे 'चुदुर-खटमल' शब्द केर प्रचार करबा मे ई दुनू गोटे के हाथ छलैन्ह। जनार्दन पढ़वा मे सिलौट छलाह। वो तीनि साल पहला वर्ग मे रहलाह अछि। तखनो किताब पढ़ल नहि भेलैन्ह। तखन हारि कऽ माहटर साहब दूसरा मे हिनकर नाम आगा बढ़ा देलथिन्ह। कहुना-कहुना केँ आठ क्लास तक पढ़ि कऽ कोलकता चलि गेल। हिनकर बाबूजी कोलकता कालीघाट मे पुलिस मेस मे खाना खेबाक लेल नाम लिखा देलथिन्ह आओर चकरबड़िया मे मोटर गाड़ी ट्रेनिंग सेंटर मे ड्राइवर बनवाक लेल नाम लिख देलथिन्ह। लाइसेंस तऽ टाका दऽके बनि गेलै , परञ्च बाबूजी मुइला के बादो धरि हुनका गाड़ी चलौने सीखल नहि भेलैन्ह। हुनकर बेटी पढ़बा मे नीक अछि, परञ्च गरीबी ओकरा आगा नहि पढ़ऽ देतै। वो शंकरामाइसिनक पाउडर फँकवा मे आगू छथि।

गाम मे बताहक संख्या बढ़ि रहल अछि। दारू गाम मे बिका रहल अछि। भांग, गाजा , दारू पीबि कऽ जवनका सभ अपन कपाड़ मे कारिख लेपने जायत अछि। नशा के चक्कर मे पूरा गाम बर्बाद भऽ रहल अछि।

-संतोष कुमार राय 'बटोही', ग्राम-मंगरौना

ऐ रचनापर

अपन

मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

३.८. आचार्य रामानन्द मण्डल-जाति बनाम जातिवाद/ धरम संकट मुक्त



आचार्य रामानंद मंडल

जाति बनाम जातिवाद/ धरम संकट मुक्त

१

जाति बनाम जातिवाद

बिहार जाति आधारित गणना (The Bihar caste base Survey) पर उच्च न्यायालय, पटना तत्काल प्रभाव से रोक लगा देलक हय।कुछ लोग अइ आधार पर याचिका दायर कैले रहल हय कि अइसे जातीय विषमता बढत आ दोसर इ कि जनगणना कराबे के अधिकारी केन्द्र सरकार हय।जौकि बिहार सरकार के कहना हय कि इ जनगणना न हय बल्कि एकटा सर्वे हय।आ सर्वे करे के अधिकारी राज्य सरकार होइ हय।

पहिले उच्च न्यायालय गणना पर रोक लगाबे सं इंकार क देले रहय। तब याचिका कर्ता सर्वोच्च न्यायालय मे गेल। सर्वोच्च न्यायालय याचिका कर्ता के उच्च न्यायालय मे जाय के आदेश देइत उच्च न्यायालय के आदेश देलन कि तीन दिन के अंदर अंतरिम फैसला करय। तैय आदेश के आलोक में उच्च न्यायालय अप्पन अंतरिम आदेश मे जाति गत गणना जुलाई -२३ तक रोक लगा देलक। अगला सुनवाई जुलाई में निर्धारित हय।

राज्य सरकार के कहना हय कि लोक कल्याणकारी योजना के लेल सांख्यिकी के आवश्यकता होइ हय। केते बार न्यायालयो एकर जानकारी मांगै छय। एकरा अभाव मे जन कल्याणकारी योजना के लागू करे मे व्यवधान होइ हय।

मंडल आयोग के लागू करे मे दिक्कत भेल रहय। वोइ समय मे १९३१ मे भेल रहय जाति गणना के डाटा के आधार पर पिछड़ा वर्ग के २७ प्रतिशत आरक्षण शिक्षा आ सेवा क्षेत्र मे देल गेलय। अनुसूचित जाति आ अनुसूचित जन जाति के जनगणना करे के प्रावधान संविधान में हय। लेकिन सामान्य वर्ग आ पिछड़ा वर्ग के जाति गणना के प्रावधान न हय। त जाति गणना के लेल जनकल्याण के लेल संविधान संशोधन करनाइ आवश्यक होइ जाय छैय। सामान्य वर्ग के बिना जाति गत डाटा के आर्थिक आधार पर १० प्रतिशत आर्थिक आधार पर आरक्षण भेंट गेल। जौकि संविधान मे आर्थिक आधार पर आरक्षण देवे के प्रावधान न हय। संविधान मे केवल सामाजिक आ शैक्षणिक पिछड़ापन के आधार पर शिक्षा आ सेवा क्षेत्र मे आरक्षण देवय के प्रावधान हय।

जौ समाज मे जाति हय त जाति के गणना आवश्यकता हय। तबे वोकर कल्याण के लेल आनुपातिक योजना बनायल जा सकल हय। हर जगह धर्म आ जाति के कालम भरल जाइ हय। लेकिन जौ गिनती के बात होइ हय त एकर अल्पसंख्यक जाति एकर विरोध करय हय। असल मे गणना के प्रजातंत्र में महत्व होइ हय आ वोइ गिनती से घबराइ हय। लोग अप्पन रोटी-बेटी के संबंध अप्पन जाति मे करय हय। हर जाति के

अप्पन कल्चर हय। हर जाति के संघ-संघठन हय। संगठन त अंतरराष्ट्रीय स्तर तक बनऐलय हय।जातिवाद खूब करत परंतु जाति से घबरायत।कहत कि सामाजिक समरसता हय।आइयो समाज मे जातीय विभाजन आ विमषता हय। जातिगत विषमता बनल रहय अइ लेल जाति आधारित सर्वे के विरोध कैल जा रहल हय। माननीय उच्च न्यायालय के सभ तथ्य पर विचार करे के आवश्यकता हय।असल मे इ जाति बनाम जातिवाद के लड़ाई हय।

२

धरम संकट मुक्त

राजेश्वर प्रताप प्रतापगढ़ के पूर्व जमींदार रहलन।हुनका तीन सैय बिघा जमीन रहे।लम्बा चौड़ा दूमंजिला हबेली।दूरा पर दू गो हाथी,दूगो घोड़ा,दस जोड़ा बैल,चार गो भैसी आ चार गो गाय रहे।तहिना नौकर नौकरानी ,टहलू-टहलनी, गोबर कढनी रहे।हर जोते के लेल हरबाह, माल जाल के देखभाल लेल नौकर,खेती करे लेल मजदूर-मजदूरिन आ जेठरैयत रहे।केस मुकदमा देखे लेल मैनेजर। हाथी के लेल महावत,घोड़ा के लेल सहसवान, फिटिंग गाड़ी के लेल कोचवान, बैलगाड़ी के लेल बहलबान आ एगो जीप के लेल ड्राइवर रहे।

पच्चीस बरख के राजेश्वर प्रताप शादी सुदा रहे।घरबाली मृनालिनी भी रामगढ़ के जमींदार सूर्य प्रताप के एकलौती बेटी रहे। बाइस बरस के मृनालिनी पांचवां तक पढल रहे। साढे पांच फीट ,नाक नक्श आ शरीर के कटिंग ठीक रहे। लेकिन रंग से मद्धिम रहे।माने कि श्यामला रहे। स्नातक राजेश्वर प्रताप अपने गोर भुराक आ लगभग छह फीट के बांका जवान रहे।करिया मुंछ हुनका जवानी में चार चांद लगाबे।दूनू अपन जबानी में गौंता लगबैत पारिवारिक जीवन जीयत रहे।

एक दिन राजेश्वर प्रताप के नजर अपन गोबर कढनी दलित बिधबा कोसलिया के एकलौती बेटी रनिया पर परल।रनिया वोइ दिन अपना बिमार मतारी के बदले गोबर काढे आयल रहे। रनिया खूब सुन्नर

रहे। अठारह बरस के रनिया के देखते राजेश्वर प्रताप के ठकमूर्गी लाग गेल। माने कि देखते रह गेल। कनिका देर के बाद राजेश्वर प्रताप बोललन-तू त कोसलिया के बटी छे न। रनिया बोललक-जी। राजेश्वर प्रताप बोललन-बहुत दिन के बाद देखलिउ हए। कंहा रहैत रहलैय हए। रनिया बोललक-हम अपना मामा इंहा रहैत रहली हए हमर नानी बिमार रहैत रहल हए। नानी के सेवा लेल मामा बुला ले रहल हए आबि हमर नानी मर गेल। तैइला आबि हम इंहे रहब। आइ हमरा माय के बुखार लागल हए तैइला काम करे हमही आ गेली हए।

इ बात सुनके राजेश्वर प्रताप कहलन-हं। माय के आराम करे दे आ काम करे तू ही आ। आ राजेश्वर प्रताप माल जाल के घर देखैत हवेली के ओर चल गेलन।

राजेश्वर प्रताप हबेली में त चल अयलन।

लेकिन मन मालजाल के घर में रह गेल। दिल रनिया मे अटक गेल। राजेश्वर प्रताप के रात के नीन उड़ गेल। रात में एक बार राजेश्वर प्रताप के मृनालिनी बोललक-कि बात आइ नीन न अबैय कि।

राजेश्वर प्रताप आंख मुलने कहलन-कोनो बात न। नीन आ रहल हए कहके पहिले बार झूठ बोललन।

राजेश्वर प्रताप केहुना क के रात बितैलन। माने कि रनिया के इंतजार करैत रहलन।

रनिया गोबर काढे सात बजे सुबह में आयल। उ रहरी के खरहरा से मालजाल के घर खहरैत रहे। राजेश्वर प्रताप भी मालजाल के घर के मुयैना करे के बहाने आ गेलन। रनिया थोड़ा सकपकायल। फेर रनिया अपना ओढ़नी के समाहर लक जे हरबरायला के कारन नीचा गिर गेल रहे।

राजेश्वर प्रताप बोललन-माय के कि हालत हौउ। बुखार कम भेलैइ कि न। रनिया बोललक-न। अभी हाथ-मथा बरा तपत हए। राधा किसुन

डागडर के दबा चलै हए। राजेश्वर प्रताप बोललन-अच्छे इ ले एक सैय रूपया आ माय के दे दिहे आ कहिये मालिक दबाइ ला देलथुन हए।

रनिया घरे गेल आ माय के एक सैय रूपया देलक आ कहलक कि मालिक दबाइ ला देलथुन हए कौसलिया बोललक-मालिक के हमरा सभ पर धियान रहै छैय।

रनिया नित दिन काम करे आबे लागल। राजेश्वर प्रताप भी नित दिन रनिया से मिले लागल। कहियो रनिया के देर हो जाय त राजेश्वर प्रताप ब्याकुल हो जाय। कहियो राजेश्वर प्रताप के देर हो जाय त रनिया ब्याकुल हो जाय। माने के ब्याकुलता दोनों ओर रहे। माने कि इ प्रेम के आहट रहे। राजेश्वर प्रताप भी हबेली के ओर चल गेलन।

रनिया काम के अपना घर चल गेल। रनिया अपना माय के कुछ न कहलक। फेर रनिया काम करे आयल। राजेश्वर प्रताप भी आ गेलन। राजेश्वर प्रताप पुछलन-माय के कि हाल चाल हौउ। रनिया कहलक-धीरे धीरे सुधार हो रहल हैय।

राजेश्वर प्रताप हबेली के ओर चल गेलन। आ रनिया अपना घरे।

रनिया फेर सबेरे काम करे आयल। राजेश्वर प्रताप भी आ गेलन। राजेश्वर प्रताप रनिया से वोकरा माय के हाल चाल पूछलन। रनिया बतैलक कि माय के हाल चाल ठीक हो रहल हए। रनिया के राजेश्वर प्रताप के सहानुभूति आ व्यग्रता प्रेम के ओर बढ़े लागल

तहिना राजेश्वर प्रताप के रनिया के सुन्दरता आकर्षित करे लगल आ व्यग्रता प्रेम के डोर में बांधे लागल।

एनी मृनालिनी राजेश्वर प्रताप के व्यवहार में आयल परिवर्तन के खोज मे रहे। पता न लागे। लेकिन एक रात में जब मृनालिनी पूछलक कि अंहा हमरा पहिले लेखा प्यार न करै छी त राजेश्वर प्रताप कहलन कि हमरा रनिया से प्रेम भ गेल हए। मृनालिनी कहलक-वैइ गोबर कढनी कोसलिया के बेटी रनिया से। राजेश्वर प्रताप कहलन-हं। वोकरा बिना हम

न रह सकै छी। मृनालिनी कहलक- इ अंहा कि बात करै छी। वोइ गोबर कढनी के बेटी से अंहा विआह क के हबेली में रखबै। इ हम न होय देब।

संजोग इ भेल कि रनिया के मामा रनिया के बिआह बगल के गांव शिवहर में ठीक क देलक। रनिया बिआह के बिरोध न कर सकल। राजेश्वर प्रताप भी गुम रहगेल। तय समय पर रनिया के बिआह हो गेल। रनिया ससुरा चल गेल। जाति आ समाज के रिवाज के मुताबिक चार दिन बाद अपना नहिरा प्रतापगढ़ आ गेल।

कलह सबेरे फेर रनिये काम करे आयल। राजेश्वर प्रताप माल जाल के घर के देखे बहाने फेर आ गेलन। राजेश्वर प्रताप कहलन-तू आ गेला। हम त तोरा बिना न रहब। रनिया कहलक-हमहू अंहा बिना न रह सकै छी। लेकिन हम बिआह के बिरोध न कर पैली। राजेश्वर प्रताप कहलन-हमहु कुछ न कर पैली। रनिया आ राजेश्वर प्रताप के प्रेम परवान चढ़े लागल।

चार महीना के बाद रनिया के दूरागमन के दिन आयल। लेकिन रनिया दूरागमन के साफ नकार देलक। माय मामा के भी समझावे के कोई असर रनिया पर न भेल। रनिया आ राजेश्वर प्रताप के संबंध के उड़ैत खबर लरिका आ वोकरा बाप के मालूम भे गेल। उ रनिया के संबंध के तोड़ देलक। माने कि छोड़ा छोड़ी हो गेल।

ससुरा से रनिया के संबंध टूटे के खबर से रनिया आ राजेश्वर प्रताप खुब खुश भेल। लेकिन मृनालिनी कनिका चिंतित भेल। कारन कि जर्मीदार परिवार मे इ सभ होइत रहैय हए। राजेश्वर प्रताप से मृनालिनी बाजल-कि सुनै छिये। ससुरा से रनिया के संबंध टुट गेले हए। रनिया ससुरा जाय से इंकार कर देल कै हए। हमरा त अइमे अंहा के हाथ लगैय हए। अही सिखैले पढ़ैले होबै। राजेश्वर प्रताप हंसैत के कहलन-हम कैला सिखैबै-पढ़ैबै। मृनालिनी बाजल-हंयो। जर्मीदार परिवार सभ मे एहिना होइत रहै हए। हमरो एगो विधवा काकी अपने नौकर से संबंध रखले छथिन। परिवार में सभ चुपचाप हए। इ एगो समझौता हइ। हमहु अंहा से समझौता करै छी लेकिन अइ हबेली मे हम रनिया के न रहे देब।

राजेश्वर प्रताप कहलन-हमहु रनिया के अइ हबेली मे न लायब।अलगे रनिया के टोले मे मकान बना देबै आ लिव इन रिलेशनशिप में रहब।

अब राजेश्वर प्रताप रनिया के एगो मकान

बना देलक।आ रनिया के नाम से बिस बिघा जमीनो लिख देलक। रनिया के पति जगह रनिया के बाप के नाम आ पता प्रताप गढ लिखायल गेल। राजेश्वर प्रताप दूनू जगह में समय बिताबे लागल। रनिया के मायो परिस्थिति से समझौता कर लेलक। कुछ दिन बाद रनिया के माय चल बसल।समय पाके रनिया के एगो बेटा भेल।नाव धैलक मनोज कुमार आ मृनालिनी से एगो बेटी भेल। नाव रखलक माधबी। मनोज कुमार से माधबी छौह महीना छोट रहे।

मनोज आ माधबी जौरे जौरे पढे। मनोज के बाप के नाम रनिया के बिआहल पति के नाम लिखायल गेल। जाति भी पति के लिखायल गेल। दुनू गोरे जवान भे गेल। दुनू गोरे में प्रेम भी पनप गेल। माधबी भी ग्रैजुएट हो गेल। समय पाके आरक्षण लाभ से मनोज सिंचाई विभाग में इंजीनियर भे गेल।आबि मनोज आ माधबी बिआह करे के बात करे लागल। मनोज के मन मे एगो बदला के भी भाव रहे।अपना माय आ राजेश्वर प्रताप के संबंध के लेके।समाज के ताना वोकरा मन मे बदला लेबे के आग लगा देले रहे।

मनोज आ माधबी इ जाने कि हम आ माधबी दुनू दू जात के छी। अइसे बिआह में कोनो बाधा न होयत।

एगो रात में माधबी अपना माय के अपन आ मनोज के प्रेम संबंध के बारे में बतैलक।आ कहलक कि हम दूनू गोरे विआह करे चाहैत छी। मृनालिनी अपन माथा पकर लेलक। मृनालिनी कहलक कि हम तोरा बाबू जी से विचार क के बतैयबौउ।राते में सुतैत बेर मृनालिनी राजेश्वर प्रताप के माधबी के बारे में बतैलक। राजेश्वर प्रताप कहलन-इ विआह न हो सकै छैय।माधबी के माय रनिया न हैय लेकिन हम बाप छी आ मनोजो के बाप हम छियै। भले मृनालिनी ,तोहर जनमल मनोज न हौअ । हम

मनोज के जैविक बाप छियै। माने कि माधबी आ मनोज के बाप हम छियै। मतलब मनोज माधबी के जैविक भाई हए। माने मनोज माधबी भाई-बहिन हए। माधबी आ मनोज में बिआह न हो सकै छैय। हिन्दू धर्म में इ वर्जित हए। दुनु दू जात के होके भी विआह न हो सकै हए। इ त बरका धरम संकट हए। इ सभ बात राते मे मृनालिनी माधबी के कोठरी मे आके बतैलक आ कहलक माधबी अइ अइ धरम संकट से तू ही मुक्त करा सकै छे। मृनालिनी अपना कोठरी में सुते चल गेल। माधबी बहुत देर तक जग ले सोचैत रहे कि हमरे बाबू जी के जनमल मनोज हए। वो हमर जैविक भाई हए। हमरा दूनू में बिआह न हो सकै हए। हम दुनू भाई-बहन छी। सबेरे मनोज भैया से मिलब। इ सोचते सोचते निन पर गेल।

मनोज अपना माय रनिया के अपना आ माधबी के प्रेम के बारे में बतैलक आ बिआह करे के बारे में कहलक। रनिया कहलक-मनोज तोहर आ माधबी के विआह न हो सकै छैय। माधबी हमर जनमल न हए लेकिन माधबी के बाबू जी भी तोहर बाबू जी हौआ। बौआ मनोज इ एगो धरम संकट हए। आइ तोरे मुक्त करे के हौआ।

मनोज कहलक माय इ बात हम जनैय छी के हम माधबी के जैविक भाई छियै। लेकिन हमरा मन में समाज के उपेक्षा आ ताना रखैल पुत्र कहला से हमरा मन में बदला लेबे के भाव आ गेल रहल हए। समाज हमरा आ माधबी के भाइ-बहिन न मानै हए। हमरा बड़ा मानसिक पीड़ा भेल हए। आब इतना त हम जनैय छी कि अगरा जात के नारी, दलित जात के रखैल के प्रेमिका कहै हए। आ दलित जात के नारी, अगरा जात के प्रेमिका के रखैल कहे हए। इ मापदंड समाज में ब्यापत हए। जबकि लिव इन रिलेशनशिप अतीत काल से चल रहल हए। वर्तमान समय में एकर चलन और बढ गेल हए। लेकिन तोरा कहला पर हमरा मन के बदला के भाव मिट गेल। हमरा मन से अगरा आ दलित के भाव मिट गेल। आबि हमरा मन में भाई-बहन के प्रेम जाग गेल। हम माधबी के जैविक भाई छियै आ माधबी हमर बहिन।

सबरे कौआ के कांव कांव से माधबी के निन टुटल। मनोज के रनिया उठैलक। सबरे छह बजे टहलैत बेर जब मनोज आ माधबी मिलल त भाई-बहन के रूप में मिलल।माधबी कहलक-भैया मनोज।मनोहर कहलक-बहिन माधबी।आ दुनू भाई-बहिन आपस में गला मिल गेल।

आइ राजेश्वर प्रताप, मृनालिनी ,माधबी, रनिया आ मनोज धरम संकट से मुक्त हो गेल।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी,सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजेश्वर मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-०१ जनवरी १९६० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रूचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह भासा के न बांटियो। २०२२ प्रकाशित रचना - सझिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गान। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पत्ता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता-पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढ़ी राज्य-बिहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल-ramanandmandal001@gmail.com

ऐ

रचनापर

अपन

मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

3.९.डा. किशन कारीगर-पुरस्कारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत



डाँ. किशन कारीगर

पुरूसकारी गुर्गा पुरूस्कार बँटा डकैत (हास्य कटाक्ष)

बाबा बड़बड़ाइत रहै घिना गेल मिथिला मैथिली. इ मैथिल डकैत आ गुर्गा सब पुरूसकारी खेल मे त चंबलो घाटी डकैत के कान काटि लेत की? एकरा सबके कोनो लाज धाख छै आ कोन झड़कलहा के पुरूसकारी धूर्ते के लाज छै? किताब बिकाइ छै नैहे लोक पढ़लकै नैहे आ वरिष्ठ साहित्यकार हेबाक दाबिए चूर रहैए ई डकैत सब. मनमाना पर उतारू यै जे हमरा के की कए लेत? वास्तव मे मिथिला समाजक लोक सब सेहो चोरनुकबा यै त अई डकैत सबके मनमाना के रोकत? के मंगतै जवाब, केकरा माने मतलब छै?

हम बजली हौ बाबा भिंसरे भिंसरे की हो गेलहो? घर मे डकैती हो गेलौ? की कोइ भांग खुआए देलकहो जे बाबा तौई एना बड़बड़ाए रहलौ? पुरस्कार त गेल जाइ हइ ओकरो कहूँ डकैति होलैइए? हमर गप सुन बाबा हां हां के हँसे लगले आ बोललकै हौ कारीगर तोरा सबटा यथार्थ बुझल छह आ यथार्थवादी लेखन माध्यमे लोक के पुरूसकारी धूर्ते के देखार चिन्हाक कए दै छहक? आ अखैन अनठिया के हमरे स पुछै छह आ हमरे स सुनै चाहै छह? हम बोलली यौ बाबा हम कोनो चोर डकैत के गिरोह मे रहै छी की? हमरा पुरूसकारी चोरी डकैती बारे मे कुछो ने बुझल है क? बलू अहीं साफ साफ कहू जे पुरूसकारी डकैती की हइ?

बाबा बोललकै देखै नै छहक जे मैथिली साहित्यकार सब चोर डकैत

जेका अपन गिरोह बनेने अछि. जेहेन गिरोह तेहेन पुरूसकार बँटा डकैत आ तेहेने पुरूसकारी गुर्गा सब. ई सब तेना हो हो करतह जे एकरे सब दुआरे मिथिला मैथिली बांचल होउ? आ एहि धूर्ते मे इ सब मिथिला मैथिली के अपन बपौती बुझि कब्जा जमौने रहल. कतेक नाम गनबिअह? साहित्य अकादमी, मैथिली भोजपुरी अकादमी, मिथिला मैथिली समिति, लेखक संघ, परिषद कतेको एहेन गिरोह आ तेक्कर गुर्गा सब मिली मैथिली पुरस्कारक डकैति मे लागल यै की? यथार्थ कहबहक त डकैत आ गुर्गा सब बतकुट्टबैल क अप्पन चलकपनी कुकृत्य के झुँपै के फिराक मे रहतह. मैथिली पुरस्कार मे कोनो निष्पक्ष व्यवस्था कतौ नै भेटतह? जेहेन गिरोह आ जेहेन गुर्गा तेहेने पुरस्कार बँटा डकैती. अहि दुआरे त मैथिली पुरस्कार सब महत्वहीन भ गेलै आ घिना के राखि दै जाइ गेलै. यथार्थ कहक त उनटे हमरे तोरे कुंठित कहि चलकपनी करतह. उ डकैत गुर्गा सब अपने कतेक कुंठित अछि जे निष्पक्ष व्यवस्था के बात पर कपरफोरी पर उतारू भऽ जेतह की?

हम बाबा स पुछली जे पुरूसकार देलकै आ भेटलै त अइ मे पुरूसकारी डकैत आ गुर्गा कैसने हो गेलै? बाबा हां हां के बोलै लगलै हौ कारीगर तहूँ सबटा हमरे मुँहे अइ पुरूसकार बँटा डकैत सबहक देखार चिन्हार करेबह त हैइए लैह सुनहअ सबटा किरदानी. एकटा गप कहअ हमर तोहर यथार्थवादी बिचार मिलै छह आ अपना सब त कोनो गिरोहो मे नै रहै छि. तइयो हम तोरा बसहा बरद पुरूसकार द दियअ आ तूं हमरा मिथिलांचल टुडे पत्रकारित पुरूसकार बाँटि दैए त इ पुरस्कारी डकैति भेलै की नै? चिन्हा परिचे, सर कुटमारी, हिरोहबादी होहकारी, संयोजकीय जोगारी बले मैथिली पुरूसकार लूट मचल छै आ उनटे अनका उपदेश जे झरकल मुँह झपनै नीक त अइ डकैत सबके अपन किरदानी किए नै देखै छै. एकरो सब लेल कहबी बनतै ने पुरूसकारी डकैत के अपकरमी मुँह उघारे नीक. पुरस्कारी डकैत सब नैह तन निष्पक्ष व्यवस्था बेर हरहड़ी बज्जर खैस परै छैन्ह की?

अपन **मंतव्य** editorial.staff.vidaha@gmail.com **पर**
पठार।

३.१०.लाल देव कामत- कथाकार नन्द विलास राय जी के कथा पोथी 'असल पूजा'/पोथी समीक्षा- "सझिया रोपनि"



लालदेव कामत- कथाकार नन्द विलास राय जीके कथा पोथी "असल पूजा" / पोथी समीक्षा- "सझिया रोपनि"

१

कथाकार नन्द विलास राय जीके कथा पोथी "असल पूजा"

निरमलीक पल्लवी प्रकाशन सँ नन्द विलास राय जीके कथा पोथी "असल पूजा" २०२२ में १०४ पृष्ठक पोथी के आइ एस बी एन -९७८-९३-९३१३५-२७-८ नं० प्राप्त छैक ,जकर दाम २०० टाका निर्धारित या एहि मैथिली पोथीमे १३ कथा आ ९ गोटा लघुकथा संग्रहित कयल गेल छैक। इंग्लिश क' फादर माने मैथिली में भेल बाबू । फादर्स डे कथामे पिताक यादगारी लेल सब गोटे सब तरहें फेसबुक पर पोस्ट लिखैत रहल। रंजीत शिक्षामित्र (मास्टर) रहैत निर्मली बजार सँ अनेक बौस्त नगदीमे किनैत छैक,परंच अपन बाबूक लेल अर्थात् भीखारी ककाक कहलो पर हुनका ले ब्लडप्रेसर गोटी नहिं लैत छैक।जहनकि वृधार्पेशनक सब टाका रंजीते ल' लेने रहैछ। ५मे दिन अकस्मात खबरि समाजमे पसरैत छैक-

बुड़हा मरि गेलाह। सुगिया काकी दूनू पुरानी बैनबुता कयके इन्टरधरि पढेने रहय।से कानि-कानिके विलाप करै जे पांच दिन सँ नागा रहै ब्लडपेशरक दवाय। लोको बाजथि ओह! ब्लडप्रेसरक गोलिक अभावे बेचाराक ब्रेन हेमरेज सँ अजाए मृत्यु भ' गेलैक। धरि रंजीत देखाबटी करैत अछि। कथाकार 'क दोस्त पोस्ट लिखने रहय जे फोटो पर माला पहिराकय तस्वीर पर आरती देखा रहल छलैक। वास्तविक जीवनमे पिता वा कियो भी लोक होथि ,उपेक्षा नहिं करक चाही। से संदेश एहि कथाक माध्यम सँ नन्दजी पाठक बीच देलनि अछि।

सद्यप्रकाशित एहि पोथीक अंतिम कथा थीक- छुछुनैर! एहिमे जे भाव अयलैक से लोकक स्थापित प्रतिष्ठा पर केना छनहिमे बट्टा लागि जाईछ, से देखाओल गेल छैक। रजनीक भौजी कुनौली बालीसन महिलामेहेर मालीक बरूण सेठजीके देखिकय माथपर नूआँ नहिं लैछ आब। कथीले सामाजिक रुपें आब कियो जनिजात ओकर लाजधाक करौ! ओ तँ नीक पत्नि दू बेटा अछैत ,घरेलू नोकरनी कें अपन रानी जे परिस्थितिवश बना लेलकै। एक दलित उपजातिक जीबछी जुवती सँ छुतहरपनि करैत धनक बले ओकरा ढिड़हाईर बना देलकै । आ एक रूपासन टोलाक नेत्री कें घुस फरेब दैत ममिलाके रफादफा कराबैक कुचेष्टा धरि करैछ,परंच सफल नहिं होई। अर्धांगिनी'क अन्ततः समझौला सँ बहरघारामे किरायाक मकानमे राखि द्वितीय पत्नीक दर्जा समाजमे दैत बसोबास होई छैक। कथाकार ई घटनाक्रम देखेबाक असंगत परियास केलनि अछि। जखनकि भारतीय विधि अनुसारे अदालतमे घसीटल जयबाक चाही आ फेर आगंतुक भावी शिशुक कोन तरहें निमरजना होयतैक से खिस्सा आगूक बढाबैत किछु नविन संदेश देखौल जयतैक तँ कथा उच्चकोटीक होइत। आ फेरो कियो बलात्कारी समाजमे तानाबाना बीनके पकठोस हेबाक धृष्टता भविष्यमे नहिं करैत।ए पोथीमे पाठककें दीर्घ कथा पढैत बीच-बीचमे चुटकुला रूपें लघुकथा पैर लगतैन। नन्द विलास जीके लघुकथा रचबाक आरम्भिक अभ्यास छैन से एहूँ पोथीमे सन्धियौने छथि। तँ एहि पोथीक एक स्वतंत्र विधा नहिं,वरन खिचरी स्वाद लागत।

पोथी समीक्षा- "सझिया रोपनि"

नव मैथिली पोथी "सझिया रोपनि" हालहिमे पढलौह अछि। सझिया बीहनि कथा - संग्रह केर सम्पादक छथि- डॉ. प्रमोद कुमार। हिन्दी साहित्य में पंख उगे- कविता संग्रह केर रचियता प्रमोद बाबू मैथिली साहित्य सृजन में अपन उपस्थिति 'मुदित मान' कविता संग्रह सँ कयलाह। हिनक जनवरी २०२१ में बिहैन कथा संग्रह "कनकिरबा" आ २०२२ में सद्यप्रकाशित सझिया रोपनि मैथिली भाषाक उन्नयन लेल भेलनि अछि। सन् १९८८ में डाक्टर साहब सरौती कालेजक प्रिंसिपल सँ त्याग-पत्र दैत मिथिला सँ बाहर चलि गेलाह। शतधारा राजनगर सँ ओतय केन्द्रीय विश्वविद्यालय पांडिचेरी, टैगोर गवर्मेन्ट एण्ड साइन्स कालेजमे अर्थशास्त्र विभाग केर अध्यक्ष रहलाह। हिनक अनेकों पत्र- पत्रिका में ४० सँ बेसी राष्ट्रीय -अन्तर राष्ट्रीय शोध पत्र प्रकाशित भेल छन्हि। विदेशी छात्र'क कोर्सक प्रोग्राम आफिसर आदि अनेक पद पर कार्यरत रहि एम बी ए कोर्स लेल बहुत रास लिखबाक अवसर भेटलनि। घनेरो पत्र - पत्रिका में कथा कविता संस्मरण छपलनि। बहुतो बेर सेमिनार आ कान्फ्रेंस में पत्र प्रस्तुत कयने छथि। मातृभाषा प्रति हिनक अनुराग स्पष्ट झलैक रहल छैक। हिनक ५ गोटा विहनि कथा ऐ पोथीमे आयल छन्हि, यथा - इंगेजमेंट, पिछरल पापा, कठखोधी, अबिहें बौआ आओर फटलाही धोती। कथाक प्रासंगिकता, भाषा -शैली, शिल्प आदि बड़ चिकन छैन। २५ पुरूष रचनाकार आ १८ स्त्री कथाकार 'क कुल ८६ गोटा विहनि कथा सझिया कयल छैक। सब बिहनि कथा उपरा उपरी प्रशंसनीय भेल अछि।

आब समयाभावके कारण पाठक कम शब्दमे अधिक पढय-बूझय चाहैत छैक। दीर्घ कथाक संक्षेपण वा उपन्यास 'क सारांश जे सय शब्दक भीतर होय ,ओहन रोचक कथाके बीहनि कथा कहल जाईए। ई चुटकूला आ लघुकथा सँ फराक होईछ। विहनि कथाक साहित्य में नव विधा'क रूपें अनुसंधान भेल अछि। कथाक आकार छोट रहितो एहिमे पैघ कथाक बिहनि रहैछ। जेना दूधके जमबै ले दहीक जोरन। कोनू पाठ वा पाठके पाँति मे पोथिक शिर्षक सँ सम्बन्ध नहिं दृष्टिगोचर भेल, शिवाय महाकान्त

प्रसाद 'क - फूही । ऐ चारि वाक्यक विहनि कथामे नायक धानक रोपनी दूनू प्राणी करत से बीरार उखारैत काल बरबरायके फुही पडैत छैक। विशेष अर्थपूर्ण वार्ता करैत गाछतर सहटि कय जाईए। अपनामे एक पैघ अन्तःकथा नुकेने अछि। ई कथा अपन सामुहिकता वा सहकारिता 'क प्रदर्शन स्वरूप आवरण पृष्ठक प्रतिमान गढैत एक नव आकार सझिया रोपनिक सजीव चित्र बनेलक हन्। प्रसाद जीके दू आरो विहनि कथा - गोली आओर ठकमुरी छपल छैक,जे संवेदनशील य। चर्चित युवा रचनाकार सुभाष कुमार केर तीनू बिहनि कथा'क पात्रमे मुन्ना नामक व्यक्ति रहैछ। पहिलमे ' दहेज उन्मूलन ' बाबत लूलू सँ वार्ता होइत देखाएल गेलैक। जाहिमे मुन्ना टारैत बजैछ -अगिला मास सँ ई कार्यक्रम अभियान पूर्वक करबाक होयत, कारण एहि मास जेष्ठ भायक आ अगिला मास बहिणक बियाह होयत। से दहेज युक्त ! दोसरो कथामे मुन्ना'क पत्नी सुधा क' प्राईवेट चिकित्सक सोनोग्राफी करैत 'कोर्ड- वर्ड' डाइरेक्ट नाइरेशनमे कहैत छन्हि- "जय श्री कृष्णा" ! अर्थात् लड़का..../ तेसर कथामे मुन्ना ककाक फँसरी मादे मनोज भाय सँ कथाकार जिज्ञासा करैत छैक - " कर्जाक दोहरी अर्थ स्पष्ट अत्यन्त करुणा भावे कयल गेल अछि।

कापि राईट डॉ० प्रमोद कुमार जीकेँ छैन।एहि ९६ पृष्ठक पोथीक दाम १५० टाका निर्धारित ; शशि प्रकाशन - कालिकापुर कयने छैक। बिहनि कथाक लेखन अभिक्रम जगेबामे मनोज कुमार कर्ण, घनश्याम घनेरो , जगदीश प्रसाद मंडल, डाक्टर रामानंद झा 'रमण' , सचिदानंद सच्चू, आशीष अनचिन्हार,डा.आभा झा साहित्यिक अक्षय भंडार केँ भरलनि अछि। एहि क्षेत्रमे नव डेग बढबैत कथा शिल्पी सबके स्वागत अछि।

-मो०७६३१३९०७६१

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.११.कुन्दन कर्ण- मैथिली बीहनि कथा- रीढ़



कुन्दन कर्ण

मैथिली बीहनि कथा- रीढ़

कनॉट प्लेस में आगू चलैत एकटा चनैल (गंजा) व्यक्ति के हरिश्चन्द्र बाबू पाछू स' पजिया क' पकड़लखिन

"यओ जनार्दन बाबू, कहाँ गायब भय गेल छलहुँ अहाँ !!"

ओ चनैल आदमी देह झटकैत कहलकैन , "पागल हो क्या, कौन हो तुम ?"

तखन हरिश्चंद्र बाबू के अखियास भेलैन्ह जे कोनो अनजान आदमी के जनार्दन बाबू बुझि पकैड़नेने छलाह, ओहि अनभुआर आदमी सँ क्षमा माँगि आगू बढलाह।

जहियासँ दिल्ली के साहित्यकार सब हरिश्चंद्र बाबू के बाइर (प्रतिबंधित) देलकैन अछि तहियासँ ओ विक्षिप्त भय गेलाह अछि।

कोनो चनैल आदमी हुनका जनार्दन बाबू बुझाइ छथिन, त कोनो भुट्ट आदमी हुनका शिवचंद्र जी बुझाइत छथिन, साड़ीवाली महिला हुनका कवियित्री कामिनी जी बुझाइत छथिन।

कोनो बियाह-दानक मंच हुनका कविगोष्ठी के मंच देखाइ पड़ैत छन्हि।

जखन मंच पर हुनका पाग डोपटा पहिरायल जाइत छलैन त हुनका नैसर्गिक सुख भेटैत छलनि।

एकदिन मंचसँ ओ सरकार के प्रशंसा में कविता पढ़ि देलखिन, मंचेपरसँ

सब साहित्यकार हुनका दुरदुरा देलकैन्ह।

सब साहित्यकार के कहब छलै, साहित्यकार में सरकारक आलोचना करबाक साहस हेबाक चाही, हरिश्रंद्र बाबू सरकारी पुरस्कार लेबाक फ़िराक में सरकारक गुणगान केलाह अछि ताएँ हिनका सब साहित्यिक मंचसँ बारल जाय !!

हरिश्रंद्र बाबू हाथ जोड़ि सब मठाधीश लोकैन के सफाई देलखिन, हम सभदिनसँ अहि पार्टी के पक्षधर रहल छी , हम एकर विचारधारा आ निर्णयसँ सहमति रहैत छी ताएँ प्रशंसामे कविता पाठ कएलहुँ , जँ कोनो न्यूनता देखाइ पड़त त ओहो कहब।

मुदा सब मठाधीश एक स्वर में कहलखिन "साहित्यकार वएह जे सरकारक आलोचना करबाक बुत्ता राखय , अहाँक शरीरमे रीढ़क हड्डी नहि अछि!!"

तहियासँ हरिश्रंद्र बाबूके आब कोनो मंच पर नओत नहि भेटैत छन्हि। सबदिन अपन कनिया के पाग डोपटाद' कहैत छथिन, हमर स्वागत करू। घ'र आयल पाहुन परख के गंजी उठाक' देखबैत छथिन, देखियौत' हमरा देहमें रीढ़ के हड्डी छै ??

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ।

३.१२. आशुतोष कुमार झा- जीवनक सीख



आशुतोष कुमार झा

जीवनक सीख

निक्की झा अपन भनसा घर मे चाय बना रहल छलीह, घड़ी मे दुपहरके तीन बजे छल, समय बचाबय लेल ओ पानी, दूध, चीनी आ चायपत्ती एक्के संग मिला क गैस पर राखि देलक। पाछू घुमि कऽ देखलक तऽ हुनकर पति सोफा पर बड़ आराम स पड़ल लैपटॉप पर काज क' रहल छल। ओ अपन काज मे पूर्ण रूपेण डूबल छलाह। निक्की, भनसा घर सँ हॉल मे लागल घड़ी देखबाक प्रयास केलक मुदा ओकरा नहि देखि सकल। चाय सेहो गरम भ' क' खौलेल तैयार छल। निक्की क', चाय क' छोड़ि क' हॉल मे जेबाक इच्छा नहि भेल, तँ ओ भनसा घरसँ आपन पतिकेँ आवाज देलखिन।

"यो कनि घड़ी देखू ते,केतबा समय भ' रहल अछि। "

निक्कीक आवाज सुनैत प्रणव लैपटॉपक स्क्रीन दिस ताकलक आ कहलक ट्वी बैज क" अंठावन मिनट, जल्दी करू, प्रिषाक बस बसस्टॉप पर पहुँचि बला हेते। "

"हाँ बस एक मिनट, चाय उबल रहल अछि । चाय छानि कऽ होम अहाँकेँ दऽ दे छी, तखन चल जायबनिक्की जबाब देलक । "

प्रिषा, निक्की झा आ प्रणव झाक बेटी छलीह । प्रणव झा बंगलुरु के एकटा सॉफ्टवेयर कंपनी में इंजीनियर छलाह आ निक्की झा बैंक मे काज करैत छलीह । प्रिषा एकटा प्राइवेट स्कूल मे कक्षा पांच मे पढ़ैत छलीह । निक्की झा एक कप चाय ल' क' अपन पति केँ द' देलखिन्ह आ तुरन्त दरबज्जा दिस दौड़ल । जहिना निक्की लिफ्टसँ उतरि क' सोसाइटीक मुख्य दरबज्जा पर पहुँचलीह, प्रिषाक बस सेहो आबि गेल छलनि । बससँ उतरैत प्रिषा अपन माँ केँ देखि मुस्कुरा उठलीह ।

निक्की आ प्रिषा दुनू गोटे एक संग टहलैत घर जाय लगलीह । प्रिषा आइ बड शान्त देखाइत छलीह । बाकी दिन प्रिषा घर दिस दौड़ैत छलीह । मुदा आइ ओ अपन माँ क' संग तालमेल बैसाबैत चुपचाप चलैत छलीह । निक्की के सेहो प्रिषा के ई व्यवहार कनि अजीब लागल । तखने प्रिषा पीठ पर लागल स्कूलक बैग खोललक आ निक्कीक दैत काल बजलीह, "मम्मी, बैग पकड़ु, बड भारी अछि । "

जखन प्रिषाक माँ स्कूल बैग पकड़ने छलीह तखन हुनका कनेक भारीपन बुझाइत छलनि, जे सामान्य दिन मे नहि होइत छल । निक्की के ई बात बुझायल कि शायद प्रिषा अपन लंच नहि खा लेने हायत । निक्की जखन बैग खोललक आ लंच बॉक्स उठौलक तऽ बुझायल जे एखनो भरल अछि ।

निक्की कनि तमसा क' प्रीशा से पुछलखिन, अहाँ भोजन नहि खयलहुँ? तखने प्रिशा जबाब देलक । "नहि" -

निक्की पुछलकै अहाँ भोजन किएक नहि खयलहुँ?"

"बस मूड ठीक नहि छलप्रिषा जबाब देलक । "

निक्की बाजल किएक" -?" "की भेल" ?

"स्कूल मे कुनु टीचर के डांट पड़ल वा कुनु दोस्त सं झगड़ा भेल" ?

"दुनू मे सँ किछो नहिप्रिषा जबाब देलक "

"होम बुझलौं अन्हा क मूड नीक नाय अछि..., मुदा खाना जरूर खैबाक चाही । अंहा भोरे साढ़े सात बजे घर स निकलल छल । आब तीन बाजि गेल अछि । अंहा भोरेसँ भूखल छी । प्रिषाक माँ प्रिशा केँ बुझबैत " बजलीह ।

मुदा प्रिषा पर कुनु असर नहि पड़लनि ।

ओ बड शान्त मोनसँ घर दिस डेग बढ़ा रहल छलीह । प्रिषा आ ओकर माँ किछुए काल मे अपन प्लैट मे पहुँचि गेल । प्रिषाक पिता दरबज्जा खोललनि ।

प्रिषा केँ देखि ओ बजलीह, "हमर सोना बेटी आबि गेल अछि । प्रणव " अपन बेटी के गोदी मे उठाबय चाहैत छल ।

"पापा आइ मजाक नहि करू, हमर मूड आइ खराब अछि प्रिषा जबाब " देलक

पापा सेहो आश्चर्यचकित भ' क' पुछलखिन किएक?" "की भेल"

तखने निक्की तुरंते बजलखिन "भोर स भूखल अछि"

प्रणव सेहो आश्चर्य आ चिन्ता करए लगलाह ।

ओ, प्रिषा लग आबि पुछलखिन "की भेल बौआ" ?

"कुनु खास बात नै पापा बस आई स्कूल में हमर सबहक टीचर एकटा नया विषय पढ़ौलनि । सब बच्चा के बुझे मे आबि गेल केवल हमरा बुझे मे नहि आयल ।

जखन विषय समाप्त केलाक बाद टीचर पूरा क्लास स पूछलखिन, के के नहि बुझलौं ओ सब हाथ खड़ा करू । तखन मात्र हम हाथ उठेलहुं । तकर बाद क्लासक सभ बच्चा हँसय लागल । आ टीचर सेहो संग मे हँसय लगलाह । हमरा कनि अपमान बुझायल, एहि कारणे हमर मूड उतरि गेल आ हम भोजन तक नहि केलहुँ ।"

ई सुनलाक बाद ओकर पापा आ मम्मी सेहो हँसय लगलाह ।

दुनू गोटेकेँ हँसैत देखि प्रिषा तमसा गेलीह आ बजलीह देखू", आब अहाँ सभ सेहो हँसैत छी । प्रिषा कनेक तमसाइत बाजलि ।"

प्रणव प्रेमपूर्वक प्रिषाक माथ पर हाथ राखि बजलाह, "हम सभ हँसि रहल छी कारण अहाँ एतेक छोट बात पर तमसा गेलहुँ, भोजनो नहि खयलहुँ, तखन भविष्य मे की होयत, जखन जीवन मे पैघ विवादक सामना करय पड़त ।"

प्रणव बेटी के बुझबैत कहलखिन । दोसर बात जखन टीचर पुछलखिन " जेकरा सब क बुझे म नाय आयल ओ सब गोटा हाथ खड़ा करू, तखन ईमानदारी स हाथ खड़ा करबाक में ही समझदारी छल । "

"भ' सकैछ, जे क्लास मे किछु एहन बच्चा होथि जेकरा बुझे मे नहि

आयल तइयो हाथ नहि उठौलनि, ई बड़का गलती अछि।"

"हम अहाँ के जीवन के एकटा पैघ पाठ सिखाबय चाहैत छी। "

"जेकरा अहाँ अपन मोन मे बैसा लियो , जँ अहाँ केँ कहियो कुनु बातक जानकारी नहि अछि आ सामनेक व्यक्ति ओहि बातक प्रयोग क' रहल अछि, तखन ओहि व्यक्ति सँ ओहि बातक विषय मे अवश्य पूछू, चाहे सामनेक व्यक्ति अहाँक टीचर होथि वा अहाँक मित्र होथि वा अहाँक रिश्तेदार। "

यदि ओहि समय अहाँ आपन सम्मान देखब आ सोचब जे पूछला पर हमर अपमान भ' जायत ते अहाँ आपन जीवनक सबसँ पैघ गलती करब।

भविष्य मे जँ ओहि विषयक प्रयोग कतहु होयत वा अहाँ केँ ओहि विषयक सामना करय पड़त तखन अहाँ ओहि समय बड़ नीक सँ पश्चाताप करब।

तखन अन्हा सोचब , एहि विषयक प्रयोग हमर टीचर वा हमरा सोझाँ मे मित्र द्वारा कयल गेल छल मुदा हम एहि विषय मे नहि पुछलहुँ । आ घोर गेलाक बादो होम डिक्शनरी वा इन्टरनेट वा कुनु दोसर माध्यमसँ पता नहि करलहुँ आ आइ एहि बात हमरा सोझाँ आबि गेल अछि, ओहि समय अहाँ बड़ पश्चाताप करब।

संगेसंग एकटा बात मोन में बैसा क राखू कि पेटसँ कियो सिख क नहि - आबैत अछि ।जे सीखैत अछि, ओ एहि ठान सीखैत अछि आ सामनेक व्यक्ति जँ कुनु बातक ज्ञानी होथि तऽ जरूर कतहु सँ सीखने हेताह ।

प्रणव बुझबैत प्रिषा बड़ खुश भ' गेलीह ।

प्रिषा क बुझायल की ओ कुनु गलती ने केने छल। आ आपन पापा से लिपट गेल ।

गलत ओ नहि अछि अपितु ओकर क्लासक विद्यार्थी अछि प्रणव खुशी-यु आर दी बेस्ट पापा " खुशी प्रिषाकेँ गोदीमे लऽ लेलक । प्रिषा बजलीह ऑफ़ दी वर्ल्ड"

सब हँसि रहल छल । प्रणव कहलक चलू खाना खायल जाय, पेट मे चूहा सेहो कूदि रहल अछि।

-आशुतोष कुमार झा, सहायक प्राध्यापक, प्रबंधन विभाग, मेडीकैप्स

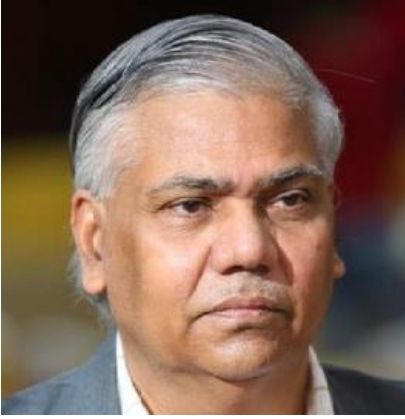
विश्वविद्यालय, इंदौर, संपर्क- S/o:- श्री दिनेश झा, टी. वी. टावर बाउंड्री
के उत्तरी ओर, मोहल्ला:- टी. वी. सेंटर, कटिहार, बिहार, पिन -
854106 मोबाइल - (+91) 7677744015, ई-
मेल - ashutoshkumarjha1002@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर
पठाउ।

४.पद्य खण्ड

४.१.राज किशोर मिश्र-जंक फूड

४.१.राज किशोर मिश्र-जंक फूड



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जेनरल मैनेजर (ई),
बी(मुख्यालय).एल.एन.एस., दिल्ली,गामअरेर डीह -, पोअरेर .
हाट, मधुबनी

जंक फूड

सैंडवि च, बर्गर, पि ज्जा ,
आलूदम, मैगी ,मो मो ज ,
धि आ पुता लेल एहि सँ नमहर-,
हो एत आर को न भो ज?

अल्लू चि प्स, बि स्कुट, केक,
रंग वि रंग के चॉ कलेट-,
परहेज ने को नो , भेट जा इ जँ,
इएह सभ भरि भरि पेट।-

तेल मे खूब कऽ तरल पको डा ,
पनी रक टि क्का जो डा जो डा ।-

'स्टार्टर' महक' खाद्य पदार्थ,
नवतुरि या केँ, बिसेख आकर्षण,
जंक फूड लेल बेकल रहैछथि,
आ, चाहै छथि, खन खन-दर्शन ।

कोल्ड्रिं क नहि एकतरहक,
बजार मे अनेका नेक,
ओहि के अलाबा, फल सभहक
भरल जूस ओ शेक ।

जंक फूड के पैकिंग जेहने,
मुह मे सो अदगर अछि ओ तेहने ।

भिन्न भिन्न कंपनी क डि ली वरी ब्वाँय-
प्रसंस्कृत खाद्य केँ परसैत जाय ।

चि कि त्सा विज्ञान अनुसार, आब
एकर सुनल जाए कुप्रभाव,
एहि भोजन मे नेपोषक तत्व,
आ, स्वास्थ्यक अहित करब स्वभाव ।

अतिरिक्त बसासँ, कोलेस्ट्रॉल बढ़त,
ऊपर स्तर, ब्लड सुगर चढ़त ।-

जे सभनी क लगैत छै मन के,
ओ सभ खतरा, हृदय आ तन के ।

भोजन, जे अरुदा के छी नए,
ओकरा तऽ स्वास्थ्य सँ द्रोह,
एहन अस्वास्थ्यकर खाद्य लेल,

कि ओ कि ए रा खथि मो ह?

मो न के तऽ नी क ला गौ ,
आ, ली वर, हृदय पर हो उक आघा त,
जि नगी क लेल, को नो तरहँ,
कहूने, भेलैक नी क ई बा त?

देखए मे जे अछि नेनुआगर,
चहटगर आओर सो अदगर,
दूरहि सँ, हम करी प्रणा म,
नहि चा ही पि ज्जा , बर्गर।

जा हि भो जन सँ उदर मे,
उठए धो नि ठेका र,
को ना ने कहि औ खा द्य ओ
रुचि गर, मुदा बेका र?

जखने बा रि क परसय आबए,
जंक फूड, कैँडी , कुकी ,
पा तक' ऊपर, हा थ बा रि कऽ,
तत्क्षणे, ओकरा रो की ।

भो जन मतलब,
संतुलि त आहा र,
डा गदर सभ बा जथि ,
बा रम्बा र।

भा त, दा लि , सला द, सो हा री ,
खा इ, फल, हरि अर तरका री ।

अगबे वसा , का र्बो हा इड्रेट,

स्वा स्थ्य ने देत, बस भरि देत पेट।

वि टा मि न, प्रो टी न, का बॉ हा इड्रेट,
जल ,वसा , आ खनि जक संतुलन ,
संतुलि त आहा र ,वएह भो जन अछि ,
दी र्घा यु बनी , ई बसए मन सदि खन ।

जय हो , जय हो ,
संतुलि त आहा र ,
अरुदा भेटैत छै,
एही दरबा र।

जंक फूड!
तौं ,नहि छऽ गुड।

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर
पठाउ।

५. अनुलग्नक (पृ. ००१-३३०)

१. विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues (पृ ००१-०२२)

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download (पृ ०२३-०७४)

३. मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos (पृ ०७५-०८४)

४. मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature (पृ ०८५-०९७)

५. विदेह स्त्री कोना (पृ ०९८-१०५)

६. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement) (पृ १०६-२०१)

७. विदेह मिथिलाक खोज (पृ २०२-२३१)

८. विदेह मिथिला रत्न (पृ २३२-३३०)

विदेह पुरान अंक

वि दे ह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in> विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कर देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

[Search within Old Issues of Videha](#)

<https://books.google.com/>

Videha Archive of Old Issues विदेह पुरान अंकक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि। All the old issues of Videha e journal are available for pdf download at the respective links below.

.....

[तिरहुता, नेवाड़ी आ कैथी फॉन्ट डाउनलोड Google's Noto Fonts project/ GitHub](#)

तिरहुता नोटो फॉन्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवाड़ी ओटीएफ	नेवाड़ी टीटीएफ
--------------------	------------	-------------	---------------	----------------

<https://fonts.google.com/> (Google Open Fonts download)

[Tirhuta Offline Keyboard download](#)

[Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download](#)

<https://malarproject.gitlab.io/tirhuta> (Tirhuta Keyboard Online)

.....

१

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह १-
२५ www.vidaha.co.in
विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५०
सँ- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ
पद्यक एकटा समानान्तर संकलन

देवनागरी	मिथिलाक्षर
विदेह:सदेह १	विदेह: सदेह १ तिरहुता
विदेह:सदेह २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना	विदेह: सदेह २ तिरहुता
विदेह:सदेह ३ मैथिली पद्य	विदेह: सदेह ३ तिरहुता
विदेह:सदेह ४ मैथिली कथा	विदेह: सदेह ४ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]	विदेह: सदेह ५ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]- संस्करण-२	विदेह: सदेह ५ संस्करण-२ तिरहुता
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]	विदेह: सदेह ६ तिरहुता
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]	विदेह: सदेह ७ तिरहुता
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]	विदेह: सदेह ८ तिरहुता
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]	विदेह: सदेह ९ तिरहुता
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]	विदेह: सदेह १० तिरहुता
विदेह:सदेह ११	विदेह: सदेह ११ तिरहुता
विदेह:सदेह १२	विदेह: सदेह १२ तिरहुता
विदेह:सदेह १३	विदेह: सदेह १३ तिरहुता
विदेह:सदेह १४	विदेह: सदेह १४ तिरहुता
विदेह:सदेह १५	विदेह: सदेह १५ तिरहुता
विदेह:सदेह १६	विदेह: सदेह १६ तिरहुता
विदेह:सदेह १७	विदेह: सदेह १७ तिरहुता
विदेह:सदेह १८	विदेह: सदेह १८ तिरहुता
विदेह:सदेह १९	विदेह: सदेह १९ तिरहुता
विदेह:सदेह २०	विदेह: सदेह २० तिरहुता
विदेह:सदेह २१	विदेह: सदेह २१ तिरहुता
विदेह:सदेह २२	विदेह: सदेह २२ तिरहुता
विदेह:सदेह २३	विदेह: सदेह २३ तिरहुता
विदेह:सदेह २४	विदेह: सदेह २४ तिरहुता
विदेह:सदेह २५	विदेह: सदेह २५ तिरहुता

विदेह-सदेह २६-
३६ www.vidaha.co.in
विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५०

<p>सँ- थीम आधारित मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ अनूदित गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन</p>	
विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २६ तिरहुता
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २७ तिरहुता
विदेह:सदेह २८ (अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २८ तिरहुता
विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २९ तिरहुता
विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३० तिरहुता
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३१ तिरहुता
विदेह:सदेह ३२ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३२ तिरहुता
विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३३ तिरहुता
विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३४ तिरहुता
विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३५ तिरहुता
विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३६ तिरहुता

.....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह १७	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

२

विदेहक सभटा पुरान अंक (अंक १ सँ ३५४ आ आगाँ)

विदेहक अंक १-१४९ (देवनागरी, मिथिलाक्षर आ ब्रेलमे)

देवनागरी	मिथिलाक्षर	ब्रेल
<u>Videha_01_01_08</u>	<u>Videha_01_01_08_Tirhuta</u>	<u>1</u>
<u>Videha_15_01_08</u>	<u>Videha_15_01_08_Tirhuta</u>	<u>2</u>
<u>Videha_01_02_08</u>	<u>Videha_01_02_08_Tirhuta</u>	<u>3</u>
<u>Videha_15_02_08</u>	<u>Videha_15_02_08_Tirhuta</u>	<u>4</u>
<u>Videha_01_03_08</u>	<u>Videha_01_03_08_Tirhuta</u>	<u>5</u>
<u>Videha_15_03_08</u>	<u>Videha_15_03_08_Tirhuta</u>	<u>6</u>
<u>Videha_01_04_2008</u>	<u>Videha_01_04_2008_Tirhuta</u>	<u>7</u>
<u>Videha_15_04_2008</u>	<u>Videha_15_04_2008_Tirhuta</u>	<u>8</u>
<u>Videha_01_05_2008</u>	<u>Videha_01_05_2008_Tirhuta</u>	<u>9</u>
<u>Videha_15_05_2008</u>	<u>Videha_15_05_2008_Tirhuta</u>	<u>10</u>
<u>Videha_01_06_2008</u>	<u>Videha_01_06_2008_Tirhuta</u>	<u>11</u>
<u>Videha_15_06_2008</u>	<u>Videha_15_06_2008_Tirhuta</u>	<u>12</u>
<u>Videha_01_07_2008</u>	<u>Videha_01_07_2008_Tirhuta</u>	<u>13</u>
<u>Videha_15_07_2008</u>	<u>Videha_15_07_2008_Tirhuta</u>	<u>14</u>
<u>Videha_01_08_2008</u>	<u>Videha_01_08_2008_Tirhuta</u>	<u>15</u>
<u>Videha_15_08_2008</u>	<u>Videha_15_08_2008_Tirhuta</u>	<u>16</u>
<u>Videha_01_09_2008</u>	<u>Videha_01_09_2008_Tirhuta</u>	<u>17</u>
<u>Videha_15_09_2008</u>	<u>Videha_15_09_2008_Tirhuta</u>	<u>18</u>

Videha_01_10_2008	Videha_01_10_2008 Tirhuta	19
Videha_15_10_2008	Videha_15_10_2008 Tirhuta	20
Videha_01_11_2008	Videha_01_11_2008 Tirhuta	21
Videha_15_11_2008	Videha_15_11_2008 Tirhuta	22
Videha_01_12_2008	Videha_01_12_2008 Tirhuta	23
Videha_15_12_2008	Videha_15_12_2008 Tirhuta	24
Videha_01_01_2009	Videha_01_01_2009 Tirhuta	25
Videha_15_01_2009	Videha_15_01_2009 Tirhuta	26
Videha_01_02_2009	Videha_01_02_2009 Tirhuta	27
Videha_15_02_2009	Videha_15_02_2009 Tirhuta	28
Videha_01_03_2009	Videha_01_03_2009 Tirhuta	29
Videha_15_03_2009	Videha_15_03_2009 Tirhuta	30
Videha_01_04_2009	Videha_01_04_2009 Tirhuta	31
Videha_15_04_2009	Videha_15_04_2009 Tirhuta	32
Videha_01_05_2009	Videha_01_05_2009 Tirhuta	33
Videha_15_05_2009	Videha_15_05_2009 Tirhuta	34
Videha_01_06_2009	Videha_01_06_2009 Tirhuta	35
Videha_15_06_2009	Videha_15_06_2009 Tirhuta	36
Videha_01_07_2009	Videha_01_07_2009 Tirhuta	37
Videha_15_07_2009	Videha_15_07_2009 Tirhuta	38
videha_01_08_2009	videha_01_08_2009 tirhuta	39
videha_15_08_2009	videha_15_08_2009 tirhuta	40
videha_01_09_2009	videha_01_09_2009 tirhuta	41
videha_15_09_2009	videha_15_09_2009 tirhuta	42
videha_01_10_2009	videha_01_10_2009 tirhuta	43
videha_15_10_2009	videha_15_10_2009 tirhuta	44
videha_01_11_2009	videha_01_11_2009 tirhuta	45
videha_15_11_2009	videha_15_11_2009 tirhuta	46
videha_01_12_2009	videha_01_12_2009 tirhuta	47

videha_15_12_2009	videha_15_12_2009_tirhuta	48
videha_01_01_2010	videha_01_01_2010_tirhuta	49
videha_15_01_2010	videha_15_01_2010_tirhuta	50
videha_01_02_2010	videha_01_02_2010_tirhuta	51
videha_15_02_2010	videha_15_02_2010_tirhuta	52
videha_01_03_2010	videha_01_03_2010_tirhuta	53
videha_15_03_2010	videha_15_03_2010_tirhuta	54
videha_01_04_2010	videha_01_04_2010_tirhuta	55
videha_15_04_2010	videha_15_04_2010_tirhuta	56
videha_01_05_2010	videha_01_05_2010_tirhuta	57
videha_15_05_2010	videha_15_05_2010_tirhuta	58
videha_01_06_2010	videha_01_06_2010_tirhuta	59
videha_15_06_2010	videha_15_06_2010_tirhuta	60
videha_01_07_2010	videha_01_07_2010_tirhuta	61
videha_15_07_2010	videha_15_07_2010_tirhuta	62
videha_01_08_2010	videha_01_08_2010_tirhuta	63
videha_15_08_2010	videha_15_08_2010_tirhuta	64
videha_01_09_2010	videha_01_09_2010_tirhuta	65
videha_15_09_2010	videha_15_09_2010_tirhuta	66
videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67
videha_15_10_2010	videha_15_10_2010_tirhuta	68
videha_01_11_2010	videha_01_11_2010_tirhuta	69
videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70
videha_01_12_2010	videha_01_12_2010_tirhuta	71
videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72
videha_01_01_2011	videha_01_01_2011_tirhuta	73
videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74
videha_01_02_2011	videha_01_02_2011_tirhuta	75
videha_15_02_2011	videha_15_02_2011_tirhuta	76

videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77
videha_15_03_2011	videha_15_03_2011_tirhuta	78
videha_01_04_2011	videha_01_04_2011_tirhuta	79
videha_15_04_2011	videha_15_04_2011_tirhuta	80
videha_01_05_2011	videha_01_05_2011_tirhuta	81
videha_15_05_2011	videha_15_05_2011_tirhuta	82
videha_01_06_2011	videha_01_06_2011_tirhuta	83
videha_15_06_2011	videha_15_06_2011_tirhuta	84
videha_01_07_2011	videha_01_07_2011_tirhuta	85
videha_15_07_2011	videha_15_07_2011_tirhuta	86
videha_01_08_2011	videha_01_08_2011_tirhuta	87
videha_15_08_2011	videha_15_08_2011_tirhuta	88
videha_01_09_2011	videha_01_09_2011_tirhuta	89
videha_15_09_2011	videha_15_09_2011_tirhuta	90
videha_01_10_2011	videha_01_10_2011_tirhuta	91
videha_15_10_2011	videha_15_10_2011_tirhuta	92
videha_01_11_2011	videha_01_11_2011_tirhuta	93
videha_15_11_2011	videha_15_11_2011_tirhuta	94
videha_01_12_2011	videha_01_12_2011_tirhuta	95
videha_15_12_2011	videha_15_12_2011_tirhuta	96
videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97
videha_15_01_2012	videha_15_01_2012_tirhuta	98
videha_01_02_2012	videha_01_02_2012_tirhuta	99
videha_15_02_2012	videha_15_02_2012_tirhuta	100
videha_01_03_2012	videha_01_03_2012_tirhuta	101
videha_15_03_2012	videha_15_03_2012_tirhuta	102
videha_01_04_2012	videha_01_04_2012_tirhuta	103
videha_15_04_2012	videha_15_04_2012_tirhuta	104
videha_01_05_2012	videha_01_05_2012_tirhuta	105

videha_15_05_2012	videha_15_05_2012_tirhuta	106
videha_01_06_2012	videha_01_06_2012_tirhuta	107
videha_15_06_2012	videha_15_06_2012_tirhuta	108
videha_01_07_2012	videha_01_07_2012_tirhuta	109
videha_15_07_2012	videha_15_07_2012_tirhuta	110
videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111
videha_15_08_2012	videha_15_08_2012_tirhuta	112
videha_01_09_2012	videha_01_09_2012_tirhuta	113
videha_15_09_2012	videha_15_09_2012_tirhuta	114
videha_01_10_2012	videha_01_10_2012_tirhuta	115
videha_15_10_2012	videha_15_10_2012_tirhuta	116
videha_01_11_2012	videha_01_11_2012_tirhuta	117
videha_15_11_2012	videha_15_11_2012_tirhuta	118
videha_01_12_2012	videha_01_12_2012_tirhuta	119
videha_15_12_2012	videha_15_12_2012_tirhuta	120
videha_01_01_2013	videha_01_01_2013_tirhuta	121
videha_15_01_2013	videha_15_01_2013_tirhuta	122
videha_01_02_2013	videha_01_02_2013_tirhuta	123
videha_15_02_2013	videha_15_02_2013_tirhuta	124
videha_01_03_2013	videha_01_03_2013_tirhuta	125
videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126
videha_01_04_2013	videha_01_04_2013_tirhuta	127
videha_15_04_2013	videha_15_04_2013_tirhuta	128
videha_01_05_2013	videha_01_05_2013_tirhuta	129
videha_15_05_2013	videha_15_05_2013_tirhuta	130
videha_01_06_2013	videha_01_06_2013_tirhuta	131
videha_15_06_2013	videha_15_06_2013_tirhuta	132
videha_01_07_2013	videha_01_07_2013_tirhuta	133
videha_15_07_2013	videha_15_07_2013_tirhuta	134

videha_01_08_2013	videha_01_08_2013_tirhuta	135
videha_15_08_2013	videha_15_08_2013_tirhuta	136
videha_01_09_2013	videha_01_09_2013_tirhuta	137
videha_15_09_2013	videha_15_09_2013_tirhuta	138
videha_01_10_2013	videha_01_10_2013_tirhuta	139
videha_15_10_2013	videha_15_10_2013_tirhuta	140
videha_01_11_2013	videha_01_11_2013_tirhuta	141
videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142
videha_01_12_2013	videha_01_12_2013_tirhuta	143
videha_15_12_2013	videha_15_12_2013_tirhuta	144
videha_01_01_2014	videha_01_01_2014_tirhuta	145
videha_15_01_2014	videha_15_01_2014_tirhuta	146
videha_01_02_2014	videha_01_02_2014_tirhuta	147
videha_15_02_2014	videha_15_02_2014_tirhuta	148
videha_01_03_2014	videha_01_03_2014_tirhuta	149

विदेहक अंक १५०-३४४

VIDEHA 150	VIDEHA 151	VIDEHA 152	VIDEHA 153	VIDEHA 154
VIDEHA 155	VIDEHA 156	VIDEHA 157	VIDEHA 158	VIDEHA 159
VIDEHA 160	VIDEHA 161	VIDEHA 162	VIDEHA 163	VIDEHA 164
VIDEHA 165	VIDEHA 166	VIDEHA 167	VIDEHA 168	VIDEHA 169
VIDEHA 170	VIDEHA 171	VIDEHA 172	VIDEHA 173	VIDEHA 174
VIDEHA 175	VIDEHA 176	VIDEHA 177	VIDEHA 178	VIDEHA 179
VIDEHA 180	VIDEHA 181	VIDEHA 182	VIDEHA 183	VIDEHA 184
VIDEHA 185	VIDEHA 186	VIDEHA 187	VIDEHA 188	VIDEHA 189
VIDEHA 190	VIDEHA 191	VIDEHA 192	VIDEHA 193	VIDEHA 194
VIDEHA 195	VIDEHA 196	VIDEHA 197	VIDEHA 198	VIDEHA 199
VIDEHA 200	VIDEHA 201	VIDEHA 202	VIDEHA 203	VIDEHA 204
VIDEHA 205	VIDEHA 206	VIDEHA 207	VIDEHA 208	VIDEHA 209
VIDEHA 210	VIDEHA 211	VIDEHA 212	VIDEHA 213	VIDEHA 214
VIDEHA 215	VIDEHA 216	VIDEHA 217	VIDEHA 218	VIDEHA 219
VIDEHA 220	VIDEHA 221	VIDEHA 222	VIDEHA 223	VIDEHA 224
VIDEHA 225	VIDEHA 226	VIDEHA 227	VIDEHA 228	VIDEHA 229
VIDEHA 230	VIDEHA 231	VIDEHA 232	VIDEHA 233	VIDEHA 234
VIDEHA 235	VIDEHA 236	VIDEHA 237	VIDEHA 238	VIDEHA 239
VIDEHA 240	VIDEHA 241	VIDEHA 242	VIDEHA 243	VIDEHA 244
VIDEHA 245	VIDEHA 246	VIDEHA 247	VIDEHA 248	VIDEHA 249
VIDEHA 250	VIDEHA 251	VIDEHA 252	VIDEHA 253	VIDEHA 254
VIDEHA 255	VIDEHA 256	VIDEHA 257	VIDEHA 258	VIDEHA 259
VIDEHA 260	VIDEHA 261	VIDEHA 262	VIDEHA 263	VIDEHA 264
VIDEHA 265	VIDEHA 266	VIDEHA 267	VIDEHA 268	VIDEHA 269

VIDEHA 270	VIDEHA 271	VIDEHA 272	VIDEHA 273	VIDEHA 274
VIDEHA 275	VIDEHA 276	VIDEHA 277	VIDEHA 278	VIDEHA 279
VIDEHA 280	VIDEHA 281	VIDEHA 282	VIDEHA 283	VIDEHA 284
VIDEHA 285	VIDEHA 286	VIDEHA 287	VIDEHA 288	VIDEHA 289
VIDEHA 290	VIDEHA 291	VIDEHA 292	VIDEHA 293	VIDEHA 294
VIDEHA 295	VIDEHA 296	VIDEHA 297	VIDEHA 298	VIDEHA 299
VIDEHA 300	VIDEHA 301	VIDEHA 302	VIDEHA 303	VIDEHA 304
VIDEHA 305	VIDEHA 306	VIDEHA 307	VIDEHA 308	VIDEHA 309
VIDEHA 310	VIDEHA 311	VIDEHA 312	VIDEHA 313	VIDEHA 314
VIDEHA 315	VIDEHA 316	VIDEHA 317	VIDEHA 318	VIDEHA 319
VIDEHA 320	VIDEHA 321	VIDEHA 322	VIDEHA 323	VIDEHA 324
VIDEHA 325	VIDEHA 326	VIDEHA 327	VIDEHA 328	VIDEHA 329
VIDEHA 330	VIDEHA 331	VIDEHA 332	VIDEHA 333	VIDEHA 334
VIDEHA 335	VIDEHA 336	VIDEHA 337	VIDEHA 338	VIDEHA 339
VIDEHA 340	VIDEHA 341	VIDEHA 342	VIDEHA 343	VIDEHA 344

[विदेहक सभ अंक सम्बन्धी किछु आवश्यक पोथी/ जानकारी](#)

[Learn Maithili Sign Language- Gajendra Thakur \(2009/ 2023\)](#)

[मैथिली \(मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर\)](#)

[Learn Mithilakshar- Gajendra Thakur \(2009/ 2023\)](#)

[Learn IPA through Mithilakshar- Gajendra Thakur \(2009/ 2023\)](#)

[Learn Braille through Mithilakshar- Gajendra Thakur \(2009/ 2023\)](#)

[Tirhuta Offline Keyboard download](#)

[Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download](#)

[Learn Kaithi- Gajendra Thakur \(2009/ 2023\)](#)

[कैथी लिपि \(मैथिली साहित्य संस्थान डाउनलोड लिंक\)](#)

[Learn Newari- Gajendra Thakur \(2009/ 2023\)](#)

[Learn Calligraphic Newari \(Ranjana\)- Gajendra Thakur \(2009/ 2023\)](#)

[Learn Urdu Script- Gajendra Thakur \(2009/ 2023\)](#)

[Learn Tibetan Script- Gajendra Thakur \(2009/ 2023\)](#)

[Learn Japanese Script for Haiku- Gajendra Thakur \(2009/ 2023\)](#)

[Learn Brahmi- Gajendra Thakur \(2009/ 2023\)](#)

[Learn Kharoshthi- Gajendra Thakur \(2009/ 2023\)](#)

स्थायी स्तम्भ जेना मिथिला-रत्न, मिथिलाक खोज, विदेह पेटार आ सूचना-संपर्क-अन्वेषण सभ अंकमे समान अछि, तइ हेतु ई सभ स्तम्भ सभ अंकमे नै देल जाइत अछि, ई सभ स्तम्भ देखबा लेल क्लिक करू विदेहक ३४६ म, ३४७ म आ ३६६ म अंक। ऐ तीनू अंकमे सम्मिलित रूपेँ ई सभ स्तम्भ देल गेल अछि।

[विदेहक ३४५म आ आगाँक अंक](#)

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.पी.ए.	मैथिली ब्रेल
VIDEHA 345	VIDEHA 345 Tirhuta	VIDEHA 345 IPA	VIDEHA 345 Braille
VIDEHA 346	VIDEHA 346 Tirhuta	VIDEHA 346 IPA	VIDEHA 346 Braille

VIDEHA_347	VIDEHA_347_Tirhuta	VIDEHA_347_IPA	VIDEHA_347_Braille
VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille
VIDEHA_349	VIDEHA_349_Tirhuta	VIDEHA_349_IPA	VIDEHA_349_Braille

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.पी.ए.	मैथिली ब्रेल	कैथी
VIDEHA_350	VIDEHA_350_Tirhuta	VIDEHA_350_IPA	VIDEHA_350_Braille	VIDEHA_350_KAITHI
VIDEHA_351	VIDEHA_351_Tirhuta	VIDEHA_351_IPA	VIDEHA_351_Braille	VIDEHA_351_KAITHI
VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI
VIDEHA_353	VIDEHA_353_Tirhuta	VIDEHA_353_IPA	VIDEHA_353_Braille	VIDEHA_353_KAITHI
VIDEHA_354	VIDEHA_354_Tirhuta	VIDEHA_354_IPA	VIDEHA_354_Braille	VIDEHA_354_KAITHI

नागरी	तिरहुता	आइपीए	ब्रेल	कैथी	रंजना	नेवाड़ी	खरोली	ब्राह्मी
355	Tirhu	IPA	Brail	KAI	Ran	Newa	Kharo	Brahmi

नागरी	तिरहुता	कैथी	रंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रेल	खरोली	उर्दू	तिब्बती	तिब्बती-उमे
356	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	खरोली	उर्दू	Tib	Ume
357	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	खरोली	उर्दू	Tib	Ume

नागरी	तिरहुता	कैथी	रंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रेल	तिब्बती	तिब्बती-उमे
358	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume
359	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume
360	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume

नागरी	तिरहुता	कैथी	नेवाड़ी	आइ.पी.ए.	ब्रेल
361	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
362	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
363	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
364	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
365	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
366	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
367	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
368	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille

369	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
---------------------	-------------------------	------------------------	------------------------	---------------------	-------------------------

.....

३

विदेहक विशेषांक

१) हाइकू विशेषांक

Videha 15 06 2008	Videha 15 06 2008 Tirhuta	12
-----------------------------------	---	----

२) गजल विशेषांक

Videha 01 11 2008	Videha 01 11 2008 Tirhuta	21
-----------------------------------	---	----

३) विहानिकथा विशेषांक

videha 01 10 2010	videha 01 10 2010 tirhuta	67
-----------------------------------	---	----

४) बाल साहित्य विशेषांक

videha 15 11 2010	videha 15 11 2010 tirhuta	70
-----------------------------------	---	----

५) नाटक विशेषांक

videha 15 12 2010	videha 15 12 2010 tirhuta	72
-----------------------------------	---	----

६) समीक्षा विशेषांक

videha 15 01 2011	videha 15 01 2011 tirhuta	74
-----------------------------------	---	----

७) नारी विशेषांक

videha 01 03 2011	videha 01 03 2011 tirhuta	77
-----------------------------------	---	----

८) अनुवाद विशेषांक (गद्य-पद्य भारती)

videha 01 01 2012	videha 01 01 2012 tirhuta	97
-----------------------------------	---	----

९) बाल गजल विशेषांक

videha 01 08 2012	videha 01 08 2012 tirhuta	111
-----------------------------------	---	-----

१०) भक्ति गजल विशेषांक

videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126
-------------------	---------------------------	-----

११) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक

videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142
-------------------	---------------------------	-----

१२) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक

Videha 01 01 2015

१३) अरविन्द ठाकुर विशेषांक

Videha 01 11 2015

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप]

१४) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

Videha 01 12 2015

१५) विदेह सम्मान विशेषांक

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

साक्षात्कार/ समारोह

साक्षात्कार	videha_15_12_2011	videha_15_01_2012	videha_01_02_2012	videha_01_03_2012
videha_01_09_2012	videha_15_01_2013	videha_01_03_2013	Videha_15_04_2016	Videha_01_07_2016

१६) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक

Videha 01 01 2017

१७) मैथिली वेब पत्रकारिता विशेषांक

VIDEHA 313

१८) मैथिली बीहनि कथा विशेषांक-२

VIDEHA 317

१९) रामलोचन ठाकुर विशेषांक

VIDEHA 319

२०) रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक

VIDEHA 320

२१) राजनन्दन लाल दास विशेषांक

VIDEHA 333

२२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

VIDEHA 348	VIDEHA 348 Tirhuta	VIDEHA 348 IPA	VIDEHA 348 Braille
------------	--------------------	----------------	--------------------

२३) केदार नाथ चौधरी विशेषांक

VIDEHA 352	VIDEHA 352 Tirhuta	VIDEHA 352 IPA	VIDEHA 352 Braille	VIDEHA 352 KATHI
------------	--------------------	----------------	--------------------	------------------

२४) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक

Videha 357	Videha 357 Tirhuta
------------	--------------------

२५) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

Videha 358	Videha 358 Tirhuta
------------	--------------------

२६) कला-विमर्श विशेषांक (सन्दर्भ- संजू दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी)

Videha 368	Videha 368 Tirhuta
------------	--------------------

२७) रचनाकार अशोक विशेषांक

Videha 369	Videha 369 Tirhuta
------------	--------------------

२७) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

Videha_370	Videha_370_Tirhuta
------------	--------------------

.....

४

लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा

सीरीज

१.कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha 01 09 2016

२.जगदानन्द झा "मनु"क "माटिक बासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA 353

३.मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA 354

४.कपिलेश्वर राउतक ५ टा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA 356

५.उमेश मण्डलक ५ टा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha 357

६.राम विलास साहुक ५ टा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha 358

७.नित नवल सुभाष चन्द्र यादव- सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्य आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

८.राजदेव मण्डलक साहित्यपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Rajdeo Mandal- Maithili Writer

९.आचार्य रामानन्द मण्डलक ५ टा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha 360

१०.नन्द विलास रायक चारिटा कथा आ एकटा एकांकी आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha 361

११.जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

१२.दुर्गानन्द मण्डलक पाँचटा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha 363

१३. नारायण यादवक पाँचटा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha 364

१४. नित नवल दिनेश कुमार मिश्र- दिनेश कुमार मिश्रक समस्त लेखन आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (जारी)

१५. नित नवल सुशील- सुशीलक समस्त साहित्य आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

नित नवल सुशील (जारी)

.....

५

"पाठक हमर पोथी किए पढ़थि"- लेखक द्वारा अप्पन पोथी/ रचनाक समीक्षा सीरीज

१. आशीष अनचिन्हार ०१ अगस्त २०२१

१.(a) आशीष अनचिन्हार ०१ मार्च २०२३

२. गजेन्द्र ठाकुर ०१ सितम्बर २०२२

.....

६

एडिटर्स चोइस सीरीज

एडिटर्स चोइस सीरीज-१

विदेहमे बलात्कारपर मैथिलीमे पहिल कविता प्रकाशित भेल छल। ई दिसम्बर २०१२ क दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्डक बादक समय छल। ओना ई अनूदित रचना छल, तेलुगुमे पसुपुलेटी गीताक कविताक हिन्दी अनुवाद केने छलीह आर. शांता सुन्दरी आ हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद केने छलाह विनीत उत्पल। हमर जानकारीमे ऐसँ बेशी सिहराबैबला कविता ऐ विषयपर कोनो भाषामे नै रचल गेल अछि। कताक सालक बादो ई समस्या ओहने अछि। ई कविता सभकेँ पढ़बाक चाही, खास कऽ सभ बेटीक बापकेँ, सभ बहिनक भाएकेँ आ सभ पत्नीक पतिकेँ। आ विचारबाक चाही जे हम सभ अपना बच्चा सभ लेल केहन समाज बनेने छी।

एडिटर्स चोइस सीरीज-१ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-२

विदेहमे ब्रेस्ट कैंसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा केर एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैंसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो ताधरि ऐ विषयपर कथा नै लिखल गेल छल, कारण ऐ कथाक ई-प्रकाशित भेलाक १-२ सालक बाद हिन्दीमे दू गोटेमे घोंघाउज भऽ रहल छल कि पहिल हम आकि हम, मुदा दुनूक तिथि मैथिलीक कथाक परवर्ती छल। बादमे ई विदेह लघु कथामे सेहो संकलित भेल।

एडिटर्स चोइस सीरीज-२ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-३

विदेहमे जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक किछु बाल कविता प्रकाशित भेल । बादमे हुनकर ३ टा बाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल जइमे २ टा कविता बेबी चाइल्डपर छल । पढ़ू ई तीनू कविता, बादक दुनू बेबी चाइल्डपर लिखल कविता पढ़बे टा करू से आग्रह ।

[एडिटर्स चोइस सीरीज-३ \(डाउनलोड लिंक\)](#)

एडिटर्स चोइस सीरीज-४

विदेहमे जगदानन्द झा "मनु"क एकटा दीर्घ बाल कथा कहि लिअ बा उपन्यास प्रकाशित भेल, नाम छल चोनहा । बादमे ई रचना विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल, ई रचना बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना छी, मैथिली बाल साहित्य कोना लिखी तकर ट्रेनिंग कोर्समे ऐ उपन्यासकेँ राखल जेबाक चाही । कोना मॉडर्न उपन्यास आगाँ बढ़ै छै, स्टेप बाइ स्टेप आ सेहो बाल उपन्यास । पढ़बे टा करू से आग्रह ।

[एडिटर्स चोइस सीरीज-४ \(डाउनलोड लिंक\)](#)

एडिटर्स चोइस सीरीज-५

एडिटर्स चोइस ५ मे मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (साभार अंतिका) । हिन्दीक पाठक, जे "उसने कहा था" पढ़ने हेता, केँ बुझल छन्हि जे कोना अहि कथाकेँ रचि चन्द्रधर शर्मा "गुलेरी" अमर भऽ गेलाह । हम चर्चा कऽ रहल छी, कुमार पवनक "पइठ" दीर्घकथाक । एकरा पढ़लाक बाद अहाँकेँ एकटा विचित्र, सुखद आ मोन हौल करैबला अनुभव भेटत, जे सेक्सपीरिअन ट्रेजेडी सँ मिलितो लागत आ फराको । मुदा ऐ रचनाकेँ पढ़लाक बाद तामस, घृणा सभपर

नियंत्रणकेँ आ सामाजिक/ पारिवारिक दायित्वकेँ सेहो अहाँ आर गंभीरतासँ लेबै, से धरि पक्का अछि। मुदा एकर एकटा शर्त अछि जे एकरा समै निकालि कऽ एक्के उखड़ाहामे पढ़ि जाइ।

[एडिटर्स चोइस सीरीज-५ \(डाउनलोड लिंक\)](#)

एडिटर्स चोइस सीरीज-६

जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा "बिसाँढ़": १९४२-४३ क अकालमे बंगालमे १५ लाख लोक मुइला, मुदा अमर्त्य सेन लिखैत छथि जे हुनकर कोनो सर-सम्बन्धी ऐ अकालमे नै मरलन्हि। मिथिलोमे अकाल आएल १९६७ ई. मे आ इन्दिरा गाँधी जखन ऐ क्षेत्र अएली तँ हुनका देखाओल गेल जे कोना मुसहर जातिक लोक बिसाँढ़ खा कऽ ऐ अकालकेँ जीति लेलन्हि। मैथिलीमे लेखनक एकभगाह स्थिति विदेहक आगमनसँ पहिने छल। मैथिलीक लेखक लोकनि सेहो अमर्त्य सेन जेकाँ ओहि महाविभीषिकासँ प्रभावित नै छला आ तँ बिसाँढ़पर कथा नै लिखि सकला। जगदीश प्रसाद मण्डल ऐपर कथा लिखलन्हि जे प्रकाशित भेल चेतना समितिक पत्रिकामे, मुदा कार्यकारी सम्पादक द्वारा वर्तनी परिवर्तनक कारण ओ मैथिलीमे नै वरण् अवहट्टुमे लिखल बुझा पड़ल, आ ओतेक प्रभावी नै भऽ सकल कारण विषय रहै खाँटी आ वर्तनी कृत्रिम। से एकर पुनः ई-प्रकाशन अपन असली रूपमे भेल विदेहमे आ ई संकलित भेल "गामक जिनगी" लघुकथा संग्रहमे। ऐ पोथीपर जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ टैगोर लिटरेचर अवार्ड भेटलनि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखनी मैथिली कथाधाराकेँ एकभगाह हेबासँ बचा लेलक, आ मैथिलीक समानान्तर इतिहासमे मैथिली साहित्यकेँ दू कालखण्डमे बाँटि कऽ पढ़ए जाए लागल- जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मण्डल

आगमनक बाद । तँ प्रस्तुत अछि लघुकथा बिसाँढ़- अपन सुच्या स्वरूपमे ।

एडिटर्स चोइस सीरीज-६ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-७

मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफी । सन्दीप कुमार साफीक दलित आत्मकथा जे अहाँकेँ अपन लघु आकाराक अछैत हिलोड़ि देत आ अहाँक ई स्थिति कऽ देत जे समानान्तर मैथिली साहित्य कतबो पढ़ू अहाँकेँ अछौं नै हएत । ई आत्मकथा विदेहमे ई-प्रकाशित भेलाक बाद लेखकक पोथी "बैशाखमे दलानपर"मे संकलित भेल आ ई मैथिलीक अखन धरिक एकमात्र दलित आत्मकथा थिक । तँ प्रस्तुत अछि मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफीक कलमसँ ।

एडिटर्स चोइस सीरीज-७ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-८

नेना भुटकाकेँ रातिमे सुनेबा लेल किछु लोककथा (विदेह पेटारसँ) ।

एडिटर्स चोइस सीरीज-८ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-९

मैथिली गजलपर परिचर्चा (विदेह पेटारसँ) ।

एडिटर्स चोइस सीरीज-९ (डाउनलोड लिंक)

.....

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

.....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि।

IGNOU इग्नू BMAF-001

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-

published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

विदेह पोथी

वि दे ह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in> विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कर देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

[Search for Books \(including Audio-Visual & Sign Language\) relating to Mithila/ Maithili](https://books.google.com/)

<https://books.google.com/>



Videha Archive of Maithili Books विदेह मैथिली पोथीक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below

.....
[तिरहुता, नेवाड़ी आ कैथी फॉन्ट डाउनलोड Google's Noto](#)

[Fonts project/ GitHub](#)

तिरहुता नेटो फॉन्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवाड़ी ओ.टी.एफ.	नेवाड़ी टी.टी.एफ.
--------------------	------------	-------------	------------------	-------------------

<https://fonts.google.com/> (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

<https://malarproject.gitlab.io/tirhuta> (Tirhuta Keyboard Online)

.....
बौद्ध चर्यापद

चर्यापद

महाकवि डाक

डाकवचन

ज्योतिरीश्वर ठाकुर

मैथिली धूर्तसमागम

विद्यापति

व्याडीभक्ति तरङ्गिणी

गोरक्षविजयम्

शंकरदेव

पारिजातहरण

रामविजय

दैत्यारि ठाकुर

श्यामंत हरण यात्रा (अंकिया नाट)

लक्ष्मीदेव

कुमारहरण नाट शत स्कंध रावण वध (अंकिया नाट)

जगत्प्रकाशमल्ल

प्रभावतीहरण नाटक

सिद्ध नरसिंहमल्ल

गीतावली सिद्धि

जगत्ज्योतिरमल्ल

हरगौरी विवाह नाटक कुञ्जविहार नाटक

हर्षनाथ झा

माधवानन्द नाटक

उषाहरण

हर्षनाथ काव्यग्रन्थावली (संकलन अमरनाथ झा १८९७-१९५५)

रत्नपाणि

उषाहरण नाटक

श्रीकांत
श्रीकृष्ण जन्म रहस्य
नन्दीपति
कृष्णकेलिमाला
गीतमाला
कान्हा रामदास
गौरीस्वयंवर
लाल
गौरीस्वयंवर नाटक
उमापति
पारिजात हरण
भानुनाथ
प्रभावती हरण
देवानन्द
उषाहरण
रमापति
रुक्मणी परिचय
उपाध्याय रामदास
आनन्द विजयाभिदान नाटिका
शिवदत्त
गौरीपरिणय सीतास्वयंवर दुर्गाविजय
पारिजात नाटक
.....

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य केन्द्रित) मेंहथमे भेल ८२ म
सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा

सखुआवाली (नारी विमर्श केन्द्रित) भपटियाहीमे भेल ८३ म सगर राति
दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

सखुआवाली

मुंशी रघुनन्दन दास (१८६०-१९४५) (सौजन्य- राधाकृष्णन् दास)

सुभद्रा हरण

रासबिहारी लाल दास (१८७२-१९४०) (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

सुमति

हरिनन्दन दास (सौजन्य- राधाकृष्णन् दास)

सुदामा चरित

पं रामजी चौधरी (१८७८-१९५२) (सौजन्य- श्री श्रीमोहन चौधरी)

विविध भजनावली

आचार्य रामलोचन शरण (१८८९-१९७९) (सौजन्य- मैथिली साहित्य
संस्थान)

जयन्ती-स्मारक ग्रन्थ

धनुषधारी दास (१८९५-१९६५) (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

मैथिली में बिहारी

हरिमोहन झा (१९०८-१९८४) (सौजन्य- मैथिली साहित्य संस्थान/
गौरीनाथ)

अभिनन्दन ग्रन्थ

अंतिका (हरिमोहन झा विशेषांक)

.....

डॉ. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (सौजन्य- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर')

महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक (१९९७)

लोक नाट्य: जट जटिन (२००७) (शोध)

हुगली ऊपर बहैत गंगा आ आन कथा (कथा संग्रह) (२००८)

भ्रमर मैथिली दीर्घ कविता (हिन्दी अनुवाद-अब बस नहीं) (२००९)

मैथिली लोक संस्कृति (नेपाली भाषामे) (२००९)

भैया अएलै अपन सोराज (नाटक संग्रह) (२०१०)

घरमुहाँ (उपन्यास) (२०१२)- ई बुक वर्जन

घरमुँहा (उपन्यास) (२०१२)- प्रिंट वर्जन

अनहरियाक चान (गजल संग्रह) (२०१३)

चीन जे हम देखल (यात्रा संस्मरण) (२०१४)

सूली पर इजोत एवं अन्य नाटक (२०१५)

सीमाके आर-पार (यात्रा संस्मरण) (२०१६)

युद्धभूमिक एसगर योद्धा (कविता संग्रह) (२०१७)

एंटीवायरस (कथा संग्रह) (२०१९)

कोरोनाक संत्रासमे ओझरायल जिनगी (लकडाउन डायरी) (२०२०)

मिथिलाक लोकजीवन लोकसन्दर्भ (२०२२)

सोन्हगर गन्धक अन्वेषी डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी

स्मारिका (२०१०)

आंगन अंक-४ (२०१२) सलहेस विशेषांक

आँजुर (अंक वर्ष ३६, अंक ३) सोमदेव विशेष

गामघर-३०-०८-२०१८

गामघर-०४-१०-२०१८

गामघर-१६-०५-२०१९

गामघर-२७-०६-२०१९

रामभरोस कापडि "भ्रमर"क किछु नाटक

मुन्नाजी द्वारा साक्षात्कार पृ. ३२१-३२८

देसिल बयनाक बहन्ने रामलोचन ठाकुर प्रसंग पृ. ३४७-३५७

हमर ज्ञान-पिपाशाक स्रोत: शरदिन्दु चौधरी पृ. ३१-३४

जट जटिन पृ. ५६८-७०५

भैया, अएलै अपन सोराज पृ. ५६८-७०५

आलेख कथा-फलैशबैक पृ. ८४-८८

आलेख पृ. पृ. ११७-१२५

आलेख पृ. १२७६-१२९०

आलेख पृ. ९७-९८

रायपुर यात्रा प्रसंग पृ. १५०-१५४

सलहेस परिचर्चा रिपोर्ट पृ. ४१-४५

रिपोर्ट पृ. २३१-२४३

रिपोर्ट पृ. ४४५

रिपोर्ट पृ ५६८-६०५

रिपोर्ट पृ. ५८३-५८५

गंगा प्रसादक स्वायत्तता आ हुगलीपर बहैत गंगा पृ. २२३-२२६

गीत पृ. १४४९-१४५०

गजल गीत पृ. २११

अन्हारक विरुद्ध आ आजाद गजल पृ. ६१९-६२१)

विदेह राम भरोस कापडि 'भ्रमर' विशेषांक

बृषेश चन्द्र लाल (सौजन्य- बृषेश चन्द्र लाल)

आन्दोलन (कविता संग्रह)

ढोलक (बाल कविता संग्रह)

सुम्निमा (अनूदित उपन्यास)

मोदिआइन (बी.पी.कोइरालाक कथा)

माल्हो (कथा संग्रह)

गोलबा (कथा संग्रह)

परमेश्वर कापड़ि (सौजन्य- परमेश्वर कापड़ि)

धूआ-धजा

अंक ७

अंक १४

अंक १५

अंक १६

अंक १८

अंक १० जून २०१२

अंक २४ जून २०१२

२५ जुलाइ २०१२

०५ अगस्त २०१२

२३ फरबरी २०१६

आसिन २०७३

सुजीत कुमार झा (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

रिपोर्टर डायरी (रिपोर्ताज)

चिड़ै (लघुकथा-संग्रह)

जिद्दी (लघुकथा संग्रह)

कोइली घूरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह)

गन्ध (लघु कथा संग्रह)

खजुरीबाली (लघु कथा संग्रह)

बुलबुल (कथा संग्रह)

दूधमती- (नेपाली आ मैथिलीमे)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक ३५ अंक ३६ अंक ३७ अंक

३८ अंक ३९ अंक ४० अंक ४१

विन्देश्वर ठाकुर

नेपालक नोर मरुभूमिमे

विनीत ठाकुर (सौजन्य- विनीत ठाकुर)

बाँकी अछि हम्मर दूधक कर्ज

संतोष मिश्र (सौजन्य- संतोष मिश्र)

पोसपुत (लघुकथा-संग्रह)

उदास मोन (लघुकथा-संग्रह)

एना-किए (कविता-संग्रह)

अएना (संपादन- कविता-संग्रह)

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद रूपा धीरू आ धीरेन्द्र

प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता बेडक देश-भ्रमण

Ayodhyanath Choudhary (Courtesy- Ayodhyanath Choudhary)

Varied Verses (Maithili Verses in English Translation)

...

डॉ शशिधर कुमार आ सुप्रिया बेबी कुमारी

भूकम्प (पृ. ६३८-६७४)

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

इलारानी सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

प्रेम- एक कविता (अनूदित नाटक)

अरुन्धती देवी (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिलाक विदुषी महिला

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

सुस्मिता पाठक (सौजन्य- केदार कानन)

परिचिति (कविता संग्रह)

कनोजडि (कथा संग्रह)

नन्दिनी पाठक (सौजन्य- केदार कानन)

पाथरक शहर (कविता संग्रह)

पन्ना झा (सौजन्य- नरेन्द्र झा)

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

गोसाउनिक गीत

नशामुक्ति हित गाबी गीत

निनियाँ

यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

सुखल मन तरसल आँखि (पद्य आ गद्य)

सुखल मन तरसल आँखि (कविता)

अंततः (कविता संग्रह)

चुष्का (बाल कथा संग्रह)

नीता झा (सौजन्य- नीता झा)

बिलाइ मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

यायावरी (यात्रावृत्तान्त)

यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

एकटा अकास (लघुकथा संग्रह)

भावांजलि (गद्य गीत)

किस्त-किस्त जीवन (आत्म कथा)

आखर-आखर प्रीत

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

विभा रानी

विभा रानीक दूटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)

सुशीला झा (सौजन्य- प्रभा खेतान/ सुशीला झा)

छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

कुसुम ठाकुर

प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)(पृ. ४५९-५७२)

डॉ. कामिनी कामायनी

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक

१-३५० सँ)

प्रीति ठाकुर

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

रेस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

ए बी सी डी- प्रकृति अक्षर पोथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सभ खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बो म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

रड सभ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(१७) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पोथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बाजाक अबाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

किरण चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-वाड़ी

आर्या कॉकपिट मे
दीपा करमाकर- सही संतुलन मे
जंगल मे अहाँक स्वागत अछि
व्हेल छथि आकाश मे
भैया के मुस्कान के चोरौलक
बीज संचयक
अचंभित करय "फिबोनाची"
शौचालयक खिस्सा
लाल बरसाती
गुल्लीक जादुई पेटी
समीराक विकठ भोजन
विवाह मे जाई छी
प्रियंका झा (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)
हमर माँछ! नै हमर माँछ!
रश्मि प्रिया (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)
कैयो सकै छी, नहियो कऽ सकै छी
सुनीता ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)
बण्टी आ बबली
नीलिमा चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)
हमर सभसँ नीक संगी
स्वास्तिका ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)
गप्पू बुते नाचल नै होइ छै
तूलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)
हमरा ओ चाही!

मधूलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

औँघाइत भीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सभ संगे भँट-घाँट

पूनम मण्डल

सुतै कालक खिस्सा

.....

राधाकृष्ण चौधरी (१९२१-१९८५) (सौजन्य- प्रभात कुमार चौधरी/
IGNCA)

मिथिलाक इतिहास

A Survey of Maithili Literature

The Political and Cultural Heritage of Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

सोमदेव (१९३४-२०२२) (सौजन्य- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर')

औँजुर सोमदेव विशेष

प्रभास कुमार चौधरी (१९४१-१९९८) (सौजन्य- अशोक)

सन्धान प्रभास विशेष

लल्लन प्रसाद ठाकुर (१९५३-१९९५) (सौजन्य- कुसुम ठाकुर)

लौंगिया मिरचाइ

नाटककार लल्लन प्रसाद ठाकुर समग्र रचनावली (५ टा नाटक, ४ टा
एकांकी आ ३ टा गीति नाटिका सहित)

सुभाष चन्द्र यादव (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)

राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

नित नवल राजकमल

बनैत बिगड़ैत (लघुकथा संग्रह)

गुलो

गुलो (हिन्दी अनुवाद- रमण कुमार सिंह)

रमता जोगी

मडर

भोट

गुलो: कला आ भाषा (सम्पादक तारानन्द वियोगी आ केदार कानन)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

अशोक (सौजन्य- अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवास)

चक्रव्यूह (कविता संग्रह) (१९८६)

त्रिकोण (कथा संग्रह) (१९८६)

ओहि रातिक भोर (कथा संग्रह) (१९९१)

मातबर (कथा संग्रह) (२००१)

संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (२००७)

आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (२०१३)

बात-विचार (आलोचना) (२०१५)

डैडीगाम (कथा संग्रह) (२०१७)

अशोक-सेलेक्शन्स (विविध)

अशोक-नव कविता

नीक दिनक बाइस्कोप (व्यंग्य संग्रह) (२०१८)

कथा-पाठ (मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन) (२०२२)

प्रतिमान (सम्पादन)

किरण (प्रतिमान गोष्ठी- सम्पादक मोहन भारद्वाज)

सन्धान १ (सम्पादन)

सन्धान २ (सम्पादन)

सन्धान ३ (सम्पादन) प्रभास विशेष

सन्धान ४ (सम्पादन)

मुन्ना जी द्वारा साक्षात्कार (पृ. ३८२-३८५)

बनैत कम बिगडैत बेसी (पृ. २०२३-२०३१)

सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत (पृ. ११९-१२२)

रामलोचन ठाकुरक कविता पढ़ैत (पृ. ३२७-३४१)

केदार नाथ चौधरीक उपन्यास (पृ. १०१-१०६)

शरदिन्दुजी (पृ. ७०-७३)

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

रामदेव झा (सौजन्य- शंकरदेव झा/ योगानन्द झा)

सव्यसाची (अभिनन्दन ग्रन्थ)

मैथिली शब्द संचय

दत्त-वतीक वस्तु कौशल

संकल्प अंक-५ (सम्पादक डॉ रामदेव झा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द झा) १९८८

डॉ योगानन्द झा (सौजन्य- योगानन्द झा)

लोकजीवन ओ लोकसाहित्य १९८६

संकल्प अंक-५ (सम्पादक डॉ रामदेव झा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द झा) १९८८

आलेख सञ्चयन २००२

मैथिली शाक्त साहित्य- शास्त्रीय भगवती गीत (सम्पादन) २००२

मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष २००६

लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा २००७

गहबर गीत (संकलन-सम्पादन) २००७

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९

कथा-लोककथा २०१०

कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता' कृत सीतावतरण (सम्पादन) २०११

मंगल-प्रभात गाँधीजी (अनुवाद) २०१३

भोरे-भोर (डॉ ए. कीर्तिवर्द्धनक हिन्दी कविता संग्रहक अनुवाद) २०१४

तारानन्द वियोगी (सौजन्य- तारानन्द वियोगी/ सुभाष चन्द्र यादव)

प्रलय रहस्य (कविता संग्रह)

धराशायी हेबाक समय (कविता मे कोरोना काल)

दुनिया घर मेहमान (प्रेम कविता)

अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह)

छियानत (कथा संग्रह)

बहुवचन (आलोचना)

गुलो: कला आ भाषा (सम्पादन)

सुधांशु शेखर चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

शेखर रचित गजल ओ गीत

शरदिन्दु चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

जँ हम जनितहुँ (२००२)

बड़ अजगुत देखल (२००५)

गोबरगणेश (२०११)

करिया कक्काक कोरामिन (२०१६)

बात-बातपर बात खण्ड-१ (२०१९)

मर्मन्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२) (२०२०)

हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३) (२०२१)

साक्षात् (बात-बातपर बात-४) (२०२१)

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

काशीकान्त मिश्र मधुप

विदेह काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक

राजनन्दन लाल दास

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

प्रेमलता मिश्र प्रेम

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

रवीन्द्र नाथ ठाकुर

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

मायानन्द मिश्र (सौजन्य- केदार कानन)

अवांतर (गजल-गीतल)

कलानन्द भट्ट (सौजन्य- केदार कानन)

कान्ह पर लहास हमर मैथिली गजल संग्रह

अनुलग्नक-कोसी कॉलोनी सँ किशन कुटीर धरि

रामकृष्ण झा 'किसुन' (सौजन्य- केदार कानन)

किसुन समग्र-१ (सम्पादक केदार कानन आ रमण कुमार सिंह)

किसुन समग्र-२ (सम्पादक केदार कानन आ रमण कुमार सिंह)

मैथिलीक नव कविता (सम्पादन)

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादक महेन्द्र आ केदार कानन)

केदार कानन (सौजन्य केदार कानन/ CIIL/ सुभाष चन्द्र यादव)

अक्ष पर नचैत (संस्मरण: जीवकान्तक पत्रक बहाने)

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादन)

गुलो: कला आ भाषा (सम्पादन)

किसुन समग्र-१ (सम्पादन)

किसुन समग्र-२ (सम्पादन)

अपना नजरि मे (सम्पादन)

सृजन केर दीप पर्व (सम्पादन)

भारती मंडन अंक-१६ (सम्पादन)

महेन्द्र (CIIL/ केदार कानन)

जुआयल कनकनी

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादन)

बाबा बैद्यनाथ (सौजन्य- बाबा बैद्यनाथ)

पहरा इमानपर (गजल संग्रह)

अरविन्द ठाकुर (सौजन्य- अरविन्द ठाकुर/ CIIL)

परती टूटि रहल अछि (कविता संग्रह)

अन्हारक विरोध मे (लघु कथा संग्रह)

बहुरुपिया प्रदेश मे (गजल संग्रह)

सबद मितारथ धाय्या

रोशनाइक लोकपक्ष (कथेतर गद्य)

जड़ताक प्रतिवाद मे (सोल्हकन-दीठक आरोहण गाथा- दीर्घ कविता)

सृजन केर दीप पर्व (सम्पादन)

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष

अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप]

नरेन्द्र झा (सौजन्य- नरेन्द्र झा)

चपल चरन चित चंचल भान

विकास ओ अर्थतंत्र

राजेश्वर झा (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव)

मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास

सुरेन्द्र झा सुमन (आर्काइव डोट कौम)

दत्त-वती (मूल)

गोविंद झा ((IGNCA Site आर्काइव)

Maithili-English Dictionary

डॉ शैलेन्द्र मोहन झा (आर्काइव डोट कौम/ CIIL)

परिचय निचय

मैथिली गद्य संग्रह- सं

रमानाथ झा (CIIL Site आर्काइव)

प्रबन्ध संग्रह

रमानाथ मिश्र "मिहिर" (आर्काइव डोट कौम)

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश

आनन्द मिश्र (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

श्यामानन्द झा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मैथिली गीत चन्द्रिका

मैथिली संदेश (विभिन्न कविक कविता-सम्पादित)

पं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

भवप्रीतानन्द ओझा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

पदावली

गणनाथ-विन्ध्यनाथ पदावली (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

गणनाथ-विन्ध्यनाथ पदावली

रूपनारायण झा "राकेश" (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मनमोहन लड्डू

भोला लाल दास (आर्काइव डोट कॉम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

खड्ग वल्लभ दास 'स्वजन' (सौजन्य- हेमन्त दास "हिम")

सीता-शील

डॉ. मदनेश्वर मिश्र (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

एक छलीह महारानी

यात्री (नागार्जुन) (सौजन्य- मिथिला सांस्कृतिक परिषद)

बलचनमा

कालीकान्त झा "बूच"

कलानिधि- कविता-संग्रह

उपेन्द्रनाथ झा "व्यास" (सौजन्य- मयंक झा)

रुबाइयात-ए-ओमर खैयाम (मैथिली पद्यानुवाद)

प्रतीक (कविता संग्रह)

संन्यासी (काव्य)

रमेश नारायण (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

पाथरक नाव (लघुकथा संग्रह)

गोपालजी झा "गोपेश" (सौजन्य- गोपालजी झा "गोपेश")

गुम्म भेल ठाढ़ छी

विजय नाथ झा (सौजन्य- विजय नाथ झा)

अहींक लेल (गीत-गजल संग्रह)

कामायनी (अनुवाद)

नगेन्द्र कुमार (सौजन्य- प्रसन्न कुमार झा)

ससरफानी

प्रबोध नारायण सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

अन्हेर नगरी (अनुवाद)

चयनिका (सम्पादन)

वैजयन्ती (कविता)

हाथीक दाँत

टटका गप (सम्पादित कथा संकलन)

प्रेमक रोग (नाटक)

अमरनाथ (सौजन्य- अमरनाथ)

क्षणिका- विहनि कथा संग्रह

प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

पंचदेवोपासक भूमि मिथिला पृ. १००१-१०८०

डॉ. गंगेश गुंजन (सौजन्य- गंगेश गुंजन)

राधा (१-३०) पृ. १३७३-१५८०

प्रथम-चौबटिया-नाटक (बुधिबधिया)

नाटक आइ भोर

कथा-संग्रह उचितवक्ता

गीत-गजल दुखक दुपहरिया

कमलधर दास (सौजन्य- कमलधर दास)

मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध

कीर्तिनारायण मिश्र (सौजन्य- कीर्तिनारायण मिश्र)

ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप

सीमान्त

आदमीकेँ जोहैत

अपन एकान्त मे

स्मृतियात्राक एकान्तमे

राजनाथ मिश्र

Mithila Painting-Modern Art-Photos

प्रेमशंकर सिंह (सौजन्य- प्रेमशंकर सिंह/ मिथिला दर्पण प्रकाशन)

मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

विद्यापति कृत व्याडीभविततरङ्गिनी (सम्पादन)

डॉ. रमण झा (सौजन्य- रमण झा)

मैथिली काव्यमे अलङ्कार

अलङ्कार-भास्कर

मैथिली काव्यमे ज्योतिष

भिन्न-अभिन्न

अहिरावण-वध (खण्ड काव्य)

पारिजात-मञ्जरी

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण"/ CIIL

Site आर्काइव)

हिआओल

सगर राति दीप जरय

राजू आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

अखियासल

केदार नाथ चौधरी (सौजन्य- केदार नाथ चौधरी)

चमेलीरानी

माहुर

करार

अबारा नहितन

अयना

हीना

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बतकही

विज्ञानक बतकही भाग-२

नरक विजय (सम्पूर्ण)

नरक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

पिरामिडक देशमे

अकटा मिसिया (कथा संग्रह)

रोबोट (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

किछु तीत मधुर (यात्रा वृत्तांत)

सुशील (सौजन्य- सुशील)

घराडी (उपन्यास) (१९७३)

गामबाली (उपन्यास) (१९८२)

भामती (नाटक) (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३)

अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (२०१६)

कामेश्वर झा 'कमल' (सौजन्य- नबोनारायण मिश्र)

कमल-ताल (गीत संग्रह)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

जे कहब साँच कहब

आँखि मुनने आँखि खोलने (संस्मरण)

स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरण)

अपूर्वा (कविता संग्रह)

इतिहासहन्ता (कविता संग्रह)

देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (कविता संग्रह)

लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता संग्रह)

प्रतिध्वनि (विदेशी भाषाक कविताक मैथिली रूपान्तरण)

पद्मानदीक माझी (अनूदित उपन्यास)

मैथिली लोककथा

आजुक कविता (सम्पादित कविता संग्रह)

बेताल कथा (हास्य-व्यंग)

देसिल बयना (अखबार)

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

डॉ. देवशंकर नवीन (सौजन्य- देवशंकर नवीन)

आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

डॉ बचेश्वर झा

निवन्ध-निकुञ्ज

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा)

कुरल: मैथिली भावानुवाद

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

आँखिमे चित्र हो मैथिली केर (आत्मकथा- जारी)

धारक ओइ पार (दीर्घ कविता)

गीत गंगा (गीत संग्रह)

गजल गंगा (गजल संग्रह)

तोरा अंगना मे (गीत संग्रह)

तोरा अंगना मे (गीत संग्रह)- मूल

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

राज किशोर मिश्र

चाननि (कविता संग्रह)

सप्तपर्ण (कविता संग्रह)

रबीन्द्र नारायण मिश्र (सौजन्य- रबीन्द्र नारायण मिश्र)

भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा)

प्रसंगवश (निबंध)

स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग)

फसाद (कथा संग्रह)

नमस्तस्यै (उपन्यास)

विविध प्रसंग (निबंध)

महराज (उपन्यास)

लजकोटर (उपन्यास)

सीमाक ओहि पार (उपन्यास)

समाधान (निबंध संग्रह)

मातृभूमि (उपन्यास)

स्वप्नलोक (उपन्यास)

शंखनाद (उपन्यास)

इएह थिक जीवन (संस्मरण)

ढहैत देबाल (उपन्यास)

पाथेय (संस्मरण)

हम आबि रहल छी (उपन्यास)

प्रलयक परात (उपन्यास)

बीति गेल समय (उपन्यास)

प्रतिबिम्ब (उपन्यास)

बदलि रहल अछि सभ किछु (उपन्यास)

राष्ट्र मंदिर (उपन्यास)

संयोग (कथा संग्रह)

नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')

गामघर (कथा संग्रह)

सुजाता (उपन्यास)

महारानी कैकेयी (प्रवचनात्मक निबन्ध)

गुदरीक लाल (उपन्यास)

अनठिया कुकुर (उपन्यास)

आडम्बर (कथा संग्रह)

दिल्लीक पार्क (शब्द चित्र)

सुकन्या (उपन्यास)

स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)

काव्य सरिता (मैथिली काव्य संग्रह)

परिवार (संस्मरणात्मक उपन्यास)

याचक के नञि (मैथिली शब्द-चित्र)

सत्यानन्द पाठक (सौजन्य- सत्यानन्द पाठक)

हमर गाम (उपन्यास)

डॉ. उदय नारायण सिंह "नचिकेता" (सौजन्य- नचिकेता)

नो एण्ट्री : मा प्रविश

आन्दोलन

एक छल राजा

जनक आ' अन्यान्य एकांकी

नाटक क लेल

नायक क नाम जीवन

प्रत्यावर्त्तन

रामलीला

प्रियंवदा (एकांकी)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाइ १९६९)

मिथिला दर्शन मार्च २०२१

मिथिला दर्शन नवम्बर २०२१

रवि भूषण पाठक

रिहर्सल (नाटक)

विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)

विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)

कुमार मनोज कश्यप

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)

डॉ. शम्भु कुमार सिंह

(तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद डॉ शम्भु कुमार सिंह द्वारा) पाखलो

विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)

डॉ. अरुण कुमार सिंह

विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)

कुमार पवन (सौजन्य- अंतिका)

पइठ (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)

डायरीक खाली पन्ना

केशव भारद्वाज

अजगुत अफ्रीका (अफ्रीका डायरी) पृ. २१४-४६६

किछु पढ़ल आ किछु सुनल- ईदी अमीन पृ. ४८८-५४८

खेलौना पृ. ४६७-४८७

पैबन्द पृ. ५४९-७९८

किछु कथा ५०-४६३

गोपाल झा 'अभिषेक' (सौजन्य- गोपाल झा 'अभिषेक')

आउ स्वप्न साझी करी (कविता संग्रह)

आमोद कुमार झा (सौजन्य- आमोद कुमार झा)

बिम्बक पथार (कविता संग्रह)

किशन कारीगर (सौजन्य- किशन कारीगर)

किछु फुरा गेल हमरा

आशीष अनचिन्हार

संदर्भ सहित (गजल-आलोचना)

कुमारि इच्छा (गजल संग्रह)

जंघाजोड़ी (गजल संग्रह)

अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह)

मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास

मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास (अनुलग्नक: अंतिका आलेख:अंतर्जाल

आ मैथिली: गजेन्द्र ठाकुर)

मैथिली गजलक रेडी रेकोनर

शब्द-अर्थ-शक्ति

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (विदेह अरविन्द ठाकुर

विशेषांकक प्रिण्ट रूप)[सम्पादन]

मुन्नाजी

मोकाम दिस (बीहनि कथा संग्रह)

प्रतीक (विहनि कथा संग्रह)

माँझ आंगनमे कतिआएल छी (मैथिली गजल संग्रह)

हम पुछैत छी (साक्षात्कार)

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)

घाह (हाइकू-टंका संग्रह)

सन्दीप कुमार साफी

बैशाखमे दलानपर

ओम प्रकाश झा

कियो बूझि नै सकल हमरा (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह)

अमित मिश्र

नव अंशु (गजल-हजल, रुबाइ संकलन)

चन्दन कुमार झा

मोनक बात (गजल, हजल, बाल गजल, रुबाइ आ कताक संकलन)

डॉ. अनमोल झा

समय साक्षी थिक (विहनि कथा संग्रह)

ई जे समय अछि (विहनि कथा संग्रह)

बिनय भूषण (सौजन्य- आशीष अनचिन्हार)

उजरा परवाक खोज (कविता संग्रह)

आनन्द कुमार झा

टाकाक मोल (नाटक)

कलह (नाटक)

बदलैत समाज (नाटक)

धधाइत नवकी कनियाँक लहास (नाटक)

हठात् परिवर्तन (नाटक)

मुक्ति यात्रा (नाटक)

शिव कुमार झा "टिल्लू"

क्षणप्रभा-कविता-संग्रह

अंशु-समालोचना

देवांशु वत्स

नताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कौमिक्स)

डॉ. विनीत उत्पल

हम पुछैत छी (कविता संग्रह)

रेहन पर रघू - काशीनाथ सिंहक हिन्दी उपन्यासक विनीत उत्पल द्वारा

मैथिली अनुवाद

मन्त्रद्रष्टाऋष्यश्रृङ्ग- लेखक हरिशंकरश्रीवास्तव "शलभ" (हिन्दीसं मैथिली अनुवाद विनीत उत्पल द्वारा)

मोहनदास- उदय प्रकाशक हिन्दी उपन्यासक विनीत उत्पल द्वारा मैथिली अनुवाद

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी) मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर) मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)

जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")

नढिया भुकैए हमर घराडीपर (गजल संग्रह)

तोहर कतेक रंग (विहनि कथा संग्रह)

चोनहा- (बाल उपन्यास)

व्यथा- (कविता-गीत संग्रह)

राजदेव मण्डल

अम्बरा-कविता-संग्रह

हमर टोल (उपन्यास)

बसुंधरा(कविता संग्रह)

जाल (पटकथा)

लाज (एकांकी)

जल भंवर (उपन्यास)

त्रिवेणीक रंग (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

पंचैती (लघु पटकथा)

वापसी

Rajdeo Mandal- Maithili Writer by Gajendra Thakur

दुर्गानन्द मण्डल

संचयिका

कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

चक्षु

राम विलास साहु

अंकुर- लघुकथा संग्रह

रथक चक्का उलटि चलै बाट (कविता/ टनका संग्रह)

कर्म बिनु जग सुत्रा (दोसर कविता/ टनका संग्रह)

स्कूलक खिचडी (विहनि/ लघु कथा संग्रह)

दूधबेचनी (लघु कथा संग्रह)

मनक मैल

नारायण यादव (सौजन्य- उमेश मण्डल)

खाली घर

रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"

हमरा बिनु जगत सूना छै

गीतांजलि झारू

कपिलेश्वर राउत

उलहन (विहनि - लघु कथा संग्रह)

नंद विलास राय

सखारी-पेटारी(लघुकथा संग्रह)

मदन अमर (दोसर लघु कथा संग्रह)

मरजादक भोज (तेसर लघुकथा संग्रह)

भरदुतिया

छठिक डाला

हमर चारूधाम

असल पूजा

ललन कुमार कामत (सौजन्य- उमेश मण्डल)

किछु विहनि आ लघुकथा

उमेश पासवान

वर्णित रस

बेचन ठाकुर

बेटीक अपमान आ छीनरदेवी (नाटक)

बाप भेल पित्ती आ अधिकार (नाटक)

बिसवासघात (नाटक)

ऊँच-नीच (नाटक)

भौँट (नाटक)

डॉ. उमेश मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण)

अभ्यन्तर (संकलन-सम्पादन)

हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि (संकलन-सम्पादन)

जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी (संकलन-सम्पादन)

निर्विकल्प (संकलन-सम्पादन)

समस्या सँ समाधान धरि (संकलन-सम्पादन)

निश्चुकी- कविता संग्रह

मिथिलाक संस्कार गीत, विध-व्यवहार गीत आ गीतनाद (संकलन)

मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो मिथिलाक जीव-जन्तु स्लाइड शो

मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो

Mithila Painting-Modern Art-Photos

सगर राति दीप जरय- इतिहास

सगर राति दीप जरय- आरती कुमारी फाइल

दुध-पानि फराक-फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)-
(छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)

हिन्दुस्तानी मुसलमान और हिन्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- गीतेश
शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल

उमेश मण्डल द्वारा मैथिली लेखकक रचना संसारसँ बीछल विचारक
पाम्फलेटक पोथी

जगदीश प्रसाद मण्डल राजदेव मण्डल डॉ. शिव कुमार प्रसाद रामदेव प्रसाद
मण्डल "झारूदार" राम विलास साहु नन्द विलास राय कपिलेश्वर
राउत प्रीतम कुमार निषाद

मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत
(सौजन्य: उमेश मंडल)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 4
1 42 43

अन्तर्ध्वनि (जगदीश प्रसाद मण्डलक १५ गोट बीछल कथा- चयन एवम्
सम्पादन- उमेश मण्डल)

.....

जगदीश प्रसाद मण्डल

गामक जिनगी (लघुकथा संग्रह)

मिथिलाक बेटी (नाटक)

मौलाइल गाछक फूल (उपन्यास)

जिनगीक जीत (उपन्यास)

उत्थान-पतन (उपन्यास)

जीबन-मरन (उपन्यास)

जीवन-संघर्ष (उपन्यास)

तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

पंचवटी (एकांकी-संचयन)

अर्द्धांगिनी..सरोजनी.. सुभद्रा.. भाइक सिनेह इत्यादि (लघुकथा संग्रह)

कम्प्रोमाइज (नाटक)

झमेलिया बिआह (नाटक)

इन्द्रधनुषी अकास (पद्य संग्रह)

शंभुदास (तीनटा दीर्घ कथा मइटुग्गर, शंभुदास आ फाँसी)

गीतांजलि (गीत संग्रह)

राति-दिन (कविता संग्रह)

सतभैया पोखरि (लघु कथा संग्रह)

तीन जेठ एगारहम माघ (गीत संग्रह)

बजन्ता-बुझन्ता (विहनि कथा संग्रह)

रत्नाकर डकैत (नाटक)

बडकी बहिन (उपन्यास)

भकमोड़ (लघुकथा संग्रह)

उलबा चाउर (लघुकथा संग्रह)

सरिता (कविता संग्रह)

सुखाएल पोखरिक जाइठ (गीत संग्रह)

नै धाड़ैए (बाल उपन्यास)

स्वयंवर (नाटक)

पतझाड़ (लघु कथा संग्रह)

फलहार (लघु कथा संग्रह)

गामक शकल सूरत (लघु कथा संग्रह)

लजबिजी (लघु कथा संग्रह)

बटेसर काका (लघु कथा संग्रह)

आमक गाछी

अप्पन गाम

दिवालीक दीप

पंचदेव सीरीज

पंचदेव-१ पंचदेव-२ पंचदेव-३ पंचदेव-४ पंचदेव-५ पंचदेव-६ पंचदेव-

७ पंचदेव-८ पंचदेव-९ पंचदेव-१० पंचदेव-२० पंचदेव-३० पंचदेव-

४० पंचदेव-५० पंचदेव-६० पंचदेव-७० पंचदेव-८० पंचदेव-९० पंचदेव-

१००

दुध-पानि फराक-फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)- (छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक

२३३ (Videha_01_09_2017) सँ २५०

(Videha_15_05_2018) धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक

लिंकपर पढ़ः-

VIDEHA_233	VIDEHA_234	VIDEHA_235	VIDEHA_236	VIDEHA_237	VIDEHA_238
VIDEHA_239	VIDEHA_240	VIDEHA_241	VIDEHA_242	VIDEHA_243	VIDEHA_244
VIDEHA_245	VIDEHA_246	VIDEHA_247	VIDEHA_248	VIDEHA_249	VIDEHA_250

पंगु (उपन्यास)- साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार २०२१ सँ सम्मानित पोथी

पंगु (हिन्दी अनुवाद रामेश्वर प्रसाद मण्डल)

अप्पन साती (लघुकथा संग्रह)

मोड़पर (उपन्यास)

सुचिता (उपन्यास)

सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल (लघुकथा संग्रह)

डॉ. शशिधर कुमार

उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग १-२) (पृ. १०५४-१०९५)

खिस्सा अण्टार्कटिका केर (पृ. १०५४-१०९५)

बाल कविता (पृ. ९९३-१२१५)

बाल कविता (पृ. १००४-११७३)

सचित्र बाल कविता (पृ. ७४७-८३४)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४६८-१८५०)

.....

गजेन्द्र ठाकुर

तेलुगु कथा आ ओड़िया, तेलुगु, गुजराती, भोजपुरी आ कश्मीरी कविता

तेलुगु कथा आ ओड़िया, तेलुगु, गुजराती, भोजपुरी आ कश्मीरी कविता

(मिथिलाक्षर)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-१

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग दू (कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक-२)

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (भाग-२, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-८)

(संक्षिप्त)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (मिथिलाक्षर)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (कैथी)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (नेवाड़ी)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (IPA)

दूषण पञ्जी- The Black Book

दूषण पञ्जी- The Black Book (मिथिलाक्षर)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (बीहनि, लघु आ दीर्घ कथा संग्रह)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (मिथिलाक्षर)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (कैथी)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (नेवाड़ी)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (IPA)

स्वप्नमे मिज्झर होइत

The Science of Words

Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी (हिन्दी अनुवाद रामेश्वर प्रसाद मण्डल)

गंगा ब्रिज (नाटक)

उल्कामुख (नाटक)

संकर्षण (नाटक)

धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ (रुबाइ, कता आ गजल संग्रह)

सहस्रजित् (पद्य संग्रह)

सहस्राब्दीक चौपड़पर (पद्य संग्रह)

त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (दूटा गीत प्रबन्ध)

सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)

सहस्रबाढ़नि ब्रेल-मैथिली (मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी)

सहस्रशीर्षा (उपन्यास)

गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

शब्दशास्त्रम् (लघुकथा संग्रह)

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

देवनागरी वर्सन तिरहुता वर्सन ब्रेल वर्सन

Learn Maithili Sign Language

Learn Mithilakshar Script

Learn Braille through Mithilakshar Script

Learn International Phonetic Script through

Mithilakshar Script

Learn Kaithi

Learn Newari

Learn Calligraphic Newari (Ranjana)

Learn Urdu Script

Learn Tibetan Script

Learn Japanese Script for Haiku

Learn Brahmi

Learn Kharoshthi

मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पाबनि तिहार (कथा) आ
मिथिलाक संगीत

जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाडक बडौरा (बाल-पद्य संग्रह)

नाराशंसी (गीत-प्रबन्ध)

मचण्ड (नाटक)

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

भऽ जाएब छू (मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले-
Maithili's first climate-fiction play originally published
in 2012)

कमलाक भगता

तरहरिमे परीलोक

बेसी छुट्टी कम इसकूल

बडद करैए दाउन ने यौ

बाल गजल

फिनिश लाइन

अनूदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर

विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ

अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका

शेष ४० टा बाल चित्र-पोथी नीचाँक लिंकपर:-

सुनु | छर सभ | एकटा नीक दिन | खुनु ह्यम तँ ठीक छी मे | की अहाँ रे चिहँ सभसँ देखने छी?

टोस्ट	बहीटा कर्मिटा	एत हम सभ रई छी	भारतीयक राजकुमारी	भारतीयक राजकुमारी (बिनु शब्दक)
बुयो	कस-कस कसक	अबु-मकक नौनाह	मेत जे बेजुनरई देसहा छल	अबुत पिबोमशी अंक-शेखर
हल	अखन नै, अखन नै	जमदिमक उत्सव भोज	मोट राजा पालर-दुबह कपुड	बहिया जे अगन ईसी नै लेकि सजीत छलि
अकरी	हम बुधि लखी छी	शोट-लल-दुदद ओरी	कस नीक, ओनु नीक	ई समटा बिलडिक पोख अछि।
सौभ अमा	हार टोल्क बाद	जखन इकाइ रचल गेल	माछी पेर आउ दादा	अमाचीक जुजु मरीन सभ
दिन-ओन	पाउ-म्याक-माह	कुककक एकटा दिन	हम नीक लगी	रीलक नः-रकुले पबिल दिन
कनी बिसयो नै	लल-बसली	भूत-ओक नटपशाला	अउ एए नः	कस अछि ई अंक ५?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक

<https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF> (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)

<https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT> (चलू हम तँ ठीक छी ने!)

<https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo> (एकटा नीक दिन)

<https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp> (घर सभ)

<https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7> (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional- गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एतय समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटेक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे धार आओत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धार आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुच्चा भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

(तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास)

अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-५

(मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओडिया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-"ए", क्रम-५])

[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]

मैथिली

बांग्ला

असमिया

ओडिया

हिन्दी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथाली

NTA UGC NET Maithili 01- गजेन्द्र ठाकुर

NTA UGC NET Maithili 02- गजेन्द्र ठाकुर

Test Series-1- गजेन्द्र ठाकुर

Test Series-2- गजेन्द्र ठाकुर

GS (Pre)

Topic 1 - गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह १-

२५ www.vidaha.co.in

विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५०

सँ- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन	
देवनागरी	मिथिलाक्षर
विदेह:सदेह १	विदेह: सदेह १ तिरहुता
विदेह:सदेह २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना	विदेह: सदेह २ तिरहुता
विदेह:सदेह ३ मैथिली पद्य	विदेह: सदेह ३ तिरहुता
विदेह:सदेह ४ मैथिली कथा	विदेह: सदेह ४ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]	विदेह: सदेह ५ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]- संस्करण-२	विदेह: सदेह ५ संस्करण-२ तिरहुता
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]	विदेह: सदेह ६ तिरहुता
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]	विदेह: सदेह ७ तिरहुता
विदेह मैथिली नाटय उत्सव [विदेह सदेह ८]	विदेह: सदेह ८ तिरहुता
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]	विदेह: सदेह ९ तिरहुता
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]	विदेह: सदेह १० तिरहुता
विदेह:सदेह ११	विदेह: सदेह ११ तिरहुता
विदेह:सदेह १२	विदेह: सदेह १२ तिरहुता
विदेह:सदेह १३	विदेह: सदेह १३ तिरहुता
विदेह:सदेह १४	विदेह: सदेह १४ तिरहुता
विदेह:सदेह १५	विदेह: सदेह १५ तिरहुता
विदेह:सदेह १६	विदेह: सदेह १६ तिरहुता
विदेह:सदेह १७	विदेह: सदेह १७ तिरहुता
विदेह:सदेह १८	विदेह: सदेह १८ तिरहुता
विदेह:सदेह १९	विदेह: सदेह १९ तिरहुता
विदेह:सदेह २०	विदेह: सदेह २० तिरहुता
विदेह:सदेह २१	विदेह: सदेह २१ तिरहुता
विदेह:सदेह २२	विदेह: सदेह २२ तिरहुता
विदेह:सदेह २३	विदेह: सदेह २३ तिरहुता
विदेह:सदेह २४	विदेह: सदेह २४ तिरहुता

विदेह:सदेह २५	विदेह: सदेह २५ तिरहुता
<p>विदेह-सदेह २६-</p> <p>३६ www.vidaha.co.in</p> <p>विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५०</p> <p>सँ- थीम आधारित</p> <p>मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ</p> <p>अनूदित गद्य आ पद्यक</p> <p>एकटा समानान्तर संकलन</p>	
विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २६ तिरहुता
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २७ तिरहुता
विदेह:सदेह २८ (अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २८ तिरहुता
विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २९ तिरहुता
विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३० तिरहुता
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३१ तिरहुता
विदेह:सदेह ३२ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३२ तिरहुता
विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३३ तिरहुता
विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३४ तिरहुता
विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३५ तिरहुता
विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३६ तिरहुता

.....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह १७	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

.....

Videha-Sadeha

भाषापाक -विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

विदेह पुरान अंकक आर्काइव

Videha 1-50

Videha 51-100

Videha 101-149

Videha 150-250

Videha 251-Onwards

Audio Archive Folder

Mithila Painting-Modern Art-Photos

Videha Old Issues Folder

Videha Classical Sites Folder

.....

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन)

मैथिलीक प्रतिनिधि गजल

मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)

.....

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)

जीनोम मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध

जीनियोलोजिकल मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी

प्रबन्ध -भाग-२

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

MAITHILI-ENGLISH DICTIONARIES

Maithili-English Dictionary Vol.I

Maithili-English Dictionary Vol.II

ENGLISH-MAITHILI DICTIONARIES

Videha English Maithili Dictionary

English-Maithili Computer Dictionary

.....

दिनेश कुमार मिश्र (सौजन्य दिनेश कुमार मिश्र)

बन्दिनी महानन्दा

बागमती की सद्गति!

दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी)

न घाट न घर

बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी

भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूंक

The Kamla River and People On Collision Course

Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering
witchcraft

Refugees of the Kosi Embankments

.....

पत्रिका-जर्नल-स्मारिका

मैथिली कविता-त्रैमासिक (सौजन्य- नचिकेता)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाइ १९६९)

मिथिला दर्शन (सौजन्य- नचिकेता)

मार्च २०२१

नवम्बर २०२१

कौशिकी (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

कौशिकी (१९७१-७२)

देसिल बयना (अखबार) (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

देसिल बयना (अखबार)

Society Today (सौजन्य- सुमित आनन्द)

अंक ११

संकल्प (सौजन्य- योगानन्द झा)

अंक ५ १९८८

अंतिका (सौजन्य- गौरीनाथ)

जुलाइ-सितम्बर २००८ (हरिमोहन झा विशेषांक) अक्टूबर २०१०सँ मार्च

२०११ अक्टूबर २०११ सँ मार्च २०१२

भारती मंडन (सौजन्य- केदार कानन)

अंक-१६

सन्धान (सौजन्य- अशोक)

सन्धान १

सन्धान २

सन्धान ३ प्रभास विशेष

सन्धान ४

मिथिलांगन (सौजन्य मुकेश दत्त)

अप्रैल-सितम्बर २०२२

मैलोरंग (सौजन्य- प्रकाश झा)

अंक२-३

धूआ-धजा (सौजन्य- परमेश्वर कापड़ि)

अंक ७ अंक १४ अंक १५ अंक १६ अंक १८ अंक १० जून २०१२ अंक
२४ जून २०१२ 23February2016 २५ जुलाई २०१२ ०५ अगस्त
२०१२ आसिन २०७३

स्मारिका (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

स्मारिका (२०१०)

आंगन (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

आंगन अंक-४ (२०१२) सलहेस विशेषांक

आँजुर (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

आँजुर (अंक वर्ष ३६, अंक ३) सोमदेव विशेष

गामघर (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि "भ्रमर")

गामघर-३०-०८-२०१८

गामघर-०४-१०-२०१८

गामघर-१६-०५-२०१९

गामघर-२७-०६-२०१९

दूधमती- (नेपाली आ मैथिलीमे) (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक ३५ अंक ३६ अंक ३७ अंक

३८ अंक ३९ अंक ४० अंक ४१

घर-बाहर (सौजन्य- चेतना समिति)

अप्रैल-जून २०११

रचना (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)

दिसम्बर "०५ मार्च "०६ राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

पल्लव (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

पल्लव- १ गजल अंक

पूर्वोत्तर मैथिल (सौजन्य- प्रेमकान्त चौधरी)

अप्रैल-जून 2010 जुलाइ-सितम्बर 2010 जनवरी सँ मार्च 2011 अप्रैल-

जून २०११ जुलाइ-सितम्बर २०११

लालदास भावांजलि स्मारिका २०२२ (सौजन्य डॉ संजीव शमा)

.....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

<https://youtu.be/TebuC-lrSs8>

<https://ncert.nic.in/bs-2021.php>

Sahitya Akademi

प्रकाशन

डिजिटल-पोथी

CIIL

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

Archive.Org (विजयदेव झा)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Video Archive

IGNCA

Maithili English Dictionary

विज्ञान रत्नाकर

मिथिला दर्शन

तीरभुक्ति

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddhism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI- English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अरिपन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ऑडियो बुक्स

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio
Books (including Maithili Sign Language- 1st time in
Maithili)

पोथी डॉट कॉम

I Love Mithila (पोथी डाउनलोड लिंक)

online maithili journal

owner I Love Mithila

प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सभसँ
लोकप्रिय यू ट्यूब चैनल

मिथिला चैप्टर

खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

.....

JNU

मैथिली

मैथिली लेक्सिकन

.....

Videha e-Learning YouTube Channel

.....

विदेह सम्मान:सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

.....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि।

IGNOU इग्नू *BMAF-001*

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

विदेह वीडियो

वि दे ह विदेह Videha बिदेह <http://www.videha.co.in> विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कर देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

[Search for Video related informations \(including Print, Audio-Visual & Sign Language\) relating to Mithila/ Maithili](#)

<https://books.google.com/>



Videha" Ist Maithili Fortnightly ejournal Archive of Videos 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव मैथिली वीडियोक संकलन (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) वीडियो देखबाक लेल सबधित लिंककेँ क्लिक करू। For viewing videos click the respective links.

.....

मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत (सौजन्य: उमेश मंडल)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 4
1 42 43

.....

गुवाहाटी विद्यापति पर्व २०१०

पहिल भाग दोसर भाग तेसर भाग चारिम भाग पाँचम भाग

गुवाहाटी अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आ विद्यापति पर्व २०११

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15 16 17 18 1
9 20 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41
42 43 44 45 46

.....

चौबटिया (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

चौबटिया

सौभाग्य मिथिला

ललका पाग भाग-१

ललका पाग भाग-२

.....

मिनाप-१

बुधियार छौड़ा आ राक्षस

मिनाप-२

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

.....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

पं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

<https://youtu.be/TebuC-lrSs8>

<https://ncert.nic.in/bs-2021.php>

प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सभसँ

लोकप्रिय यू ट्यूब चैनल

मिथिरंग लोक तरंग

मिथिला चैप्टर

खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल

मैथिली रंगमंच

कोकिल मंच

मिथिला दर्शन

नीलम मैथिली

मैथिली गंगा

रफ कट्स, नचिकेता

कृञ्ज बिहारी

राम बाबू झा

वी. जे., विकास झा

आइ लव मिथिला

रजनी पल्लवी

पूनम मिश्र

रंजना झा

जूली झा

मैथिली ठाकुर

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अरिपन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ऑडियो बुक्स

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- 1st time in Maithili)

<https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF> (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)

<https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT> (चलू हम तँ ठीक छी ने!)

<https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo> (एकटा नीक दिन)

<https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp> (घर सभ)

<https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7> (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

जानकी एफ.एम समाचार

ममता गाबय गीत (सौजन्य- श्री केदारनाथ चौधरी)

गीत

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

I Love Mithila

online maithili journal

owner I Love Mithila

.....

बृखेश चन्द्र लाल, जनकपुरक सौजन्यसँ

झिझिया

ढोल-पिपही

पवनकान्त झा (काश्यप कमल), भटसिमरि, मधुबनीक सौजन्यसँ

रसनचौकी

.....

विद्यापति गीत

तूलिका

गीत-गोविन्ददास (गायन दीक्षा भारती)

गोविन्ददास-१

गोविन्ददास-२

गोविन्ददास-३

गोविन्ददास-४

गोविन्ददास-५

गोविन्ददास-६

.....

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन दीक्षा भारती)

बहरे मुतकारिब

गजल-२

गजल-३

गजल-४

.....

७१म सगर राति दीप जरए (०२ अक्टूबर २०१०), गाम बेरमा , जिला मधुबनी (संयोजक- जगदीश प्रसाद मंडल)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५ भाग-६

८२म सगर राति दीप जरए, स्थान- गजेन्द्र ठाकुर जीक निज आवास, गाम- मेंहथ, जिला- मधुबनी। दिनांक- ३१ मई २०१४ (शनि दिन), समए- संध्या छह बजेसँ। गोष्ठीक नाओं- कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा सगर राति दीप जरए। आयोजनक खेप- ८२ म आयोजन, संयोजक- गजेन्द्र ठाकुर। विशेषता- बाल साहित्यपर केन्द्रित।

.....

मैलोरंग-१ (सौजन्य- प्रकाश झा)

नचिकेताक एक छल राजा - भाग-१

नचिकेताक एक छल राजा - भाग- २

काठक लोक- महेन्द्र मलंगिया भाग-१

काठक लोक- महेन्द्र मलंगिया भाग-२

मैलोरंग-२

कोसी सेमीनार १२ सितम्बर २००८ भाग-१

कोसी सेमीनार १२ सितम्बर २००८ भाग-२

.....

मिथिलांगन

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

यू ट्यूब लिंक

विदेह मैथिली साहित्य/ नाट्य/ कविता/ परिचर्चा उत्सव

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान समारोह

जनकपुर- विद्यापति पर्व

जितेन्द्र झा, जनकपुर

रामभद्र

सामा चकेवा 1

सामा चकेवा 2

मैथिली कवि सम्मेलन (मिथिला कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन, यू.के.)

रिपब्लिक डे 2009 (भारत)

सगर राति दीप जरए, कबिलपुर, जून २०१०

भाग-१ भाग-२

कृष्ण कुमार कश्यपसँ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा लेल साक्षात्कार

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७

प्रबोध सम्मान: राजमोहन झा

(स्लाइडरकेँ बीचमे ल' जाउ, अदहाक बाद राजमोहन झासँ विनीत उत्पलक साक्षात्कार छन्हि।)

साहित्य अकादमी पुरस्कार: मन्त्रेश्वर झा

मिथिलाक खोज

1. गौरीशकर

भाग-१ भाग-२

2. बाइसी-बसैटी

वर्षकृत्य

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर भारतीय भाषा महोत्सव

Samanvay 2-4 November 2012 IHC Indian Languages' Festival. Venue: India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi -- 110 003.

3rd November 2012 Maithili- Love's Own Language/ Brahminism in Maithili/ Pre-Jyotirishwar Non-Brahmin Vidyapati

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

भाग-११ भाग-१२

2nd November 2012 Ugna Re- By Shovna Narayan (Pre-Jyotirishwar Non Brahmin Vidyapati's Life Episode)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८

७५म सगर राति दीप जरए मे मुन्नाजीक पहिल विहनि कथा पोस्टर प्रदर्शनी

मिथिलाक मूडन- (रसनचौकीक स्वरक संग)

हृदयनारायण झा

भाग-१ भाग-२ भाग-३

रंजन चौधरी आ हनी मिश्र (तबला)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

ललित रंग आ हनी मिश्र (तबला)

भाग-१ भाग-२ भाग-३

दीक्षा भारती

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

सुषमा

बटगमनी

नन्द कुमार मिश्रक गजल पाठ

नन्द कुमार मिश्र जीक कविता पाठ

भाग-१ भाग-२

मैथिली- भोजपुरी अकादमी, नई दिल्ली

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

मैथिली- भोजपुरी अकादमी, नई दिल्ली सेमीनार 29 मार्च 2009

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

मैथिली- भोजपुरी अकादमी, द्वारका, नई दिल्ली सेमीनार

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६

.....

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

.....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि।

IGNOU इग्नू BMAF-001

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह शिशु, बाल आ किशोर उत्सव

वि दे ह विदेह Videha बिदेह <http://www.videha.co.in> विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कर देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

[Search for Children Literature \(including Audio-Visual & Sign Language\) relating to Mithila/ Maithili](https://books.google.com/)

<https://books.google.com/>



Videha Archive of Maithili Children Literature विदेह मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्यक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below

.....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

पं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

<https://youtu.be/TebuC-lrSs8>

<https://ncert.nic.in/bs-2021.php>

विदेह मैथिली शिशु उत्सव

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य केन्द्रित) मेंहथमे भेल ८२ म
सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा

नेना भुटकाकँ रातिमे सुनेबा लेल किछु लोककथा

भोला लाल दास (आर्काइव डोट कॉम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

राजू आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बतकही

विज्ञानक बतकही भाग-२

नरक विजय (सम्पूर्ण)

नरक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

पिरामिडक देशमे

रोबोट (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

मैथिली लोककथा

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा)

कुरल: मैथिली भावानुवाद

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

बाल कविता

मुन्नाजी

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)
देवांशु वत्स
नताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कौमिक्स)
जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")
चोनहा (बाल उपन्यास)
जगदीश प्रसाद मण्डल
तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)
नै धाड़ैए (बाल उपन्यास)
नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')
स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)
बृषेश चन्द्र लाल (सौजन्य- बृषेश चन्द्र लाल)
ढोलक (बाल कविता संग्रह)
सुजीत कुमार झा (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)
कोइली घूरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह)
डॉ. शशिधर कुमार
उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग १-२) (पृ. १०५४-१०९५)
खिस्सा अण्टार्कटिका केर (पृ. १०५४-१०९५)
बाल कविता (पृ. ९९३-१२१५)
बाल कविता (पृ. १००४-११७३)
सचित्र बाल कविता (पृ. ७४७-८३४)
सचित्र बाल कविता (पृ. १४६८-१८५१)
डॉ शशिधर कुमार आ सुप्रिया बेबी कुमारी
भूकम्प (पृ. ६३८-६७४)

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद रूपा धीरू आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता बेडक देश-भ्रमण

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

नशामुक्ति हित गाबी गीत

निनियाँ

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

चुष्का (बाल कथा संग्रह)

प्रीति ठाकुर

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

रेस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

ए बी सी डी- प्रकृति अक्षर पोथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सभ खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बो म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

रड सभ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(१७) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
पोथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
बाजाक अबाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
नीतू कुमारी
मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)
नीता झा (सौजन्य- नीता झा)
बिलाइ मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)
किरण चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)
हमर बाल-वाड़ी
आर्या कॉकपिट मे
दीपा करमाकर- सही संतुलन मे
जंगल मे अहाँक स्वागत अछि
व्हेल छथि आकाश मे
भैया के मुस्कान के चोरौलक
बीज संचयक
अचंभित करय "फिबोनाची"
शौचालयक खिस्सा
लाल बरसाती
गुल्लीक जादुई पेटि
समीराक विकठ भोजन
विवाह मे जाई छी
प्रियंका झा (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)
हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कैयो सकै छी, नहियो कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बण्टी आ बबली

नीलिमा चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सभसँ नीक संगी

स्वास्तिका ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बुते नाचल नै होइ छै

तूलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा ओ चाही!

मधूलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

ओंघाइत भीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सभ संगे भेंट-घाँट

पूनम मण्डल

सुतै कालक खिस्सा

गजेन्द्र ठाकुर

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

Learn Mithilakshar Script

जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाडक बडौरा (बाल-पद्य संग्रह)

भऽ जाएब छू (मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले-
*Maithili's first climate-fiction play originally published
in 2012*)

कमलाक भगता

तरहरिमे परीलोक

बेसी छुट्टी कम इसकूल

बड़द करैए दाउन ने यौ

बाल गजल

फिनिश लाइन

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका

सुनू

घर सभ

एकटा नीक दिन

चलू हम तँ ठीक छी ने!

की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?

टोस्ट

बड़ीटा! कनियेटा!

एतऽ हम सभ रहै छी

भारतोल्लक राजकुमारी

भारतोल्लक राजकुमारी (बिनु शब्दक)

वुयो

कच-कच कचाक

चुन्नू-मुन्नूक नहेनाइ

नेना जे बैलूनसँ डेराइत छल

अद्भुत फिबोनाची अंक-शृंखला

हारू

अखन नै, अखन नै!

जन्मदिनक उत्सव भोज

मोट राजा पातर-दुब्बड़ कुकुड़

बचिया जे अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि

अंग्रेजी

हम सूँघि सकै छी

छोट लाल-टुहटुह डोरी

करू नीक, भोगू नीक

ई सभटा बिलाड़िक दोख अछि!

चोभा आम!

हमर टोलक बाट

जखन इकड़ू स्कूल गेल

माछी फेर आउ टाटा!

अमाचीक जुलुम मशीन सभ

टिंग टोंग

पाउ-म्याऊ-वाह

कुकुड़क एकटा दिन

हमरा नीक लगैए

रीताक नव-स्कूलमे पहिल दिन

कनी हँसियौ ने!

लाल बरसाती

भूत-प्रेतक नाट्यशाला

आउ पएर गानी

कतऽ अछि ई अंक ५?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक

<https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF> (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)

<https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT> (चलू हम तँ ठीक छी ने!)

<https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo> (एकटा नीक दिन)

<https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp> (घर सभ)

<https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7> (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह: सदेह ९ तिरहुता

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)

English-Maithili Computer Dictionary

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

डॉ योगानन्द झा (सौजन्य- योगानन्द झा)

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

गोविंद झा ((IGNCA Site आर्काइव)

Maithili-English Dictionary

रामदेव झा (सौजन्य- शंकरदेव झा)

मैथिली शब्द संचय

.....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

[Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Video Archive](#)

विज्ञान रत्नाकर

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddhism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI- English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अरिपन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ऑडियो बुक्स

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- 1st time in Maithili)

पोथी डॉट कॉम

खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

.....

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

.....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि।

IGNOU इग्नू *BMAF-001*

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

विदेह स्त्री कोना

वि दे ह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in> विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कर देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

[Search for Works \(including Audio-Visual & Sign Language\) relating to Mithila/ Maithili by Female Writers/ Artists](#)

<https://books.google.com/>



(पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below.

....

सखुआवाली (नारी विमर्श केन्द्रित) भपटियाहीमे भेल ८३ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

सखुआवाली

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

इलारानी सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

प्रेम- एक कविता (अनूदित नाटक)

अरुन्धती देवी (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिलाक विदुषी महिला

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)
मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११
सुस्मिता पाठक (सौजन्य- केदार कानन)
परिचिति (कविता संग्रह)
कनोजड़ि (कथा संग्रह)
नन्दिनी पाठक (सौजन्य- केदार कानन)
पाथरक शहर (कविता संग्रह)
पन्ना झा (सौजन्य- नरेन्द्र झा)
अनुभूति (लघुकथा संग्रह)
कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)
गोसाउनिक गीत
नशामुक्ति हित गाबी गीत
निनियाँ
यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)
मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)
सुखल मन तरसल आँखि (पद्य आ गद्य)
सुखल मन तरसल आँखि (कविता)
अंततः (कविता संग्रह)
चुक्का (बाल कथा संग्रह)
नीता झा (सौजन्य- नीता झा)
बिलाइ मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)
शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)
यायावरी (यात्रावृत्तान्त)
यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

एकटा अकास (लघुकथा संग्रह)

भावांजलि (गद्य गीत)

किस्त-किस्त जीवन (आत्म कथा)

आखर-आखर प्रीत

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

विभा रानी

विभा रानीक दूटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)

सुशीला झा (सौजन्य- प्रभा खेतान/ सुशीला झा)

छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

कुसुम ठाकुर

प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)(पृ. ४५९-५७२)

डॉ. कामिनी कामायनी

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)

प्रीति ठाकुर

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

रेस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

ए बी सी डी- प्रकृति अक्षर पोथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सभ खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बो म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

रड सभ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(१७) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पोथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बाजाक अबाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

किरण चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-वाड़ी

आर्या कौकपिट मे

दीपा करमाकर- सही संतुलन मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

व्हेल छथि आकाश मे

भैया के मुस्कान के चोरौलक

बीज संचयक

अचंभित करय "फिबोनाची"

शौचालयक खिस्सा

लाल बरसाती

गुल्लीक जादुई पेटी

समीराक विकठ भोजन

विवाह मे जाई छी

प्रियंका झा (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कैयो सकै छी, नहियो कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बण्टी आ बबली

नीलिमा चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सभसँ नीक संगी

स्वास्तिका ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बुते नाचल नै होइ छै

तूलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा ओ चाही!

मधूलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

ओंघाइत भीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सभ संगे भँट-घाँट

पूनम मण्डल

सुतै कालक खिस्सा

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद रूपा धीरू आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता बेडक देश-भ्रमण

डॉ शशिधर कुमार आ सुप्रिया बेबी कुमारी

भूकम्प (पृ. ६३८-६७४)

....

लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा
सीरीज

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक
टिप्पणी

VIDEHA_354

पसुपुलेटी गीता

एडिटर्स चोइस सीरीज-१

मीना झा

एडिटर्स चोइस सीरीज-२

जगदीश चन्द्र ठाकुर (३ टा बाल कविता जइमे २ टा कविता बेबी चाइल्डपर)

एडिटर्स चोइस सीरीज-३

....

विद्यापति गीत

तूलिका

गीत-गोविन्ददास (गायन दीक्षा भारती)

गोविन्ददास-१

गोविन्ददास-२

गोविन्ददास-३

गोविन्ददास-४

गोविन्ददास-५

गोविन्ददास-६

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन दीक्षा भारती)

बहरे मुतकारिब

गजल-२

गजल-३

गजल-४

प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सभसँ

लोकप्रिय यू ट्यूब चैनल

रजनी पल्लवी

पूनम मिश्र

रंजना झा

जूली झा

मैथिली ठाकुर

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

वि दे ह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in> विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कर देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

[Search for Information relating to Mithila/ Maithili](#)

<https://books.google.com/>



सूचना

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

.....

Videha: Maithili Literature Movement

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

"विदेहक जीवित साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी- रंगमंच-निर्देशक
पर विशेषांक शृंखला"

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

स्वतंत्रचेतावू :अरविन्द ठाकुर -यवित्तत्व सम्पादक आशीष) कृतित्व-
[विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप] (अनचिन्हार

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

विदेह कला-विमर्श विशेषांक (सन्दर्भ- संजू दास, कृष्ण कुमार कश्यप,
शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी)

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

विदेह राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no
+919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://videha.co.in/) ISSN 2229-
547X VIDEHA

२

"विदेह द्वारा एक बेरमे कोनो एकटा संस्थाक समग्र मूल्याकंन शृंखला"

विदेह अपन ३७१ म (०१ जून २०२३) अंकमे "मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.)" पर विशेषांक निकालत। मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.) पर निच्चा लीखल बिंदुपर मैथिलीमे आलेख आमंत्रित अछि।

- १) एम.एस.यू. केर गठनक प्रमाणिक इतिहास,
- २) एम.एस.यू. आ मिथिला केर नव चेतना,
- ३) एम.एस.यू. आ विभिन्न जाति केर समन्वय,
- ४) एम.एस.यू. द्वारा भेल विभिन्न आंदोलन आ तकर लेखा-जोखा एवम् ओकर प्रभाव बा
- ५) एम.एस.यू. संदर्भित आन कोनो लेख।

३७१म अंकक विशेषांक लेल अहाँ अपन रचना २५ मई २०२३ धरि वर्ड फाइलमे ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठा सकै छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://VIDEHA.CO.IN/) ISSN 2229-547X VIDEHA

३

"विदेह मोनोग्राफ" शृंखला

विदेह अपन जीवित रचनाकार/ कलाकर्मी पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन

ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५) रवीन्द्र नाथ ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', (८) शरदिन्दु चौधरी, (९) रचनाकार अशोक आ (१०) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक निकालने अछि। अही सन्दर्भमे हिनका सभपर "विदेह मोनोग्राफ" शृंखला अन्तर्गत "मोनोग्राफ" आमंत्रित कयल जा रहल अछि। "विदेह मोनोग्राफ" शृंखलाक विवरण निम्न प्रकार अछि:

(१) इच्छुक लेखक ऊपरमे कोनो एक गोटेपर अपन मोनोग्राफ लिखबाक इच्छा editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छथि।

(२) विदेह लेखकक नाम मोनोग्राफ लिखबाक लेल चयनित कऽ ओकर सार्वजनिक घोषणा करत।

"विदेह मोनोग्राफ" लिखबाक निअम:

(१) मोनोग्राफ पूर्ण रूपेँ रचनाकार/ कलाकर्मीपर केन्द्रित हुअय। साहित्य अकादेमी, एन.बी.टी. आ किछु व्यक्तिगत रूपेँ लिखल मोनोग्राफ/ बायोग्राफीमे लेखक संस्मरण आ व्यक्तिगत प्रसंग जोड़ि कय रचनाकार/ कलाकर्मीक बहन्ने अपन-आत्म-प्रशंसा लिखै छथि। "विदेह मोनोग्राफ" फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल सन रहत। फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल एहेन एकमात्र टूर्नामेण्ट अछि जतय कोनो "ओपेनिंग" बा "क्लोजिंग" सेरीमनी अलगसँ नै होइ छै, पहिल आ अन्तिम मैचक सङे होइ छै आ तकर कारण छै जे अलगसँ कएल "ओपेनिंग" बा "क्लोजिंग" मे टूर्नामेण्टमे नै खेला रहल लोक मुख्य अतिथि/ अतिथि होइ छथि आ फोकस खिलाड़ी सँ दूर चलि जाइ छै। फीफा मात्र आ मात्र फुटबाल खिलाड़ीपर केन्द्रित रहैत अछि से ओकर टूर्नामेण्ट "ओपेनिंग सेरीमनी" नै वरन् सोझे "ओपेनिंग मैच" सँ आरम्भ होइत अछि आ ओकर समापन "क्लोजिंग सेरीमनी"सँ नै वरन् "फाइनल मैच आ ट्रॉफी"सँ खतम होइत अछि आ

फोकस मात्र आ मात्र खिलाड़ी रहैत छथि । तहिना "विदेह मोनोग्राफ" मात्र आ मात्र ऐ रचनाकार/ कलाकर्मीपर केन्द्रित रहत आ कोनो संस्मरण आदि जोड़ि कऽ फोकस रचनाकारसँ अपनापर केन्द्रित करबाक अनुमति नै रहत ।

(२) मोनोग्राफ लेल "विदेह पेटार"मे उपलब्ध सामग्रीक सन्दर्भ सहित उपयोग कएल जा सकैए ।

(३) विदेहमे ई-प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि । सम्पादक 'विदेह' ई-पत्रिकामे प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि । ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै ।

(४) "विदेह मोनोग्राफ"क फॉर्मेट: रचनाकारक परिचय (रचनाकारक जन्म, निवास-स्थान आ कार्यस्थलक भौगोलिक-सांस्कृतिक विवेचना सहित) आ रचनावली (समीक्षा सहित) ।

घोषणा: "विदेह मोनोग्राफ" शृंखला अन्तर्गत (१) राजनन्दन लाल दास जी पर मोनोग्राफ निर्मला कर्ण, (२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर पर मुन्नी कामत आ (३) केदार नाथ चौधरी पर प्रेम मोहन मिश्र द्वारा लिखल जायत । शेष ७ गोटेपर निर्णय शीघ्र कएल जायत ।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://videha.co.in/) ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह द्वारा जे विशेषांक प्रकाशित होइ छै तकर संगे विदेह ओहन लेखक-साहित्यपर अपन धेआन सेहो केंद्रित करत जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नै प्रकाशित भऽ सकल। ऐ नव विचारक मुख्य बिंदु एना अछि-

१) हम एकटा कोनो लेखक वा कलाकारपर एकाग्र आलोचना करब जकर भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी रहत। ऐ पोथीक पहिल रूप ई-बुक केर रूपमे ऐत आ प्रयास रहत जे एकर प्रिंट सेहो आबए जे कि परिस्थितिपर निर्भर करत।

२) ऐ शृंखलामे सुभाष चंद्र यादवपर केंद्रित "नित नवल सुभाष चंद्र यादव" एवं राजदेव मंडलपर केंद्रित "Rajdeo Mandal- Maithili Writer" प्रकाशित भेल अछि। दुनू पोथीक लोकार्पण ३१ दिसम्बर २०२२ केँ १११म सगर राति दीप जरय मे कएल गेल।

३) आगाँक घोषणा लेल <http://videha.co.in/investigation.htm> देखैत रही।

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सवर्ण उपन्यासकारपर किछु सिण्डिकेटेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हार्डबाउण्डमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जतऽ ई सड़ि जायत, अमेजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ऐमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि।

एतऽ एकटा भूल सुधार अछि, एकटा गएर सवर्ण लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दू पाँति लिखलन्हि आ निपटा

देलन्हि, ओ दुनू पाँति हम एतऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो पढ़नहिये हएब, जँ नै पढ़ने छी तँ पहिने पढ़ि लिअ, कारण तखन बेशी मनोरंजक अनुभव हएत, गुलो सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ऐ <http://videha.co.in/pothi.htm> लिंकपर।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

जइ उपन्यासमे राजनीति दूर-दूर धरि नै छै ओतऽ 'राजनैतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्ने नै छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह बा पक्षधरताक सोडर धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त केलन्हि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'भोट' जे २०२२मे आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ऐ <http://videha.co.in/pothi.htm> लिंकपर, से राजनीतिपर अछि मुदा ओतहुओ सुभाषजीक भगता शैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह बा पक्षधरताक सोडरक आवश्यकता नै पड़लै। पढ़ू हमर पोथी 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि ऐ <http://videha.co.in/pothi.htm> लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घण्टी अछि। जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोडर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। ई अपन बायोडाटामे गएर सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादेमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेण्ट हिनका

मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किरदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बायोडेटाक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

आब अहाँ पुछब जे तकर प्रतिकार समानान्तर धारा केना केलक, ओ तँ कन्नारोहट नै करैए, तँ तकर उत्तर अछि हमर ३ टा पोथी जे १११म सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित भेल ३१ दिसम्बर २०२२ केँ, वएह सगर राति दीप जरय जकरा साहित्य अकादेमी गत दस बर्खसँ गीड़ि लेबाक प्रयास कऽ रहल अछि। अहाँसँ ऐ तीनू पोथीपर टिप्पणी ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि। पहिल दू पोथी मे राजदेव मण्डल आ सुभाष चन्द्र यादवक साहित्यक समीक्षा अछि जे हमर तेसर पोथी मैथिली समीक्षशास्त्रक सिद्धांतक आधारपर कएल गेल अछि। तकरा बाद जगदीश प्रसाद मण्डल जी पर पोथी लिखल गेल (११२ सगर राति दीप जरय मे लोकार्पण) सभटा पोथीक लिंक नीचाँ देल गेल अछि। 'नित नवल दिनेश कुमार मिश्र' आ 'नित नवल सुशील' जारी अछि।

[Rajdeo Mandal- Maithili Writer \(Now with Supplement I & II\)](#)

[नित नवल सुभाष चन्द्र यादव](#)

[नित नवल सुभाष चन्द्र यादव \(मिथिलाक्षर\)](#)

[JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer](#)

[नित नवल दिनेश कुमार मिश्र \(जारी\)](#)

नित नवल सुशील (जारी)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

संगमे पढू कमलानन्द झा क ब्राह्मणवादपर प्रहार:

दूषण पञ्जी- The Black Book

दूषण पञ्जी- The Black Book (मिथिलाक्षर)

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no
+919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://videha.co.in/) ISSN 2229-
547X VIDEHA

४(२)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच मे' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूंक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा पराशर द्वारा हिनकर पोथी सभसँ पैराक पैरा मैथिली

अनुवाद कऽ अपना नामे उपन्यास छपबाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ऐ चोर लेखकक रिसर्च कहै छथि! एतऽ स्पष्ट कऽ दी जे ई चोर लेखक आ छद्म समीक्षक दुनू अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालयक हिन्दी विभागमे छथि। ई रिसर्च दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ.आइ.टी. खड़गपुरसँ सिविल इन्जीनियरिङ मे बी. टेक. १९६८मे आ स्ट्रक्चरल इन्जीनियरिङमे एम.टेक. १९७०मे केने छथि, आ ओइ रिसर्च लेल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन नै होइ छै तखन लोक हारि-थाकि हिन्दीमे नामांकन लइए, नै तँ कमलानन्द झा केँ बुझऽ मे आबि जइतन्हि जे ई रिसर्च कोनो सिविल इन्जीनियरेक भऽ सकैत अछि, भऽ सकैए बुझलो होइन्ह। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सभ धारक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर ऋणसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै भऽ सकता, मुदा मूलधाराक पुरस्कार आ पाइ लोलुप लोकसँ कृतघ्नते भेटत से फेर सिद्ध भेल। ऐ लेखककेँ दस बारह बरख पहिने सेहो तारानन्द वियोगी उद्धारक भेटल छलखिन्ह जे लिखने रहथिन्ह जे ओ कवितामे प्रभावित भऽ अनायासे अपन रचनामे दोसरक सामिग्री चोरि कऽ लइ छथि, एहने सन। आब ऐ कमलानन्द झा क आश्रय तकलन्हि मुदा दुर्भाग्य! जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोडर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीन-जत्थाबला लोक कम्युनिस्ट बनला आ आब ब्राह्मणवाद बचेबालेल वामपंथक शरण, एहेन लोक सभसँ कम्युनिज्मकेँ बहुत नुकसान भेल छै।

दिनेश कुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि
विदेह आर्काइवमे:

<http://videha.co.in/pothi.htm>

एतऽ एकटा गप मोन पाड़ि दी जे जखन बिल गेट्सकेँ पूछल गेलन्हि जे
की ओ एक्स बॉक्स भारतमे पाइरेशीक डरसँ देरीसँ आनि रहल छथि?
तँ हुनकर उत्तर रहन्हि जे माइक्रोसॉफ्ट पाइरेशीक डरे कोनो उत्पाद
देरीसँ नै उतारने अछि। से विदेह पेटारमे हम सभ ऐ तरहक रिस्क
रहितो एकरा आर समृद्ध करैत रहब, कारण समानान्तर धारामे सड़ल
माँछ द्वारे पोखरिक सभ माँछ नै सड़ैए, एतुक्का मलाह गोट-गोट कऽ
सड़ल माँछ निकालैत रहल छथि, निकालैत रहता।

सिण्डीकेटेड समीक्षापर अन्तिम प्रहार।

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): यह ध्यान देने
की बात है कि 1923 से 1946 के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया
से 5,10,000, कालाजार से 2,10,000, हैजे से 60,000 तथा चेचक
से 3,000 मौतें (कुल 7,83,000) हुईं।

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक
सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. १०३)]:

ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया
से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक
सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): भारतवर्ष में
बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा
लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से

'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा चोर उपन्यासकारक पीठ ठोकब, देखू छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चोर पंकज झा पराशर (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २५७-२५८):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दौंव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पदुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़ावेत पदुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहें बान्हक मादे

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. ३१)]:

पदुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू कोसी नदीक बैसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पदुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पदुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि।

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): कोसी के प्रवाह कि भयावहता की एक झलकफिरोजशाह तुगलक की फौज के सन् 1354 में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँचीं तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजें मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह वही हाजी शम्सुद्दीन थे जिन्होंने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाये थे। फिरोज की फौजें शायद कुरसेला के आस-पास किसी जगह पर कोसी के किनारे सोच में पड़ गईं। नदी की रफ्तार उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। आखिरकार फैसला हुआ कि नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ा जाय और जहाँ नदी पार करने लायक हो जाय वहाँ पानी की थाह ली जाये। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कोस ऊपर गईं और जियारन के पास, जो कि उसी स्थान पर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ों से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की धारा तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना तेज था कि पाँच-पाँच सौ मन के भारी पत्थर नदी में तिनकों की तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन लगा उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और नीचे वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इस रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शम्सुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उस को इस बात का पता लगा कि सुल्तान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. १०५)]:

‘बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल’ कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौने रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ’ रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कने कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कने शिकस्त बुझलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जतय नदी पार करब कने आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ ठाढ़ क’ देल गेल। नीचाँ चला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ बयो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क’ गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचने छल, जे तुगलकी सेना कोसी पार क’ जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क’ चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल’ कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।’

(... शीघ्र अही लिंकपर आर स्क्रीनशॉट अपडेट कएल जायत।)

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ फरबरी २०२३ सँ प्रारम्भ... नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

<http://videha.co.in/> विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पर।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://VIDEHA.CO.IN/) ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (३)

नित नवल सुशील

कमलानन्द झाकेँ हम किए छद्म समीक्षक कहलियनि?

कारण ओ छद्म समीक्षक छथि।

ओ लिखै छथि- "मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल अन्तरजातीय विवाहक सपना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।"

तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलनि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकार- जे हम ककरो चढ़ा सकै छिए आ ककरो उतारि सकै छिए- केर पराकाष्ठा थीक, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण?

चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा केर स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादूबला साहित्यक निश्छल दुनियाँमे।

अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यक दुनियाँमे।

प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामबाली' (१९८२) जे आब उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे लिंक <http://videha.co.in/pothi.htm> पर।

पहिल पाँतीमे उपन्यास आरम्भसँ पहिनहिये 'गामबाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि-

"विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे।"

आ उपन्यास आरम्भ।

गामबालीक मृत्यु आ तखने झमेला, गामबालीक दाह संस्कार के करतै? ब्राह्मण समाज कि जादव समाज?

मैथिलीक सिण्डीकेटेड समीक्षापर अन्तिम प्रहार।

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ फरबरी २०२३ सँ प्रारम्भ... नित
नवल सुशील

<http://videha.co.in/> विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN
2229-547X VIDEHA (since 2004) पर।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no
+919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://VIDEHA.CO.IN/) ISSN 2229-
547X VIDEHA

५

विदेहक "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक"

विदेह "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख
ई-मेल editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि।

१. साहित्य, कला आ सरकारी अकादमी:-
 - (क) पुरस्कारक राजनीति
 - (ख) सरकारी अकादेमीमे पैसबाक गएर-लोकतांत्रिक विधान
 - (ग) सत्तागुट आ अकादमी केर काज करबाक तरीका
 - (घ) सरकारी सत्ताक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सत्ताक कार्यपद्धति
 - (ङ) अकादेमी पुरस्कारमे पाइ फैक्टर: मिथक बा यथार्थ
२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति
३. प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक
४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सबहक आचरण
५. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध

रूप-

(क)

पाठ्यक्रम

(ख)

अध्ययन-अध्यापन

(ग)

नियुक्ति

६. साहित्यिक पत्रकारिता, रिव्यू, मंच-माला-माइक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा

७. लेखक सबहक जन्म-मरण शताब्दी केर चुनाव , कैलेंडरवाद आ तकरा पाछूक राजनीति

८. दलित एवं लेखिका सबहक संगे भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध तरीका

९. कोनो आन विषय ।

६

विदेह ब्रॉडकास्ट लिस्ट

विदेह WWW.VIDEHA.CO.IN सम्बन्धी सूचना लेल अपन whatsapp नम्बर हमर whatsapp no +919560960721 पर पठाउ, ओकर प्रयोग मात्र विदेह सम्बन्धी समाचार देबाक लेल कएल जाएत ।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://VIDEHA.CO.IN/) ISSN 2229-547X VIDEHA

.....

Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

Issue No. 88 (November-December 2019) of Muse India at <http://museindia.com/> displays Maithili literature in an extremely poor light. Moreover, it wrongly claims to be a representative review of Maithili Literature, whereas it was only in line with the Sahitya Akademi, Delhi; a mere representation of the so-called "dried main drain". It is expected that Muse India will correct itself by announcing an issue exclusively devoted to the parallel tradition of Maithili literature.

T.K. Oommen writes in the "Linguistic Diversity" Chapter of "Sociology", 1988, page 291, National Law School of India University/ Bar Council of India Trust book: "... the Maithili region is found to be economically and culturally dominated by Brahmins and if a separate Maithili State is formed, they may easily get entrenched as the political elite also. This may not be to the liking and advantage of several other castes, the traditionally entrenched or currently ascendant castes. Therefore, in all possibility the latter groups may oppose the formation of a separate Maithili state although they also belong to the Maithili speech community. This type of opposition adversely affects the development of several languages."

T.K. Oomen further writes: "... even when a language is pronounced to be distinct from Hindi, it may be treated as a dialect of Hindi. For example, both Grierson who undertook the classic linguistic survey of India and S. K. Chatterjee, the national professor of linguistics, stated that Maithili is a distinct language. But yet it is treated as a dialect of Hindi". (Ibid, page 293)

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. - Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

Parallel Literature

The references to parallel literature are found in Vedas, where Narashansi is referred to as parallel literature.

Parallel Literature in Maithili

The need for parallel literature in Maithili arose due to the constant onslaught on literature and dignity by the Public and Private Academies, for example, Maithili-Bhojpuri Akademi of Delhi, Maithili Akademi of Patna, Sahitya Akademi of Delhi, Nepal's Prajna Pratishthan, all of which are government Academies. In addition to these Academies, the onslaught on Maithili Literature and dignity was constantly done by the so-called literary associations which were recognised by the Sahitya Akademi and were the main tool for usurping all the literary space meant for this language. Besides these, the funding to these and other parochial associations and organisations led to the presentation of an interface in the name of Maithili, which was mediocre and non-representative.

The Book of Bihari Literature (Abhay K. Editor)

This book contains five translations from non-representative Maithili short stories into English by Vidyanand Jha. Nagarjun (Maithili's Yatri) and Usha Kiran Khan are from the Hindi quota though both got the Sahitya Akademi prize from the Maithili quota. Vibha Rani and Rajkamal Chaudhary are from the Maithili quota though both wrote in Hindi also.

This book is edited by Abhay K. who has read Samskrit only up to high school. Yet he pretends to translate Arthashastra directly from Samskrit into English. I am Kovid in Samskrit and from the quality of the translation, I can presume that he has used some intermediary language in translating Samskrit texts into English. It is a matter of ethics to acknowledge the source.

Vidyanand Jha's translation is below par, for example, he has no inkling what would be the English word for 'olak sanna', and there are plenty of such instances. I have some suggestions for him: First, read A Bird's Eye View on Mithila by Rajnath Mishra, it mentions all the terms for which you could not find English equivalents. Then go to the Videha archive (www.videha.co.in) and look for Umesh Mandal's Picture Dictionary containing vegetation, animals and skill sets of Mithila, here you will find the actual photographs too. Further, under A Parallel History of Maithili Literature (Videha www.videha.co.in), you will find sample English translations of some Maithili short stories. Therefore, what Vidyanand Jha is presenting as exotic is the original thing of the Maithili Language (but not that of Maithili literature, as was two decades ago). Interestingly his choice of short stories reminds me of Contemporary Maithili Short Stories (Maithili short stories translated into English) edited by Murari Madhusudan Thakur and published by the Sahitya Akademi in 2005. It seems that the stories in this selection are leftover material from that collection. Rip Van Winkle awoke after two decades but Vidyanand Jha is still in slumber not realizing the changes that have happened during the period.

If you compare the translation of this selection vis-a-vis the English translation of Latin American Spanish literature, you would be able to understand the difference.

But these types of selections are not known for their literary excellence, Harper Collins publishes these types of selections for five-star hotels and Airport lounges. The publishers announced this book on March 22, 2022. So, in 6-7 months, you will get old materials only.

The Bride: The Maithili Classic Kanyadan by Harimohan Jha (1908-1984) translated into English by Lalit Kumar (Assistant Professor, Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi)- Harper Perennial (Harper Collins Publishers)

I had pre-ordered the book, which was scheduled to be delivered to my kindle account on the 1st of December 2022, but the delivery date was postponed, and it was delivered to my account on the 14th of December 2022.

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

Sh. Harish Trivedi has committed the same mistake. In his foreword Harish Trivedi writes- "In Hindi, the language to which Maithili is the closest (and of which it was indeed an integral part until it was granted recognition as a separate language by the constitution in 1993) ..."

Harish Trivedi refers to the inclusion of Maithili in the eighth schedule of the constitution of India. Here the year mentioned should be 2003 instead of 1993. Moreover, Maithili was a separate language in 2003, 1993, and 1965 and during the time of pre-Jyotirishwara Vidyapati. The status granted to Maithili by Sahitya Akademi and the Constitution of India, on the other hand, strengthened the hands of the obscurantist elements like Ramanath Jha, Shardananda Jha (he is not a famous person but

why I have taken his name, I will explain it later) and others who gaslighted Harimohan Jha. Harimohan Jha's Khattar Kakak Tarang, Pranamya Devata, Rangshala and Charchari all these books were eligible for the Sahitya Akademi Award initiated in 1966 for Maithili (because of recognition given to Maithili by Sahitya Akademi in 1965. But a philosophy treatise was awarded the prize in 1966, this philosophy book itself is a horrific one, and if one has read the book to understand the nuances of Indian Philosophy, then he will have to unlearn first to be able to grasp the philosophical concepts from a new book on Indian Philosophy. In 1967 no award was given for the Maithili Language.

Ramanath Jha's obscurantism vis-a-vis Panji is evident from one example (because Lalit Kumar also seems to have followed in his footsteps, though he gives credit for his ignorance to some other writers). He was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in Panji was well known to him (but he chose to keep the Dooshan Panji secret- which has been released by us on google books in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at <http://videha.co.in/pothi.htm>). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila" -

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name.", which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused allow the award to be given to Sh Harimohan Jha? So, the Sahitya Akademi saved the Maithili Language by

recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, is wrong and so is the assertion made by Sh. Harish Trivedi.

Mr Lalit Kumar is a young person, but he is being misused by some obscurantist elements, who gaslighted Harimohan Jha. Harimohan Jha stopped writing in Maithili following the recognition of it by Sahitya Akademi and was awarded the Sahitya Akademi prize for his autobiography in 1985, after his death, which means nothing.

Mr Lalit Kumar writes- "Yoganand Jha's Bhalmanusha (1944) and Shardananda Jha's Jayabara (1946) attack such social divisions that played a decisive role in marriages." Yoganand Jha's Bhalmanusha (1944) was indeed a pathbreaking novel, but Shardananda Jha's novel was reactionary. Prof Radha Krishna Choudhary rightly observes- "Yoganand Jha's 'Bhalamanusa' deals with the social problems connected with the problem of marriage. As a reply to this novel, Shardanand Jha wrote a second-rate novel 'Jayabara,' having little literary merit. (RADHAKRISHNA CHOUDHARY A Survey of Maithili Literature)

Mr Lalit Kumar for his Panji-related ignorance gives credit to Mm. Parmeshwar Jha's "Mithila Tattva-Vimarsha." Prof Radha Krishna Choudhary rightly observes- "Mm. Parmeshwar Jha's 'Mithila Tattva-Vimarsha' is the history of Mithila in Maithili prose and is based mainly on tradition. Mm. Mukunda Jha Bakshi's 'Mithilabhashamaya Itihas' gives an account of the Khandawala dynasty. From the point of view of modern Maithili prose, these two works are important, though from the historical point of view, are unreliable. (RADHAKRISHNA CHOUDHARY A Survey of Maithili Literature)

The following excerpt from Our Panji Paband ((part I&II) is being reproduced below for ready-reference: -

महाराज हरसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-

रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-

प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-

प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई. क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files.

Sh. Anshuman Pandey [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjikara-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to

allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panjī records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of Michigan 2014]. Later these Panji Manuscripts were uploaded to google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education stream in British India, in Nepal it still has that meaning.

Mr Lalit Kumar further tries to put his agenda by writing- "Harimohan choose a middle ground in his reformist agenda." He gives laughable reasons for his contention viz. "he espouses the significance of local traditions, languages, scripts, education system, and moral values" thereby meaning that these are conservative values!

(All the referred books are available for free pdf download from the link <http://videha.co.in/pothi.htm>)

VIDEHA MAITHILI LITERATURE MOVEMENT AND A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE

Therefore, the missing portions, the ignored and non-represented aspects of society, started to be chronicled. It led to the depiction marked by the richness of vocabulary and experiences and was a revolution in literature and art as far as people speaking Maithili are concerned. The quality now has not remained mediocre. The real power of the Maithili language was realised by the native speakers, mediocrity was replaced by excellence. This attempt at the writing of History of Parallel Literature for the Maithili Language arose as the mediocre agency (private and governmental) funded so-called mainstream literature, which has no readership, and no acceptance among the speakers of Maithili continued to be presented by these Akademies as representative literature. The mediocre interface of Maithili literature was presented by the government radio and television stations also. Literary journals like Museindia (www.museindia.com) & Publishers like Harper Collins were also used for their sinister design.

Pseudo-criticism in Maithili and the case of Kamalananda Jha

The title of Kamalanand Jha's book "Maithili Novel: Time, Society and Questions" (2021) is misleading. It is a collection of some syndicated so-called critical articles on some of his caste novelists. The 263-page book can only be sold in hardbound to libraries where it will rot. Here is a correction, a non-caste writer's work, i.e., Subhash Chandra Yadav's novel 'Gulo', has been dealt with by him in two lines, of course without reading it. I am presenting those two lines here for your entertainment. You must have read *Gulo*, if you haven't already, read it first because then you will have a more entertaining experience. *Gulo* is available on Videha Archive with the permission of Subhash Chandra Yadav at this link <http://videha.co.in/pothi.htm>.

"The weakness of the novel is the author's political bias. The partisanship towards a particular politics does not do justice to the work."

In a novel where politics is not remotely involved, there is no question of 'political bias and partisanship of a particular politics'. Dhumketu and Yatri used political bias or partisanship. Subhash Chandra Yadav's 'Vote' which came out in 2022 and is available with permission of Subhash Chandra Yadav on Videha Archive at this link <http://videha.co.in/pothi.htm>, is on politics but even there Subhashji's enchanting style obviates the need of any political bias... Read my book 'Nit Naval Subhash Chandra Yadav' which is available at this link <http://videha.co.in/pothi.htm>. On the other hand, Mr Kamlanand Jha sounds like a spokesperson of some political party or a casteist organisation rather than a literary critic. Kamalananda Jha's Brahministic bias against Subhash Chandra Yadav is an alarm bell. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist stance to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. In his biodata, he proudly mentions the Maithili translation assignment bestowed on him by the Sahitya Akademi, and this assignment was allotted to him not on account of merit but solely on the ground of his caste title and in lieu of these deeds. For people like him, Maithili-related work is merely a line in their *curriculum vitae*, but it is a question of life and death for the people of the parallel stream. Why did I call Kamalananda Jha a pseudo-critic? Because he is a pseudo-critic. He writes: "After nearly a hundred years of journey, Gaurinath is credited with writing a dignified novel on the dreams, struggles and ironies of inter-caste marriage. So, did Kamalananda Jha take away this credit from Sushil? Is this the culmination of the arrogance of his Brahministic upbringing (*"Through my whims and fancies I can place some literature on top and can*

downgrade some to the bottom") or is this the evidence of his lack of study? Let me take you away from the selfish world of Kamalananda Jha, away from deception and disguise to the sincere world of Sushil's magical literature. Welcome to the world of Sushil's literature. Here is Sushil's 'Gambali' (1982) which is now available in the Videha Archive at the link <http://videha.co.in/pothi.htm>. In the first line of this novel, even before the novel begins, Sushil writes about the novel 'Gambali': "In support of widow marriage and inter-caste marriage" and here begins the novel. The death of a village woman and then the trouble ensues, who will cremate this village woman? Brahmin community or Yadav community of the village? Dinesh Kumar Mishra's 'Dui Patan Ke Bich Me' is a historical biography of the Kosi River. He has also written historical biographies of other rivers of Mithila like 'Bandini Mahananda,' 'Bagmati Ki Sadgati!', 'Dui Patan Ke Bich Me... (Story of the Kosi River)', Na Ghat Na Ghar, Kamla River, 'Bhutahi River and Technical Herbalism', The Kamla River and People on Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a Ghost River and Engineering Witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments. Pankaj Jha Parashar, a member of the Maithili Advisory Committee of the Sahitya Akademi, Delhi has plagiarised paragraph after paragraph from his books and has published a novel in Maithili in his name, which pseudo-critic Kamalananda Jha mentions as research of this thief author Pankaj Jha Parashar! Let me clarify here that both the thief writer and the pseudo-critic are in the Hindi department of Aligarh Muslim University. This research is done by Dinesh Kumar Mishra, who is a graduate of IIT, Kharagpur in Civil Engineering (in 1968) and M. Tech in Structural Engineering (in 1970) and is qualified for that research. In Hindi, the cut-off for admission is the lowest across universities, otherwise, Kamalananda Jha would have known that this research could

be done by a civil engineer only. The Hindi original and Maithili screenshots are attached below. Dinesh Kumar Mishra is not from Mithila, but he has authored the story of all the streams of Mithila. We are grateful to him, and the people of Mithila will remain indebted to him for this. This thief writer Pankaj Jha Parashar is a habitual offender. More than a decade ago he found a saviour in Mr Taranand Viyogi who wrote that he (thief writer Pankaj Jha Parashar) gets influenced involuntarily stole others' material in his works. Now he has found another saviour in Kamalananda Jha. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist side to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. Communism has suffered a lot from people who became communists to escape the land ceiling.

All books by Dinesh Kumar Mishra are now available in the Videha Archive with his permission:

<http://videha.co.in/pothi.htm>

Let us recall here that when Bill Gates was asked whether he was delaying the introduction of the X-Box in India for fear of piracy. His answer was Microsoft never delays the launch of products for fear of piracy. We will continue enriching Videha Archive (<http://www.videha.co.in/archive.htm>), despite such risks because not all the fish in the pond rot by some rotten fish in parallel streams. The fishermen here have been and will continue to remove such rotten fish.

The final blow to syndicated pseudo-literary criticism in Maithili.

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): It is noteworthy that between 1923 and 1946, 5,10,000 people died of malaria, 2,10,000 from Kala Azar, 60,000 of Cholera and 3,000 of smallpox in the Kosi region (783,000 total

deaths).

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 103)]:

ने अंग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): On the Kosi River in Bihar, India, a dam was built by King Laxman II in the 12th century and for this, he received the title of 'Bir' from the people and the embankment of the river was called 'Bir Dam' The remains of this embankment are still visible in Supaul district, about 5 km south of Bhim Nagar. Dr Francis Buchanan (1810-11) speculated that the dam must have been an outer wall built to protect a fort as it stretched over a distance of 32 kilometres from Tilyuga to its confluence on the western bank of the Dhaus river. Dr W.W. Hunter (1877) did not agree with Buchanan's contention that the dam was the protective wall of a fort. Quoting locals, Hunter believed that most people did not consider it a fortress wall and according to him it was something else but he was not in a position to say anything. Yet the common impression is that it must have been an embankment built along the Kosi River to prevent the river's current from sliding westwards. People also said that it seemed that the construction of the embankment had suddenly stopped.

The pseudo-critic Kamalananda Jha's saviour of the habitual offender thief Pankaj Jha Parashar quoted the plagiarised work as follows: (Maithili Novel, Time, Society and Questions pp. 257-258):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दौंव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पदुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़ात पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहें बान्हक मादे

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 31)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): A glimpse of the horrors of the Kosi River can be seen in the event when the army of Feroz Shah Tughlaq returned to Delhi from Bengal. It is said that when the troops of the Sultan reached the banks of the Kosi, they saw that on the other side of the river, the troops of Haji Shamsuddin Ilyas were waiting, ready for a battle. This was the same Haji Shamsuddin who founded the cities of Hajipur and Samastipur. Feroze's troops were stranded on the banks of the Kosi somewhere around Kursela. The speed of the river was preventing them from moving forward. It was finally decided to proceed northward along the river and to locate the water where it was navigable. The troops of the Sultan went up about a hundred *kos* and crossed the river near Ziaran, situated at the same place where the river descended from the mountains into the plains. The river was thin, but the flow was so fast that heavy stones weighing five hundred *manas* were floating like straws in the river. On either side of the river where it was found possible to cross it the Sultan erected a row of elephants, and ropes were hung in the bottom row so that if a man loses control he could be rescued with the help of these ropes. Shamsuddin never thought that Sultan's troops would be able to cross the Kosi and when he came to know that Sultan's troops had managed to cross the Kosi, he fled.

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 105)]:

'बेश, तँ सुनु। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली चुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौने रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना के नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कने कम बुझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कने शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खड़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जतय नदी पार करब कने आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जे बयो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचने छल, जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

A Parallel History of Maithili Literature

I

Introduction

FESTIVAL OF LETTERS OR FESTIVAL OF SHAME

SAHITYA AKADEMI AND the DOWNFALL OF INDIAN LANGUAGES (IN SPECIAL CONTEXT OF MAITHILI LANGUAGE)

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

He was wrong on this on two counts. What he referred to as applicable, if it applied at all, only to the part of Maithili speaking area, geographically located in India. Maithili is spoken, natively, in India and Nepal. After the treaty of sugauli (ratified in 1816), which was in the aftermath of the Anglo-Nepalese war of 1814-16, the hilly regions were incorporated in British India, including the Nepalese-speaking Darjeeling Area. Similarly in 1816 and 1860, the Britishers ceded some Terai region to Nepal. As a result, part of Maithili speaking Area, which was earlier ruled by Malla Kings (when Maithili was an official language of the region), was ceded to Nepal. Even today some Maithili scholars (!!) refer to the golden period of Maithili as the period of "Nepali (!!)" Malla Kings (Ramanath Jha, Introduction to Maithili Sahityak Itihas by Dr Durganath Jha "Shreesh").

Ramanath Jha himself admits that during his visit to "Vir Library" of Nepal (Kathmandu) he came to know about the Nepal legacy (his monograph on kirtaniya Natak, which he wrongly presents as Kirtaniya Nach) in respect of Maithili. So, he cannot be blamed for his lack of knowledge in this respect. He was wrong on the second count also, and this second count was an artificial creation. He began a tradition of elitism and conservatism in Sahitya Akademi, as the first convener of the Maithili language. The tradition got stronger and stronger in the last 55 years of the Existence of Maithili in that Akademi. So, he ensured that liberal writers, like Sh. Harimohan Jha, attacking casteism and conservatism did not get the award, even though the year 1967 went unrewarded and the Ist award

in 1966 was given to a non-literary book in Maithili (academic book of Philosophy!!!).

He was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in Panji was well known to him, and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father. But he informed Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya in a distorted way. Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila".

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila-Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name.", and he writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused allow the award to be given to Sh? Harimohan Jha. So, the Sahitya Akademi saved the Maithili Language by recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, was wrong on those two counts.

Now come to Nepal, the Prajna Pratisthan and other organizations often recognize Indian Maithili writers, but Sahitya Akademi of India does not recognize Nepalese Maithili writers, be it the Seminars or the poets meet, be it an anthology of poems or prose published by the Akademi. Regarding the treatment of Nepalese Maithili writers by Sahitya Akademi Sh. Ram Bharos Kapari "Bhramar" laments that there is demand in Nepal that they should also not award Indian Maithili writers/publish them in their anthologies as reciprocity demands this.

The narrow-mindedness of the Maithili advisory board of the Indian Sahitya Akademi has its origin in the organizations that are recognized by the Sahitya Akademi, the basis of which is extra-literary credentials. These are pseudo-organizations

running on paper, political organizations or casteist organizations pocket-run by a few. The complete list is:

**MAITHILI LITERARY ASSOCIATIONs (!!!)
RECOGNIZED by SAHITYA AKADEMI**

1. The Secretary, All India Maithili Sahitya Samiti, Tirbhukti, 1/1B, Sir P.C. Banerjee Road, Allahabad-211 002.
2. The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, C/o Dr. Ganapati Mishra, Lalbag, Darbhanga-846 004.
3. The Secretary, Chetna Samity, Vidyapati Bhawan, Vidyapati Marg, Patna-800 001.
4. The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6 B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007.
5. The Secretary, Vidyapati Seva Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004.
6. The Secretary, Centre for the Study of Indian Traditions, Tantrabati Geeta Bhavan; Ranti House, Ranti, Madhubani-847 211

Now the Literary Association lists read as under. Serial no. 1 & 6 above have been derecognised and has been replaced by other non-literary associations at sr no 5, 6 & 7 below.

- (1) The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, Professors' Colony, Digahi West, Opp. of Primary School, Darbhanga-846 004, (Bihar)
- 2) The Secretary, Chetna Samiti, Vidhya Pati Bhavan, Vidyapati Marg, Patna-800 001 (Bihar)

- 3) The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007, (West Bengal)
- 4) The Secretary, Vidhya Pati Sewa Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004, (Bihar)
- 5) The Secretary, Anand, Samajik Sanskritik Sahityik Manch, Rajkumarganj (Mirzapur Chowk), Darbhanga-846 004, (Bihar)
- 6) The General Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, Rosebery 5032, Sahara Garden City, Adityapur-2, Jamshedpur-831 014, (Jharkhand)
- 7) The General Secretary, Akhil Bharatiya Mithila Sangh, G-6, Hans Bhavan, Wing 2 I.T.O., Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi-110 002, (Delhi)

What is the literary credential of the Centre for the Study of Indian Traditions (now recognised and replaced by another pocket association)? Chetna Samiti and Vidyapati Seva Sansthan are casteist political outfits, vehemently displaying the casteist attire of a great ancient poet, whose caste is still uncertain (VIDYAPATI), but who was certainly not Brahmin. All India Maithili Sahitya Samiti (now derecognised and replaced by a non-literary association) became non-existent even during the lifetime of the Late Jaykant Mishra, same is the case with Akhil Bhartiya Maithili Sahitya Parishad. Mithila Sanskritik Parishad has done a crime through an investiture ceremony of the great Vidyapati, they tried to convert Vidyapati and "Maithili" language to the language of only the Brahmins (the name of the artist who sketched the Vidyapati has still not been disclosed by this organisation). When these non-existent organizations exercise voting powers granted by Sahitya Akademi and chose a convener, it is not a coincidence that for successive times only conservative people among the Maithil Brahmin caste, are chosen. The complete list is:

1. Ramanath Jha, 2. Jaykant Mishra, 3. Surendra Jha Suman, 4. Sureshwar Jha, 5. Ramdeo Jha, 6. Chandranath Mishra Amar, 7. Vidyanath Jha Vidit, 8. Veena Thakur, 9. Prem Mohan Mishra, 10. Ashok Avichal.

The result is now for everybody to see. The complete list of Sahitya Akademi awards (till 2019) is:

Total booty distribution- 50 times, Maithil Brahmins- 42 times, Kayasthas- 6 times, Rajpoots- 3 times; Others- 0 times!!! (Now in 2021 Sh. Jagdish Prasad Mandal has been awarded this prize for his novel "Pangu", so the count is now not zero but one.

The result is not based on the quality of the books but solely upon the caste-based other considerations and the disease has its root in the faulty seedling that the Sahitya Akademi of India found through the faulty literary associations.

What were the objectives of the setting of this Akademi?

Sahitya Akademi was established (National Academy of Letters to be called Sahitya Akademi) by Government of India resolution No F-6-4/51G2(A) dated December 1952 "to set high literary standards, to foster and co-ordinate literary activities in all the Indian languages and to promote through them all the cultural unity of the country; to promote good taste and healthy reading habits, to keep alive the intimate dialogue among the various linguistic and literary zones and groups through seminars, lectures, symposia, discussions, readings and performances, to increase the pace of mutual translations through workshops and individual assignments and to develop a serious literary culture through the publications of journals, monographs, individual creative works of every genre, anthologies, encyclopedias, dictionaries, bibliographies, who's who of writers and histories of literature."

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national, and international levels, " along with the workshops and literary gatherings-about two hundred in number per year".

The Akademi recognises " Besides the twenty-two languages enumerated in the Constitution of India", English and Rajasthani as languages. Sahitya Akademi has constituted twenty-four language Advisory Boards "to render advice for implementing literary programmes in these 24 languages".

The Akademi gives prizes in twenty-four languages recognised by it for original and translated works. It gives " special awards called Bhasha Samman to a significant contribution to the languages not formally recognized by the Akademi as also for contribution to classical and medieval literature"; "It has also a system of electing eminent writers as Fellows and Honorary Fellows and has also established a fellowship in the names of Dr Anand Coomaraswamy and Premchand".

FESTIVAL OF LETTERS (SHAME)!!!!

In February every year, Sahitya Akademi "holds a week-long Festival of Letters; It begins with the ceremony to present the Akademi's Annual Awards for creative writing".

In February every year, there is a need to examine whether Sahitya Akademi is fulfilling its objective and whether Sahitya Akademi is aware of the rich cultural and linguistic variety prevalent in India.

On scrutiny it is revealed that Sahitya Akademi believes in "forced standardisation of culture through a bulldozing of levels and attitudes" and it is not "conscious of the deep inner

cultural, spiritual, historical and experiential links that unify India's diverse manifestations of literature".

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national, and international levels, "along with the workshops and literary gatherings-about two hundred in number per year". If we see the data in respect of Maithili it comes out that every year around twelve books should have been published in Maithili and the Maithili writers might have attended thirty seminars every year at regional, national, and international levels and might have participated in eight literary gatherings every year. The number of Maithili books published by the Akademi is pathetically low, and when we see the assignments, through which these books get artificially prepared (be it translation, anthology or monograph), then the people getting these assignments are often related to the members of the advisory board (as the answer to RTI application by Sh. Vinit Utpal brings forth). The quality suffers, and as a result, there is no readership.

How this Akademi failed? And why this Akademi failed? And what action should be taken against Akademi for its intentional failure?

Firstly, Akademi is not the name of a man or woman. Akademi or its member of the Advisory Board consists of persons, and if the group of persons is failing the Akademi, that language itself is to blame! But again, the language is not the name of a man or woman. So, the people speaking that language are to be blamed for the failures of the Akademi. Really!!

Even if it is partially true, the Sahitya Akademy cannot shirk its responsibilities. How an advisory committee can be considered representative of Maithili-speaking people (even that of India),

when the Convener of that language is nominated by six organisations (recognised by the Sahitya Akademi for reasons best known to it), having no remote connection with literature? Sahitya Akademi sowed seeds of Acacia and expected Mango fruit. Having said that it is also true that the Akademi or any organisation can transform itself, but only when the conservative people representing these find pressure from the literary fraternity, change themselves or are replaced.

What is the solution?

The literary fraternity has already taken initiative by establishing parallel Sahitya Akademi awards and parallel literary meets. It should be taken further. All legal means should be explored to take the Akademi to the task. On all available forums, the fact is made clear that the literature being prepared by Sahitya Akademi through assignments is not grammatically correct, that it is not up to mark and is of inferior quality. On all available forums, it should be made clear that the thin, casteist-looking (quantitatively and qualitatively) and pale Maithili literature, which is being shown by the Sahitya Akademi of India to the world, has no readership or respect in its native speaking area of India and Nepal. And that Maithili has moved not because of Sahitya Akademi but despite it.

Demand

The six organisations representing Maithili should be derecognized with immediate effect and an inquiry initiated to ascertain their genuineness. A committee should be set up to scrutinize the work done by the Sahitya Akademi (in respect of Maithili) in the last 55 years. The awards should be kept in abeyance till the results of the inquiry are made public and corrective steps are taken.

II

THE CELEBRATION BEGINS

Videha Ist Maithili Fortnightly International e-journal has e-published more than three hundred issues to date. Meanwhile, we will enumerate the problems faced and the solutions found by us. The Journey began in the year 2000 at yahoo Geocities- the first words on the internet in Maithili were written by me on the yahoo Geocities sites (now yahoo has discontinued Geocities) towards the end of 2000 when I suffered a major accident which kept me confined to crutches for one and a half years. But that shaped my destiny. I could concentrate on my Maithili writings and my research on Tirhuta Manuscripts. On 5th July 2004, the first blog in Maithili came (gajendrathakur.blogspot.com) as "Bhalsarik Gachh", which was rechristened as Videha ejournal from 1st January 2008. From Ist January 2008 it came to be published as a fortnightly journal. The first rechristened issue brought the story of the life and creations of a forgotten Maithili poet Late Ramji Choudhary (1878-1952).

Till the eighth issue of Videha the columns on Music, Mithila Painting, Children column, learn samskrit through Maithili got strengthened. Moreover, the projects on digitalisation of Maithili Classics and Panji Manuscript-leafs got started. The searchable dictionary (Maithili-English_Maithili) was designed and strengthened. From the eighth issue, a latest unpublished Maithili Play of Nachiketa "No Entry Maa Pravish" began its e-publication in Videha. Nachiketa, the greatest dramatist of Maithili Literature was silent for the last 25 years, as far as the drama was concerned.

Technology has two aspects, bad (its chances of misuse) and good (its effective use). It is a great leveller; it challenges status quo forces. It is applicable in all areas of knowledge. So, school-going children today have a clearer understanding of the

universe and atoms than the Aryabhata or Sir Issac Newton had. After mass-scale use of printing education and literature expanded its wings, but only after the "Internet and electronic transformation of tools of knowledge", it has become universal, it has jumped geographical boundaries. All shackles unfurled, the weak links of the chain were identified, and the chain which tried to capture knowledge, which tried to thwart its expansion, started breaking down. And the greatest beneficiary became the Maithili Literature. What is Videha, nothing, it is only its commitment to the Maithili Language, which helped it expand its base, and Videha became the means that were able to bind together the Maithili-speaking areas in both parts of the boundary (India & Nepal). Videha gave Maithili a batch of committed writers and a batch of committed readers. It challenged the status quo and casteist forces. It challenged confused writers, who were using Maithili as a tool to ride the ladder of Hindi. The lack of criticism, the lack of teeth in criticism was the reason that some writers and dramatists were using Hindi-Mix Maithili for cheap popularity, they were using derogatory language for the so-called lower castes of their society (some were finding plea in Natyashastra- when even the modern-day Samskrit Drama is not using Prakrit etc.!!), and for their mimicry, those castes started keeping distance with this kind of literature. And once the confusion of the confused thinned, a new type of awakened literature, stage, and drama (top-class) became the norm.

Videha is regularly getting some excellent brains. Since its inception, Videha, the idea factory, is dependent upon them. As far as their versatile qualities are concerned, people associated with Videha are different. All are known for their perseverance and resilience. All are known for their arduous work. All are known for their quality work. All are known for their discipline. And all are committed; committed to Maithili and the Mithila.

The cumulative force resulted in a natural revolution. A revolution in the field of Maithili Literature, art, music, craft, stage, and drama. The only international e-journal in Maithili started this quality movement in Maithili. Nothing less than world standard was acceptable. The awards were instituted to recognize the parallel field of Maithili Literature, art, music, craft, stage, and drama. Only the best was selected, there was no scope for the second best. The participation of readers in the decision-making processes was encouraged. The readers got full access to the digitalised Maithili Literature. More than five hundred Maithili books and around 11000 palm-leaf mithilakshar manuscripts were digitalised and made available online under the "Videha Archive" section of www.videha.co.in (and the number is increasing every day). The audio-video-paintings-photographs were archived, and all these archived "art and lifestyle" of the people of Mithila were then placed online. The Videha Archive is a unique gift to the world.

So, what is the ideology of people associated with Videha? Is it collective thinking? No, of course not. In Videha all are welcome. Here all are welcome to discuss their respective ideology. Having said this, it needs emphasis that there are some basic human principles where no compromise is possible. The casteists, those having genetic superiority complex (which is another name for an inferiority complex), the practitioners of plagiarism, those who are unable to take part in a healthy discussion and persons who are not able to withstand the criticism of their creation, Videha is not a platform for them. The ideology of people associated with Videha may have different tinges, not all need to toe the line taken by any member of the editorial board. Videha believes in the individuality of ideas and the editorial board never imposes its ideology upon its members. At the same time, it is being

emphasized that each member of the Videha editorial board has a strong ideological leaning, the ideology of humanism is practised by all.

Videha-Maithili Literature Movement has its roots in the year 2000 when I started making Maithili Websites on Yahoo Geocities. After Yahoo Closed Geocities these sites were automatically deleted. However, the early form of Videha "Bhalsari Gachh" was started on 5 July 2004, and it is the earliest presence of Maithili on the internet. Videha and its vibrant members did their utmost in translating lacs of words on Wikipedia, and they successfully opposed the nomenclature "Bihari Languages" (Gerard M accepted the role of Umesh Mandal, the co-editor of Videha, go to Gerard M's blog and click the Dasipat Aripam photo from Videha archive (Preeti Thakur) placed at his blog, you will reach <http://videha.co.in/>). In Google translate/Wikipedia localisation drive, in Tirhuta and Kaithi script research and the localisation of Braille in consonance with the Maithili Language, Videha shouldered the responsibility as a pioneer in technology viz-a-viz Maithili Language. It was a pioneer in many respects. It started for the first time a Maithili Websites Aggregator at <http://videha-aggregator.blogspot.com/>, the first braille site in Maithili, the first mithilakshar site in Maithili among others (total list).

Videha has organised several dozen Maithili book fairs to date. The 16th Videha Maithili book fair was held at Sagar Rati Deep Jaray, Patna on 10-11th December 2011 and the 17th Videha Maithili book fair was held at Guwahati, on 22-23 December next year at the Vidyapati Parv organised by Mithila Sanskritik Samanvay Samiti. The detailed list of all the venues (datewise). Videha also organised a parallel Sahitya Akademi Kavi Sammelan, besides awarding parallel Sahitya Akademi prizes, as corrective measures, as the awards and Kavi Sammellans of

Sahitya Akademi were awarded/ organised in a unilateral manner where merit took a beating. Videha has, thus, fulfilled its obligation by interfering in the murky affairs of government organisations. Videha cannot remain a silent spectator, be it plagiarism or copyright violations. So, the authors like Pankaj Parashar, and Ashok Sahu, who were engaged in lifting other articles/ stories/ poems were banned after verifying the sources and target writings.

Literature in translation is a major issue with Videha. Lack of translation in America resulted in Americans lagging in quality literature. We practise literature in translation in both directions- from Maithili into English and from other languages into Maithili. As far as translations from other languages into Maithili are concerned English, Nepali, Sanskrit and Hindi function as buffer languages in the process. Direct translations into Maithili are limited; and it is done directly only from English, Sanskrit, Hindi, Nepali and Bengali, although there are some exceptions. As far as the question of translations from Maithili into other languages is concerned, directed translations are again limited; and it is again done directly only into English, Hindi, Sanskrit, Bengali and Nepali, barring some exceptions. Videha contacted some notable personalities of class literature, took permission, and translated that literature into Maithili. Most of the time English was used as a buffer language and translation work from English, Hindi, Konkani, Telugu, Gujarati, Odia, Kannada, Nepali and Telugu into Maithili was completed; and these works were regularly published in Videha. Maithili novels, poems, and short stories, on the other hand, were translated from Maithili into English and were published regularly in Videha.

VIDEHA became a Maithili Literature movement. No, VIDEHA was from day one of the Maithili Literature

movement. Many established misconceptions got cleared through VIDEHA. The well-known facts, the not-so-obvious plot of some people to kill Maithili through its twin institutions the Sahitya Akademi and the CIIL was unearthed. The Right to Information came in handy. Sri Vinit Utpal asked for information from Sahitya Akademi through his RTI application dated 23.09.2011 (file no. RTI-125) and sought information on "Assignment assigned by Maithili Advisory Board, Sahitya Akademi under the convener ship of Sri Vidyanath Jha 'Vidit'". The information included a proposal received, a proposal rejected, and a proposal kept in abeyance." The statutory mandatory information supplied by the Sahitya Akademi unearthed a vicious circle of Maithili-speaking so-called litterateurs, hell-bent upon making Maithili a language- "of the Maithil Brahmin, for the Maithil Brahmin and by the Maithil Brahmin". More than 90% of the assignments went to the friends, relatives, and acquaintances of the 10-member Maithili Advisory Board. No assignment to Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Bechan Thakur (the greatest Short-story-novel writer of Maithili, the greatest living poet of Maithili and the greatest living Maithili dramatist; respectively), Sh. Umesh Paswan, Sh. Umesh Mandal, Sh. Ramdev Prasad Mandal "Jharudar", Sh. Durganand Mandal, Sh. Sandeep Kumar Safi or to Sh. Anand Kumar Jha. When every member of the Maithili advisory board is hand in glove with the Sahitya Akademi to kill the Maithili language then where lies the hope? The demand for Mithila state by these people will see that 10 Maithil Brahmin families would loot the Mithila state. Then where lies the hope? Here lies hope. Sh. Bechan Thakur has created a parallel Maithili stage and theatre, a slap on the existing slapstick humouristic Maithili theatre. Sh. Umesh Paswan is a discovery of the Parallel Sahitya Akademi Poetry festival organised by Videha. Sh. Jagdish Prasad

Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Jharudar, Sh. Sandeep Kumar Safi and Sh Umesh Mandal have pumped their energy, wealth, and time into our Maithili Language. This language will live...proofs are given below: -

Google Translate:

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject>

then Wikipedia translate:

<http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai>

<http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator>

<http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator> http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

<http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai>

<http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai> <http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai>

<http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html>

[Monday, May 09, 2011

The #Bihari #Wikipedia is written in #Bhojpuri

This is the kind of article that has many people's eyes glazed over. It is about standards and scientific documents, and it is about languages most of my readers have never heard about. For the people that do speak one of the languages that are considered Bihari, it is extremely relevant, and it has implications for Wikipedia.

This is information provided by Umesh Mandal that explains the "Bihari group of languages" with the Maithili language:

Kellogg (1876/1893) and Hoernle (1880) regarded Maithili as a dialect of Eastern Hindi; Beames (1872/reprint 1966: 84-85), regarded Maithili as a dialect of Bengali, Grierson has done a great service to the Maithili language, however, he erred when he gave a false notional term of "Bihari" language after that western linguists started categorizing Maithili as a dialect of "Bihari" language; although there is nothing known as "Bihari

Language" and both Maithili and Bhojpuri are spoken in Bihar (of India) as well as in Nepal.

Umesh is working on the localisation of MediaWiki for the Maithili language and as this language is currently in the Incubator, the language committee does its due diligence and trying to understand if Maithili can have a place in the Bihari Wikipedia. The information provided by Umesh makes it quite clear: "no".

This still leaves us with the misnomer that is the Bihari Wikipedia. The language used for the localisation and the articles is Bhojpuri. Bhojpuri has the ISO-639-3 code "bho".

Are you still following all this? Ok, there is one question I am not asking: How about the Kaithi script?

Thanks, GerardM]

Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. <http://www.videha.co.in/>."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] |

TIRHUTA UNICODE See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman Pandey at Page 23 of the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed].

<http://www.videha.co.in/>. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

The Maithili Speaking area is shrinking. It is shrinking due to a conscious-subconscious policy of the Governments of India and Nepal, and the situation became critical due to the invasion of Hindi and Nepali media and the biased educational system in Maithili-speaking areas, and due to the large-scale migration, which has happened in one single generation. The question of Hindi saw to it that Vajjika, Angika and now Thethi, Surjapuri etc. languages should get the tacit support of supporters of Hindi, first in the name of religion and second in the name of caste. Through this they did not support Vajjika, Angika, Thethi or Surjapuri; but they tried to weaken Maithili, which resulted in the weakening of Vajjika, Angika, Thethi and Surjapuri. For all this, the Maithili-speaking people, more so the officials (I will explain it later), are also responsible, as they tried to delimit Maithili within the two castes and four districts. All other people and areas, than these, were considered northern, southern, eastern, and western deviations of so-called pure Maithili, which was fictitiously considered as being spoken by these Maithil Brahmins/ Karna Kayasthas of Madhubani, Darbhanga, Saharsa and Supaul districts. For the last 45 years the officials, yes, I call them officials, the officials of the Maithili Department of Sahitya Akademi, did not try to accommodate the people outside this fictitiously delimited domain. But the major problem lies somewhere else. The slow poisoning was given in many disguises, be it the faulty top-heavy education system, which neglected primary and middle

school education through the Mother Language Maithili, or be it through the concept of dialect, which initially conveniently declared languages like Maithili as dialects. Elementary education through Maithili was a non-starter because the Maithili books published by the Bihar State Textbook Publishing Corporation Limited seemed to be in Avahatt, it was not fit for children. Further, the authors and subjects selected for these books had a casteist bias. Maithili became a tool for caste-based politics, as once Hindi had been a tool for religion-based politics. Still, these officials, of the Maithili Department of Sahitya Akademi, are residing in their own built ghetto, bereft of any thinking or vision. Another reason for the present plight of Maithili is the policy undertaken by the tax collectors of Mithila (permanent settlement Zamindars of Cornwallis), whom the sycophants call King or the great king (Raja/Maharaja) or Mithilesh (King of Mithila) these were mere tax collectors, the right for which were given to the highest bidders permanently; and there was not one such Mithilesh (tax collectors), but many within the borders of Mithila. These tax collectors employed mostly those two castes from four districts in their merchandise venture, and as the selection was based on sycophancy, so the work suffered. So, they imported the lathiyals from outside the Mithila region. The masses of Mithila suffered a blow from the double-edged weapon. First, from their people who did not consider them as their own and second, the outsiders looted them. Now after some time these outsiders, the non-Maithili speaking people, found it convenient to declare the masses (not belonging to the two castes from four districts) as non-Maithili speaking people, and the officials/ sycophants from those two castes from four districts tacitly agreed to it. Now these outsiders, the non-Maithili speaking people, formed a majority in many places of Mithila, and they led the rumour that Maithili, like Samskrit, is

an upper-caste phenomenon, and thus they legitimized their anti-Maithili stance (all these facts have been brilliantly dealt with in the Maithili Novels of Sh. Jagdish Prasad Mandal) and they propagated the case of Hindi, first based on religion and second based on caste. But why our people fell into their trap, why these tax-collector Maharajas did not consider the masses of Mithila as their own and imported the perpetrators to loot their masses? The simple answer is that merit took a downward leap in auction-based tax collection rights allocation.

We started from one and reached number three, then thirty and now three hundred!! and we are growing-... and are three hundred not out and are creating a grand history. <http://www.videha.co.in/> Videha Ist Maithili Fortnightly e-Journal ISSN 2229-547X has e-published its 300th issue recently. When I began this venture in the year 2000 with a Samsung TV net appliance, and when the existing was posted on 5th of July 2004, I moved all alone. Then on 31st January 2007, I suddenly thought to include the public, as after some groundwork I was ready for it. I decided to e-publish Videha and did publish it, on a fortnightly basis, the first issue that came on 1st January 2008 tried to include all the previous posts.

From all corners of this planet earth, the people tried to change the destiny of Mithila and Maithili. Now Sh. Ashish Anchinhar, Sh. Munnaji (Manoj Kumar Karn), are part of our team; and together we are three hundred not out now. With three hundred plus issues, 30,000 pages of Maithili literature (one hundred lac words corpora) creation and 11000 Tirhuta manuscript transcription we maintained a 50000-word Maithili-English vocabulary database. Now we are 350 strong, with 350 authors.

Videha has faced challenges and has withstood them. We never shirk from any question and/ or problem. The question of the state of Mithila is one such question which often comes calling.

We are in favour of the states of Mithila within the sovereign borders of India and Nepal. We are in favour of Mithila. But which type of Mithila, that type that we had during the Zamindari Raj, where means of sustenance and avenues of existence remained limited for a few castes? Or that culture that existed within "Aryavarta-Indian Nation newspaper" and other Industries during that Raj. A dozen families of Mithila galloped all these mostly from a single caste!! No, we are not in support of that Mithila, that Mithila where Maithili would be swallowed, as it is being swallowed by the Sahitya Akademi and the CIIL, swallowed by another dozen families. We are not in favour of that Mithila where the proceeding of the legislative assembly would be held in a language other than Maithili. Till the misgivings of the people of Mithila are addressed, we cannot support any Mithila state movement. So the people striving hard for Mithila state should sit on a protest before the advisory board members of the Sahitya Akademi/ CIIL and sing patriotic songs in front of their houses, and pressurise them not to misuse government funds by unscrupulously awarding functions of Akademi outside Mithila and not to misuse the power of assigning translation and other rights to themselves and to those people who are hell-bent upon destroying our language. The RTI application by Sh. Vinit Utpal has thwarted an attempt to strangulate Maithili, but if the supplementary work is not done the sinister design would resurface again. We request the Maithili advisory board members of Sahitya Akademi immediately return their assignments taken in their name and the name of the members of their family. Otherwise, pressure should be mounted to force these 10-member Maithili Advisory Board members to voluntarily resign from their membership in the larger interest of Maithili. So, what is our answer viz-a-viz demand of Mithila state: it is a categorical Yes.

The technology-centric venture called Videha became a success. The native speakers of Maithili reside in Bihar (of India) and South-East Nepal. The net connectivity had been extremely poor in these areas. Then how the authors, new and old, started using Unicode for writing for Videha. The Nepal Side of Mithila had been using Preeti, Kantipur, Himala etc. fonts, the Kolkata Maithili-speaking population had been using the Marathi fonts and the rest had been using the fonts based on the old Remington keyboard. All these three types of fonts are ASCII fonts. We researched these fonts and provided font converters to our Nepal-based authors. We also provided phonetic and Remington-based Unicode writers to all Maithili authors, who asked for them. We asked the authors if they may send their creations in any font, but at the same time, we encouraged them to use Unicode fonts. The technical support that we provided resulted in numerous receipts of typed entries from persons like Sh. Gangesh Gunjan, who in earlier stages had been sending their creations in their handwritings. As Sh. Gangesh Gunjan was well versed in Remington keyboard typing, so he made wonderful use of the Remington Unicode typewriter. He sent that software to some of his friends too and he was courteous enough to intimate about this to us, although there was no need for that. Sh. Saketanand also used that software and sent his short story कालरात्रिश्च दारुणा in Unicode, and it was published in one of the issues of Videha. The technology-centric venture called Videha became a success because we made it simple and intelligible at a time when even the technologists were not sure about the future of this Unicode. The virtual medium was being seen with anxiety by the literary fraternity, and the copy-paste system of theft was rampant in those days. But we assured the authors that with Videha they may rest assured that the copyright thieves would not be spared, while at the same time we were firm, that only for fear of

misuse of technology we should not stop our venture midway. With the internet and technology, the geographic barrier became non-existing. The end of the problem of distribution in Maithili literature became possible due to our technology-friendly attitude and it proved a boon for our Maithili language. And it made the technology-centric venture called Videha a success... It is the success of the parallel Maithili literature movement.

III

HONOUR KILLING OF GANGESH UPADHYAYA (FIRST BY RAMANATH JHA, THEN BY UDAYANATH JHA 'ASHOK' (A PARALLEL HISTORY OF MITHILA AND MAITHILI LITERATURE, WHY TODAY ITS NEED BEING FELT MORE INTENSELY?))

I was not surprised, though I must have been when I saw a monograph on Gangesh Upadhyaya, whose copyright is being held by Sahitya Akademi, the author of the monograph is Udayanath Jha 'Ashok'. I thought that Udayanath Jha 'Ashok', who has been given Bhasha Samman also, by the same Sahitya Akademi, would do some justice. But truth and research seem elusive in Sahitya Akademi monographs, at least that I found in this monograph.

I searched and searched through chapters, that now the author will show courage. But the author like Ramanath Jha seems ashamed of the roots and offspring of Gangesh Upadhyaya. He tries to confuse the issue, but there is no confusion now at least since 2009. But in 2016 Sahitya Akademi seems to carry out the casteist agenda. Udayanath Jha mockingly pretends to search his name, lineage etc, where nothing is there to search for, yet he could not muster the courage, to tell the truth, and ends up just repeating the facts

in 2016 that Dineshchandra Bhattacharya already has published way back in 1958.

The honour killing of Gangesh Upadhyaya by Prof. Ramanath Jha is being taken forward by Sahitya Akademi, Delhi in a most hypocritical way.

Ramanath Jha's obscurantism *vis-a-vis* Panji is evident from one example. The inter-caste marriage in Panji was well known to him (but he chose to keep the Dooshan Panji secret- which has been released by us in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at <http://videha.co.in/pothi.htm>). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila". (1958)

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila----- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name-----...As there is no other reference to Gangesa we can assume that the family dwindled into insignificance again and became extinct soon after his son's death." [1958, Chapter III pages 96-99), which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha, and he seemed thankful to him.

The following excerpt from Our Panji Prabandh (parts I&II) is being reproduced below for ready reference:

-

महाराज हरसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कर्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files. Sh. Anshuman Pandey [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjikara-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to pursue their records. It is

a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panji records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of Michigan 2014].

Later these Panji Manuscripts were uploaded to Videha Pothi at www.videha.co.in and google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education stream in British India, in Nepal it still has that meaning.

ORIGINAL PANJI REFERENCES ARE PLACED BELOW:

DOOSHAN PANJI- THE BLACKBOOK

४९.

१८८/२	चर्मकारिणी	माण्डर	वभनियाम	छादन
तत्त्वचिंतामणि कारकगंगेश	छादनगंगेशक	नाई	रत्नाकरक- मातृक (अज्ञात)	गंगेश
	वल्लभा	भवाइ	माहेश्वर	

			जीवे	
--	--	--	------	--

२१//१० छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक जगद्गुरु गंगेश

छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक

गंगेशक वल्लभा चर्मकारिणी पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते तत्व चिन्तामणि कारक गंगेशोत्पत्ति- चर्मकारिणी मेधाक सन्तानक लागिमे छलन्हि

छादन सँ तत्व चिन्तामणि कारक म०म० गंगेश

”तत्व चिन्तामणि कारक म. म. पा. गंगेशक विषयक लेख प्राचीन पञ्जीसँ उपलब्ध ।।

पितृ परोक्षे पंच वर्ष व्यतीते गंगेशोत्पत्तिः इति प्राचीन लेखनीयः कुत्रापि

देवानन्द पञ्जी ३१-२ छादनसँ जगद्गुरु गुरु गंगेश सुताय वभनियामसँ जयादित्य सुत साधुकर पत्नी

देवानन्द पञ्जी ३३१-३ जगद्गुरु गंगेश सुत सुपन दौ भण्डारिसमसँ हरादित्य दौ ।। पुत्र सुताच गोरा जजिवाल सँ जीवे पत्नी ए सुत सन्दगाहि भवेश्वर । अत्रस्थाने सुपनभ्रातृ हरिशर्म दारिति क्वचित् जजिवाल ग्राम

देवानन्द पञ्जी ३०=५ छादनसँ उपायकारक म.म. पा. वर्द्धमान सुताच खण्डवलासँ विश्वनाथ सुत शिवनाथ पत्नी गंगेश- म.म. वर्द्धमान/ सुपन/ हरिशर्म

Gangesh, the author of the Tattvachintamani, wrote one text equivalent to 12,000 texts. Now come to the fact mentioned in the Panji- it clearly states that Gangesh of Tattvachintamani was born five years after the death of his father and he married a tanner, so why did Ramanath Jha hide this from Dinesh Chandra Bhattacharya? Vardhamana, son of Gangesh, calls Gangesh *sukavikairavakananenduh*. But the conspiracy under

which the poems of a famous scholar like Gangesh are not available today is clear from the example given above. Vasudev of Bengal was a classmate of Pakshadhar Mishra of Mithila, he came to study in Mithila, passed the *shalaka* examination and received the title of *sarvabhaum*. Vasudeva memorised the *tattvachintamani* of Gangesh and the *nyayakusumanjali karika* of Udayana. Pakshadhar and other Mithila teachers did not allow writing (copying) *tattvachintamani*. Raghunath Shiromani, a disciple of Vasudeva, took the right of certification after he defeated his guru Pakshadhar Mishra in a scriptural debate (*shastrartha*). The *Navya Nyaya* school was founded in Navadvipa by Vasudeva-Raghunath. Pakshadhar Mishra was a contemporary of Vidyapati (distinct from the Padavali writer who was of the pre-Jyotirishwar period) who wrote in Sanskrit and Avahatta. And the arrival of Mithila students of Bengal from Bengal stopped after Raghunath Shiromani. Gangesh Upadhyaya enjoyed '*param guru*' as well as '*jagad guru*' titles, the highest titles of the time and as per Panji only Vacaspati Mishra II was the other person who enjoyed the title of '*param guru*'. The extinction of Navya-Nyaya School from Mithila, as described above, was a revenge of nature against the honour killing of Gangesh Upadhyaya and his family.

[Translation of the Maithili Short Story, 'Shabdashastram' (based on the true Panji records of Gangesh Upadhyaya) was done by the author Gajendra Thakur himself: published as 'The Science of Words' Indian Literature Vol. 58, No. 2 (280) (March/April 2014), pp. 78-93 (16 pages) Published By: Sahitya Akademi]

Kamlanand Jha has written a book on Nagarjun (Maithili's Yatri) where he credits him with giving a new direction to Maithili literature. Chandradhar Sharma Guleri wrote 'Usne kaha tha', a marvellous short story in Hindi, the best one of its time. But his literary corpora is very little in quantity, so if anyone tried to give him credit for giving direction to Hindi short story writing would make himself a laughing stock. And Yatri's Maithili literary corpora is even thinner than Guleri's. Moreover, Rajkamal Chaudhary calls him of the medieval age (Rajkamal Monograph, Subhash Chandra Yadav, Page no 14). He wrote Chitra (25 poems). He wrote, rather hurriedly published his 'Patrahin Nagn Gachh' (44 poems) for Sahitya Akademi Award in Maithili, which he got in 1968. After that he stopped writing in Maithili, so how can he influence anybody when after getting the award one stops writing in that language? This is one example of his instability so far as his ideology is concerned. He became a Buddhist monk when he left for Sri Lanka and became a Brahmin again when he returned after a 2nd sacred thread ceremony performed in his village. This is another example of his instability so far as his ideology is concerned. Kamlanand Jha does not know Maithili literature. His comments should be exposed, as he tries to give a bad name to the great tradition of Maithili literature. There were mainstream writers, but there were writers of parallel tradition also (see below Annexures 1 & 2). He has confused the Sanskrit and Avahatt Vidyapati Thakkurah with the Padavali writer pre-Jyotirishwar Vidyapti. He should read the writing of Vijay Kumar Thakur, a leftist historian, who has given ample light on pre-Jyotirishwar Vidyapati. [*My article on Vidyapati in Prabandh Nibandh Samalochna Vol.II (available in Videha Archive) covers all*

these, the logo of Videha is the photograph of Pre-Jyotirishwar Vidyapati, sketched by Panak Lal Mandal, recipient of Videha Samman for fine arts.]

Annexure 1

चन्दा झा (१८३१-१९०७), मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम-
पिण्डारुछ, दरभंगा । कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित । ग्रिएर्सनकेँ
मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता केनिहार । कृति- मिथिला भाषा
रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर
विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-
पद्यमय अनुवाद ।

१

न्यायक भवन कचहरी नाम ।

सभ अन्याय भरल तेहि ठाम॥

सत्य वचन विरले जन भाष ।

सभ मन धनक हरन अभिलाष॥

कपट भरल कत कोटिक कोटि ।

ककर न कर मर्यादा छोटि॥

भन कवि 'चन्द्र' कचहरी घूस ।

सभ सहमत ककरा के दूस ।

२

रतिया दिन दुरगतिया हे भोला!

गैया जगतक मैया हे भोला

कटय कसैया हाथ

हाकिम भेल निरदैया हे भोला

कतय लगायब माथ

बरसा नहि भेल सरसा हे भोला

अरसा कए गेल मेह

रतिया दिन दुरगतिया हे भोला

जन तन जिवन संदेह

मुखिया बड़ बड़ सुखिया हे भोला

अन्नबक दुखिया डोल

के सह कान कनखिया हे भोला

सुखिया बिरना टोल

३

अस्त्र शस्त्र रोक आब मामिलाक मारि ।

भाइ भाइकेँ पढ़ैछ नित्य नित्य गारि ॥

ठक्क लोक हक्क पाब साधु कँ उजारि ।
दैव जे ललाट लेख के सकैछ टारि?
चाही नहि धन, ललितवाम, पकवान जिलेबी,
मनोविनोदक हेतु अमरपति सदन न टेबी ।
ई अन्तर अभिलाष हमर करुणामयि देवी
भक्ति भाव सँ सतत अहिँक पदपंकज सेवी ॥
अन्न महग, डगमग अछि भारत, हयत कोना निस्तारा
उत्तर पश्चिम भूमि अगम्या पर्वत असह तुषारा ।
धर्म-विरोधी सहसह करइछ, कुमत कथा विस्तारा
करथु कृपा जगजननी देवी महिसीवाली तारा ॥
मिथिला की छलि की भय गेलि,
याज्ञवल्क्य मुनि, जनक नृपतिवर
ज्ञान भक्ति सौँ गेलि ।
वाचस्पति मिश्रादि जगद्गुरु
निर्जित बौद्ध झमेलि
से शारदा स्वर्ग जनि गेली
बढ़ल कुविद्या केलि ।

वर्णाश्रम विधि ककरहु रुचि नहि

श्रुति श्रद्धाकेँ ठेलि

पूजा पाठ ध्यान वकमुद्रा

सभटा वंचन खेलि ।

कह कविचन्द्र कचहरी भरिदिन

बहुत भोग कर जेलि,

कलह कराय धर्म धन नाशे

कलिक दरिद्रा चेलि ।

४

मय केहन भेल घोर हे शिव!

गोधन विपति, धरम अवनति देखि कत हिय करब कठोर॥

साधु समाज राजसँ पीड़ित अति हरषित-चित चोर ।

अकूलिन लोकें धरणि परिपूरित कुलिन समादर थोड़॥

धरम सुनीति प्रीति ककरहु नहि, खलहिक चलइछ जोर ।

कन्द-मूल-फल सेहो अब दुरलभ अन्न गेल देशक ओर॥

किछु शुभ साधन बनि नहि पड़इछ थाकल मन, मति भोर ।

कह कवि चन्द्र हमर दुख मेटत होयत कृपा शिव तोर॥

५

सुमरु सुमरु मन! शंकर समय भयंकर जानि ।
ककर हृदय नहि कलुषित शासन कलि नृप पानि॥
केवल शिव करुणाकर सेवयित नहि जन हानि॥
भक्ति कल्पलति जानह परम परशमनि खानि॥
कतहु विषयमे न लागह त्यागह अनुचित मानि ।
सुखसाँ अन्त विलसबह 'चन्द्र' चूड रजधानि॥

ANNEXURE 2

१

फतुरीलालक अकाली कविताअकाली कवित्त /

फतुरीलालक फसली बर्ख १२८१ .७४ ई-१८७३)सन सालक अकाली (कविता

[ग्रियर्सन [(मैथिली क्रैस्टोमैथी एण्ड वोकाबुलेरी)

साल एकासिक वर्णन सुनूचौदिस पड़ल अकाल /
भेल बरिसात खिन्न ऐ सालककहाँ लागि वरनाँ हाल /
रोहिणि आदि थीक बरिसातक /जेहिँ एला तेहिँ गेला
म्रिगिसिरा मन पुरल मनोरथदै झीसा किछु गेला /

अरदड़ा आडम्बर भारीगरजत हैं चहु ओर /
पुख रुख राखल धरती केरभेल बरखा केर ओर /
पुनर्वसु थिक बड़ पुनीताओहो बड़ा कसरेस /
बिआ बिड़ारक जे किछु उपटलधनि बरिसल असरेस /
मघा भेल मंगाहिआ कल्लरजगभरि के नै जान /
पुरबा पूर पछ नै राखलककरा करब बखान /
उत्तरा आइ जाय घर बैसलसपतौं लै नै बून /
हथिआ शृंग मुँड दै मूनलतनिकौं लागल घून /
चितरा चित मित नै राखलओहो भेल डाकू धाती /
नाक रंगौलन्हि सभै नछत्तरदोम नुकौलन्हि खाती /
जोतिष पढिसाधि भूगोल-साधि /पढि जे जन ऐलाह-
रेखागणित बीजसाँ ओआकिफतनि काँ कच्ची बोल /
श्रीराम कृपागति ओहो ने जानथिजाहि कृपा सभ काज /
पानिक प्रश्न कबाँ जाँ पुछिऐन्हिसेहो कहैत होइन्हि लाज /
जेहिखन नदी नाल नै भरलेतेहिखन रौदी सरती /
बिना जले जग किछु नै उपजलदगध भेल छथि धरती /
ते नर रौदीक आगम बूझलजे छल कृषि किसान /
दैव बेपच्छ पच्छ नै राखलजड़ि कटौलक धान /
कोदो मडुआ एको ने उपजलनै उपजल किछु साम /
गम्भड़ी गदरि खेतहि सुखाएलभेल विधाता वाम /
मर्तभुवनमे के कर रच्छाकहाँ जाइ केँ भागि /
सुखल पताल हाल नै ओतहुँसगरहुँ लागल आगि /
धृक जीवन ओइ नृपति इन्द्रकेँजे रोकल गहि पानि /
जीवाजन्-तु विकल पुहमीमेताकेँ हो नै आनि /

रवीने खेढी औ चीन /राय एको नै उपजल-
घरदुरदिन भेल अब बीन /नारी-घर सोच करै नर-
धनिक लोक सभ मनहि मगन छथिराखथि बहुतो ढेरि /
हसोथि रुपैया घर कै राखथिमहगी भेल अब सेर /
केओ कुरथी खेत मासु बेसाहलजाहि कौड़ि छल अपना /
कतेक जना हरिवासर ठानलभात बहुत कै सपना /
कतेक जना मिलि जनेर बेसाहलनिरधन बैसल तकइ /
भेल धनन्तिरि दूइ फसिल जगराहड़ि आओर मकइ /
काल पड़ल तिरहुतिमे भारीतैं ई बहि गेल हावा /
घरफाँकि मकइ केर लावा /नारी-घर मगन करै नर-
मालिक और महाजन सभकँघर ढेरी अन्न-घर /
लोक बुझाओन ओहो तकै छथिमूँह / गरीबक सन
समै देखि बनिआँ सभ सनकलडरें लगौलक टट्टी /
सुन्न दोकान सहरमे परि गेलसुन्न भेल सभ चट्टी /
सूखल गात बात भौ लटपटकतेक बात अब सहना /
नर नारी सभ सान तेआगलबिकरी भेल अब गहना /
मँगटीका खूटी औ तड़कीनकमुन्नी नै नाक /
कटसरि बिछिआ औ झिमझिमिआँबाजूबन्द औ बाक /
चन्द्रहार, हैकल औ सिकड़ीऔर घमौरिक दाना /
सूति, नवग्रह औ पचखँडीलशुनी भेल निदाना /
तापर दर्बजात नै बचलेकरम भेल निखट्ट /
तमघैल, अढ़ैआ औ पिकदानीनै तसला औ तट्टू /
बाटी, बट्टा औ पनबट्टाभोजन करैक थारी /
माधव सीहि सहित सोबरनानै बचले घर झाड़ी /

धन संपति घर किछु नै बचले/ सभटा पड़ि गेल बंधक
तैओ भूख छुटल नै ककरोएहन पेट भेल खंधक /
दैब अंश अबतरल कम्पनीजा पर राम सहाए /
मिथिलापुर बूडन जब लागयसे सुनि पहुँचल धाए /
खरिद अनाज जहाजहिँ बोझलभरती करि करि बोरा /
सदर तिलंगा ओआ पर भरतीऔर ओलाइति गोरा /
हाजीपुरमे लाख हजारमकै लाखन हइ पटना /
बाजितपुर सुलतानपुर गोलानै जानत हाँ केतना /
गाड़ी, बैल, छकड़, ऊँट बिहारेउबहत हइ सभ दाना /
मिसर कन्हैआ केँ पोखरन मेपहिलुक अड़ी ठेकाना /
श्री लक्ष्मीश्वर सिंह नृपतिमहाराज मिथिलेश /
अचल राज दड़िभंगाश्रीपति हरहिँ कलेश /
गाड़ी बैल लाखन हजारनताकेँ परे घड़ेर /
पहिलुक गोला मधुबन, भौड़ाजफरा और अड़ेर /
बेनीपट्टी, औ पचमहलाकुम्हरौल औ कमतौल /
हरिहरपुर, पिड़ारुछ बरनौंकारज केतेकाँ बरिऔल /
बारि पोखरि, बिरसायर बरनौंपण्डौल को नै जान /
नवहद, सरिसो ओ भटपुरा, ता साँ दक्षिण उजान
झंझारपुर, महरैल, कन्हौलीमधेपुर हइ खास /
बेनीपुर, कमान, नरैहिओबरनौं फूलपरास /
झमना हइ जगजानित जगमेमहथा और बछौर /
दुहबी औ महिनाथपुरऔर जैनगर तक हइ दौर /
बलदेबपुर औ ढंगा बरनौंमिरजापुर लघु हाट /
सीबीपटी औ कपसीआसदर गोला सौराठ /

गुरबाकें परबरसी हाकिमकर तिरहुतमे आके /
नै तो मरते कत नर नारीबाले बचे सुखा के /
कत मुरदा गरदा मै मिलतेअसंख जीव चल जाता /
सर समधी कें संभा ने लम्हननै बचते जलदाता /
सभकें सभ उपछै भै गेलधुर पोखर औ सड़क /
रहि गेल ब्राह्मण सोती पण्डितकायथ पछिमा ठाकुर फरक /
केओ ओरसिअर नाम लिखाओलकेओ मोहर्रिर भँट /
धर्मकार्यमे लुटथि रुपैआतें भेल सभ केर भँट /
केओ जमानत दैकें बचलाहजिनका अमला नेही /
ककरो मारि केंत पिठि तोड़ैन्हिउतरैन्हि जन्मक ठेही /
ककरहुँ गारत गात सुखाओलबहुतो होअय चलाना /
मातुपिता घर परिजन रोवयबाबू गेलाह जहलखाना /
ककरहुँ घर भेल खानातलासीभेट मोहर्रिर घौँछ /
केओ अदालतिमे डिड़िआइ छथिककरहुँ उपरैन्हि माँछ /
एतना सुनि हाकिम रिसिआओलतें लागल जन ठीका /
नाक रंगौलन्हि सभै मोहर्रिरलागल चूनक टीका /
जोग, बिकौआ,लौकिक वंशककिरिआमंत सुकूल /
गाछी, बाँस, बैल औ महिसिजगह कैल भकफूल /
ताहि रुपैआ साँ करा गजरलै कोरट साँ रीन /
तें कारन बहुतो घर झगड़ाभाइ भतीजा भीन /
आए लाट बहादुर औ /दड़िभंगा धाम
बाबू औ बबुआन सहित मिलिकीन्ह कुमैटी खान /

.....

.....

.....

एह सभ संग बैठि कैजाय कुमैटी भेल /
अजब कार सरकार केतिरहुत पहुँचल रेल /
बाजितपुरसँ सड़क निकालैआये दौड़िह दौड़ी /
हहेया गंडक पुल बन्हाएआए चौरही चौरी /
धर्मधीर, बलबीर, कम्पनी जानत हइ /जगदीशन
लछमी सागर के पोखरिमेताहि कीन्ह इसटीसन /
बड़ा लाट कलकत्तेवालेश्रीदुर्गा होए संग /
आगरा के छोटा लाल बहादुरबैठे सभ एकरंग /
जुटे कमिश्नर और कलट्टरबोलहिं बात नेअंट /
एह पाचो इजलास पर बैठेसंग जात ऐह जंट /
खबरि गए अखबार माँमैथिल के एह हाल /
सुनहु फिरंगी अवण दैकँमेटहु दुख के जाल /
हुकुम दीन्ह दोउ लाट कोसुनहु हमारे बैन /
मदति करहु रेआआनकोक्या बैठे हौ चैन /
बड़ा लाट दोउ बीर उठाएसाहेब औ जरनैल /
मेजर मजिस्टर और कलट्टरसंगजात करनैल /
देस देससौँ अन्न मंगाओलदीन्ह सभनि के दाम /
महामूँग, गहुम औ चाउरबजड़ा और बदाम /
डोली, पटना औ भटसारेदीली औ अजमेर /
आगरा और कान्हपुर ढाकाजहाँ अन्न के ढेर /
भए रमाना अन्न तिरहुतिमेलादि गाड़ी और बैल /
गज, तुरंग, गदहा औ छकड़संग सिपाही छैल /
छत्री औ पैठान मोगल सभबाँकाबीर रजपूत /

सोभा बरनि नजात हइजैसे हनुमन्त दूत /
आगे सफर ओ मैनापलटन वीर जमान /
बरछी औ तरुआरि गहैकर गहै तीर कमान /
चढ़ि तुरंग पर करै कवाइतजमादार होए संग /
सोभा बरनि न जात हइदेखि तखनुक रंग /
करत काम सभ धाममेटूट अट सभ लूट /
ढाहि भीड़ गाछी सहितबान्धै सड़क औ पूल /
जिले पटने औ भटसारेप्रगन्ना महिसौर /
तहाँ बसहिँ एक सज्जनतेहि घर जा लक्ष्मी दौड़ /
श्री द्वारिका प्रशादितधर्मधीर बुद्धिमान /
तहसीलदार कोरट के खासाजानहिँ सकल जहान /
बाबु इसरी प्रसाद दियोटीसो मधुबनमे आए /
हुकुम दीन्ह सुपरनडेंटकेँटोले टोले होए जाए /
मन पँचा मनगर भै लिएबहुतो लिए खैरात /
धन्य धन्य अंगरेज बहादुरसभकेँ जूटल गात /
गरिब, गनी, गुरबा, करु जै, जैब्राह्मण देत असीस /
श्री रघुनाथ बढै बदसाहीगदी लाख बरीस /
फतुर लाल कवि बरनत हैंएह रौदी के हाल /
गौरमिँट गौरनल बहादुरतिरहुति राखहिँ बहाल /

२

राधाकृष्ण चौधरी (मिथिलाक इतिहास) (विदेह पेटारमे उपलब्ध)

"१७७० क अकाल मिथिलाक इतिहासमे अद्वितीय छल आ मिथिलाक जनसंख्या घटिकेँ एक दम्म कम्म भऽ गेल छल। १८७३ ७४ मे पुनः-

एकटा ओहने अकाल मिथिलामे भेल छल जकर विवरण हमरा फतुरी लाल कविक अकाली कवित्तसँ भेटइयै, अकाली कवित्त अप्रकाशित अछि। अकालकेँ दूर करबाक हेतु आ मजूरकेँ रोजी देबाक हेतु ताहि काल रेलगाडीक योजना चलाओल गेल जकरा सम्बन्धमे फतुरीलाल लिखैत छथि-

'कम्पनी अजान जान कलनको बनाय शान।
पवन को छकाय मैदानमे धरायो है॥
छोड़त है अड़ादार बड़ा बीच धाय धाय।
सभेलोग हटाजात केताजात खड़ा है॥
तारकी अपारकार खबरि देत वार वार।
चेत गयो टिकसदार रेल की उवाई है॥
करत है अनोर शोर पीछे कत लगत छोर।
जोर की धमाक से मशीन की बड़ाई है॥
कम्पूसन पहरदार कोथी सब अजबदार।
कोइला भर करल कार धूआँसे उड़ायो है॥
बाजा एक बजन लाग हाथी अस।
पिकन लाग जैसा जो चढ़नदार वैसाधर पायो है॥
गंगाकेँ भरल धार उतरि गयो फतूर पार गाडीकी।
अजबकार कवित्त यह बनाया है॥”

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

मैथिली आ मिथिलासँ संबंधित किछु मुख्य साइट:- आन लिंकक विषयमे सूचना editorial.staff.videha@gmail.com केँ ई मेलसँ पठाबी।

<http://www.videha.co.in/> ("विदेह" प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका)

<http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> (इंटरनेटपर मैथिली

भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाई २००४)

<http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> (इंटरनेटपर मैथिली

भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाई २००४)

भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html, <http://www.geocities.com/ggajendra> आदि लिंकपर आ

अखनो ५ जुलाई २००४ क पोस्ट <http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> (किछु दिन लेल <http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> लिंकपर, स्रोत

wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- <http://videha.com/> भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)

केर रूपमे इंटरनेटपर मैथिलीक प्रचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे <http://www.videha.co.in/> पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक

प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि । विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA पल्लवमिथिला (धीरेन्द्र प्रेमर्षि) २०५९ माघे संक्रान्ति- २००३ जनवरी मैथिलीक दोसर इंटरनेट पत्रिका अछि जे ऐ लिंक www.pallavmithila.mainpage.net पर छल मुदा आब ई उपलब्ध नै अछि । ई टिप्पणी मात्र इतिहास शुद्धता लेल अछि ।

.....
<http://videha-aggregator.blogspot.com/> (मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर)

<http://www.videha.com/> (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक सभसँ पुरान उपलब्ध उपस्थिति/ लोकप्रिय ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर ५ जुलाई २००४ www.gajendrathakur.blogspot.com)

<http://esamaad.blogspot.com/> (पुनम मंडल आ प्रियंका झाक पहिल मैथिली न्यूज पोर्टल, ९ अगस्त २००४ सँ)

<http://prakarantar.blogspot.com/> (प्रकारांतर मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, फरबरी २००५)

<http://vidyapati.blogspot.com/> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००५)

<http://www.vidyapati.org/> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००५)

<http://hellomithila.blogspot.com/> (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, रूपा झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, ३ मइ २००६)

<http://pallav.blogsome.com/> (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, रूपा झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, १७ मइ २००६)

<http://hellomithilaa.blogspot.com/> (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

<http://www.hellomithila.com/> (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

<http://shampadak.wordpress.com/> (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरबरी २००८)

<http://www.esamaad.com/> (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरबरी २००८)

<http://hellomithilaa.wordpress.com/>

<http://premarshi.wordpress.com/> (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

.....

<http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/> (मैथिलीक लोकप्रिय गजलक ब्लॉग)

.....

<https://vigyanprasar.gov.in/vigyan-ratnakar/> (विज्ञान रत्नाकर)

JNU

<http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp>

http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

.....

[ALL INDIA RADIO DOORDARSHAN आकाशवाणी दूरदर्शन](#)

<http://prasarbharati.gov.in/>

<http://newsonair.com/>

<https://doordarshan.gov.in/>

आकाशवाणी मैथिली पोडकास्ट <http://prasarbharati.gov.in/podcast.php?filterlang=Maithili&from=1947-08-15&fromwp=2020-08-29&to=2050-12-31&search=GO>

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रेजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-1 <http://newsonair.com/RNU-NSD-Audio-Archive-Search.aspx>

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रेजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-2 <http://newsonair.com/Regional-Text.aspx>

आकाशवाणी दरभंगा <http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=282>

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल <https://www.youtube.com/channel/UCGdNveEFmv4pPolWiTEMxVA>

आकाशवाणी भागलपुर <http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=359>

आकाशवाणी पूर्णियाँ <http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=256>

आकाशवाणी पटना <http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=122>

[ALL INDIA RADIO ENGLISH NEWS](#)

[ALL INDIA RADIO NEWS ARCHIVE](#)

[ALL INDIA RADIO TALKS AND CURRENT AFFAIRS](#)

[RAJYA SABHA TV NEWS DISCUSSIONS](#)

[SANSAD TV](#)

[VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL](#)

<https://www.youtube.com/channel/UC4abVKqMj2pDWIAkXIOHp7A>

.....

<http://bramhanews.blogspot.com/> (मैथिली समाचार)

<http://www.mithilakhabar.com/> (नेपालक मैथिली ई पत्रिका)

<http://mithilanews.com/>

<http://www.maithilnews.blogspot.com/> (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

<http://www.hamargam.in/> (मैथिली न्यूज पोर्टल)

<http://mithiladotcom.blogspot.com/> (मैथिली राष्ट्रीय दैनिक)

<https://mppdainik.com/> (मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश, मैथिली दैनिक)

<http://mithilasamad.blogspot.com/> (मिथिला समाद, मैथिली दैनिक)

<http://janakpurnews.blogspot.com/> (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

<http://www.mithilalok.com/> (मैथिली न्यूज पोर्टल)

<http://mithimedia.blogspot.com/> (मैथिली न्यूज पोर्टल)

<http://www.mithimedia.com/> (मैथिली न्यूज पोर्टल)

<https://mithiladharohar.blogspot.com/> (मैथिली न्यूज पोर्टल)

<https://simanchal.com/> (मैथिली न्यूज पोर्टल)

<https://maithilijindabaad.com/> (मैथिली न्यूज पोर्टल)

.....

<https://kirtinath.blogspot.com/> (कीर्तिनाथ झा ब्लॉग)

<http://jct27novmaithili.blogspot.com/> (जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" क ब्लॉग)

<http://brikhesh.blogspot.com/> (बृषेश चन्द्र लाल)

<http://www.chetnasamiti.org/> (चेतना समिति, पटनाक वेबसाइट)

<http://shiva-pustak-bhandar.blogspot.com/> (मैथिली पोथी कीनू)

<https://mishram.blogspot.com/> (भोरसँ साँझ धरि)

<https://rjanakpuri.blogspot.com/> (साहित्यपुरी)

<http://bataahmaithil.in/>

<http://maithilpravahika.org/>

<http://ganeshbawra.blogspot.com/>

<http://maithilnews.com/>

<http://anandjhakavitakahani.blogspot.com/>

<http://chaaywala.blogspot.com/>

<http://maithilputr.blogspot.com/>

<http://maithilputramanu.blogspot.com/>

<http://mithilanchalpatrika.blogspot.com/>

<http://mithilakbat.blogspot.com/>

<http://maithilitimesonline.blogspot.com/>

<http://mithilavidehavajjitirhut.blogspot.com/>

<http://samadiya.blogspot.com/>

<http://jitumaithili.blogspot.com/>

<http://pratipadamaithili.blogspot.com/>

<http://bhatsimar.blogspot.com/>

<http://maithilirangmanch.blogspot.com/>

<http://www.mithilavaani.blogspot.com/>

<http://www.maithilisongsjagat.co.in/>

<http://mithilablog.com/>

<http://www.lahakchahak.com/>

<http://www.jaimithila.com/>

<http://www.dahejmuktmithila.org/>

<http://mithilavaani.blogspot.com/>

<http://www.chamundanagarpachahi.com/>

<http://kisunsankalplok.wordpress.com/>

<http://www.kisunsankalplok.co.nr/>

<http://maithilisongshub.blogspot.com/>

<http://www.rajnipallavi.com/>

<https://maithilnewsnetwork.com/>

<https://mithilamirror.com/>

<https://www.emithila.in/>

<http://csts.org.in/> (CSTS)

<http://www.samaysaal.com/> (समय साल)

<https://www.maithili.org.in/> (रोशन चौधरी)

<https://doorvaksata.org/> (मिशन दूर्वाक्षत)

<http://mithilaksharshikshaabhiyan.in.net/> (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

<http://mithilakshar.in/> (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

<https://missionmithilakshar.blogspot.com/> (सिद्धिस्तु- मिशन मिथिलाक्षर लिपि)

<https://mithilani.in/> (मिथिलानी)

<https://www.maithilmanch.in/> (मैथिल मंच)

<http://madhubani.co.in/>

<http://www.premkumarmallik.com>

<http://apandalan.wordpress.com/>

<http://www.mithilaworld.tk/>

<http://www.mithilachowk.com/>

<http://maithilisongsgeet.blogspot.com/>

<http://rayprabhatbhatt.blogspot.com/>

<http://amitmohanjha83.blogspot.com/>

<https://maithilistwasthyaparicharcha.blogspot.com/> (मैथिली स्वास्थ्य परिचर्चा- रमाकर चौधरीक ब्लॉग)

<http://maithili-darpan.blogspot.com/> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

<http://mithilatoI.blogspot.com> (मिथिलाटोल मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

<http://maithilicinema.blogspot.com/> (मैथिली फिल्मस)

<http://maithilifilms.blogspot.com/> (मैथिली फिल्मस)

<http://maithili-drama.blogspot.com/> (विदेह मैथिली नाट्य उत्सव- बेचन ठाकुरक ब्लॉग)

<http://mjnk.co.cc/> (ई जनकपुर न्यूज, तराई मॉडल, मिथिला इन्फोर्मेशन)

<http://www.TeraiNepal.co.cc/> (तराई नेपाल मिथिला जनकपुर मधेश हालचाल Anytime Anywhere see)

<http://maithilaurmithila.blogspot.com/> (मैथिलक आ मिथिलाक लोकप्रिय ब्लॉग)

<https://www.mithiladainik.in/> (मिथिला दैनिक)

<http://www.mithilaamanch.blogspot.com> (मिथिला मंच)

<http://maithilisong.blogspot.com/> (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक ब्लॉग)

<http://maithilifoundation.blogspot.com/> (मैथिली फाउन्डेशन)

<http://maithilibhasha.blogspot.com/> (काश्यप कमलक ब्लॉग)

<http://rkjteoth.blogspot.com/> (रूपेश कुमार झा "त्योथ"क ब्लॉग)

<http://paraati.blogspot.com/> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

<http://singarhaar.blogspot.com/> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

<http://vaachik.wordpress.com/> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

<http://mithilainfo.blogspot.com> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

<http://mithilasamachar.blogspot.com> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

<http://pilakhwar.blogspot.com/> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

<http://desilbayna.blogspot.com/> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

<http://maithilynijha.blogspot.com/> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

<http://gaam-ghar.blogspot.com/> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

<http://mithila-mihir.blogspot.com/> (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

<http://www.maithililekhaksangh.blogspot.com/> (मैथिली लेखक संघक जालस्थल)

<http://www.maithili.co.uk/> (मिथिला कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन, यू.के.)

<http://minapjanakpur.org/> (मिनाप, जनकपुर)

<http://www.airdarbhanga.org/> (आकाशवाणी दरभंगाक साइट)

<http://mithilangan.org/> (मिथिलांगनक साइट)

<http://www.desilbayana.com/> (देसिल बयना, हैदराबाद)

<http://www.vmym.in/> (विद्यपति मैथिल युवा मंच)

<http://www.jaimithila.com/> (मिथिलाक सभ्यता, संस्कृति, विभूति, गीत-संगीत आ बहुत रास जानकारीक लेल)

<http://sobhagyamithilatv.com/> (सौभाग्य मिथिला- पहिल मैथिली चैनल)

<http://kashyap-mithila.blogspot.com/>

<https://kashyapartschool.wordpress.com/> (कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबालाक साइट)

<http://mithilapaintingtraining.blogspot.com/>

<http://dularuababumaitilifilm.blogspot.com/>

<http://senuraklaajmaithilifilm.blogspot.com/>

<http://maithlivideosongs.blogspot.com/>

<http://kalikantjhabuch.org/> (काली कांत झा "बूच")

<http://saketanands.blogspot.com/> (साकेतानन्दजीक जालवृत्त)

<http://gunjang.blogspot.com/> (गुंजनजीक जालवृत्त)

<http://darihare.blogspot.com/> (श्याम दरिहरेक जालवृत्त)

<http://deoshankarnavin.blogspot.com/> (देवशंकर नवीनक जालवृत्त)

<http://www.udayanarayana.com/> (नयिकेताक साइट)

<http://www.indianembassy.org.np/> (भारतीय दूतावास नेपाल)

<http://www.purvottarmaithilsamaj.com/> (पूर्वोत्तर मैथिल समाज)

<http://www.purvottarmaithil.blogspot.com/> (मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका)

<http://apanmithladhaam.blogspot.com/>

<http://maithilikavita.blogspot.com/>

<http://pankajjha23.blogspot.com/>

<http://maithili-haiku.blogspot.com/>

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

<http://mithiladay.org/>

<http://dsal.uchicago.edu/lsi/> (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings)

<http://dsal.uchicago.edu/lsi/taxonomy/term/1718> (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings, Maithili)

<http://music2.cooltoad.com/music/category.php?id=10576>

<http://maithiliacademy.org/>

<https://maithiliacademybihar.org/> (मैथिली अकादमी, पटना)

मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली

http://artandculture.delhigovt.nic.in/wps/wcm/connect/doi_art/Art+Culture+and+Language/Home/Maithili-Bhojpur+Academy/

<http://maithili.sourceforge.net/>

<http://ansiss.org/>

<http://fedoraproject.org/>

<https://fedorahosted.org/fuel/wiki/fuel-maithili>

<http://l10n.gnome.org/teams/mai>

<http://translate.fedoraproject.org/languages/mai>

<http://www.biharlokmanch.org/> (मिथिला-मैथिली पोथी ऑनलाइन कीन्)

http://www.biharlokmanch.org/mithila_products_online.php (Buy Mithila-Maithili books online)

<http://mithila-haat.com/> (Buy Mithila-Maithili books/ other materials online)

<http://www.antikapakashan.com/> (अंतिका प्रकाशनक साइट- मैथिली प्रकाशक)

<https://shashiprakashan.blogspot.com/> (शशि प्रकाशन - मैथिली प्रकाशक)

<https://pallavipublication.blogspot.com/> (पल्लवी प्रकाशन - मैथिली प्रकाशक)

<http://www.navarambh.com/> (नवारम्भ - मैथिली प्रकाशक)

<http://www.gorkhapatra.org.np/>

<http://www.saiha.org.np/>

<http://www.kantipuronline.com/>

<http://mithilahyd.org/>

<http://www.jyoticonsultant.com/> (मैथिलक नौकरी डॉट कॉम)

<http://www.mithilamanthan.com/>

<http://www.brandbihar.com/>

<http://www.biharbrains.org/>

<http://maithilijokes.blogspot.com/>

<http://www.rdo91fm.blogspot.com/>

<http://www.kfm961.com/> (हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रत्येक शनिकेँ नेपाली समयानुसार राति ९.३० बजेसँ ११ बजेधरि आ राजनीतिक विषयवस्तुपर केन्द्रित चौबटिया कार्यक्रम प्रत्येक सोमकेँ राति १० सँ ११ बजेधरि प्रसारण)

<http://www.radiokantipur.com/> (हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रत्येक शनिकेँ नेपाली समयानुसार राति ९.३० बजेसँ ११ बजेधरि आ राजनीतिक विषयवस्तुपर केन्द्रित चौबटिया कार्यक्रम प्रत्येक सोमकेँ राति १० सँ ११ बजेधरि प्रसारण)

<http://www.jumptv.com/en/channel/nepal1/> (नेपाल 1 टी.वी.-जम्प टी.वी. मैथिली कार्यक्रम सूचना)

<http://janakifm.org.np/> (जानकी एफ.एम., मैथिली समाचार रेडियो)

<http://www.mithilaradio.com/> (मैथिली रेडियो)

<http://www.youtube.com/user/Janakifm> (जानकी एफ.एम., मैथिली समाचार रेडियो Youtube channel)

<http://www.radiomithila.org/> (मैथिली रेडियो)

<http://www.appanmithila.org/> (रेडियो अप्पन मिथिला ९४.४ MHZ)

<http://www.janakpurtoday.com.np/>

<http://madanpuraskar.org/>

<http://www.madheshuk.org/> (एसोशिएशन ऑफ नेपाली मधेसीज इन यू.के.)

<http://www.mithilaart.com/> (श्रीमति प्रभा झाक साइट)

<http://www.mithilavihar.com/>

<http://www.sugatisopan.com/>

<http://www.maithilsamaj.org.in/>

<http://www.maithilsamaj.com/>

<http://www.janakpurcity.com/>

<http://www.janakpur.com.np/>

<http://home.att.net/~maithils/>

<http://shyamprakashjha.com/>

<http://ramanathjha.com/>

<http://www.ramajha.com/>

<http://sudhakar.co.in/maithili>

<http://www.maithils.net/>

<http://www.getpredictiononline.com/>

<http://www.bihartimes.com/>

<http://www.bihar.ws/>

<http://www.patnadaily.com/>

<http://www.krraman.blogspot.com/>

<http://www.adi-maithili-kavita.blogspot.com/>

<http://www.mithilasevasamiti.blogspot.com/>

<http://www.jankitoday.blogspot.com/>

<http://opiha.blogspot.com/>

<http://chitthajagat.in/> (देवनागरी लिपिक ब्लॉगक एग्रीगेटर)

<http://mailorang.blogspot.com/> (मैलोरंग नाट्य संस्थाक ब्लॉग)

<http://mailorang.in/> (मैलोरंग)

<http://vandanageet.blogspot.com/>

<http://www.darbhangaaraj.blogspot.com/>

http://mithila_samachar.tripod.com/mithilasamachar/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

<http://www.ciilcorpora.net/maisam.htm>

<http://www.ildc.in/Maithili/Mlindex.aspx> (मैथिली अओजार आ फॉन्ट)

<http://www.mithilaarts.com/>

<http://www.mithilapainting.org/>

<http://www.maithili.net/> (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

<http://www.mithilaonline.com/> (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

<http://www.onlinemithila.in/> (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

<http://www.nnl.gov.np/>

<http://www.nepalacademy.org.np/>

<http://www.karnagoshthi.org/>

<http://surmasti.com/>

<http://www.maithiliworld.com/>

<http://www.mithila-museum.com/aboutMM/Eindex.html>

<http://www.tribhuvan-university.edu.np/>

<http://www.swastifoundation.com/> (स्वस्ति फाउन्डेशनक साइट)

<http://foundationsaarcwriters.com/>

<http://www.opmcm.gov.np/>

<http://www.moe.gov.np/> (नेपाल सरकारक साइट)

<http://lnmu.bih.nic.in/>

<http://gov.bih.nic.in/> (बिहार सरकारक साइट)

<http://www.india.gov.in/>

<http://rajbhasha.nic.in/>

<http://www.hindinideshalaya.nic.in/>

<http://themithila.tripod.com/>

<http://www.mithilaconnect.com/>

<http://www.esabha.net/> (मैथिल विवाहक साइट)

<http://www.maitilivivah.com/> (मैथिल विवाहक साइट)

<http://www.kanyadan.net/> (मैथिल विवाहक साइट)

<http://www.maitilbrahminvivahbandhan.org/> (मैथिल विवाहक साइट)

<http://www.mithilashaadi.com/> (मैथिल विवाहक साइट)

<http://www.kalyanifoundation.org/>

<http://www.madhubani.com/>

<http://www.janakpur.org/>

<http://www.darbhangafriends.com/>

<http://www.hindisansthan.org/>

<http://www.biharassociation.net/>

<http://www.nationallibrary.gov.in/> (नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता)

<http://dpl.gov.in/> (दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी)

<http://www.connemarapubliclibrarychennai.com/> (कोनेमारा पब्लिक लाइब्रेरी)

<http://rrrlf.nic.in/> (राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन)

<http://www.sahitya-akademi.gov.in/> (साहित्य अकादमीक साइट)

<http://www.nbtindia.org.in/> (नेशनल बुक ट्रस्टक साइट)

<http://www.csuchico.edu/anth/mithila/>

<http://web.mac.com/nadjagrimm/iWeb/JWDC/Mithila%20Art%20.html>

<http://www.southasianist.info/india/mithila/index.html>

<http://www.mithilalive.com/>

http://www.ethnologue.com/show_language.asp?code=mai

<http://linguistlist.org/forms/langs/LLDescription.cfm?code=mai>

<http://www.languageshome.com/English-Maithili.htm>

<http://www.rosettaproject.org/archive/mai>

<http://www.nepal.gov.np/>

<http://maithili-mp3-songs.folkmusicindia.com/>

<http://www.ciil.org/> (भारतीय भाषा संस्थानक साइट)

<http://www.ciilibrary.org/>

<http://www.lisindia.net/Maithili/Maithili.html>

http://www.ntm.org.in/languages/maithili/default_maithili.asp (राष्ट्रीय अनुवाद मिशन)

<http://www.samsung.com/in/news/localnews/2012/tagore-literature-awards-bring-together-india-best-literary-talent> (TAGORE LITERATURE AWARD)

<http://www.samsung.com/in/news/localnews/2011/samsung-felicitates-the-winners-of-tagore-literature-awards-2010> (TAGORE LITERATURE AWARD)

<http://www.samsung.com/in/Tagore-Awards/index.html> (TAGORE LITERATURE AWARD)

<http://jnanpith.net/> (भारतीय ज्ञानपीठक साइट)

<http://bparishad.in/> (भारतीय भाषा परिषद, कोलकाताक साइट)

<http://www.bharatiyabhashaparishad.com/> (भारतीय भाषा परिषद, कोलकाताक वागर्थ)

<http://www.themanbookerprize.com/> (मैन-बुकर पुरस्कारक साइट)

<http://www.commonwealthfoundation.com/> (कॉमन्वेल्थ फाउन्डेशनक साइट)

<http://www.crossword.in/> (वोडाफोन-क्रॉसवर्डक साइट)

<http://www.pulitzer.org/> (पुलित्जर पुरस्कारक साइट)

<http://nobelprize.org/> (नोबेल पुरस्कारक साइट)

<http://www.goakonkaniakademi.org/akademi/aims.htm> (गोवा कोंकणी अकादमीक साइट)

<http://www.museindia.com/>

<http://www.asiawrites.org>

<http://indianorway.wordpress.com/>

<http://samanvayindianlanguagesfestival.org/>

<http://jaipurliteraturefestival.org/>

<http://dscprize.com/>

<http://www.hindu.com/lr/2011/04/03/stories/2011040350010100.htm>

<http://southasianlitfest.com/>

<http://www.varnamala.org/>

<http://india.poetryinternationalweb.org/>

<http://www.fortunecity.com/victorian/charcoal/49/>

<http://www.tarainews.com.np/>

VIDEHA IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

विदेह ई-पत्रिकाक पहिल ५० अंक

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/>

विदेह ई-पत्रिकाक ५०म सँ १४९ म अंक

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/>

विदेह ई-पत्रिकाक १५०म आ आगाँक अंक

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-iii/>

मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

मैथिली वीडियो संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/vidaha.com/vidaha-video>

मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/vidaha.com/vidaha-paintings-photos/>

सगर राति दीप जरय

<http://sagarraatideepjaray.blogspot.com/>

<http://sagarraatideepjaray.wordpress.com/>

विदेह मैथिली क्विज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

विदेह मैथिली जालवृत्त एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनूदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

विदेहक पूर्व-रूप "भालसरिक गाछ" :

<http://gajendrathakur.blogspot.com/>

विदेह इंडेक्स :

<http://videha123.blogspot.com/>

विदेह फाइल :

<http://videha123.wordpress.com/>

Maithili Sign Language- पहिल मैथिली संकेत लिपि ब्लॉग

<https://maithili-sign-language.blogspot.com/>

विदेह ब्राह्मी- ब्राह्मी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

<https://maithili-brahmi.blogspot.com/>

विदेह खरोष्ठी- खरोष्ठी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

<https://maithili-kharoshthi.blogspot.com/>

विदेह कैथी लिपिमे- मैथिलीक कैथी लिपिमे पहिल ब्लॉग

<https://maithili-kaiti.blogspot.com/>

विदेह नेवाड़ी लिपिमे- मैथिलीक नेवाड़ी लिपिमे पहिल ब्लॉग

<https://maithili-newari.blogspot.com/>

विदेह आइ.पी.ए. लिपिमे- मैथिलीक आइ.पी.ए.मे पहिल ब्लॉग

<https://maithili-ipa.blogspot.com/>

विदेह- उर्दू नस्तालिक लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

<https://maithili-urdu.blogspot.com/>

विदेह- तिब्बती लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

<https://maithili-tibetan.blogspot.com/>

विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

विदेह:ब्रेल: मैथिली ब्रेलमे: पहिल बेर विदेह द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

विदेह गूगल-ग्रुप

<https://groups.google.com/g/videha>

गजेन्द्र ठाकुर इडेक्स

<http://gajendrathakur123.blogspot.com>

नेना भुटका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

Videha Radio विदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>

<http://videha.listen2myradio.com/>

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

समदिया

<http://esamaad.blogspot.com/>

मैथिली फिल्म्स

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

मैथिली हाइकू

<http://maithili-haiku.blogspot.com/>

मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

विहनि कथा

<http://bihanikatha.blogspot.com/>

मैथिली कविता

<http://maithili-kavita.blogspot.com/>

मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.com/>

मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.com/>

Maithili Literature in English

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

तिरहुता- कैथी फॉण्ट/ मैथिल ब्राह्मणक पञ्जी आधारित इतिहास

https://deepblue.lib.umich.edu/bitstream/handle/2027.42/110341/pandey_1.pdf?sequence=1 (उत्तर-बिहारक मैथिल ब्राह्मणमे जाति)

<https://www.unicode.org/L2/L2009/09329-maithili.pdf> (यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९- विदेहक सहयोग)

<https://www.unicode.org/L2/L2011/11175r-tirhuta.pdf> (यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट लेल आवेदन ५ मई २०११- विदेहक सहयोग)

<http://www.tirhotalipi.4t.com/> (देवनागरी-तिरहुता फॉण्ट- वेस्टर्न आधारित)

<http://www.anujha.co.cc/> (देवनागरी यूनीकोड आधारित तिरहुता फॉण्ट-मिथिला)

"विकीपीडिया"मे मैथिली

<http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator>

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

<http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai>

<http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai>

<http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai>

अंतिम पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि। एहि लिंक सभ पर जा कय प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ।

यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट, "विकीपीडिया"मे मैथिली आ आब मैथिली "गूगल ट्रान्सलेट"मे सेहो। अगिला लक्ष्य "अमेजन अलेक्सा"

गूगल ट्रान्सलेट

गूगल ट्रान्सलेटक लिंक

<https://translate.google.com/?sl=en&tl=mai&op=translate>

गूगल ट्रान्सलेटकेँ आर पुष्ट करबाक खगता छै तइ लेल अगिला काज अदा रहल छी:

<https://translate.google.com/about/contribute/>

[Crowdsourcing Maithili Community](#)

[Please fill the form](#)

Next Step

Download the Crowdsourcing app from android play store and start contributing

or go to web on the following link for contributing:

<https://crowdsourcing.google.com/about/>

Crowdsourcing by Google is a gamified platform that empowers users to directly train Google's artificial intelligence systems and make Google products work equally well for everyone, everywhere.

प्रारम्भ:

विकीपीडिया ०१ फरबरी २००८ लिंक

<https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&pg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false> (मैथिली देवनागरी)

<https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC&pg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false> (मैथिली तिरहुता)

<https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C&pg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false> (मैथिली ब्रेल)

गूगल ट्रान्सलेट २३ जून २०११क लिंक

<https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/>

गूगल ट्रान्सलेशन टूलमे

"बिहारी" भाषाक बदलामे मैथिली लेल अलग ट्रान्सलेशन टूल बनेबाक आवेदन विदेहक सदस्यगण द्वारा देल गेल अछि। अपन योगदान गूगल ट्रान्सलेट लेल करू,

आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंटसँ लॉग इन केलाक बाद

|

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject>

<http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh> (link closed)

मिथिलाक्षर (तिरहुता) फॉण्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९ आ फेर संशोधित आवेदन ५ मई २०११ केँ श्री अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल आ दुनू बेर एमे विदेहक सहयोगक वर्णन भेल। ११ जूनकेँ श्री अंशुमन पाण्डेय एकर स्वीकृतिक सूचना विदेहक फेसबुक ग्रुपपर देलनि। आब ई फॉण्ट बनि कऽ तैयार अछि आ नीचाँक लिंकपर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

तिरहुता, नेवाडी आ कैथी फॉण्ट डाउनलोड [Google's Noto Fonts project/ GitHub](https://github.com/google/fonts)

तिरहुता नेटो फॉण्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवाडी ओटीएफ	नेवाडी टीटीएफ
--------------------	------------	-------------	--------------	---------------

<https://fonts.google.com/> (Google Open Fonts download)

[Tirhuta Offline Keyboard download](#)

[Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download](#)

<https://malarproject.gitlab.io/tirhuta> (Tirhuta Keyboard Online)

https://keymanweb.com/?_ga=2.7155890.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh.Keyboard_tirhuta

https://keymanweb.com/?_ga=2.241635586.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh.Keyboard_malar_tirhuta

<https://aksharamukha.appspot.com/converter> (Script/ Website Converter)

<https://aksharamukha.appspot.com/keyboards> [Input (IME)]

<https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts> (fonts- opensource)

<https://www.cdac.in/> (Tirhuta/ Unicode Typing Tool)

अमेजन अलेक्सा मैथिली (शीघ्र...)

किछु मैथिली विकिपिडिया पेजक लिंक:

विदेह (पत्रिका) <https://mai.wikipedia.org/s/kgv>

इन्टरनेटक संसारमे मैथिली भाषा <https://mai.wikipedia.org/s/s6h>

भालसरिक गाछ <https://mai.wikipedia.org/s/ipm>

विदेह <https://mai.wikipedia.org/s/ie1>

विदेहक फेसबुक भर्सन <https://mai.wikipedia.org/s/iu1>

विदेह सम्मान <https://mai.wikipedia.org/s/jc2>

विदेह आर्काइभ <https://mai.wikipedia.org/s/jc0>

विदेह मिथिला रत्न <https://mai.wikipedia.org/s/jc3>

विदेह मिथिलाक खोज <https://mai.wikipedia.org/s/jc4>

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण <https://mai.wikipedia.org/s/jc5>

श्रुति प्रकाशन <https://mai.wikipedia.org/s/iu7>

अनचिन्हार आखर <https://mai.wikipedia.org/s/ion>

मैथिली गजल <https://mai.wikipedia.org/s/idz>

मैथिली बाल गजल <https://mai.wikipedia.org/s/iex>

मैथिली भक्ति गजल <https://mai.wikipedia.org/s/if1>

.....

किछु मैथिल पोथी, ऑडियो-वीडियो, कलाकृति/ यू ट्यूब चैनल डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

[NCERT BHASHA SANGAM](#)

[NCERT \(Maithili-English-Hindi Conversations\)](#)

[मैथिली-हिन्दी वार्तालाप \(३ घण्टा\)](#)

[मैथिली \(मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर\)](#)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

<https://youtu.be/TebuC-IrSs8>

<https://ncert.nic.in/bs-2021.php>

[SAHITYA AKADEMI](#)

<http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp>

<http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp>

[CIIL](#)

<http://corpora.ciil.org/maisam.htm>

[अखियासल \(रमानन्द झा रमण\)](#)

<http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MA11.pdf>

[जुआयल कनकनी- महेन्द्र](#)

<http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MA12.pdf>

[प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा \(बी.पी.एस.सी. सिलेबस\)](#)

<http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MA13.pdf>

[सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर](#)

<http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MA14.pdf>

[मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा](#)

<http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MA15.pdf>

[ARCHIVE.ORG \(विजयदेव झा\)](#)

https://archive.org/details/vijay_deo_jha

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Video Archive

<http://videha.co.in/archive.htm>

[IGNCA](#)

<http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm>

<http://ignca.nic.in/coilnet/kalyani.htm> (MAITHILI ENGLISH DICTIONARY)

[मिथिला दर्शन](#)

<https://mithiladarshan.com/> (online pdf of Maithili journal)

तीरभुक्ति

https://archive.org/details/@teerbhukti_journal

OLE NEPAL's E-PUSTAKALAYA (<https://pustakalaya.org/en/>)

पोथीक लिंक

आइ.जी.एन.सी.ए.- ए.एस.आइ. <https://ignca.gov.in/divisionss/asi-books/>

https://ignca.gov.in/Asi_data/16612.pdf (History of Navya-Nyaya in Mithila)

https://ignca.gov.in/Asi_data/42365.pdf (Studies in Jainism and Buddhism in Mithila)

https://ignca.gov.in/Asi_data/63227.pdf (Mithila in the Age of Vidyapati)

https://ignca.gov.in/Asi_data/64994.pdf (Cultural Heritage of Mithila)

https://ignca.gov.in/Asi_data/72754.pdf (Mithila under the Karnatas)

ए.एस.आइ.अंग्रेजी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temples_of_mithila_english.pdf

ए.एस.आइ.हिन्दी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temple_of_mithila_hindi.pdf

मैथिली साहित्य संस्थान <https://www.maithilisahityasansthan.org/resources>

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

[Brochure 1](#) (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

[Brochure 2](#) (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

[Brochure 3](#) (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

[Brochure 4](#) (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

[Brochure 5](#) (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

<https://bloomlibrary.org/language:mai> (ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली)

अरिपन फाउण्डेशन (<http://www.aripanafoundation.org/>)

PRATHAM BOOKS MAITHILI STORYWEAVER

https://www.youtube.com/playlist?list=PLAT74nNc2fmYaW29mRVAlgzRq63_9zWbl (मैथिली ऑडियो बुक्स)

<https://www.youtube.com/channel/UCE1HEUJEzc-NUbMsHzkIHLw> (विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक आ संगमे मैथिली संकेत भाषा- दुनू मैथिलीमे पहिल बेर)

<https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF> (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)

<https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT> (चलू हम तँ ठीक छी ने!)

<https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo> (एकटा नीक दिन)

<https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp> (घर सभ)

<https://bloomlibrary.org/player/dAzC0FubtZ> (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

पोथी डॉट कॉम

<https://store.pothi.com/browse/free-ebooks/?language=Maithili>

I LOVE MITHILA

<https://www.ilovemithila.com/maithili-books-pdf-free-download/> (पोथी डाउनलोड लिंक)

<https://www.ilovemithila.com/> (online maithili journal)

<https://maithili.com.np/> (owner I Love Mithila)

प्यारे मैथिल

<https://www.youtube.com/channel/UCq30Llck2tNw8BI4t8jjzQq> (प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय यू ट्यूब चैनल)

<https://www.youtube.com/@mithirangloktarang677> (मिथिरंग लोक तरंग)

<https://www.youtube.com/MithilaChapter> (मिथिला चैप्टर)

<https://www.youtube.com/soumyajha> (खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल)

<https://www.youtube.com/@maithilirangmanch9536> (मैथिली रंगमंच)

<https://www.youtube.com/@kokilmanch4330> (कोकिल मंच)

<https://www.youtube.com/@MithilaDarshan> (मिथिला दर्शन)

<https://www.youtube.com/@neelammaithili> (नीलम मैथिली)

<https://www.youtube.com/@maithiliganga4714> (मैथिली गंगा)

<https://www.youtube.com/@UdayaSingh> (रफ कटस, नचिकेता)

<https://www.youtube.com/@kunjibiharimithilaratna> (कुञ्ज बिहारी)

<https://www.youtube.com/@RAMBABUJHA> (राम बाबू झा)

<https://www.youtube.com/@VJEntertainments008> (वी. जे., विकास झा)

<https://www.youtube.com/c/ilovemithila> (आइ लव मिथिला)

<https://www.youtube.com/@rajnipallavi> (रजनी पल्लवी)

<https://www.youtube.com/@PoonamMishra> (पून्म मिश्र)

<https://www.youtube.com/@ranjanajhasangeetdivyam2908> (रंजना झा)

<https://www.youtube.com/@julijhaofficial8057> (जूली झा)

<https://www.youtube.com/@maithilithakur> (मैथिली ठाकुर)

जानकी एफ.एम समाचार

<https://www.youtube.com/user/Janakifm/videos> (जानकी एफ.एम समाचार)

Videha e-Learning

<https://www.youtube.com/channel/UC4abVKqMj2pDWIAkXiOHP7A>

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामग्री [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]

.....

<http://www.youtube.com/user/ggajendra71>(विदेह)

<https://www.youtube.com/gunjanshree>

<http://www.youtube.com/user/Maithilnews>

<http://www.youtube.com/user/jitumaithil> (जितेन्द्र झा, जनकपुर)

<http://www.youtube.com/user/sobhagya8> (सौभाग्य मिथिला)

<http://www.youtube.com/user/rajnipallavi> (रजनी पल्लवी)
<http://www.youtube.com/user/bhaskaranjha> (भास्कर झा)
<http://www.youtube.com/user/mahakaliijha>
<http://www.youtube.com/user/karia1885>
<http://www.youtube.com/user/omuniv>
<http://www.youtube.com/user/sumankumar137>
<http://www.youtube.com/user/gyansjha>
<http://www.youtube.com/user/bclalan>
<http://www.youtube.com/user/gareri1986>
<http://www.youtube.com/user/avinashjha84>
<http://www.youtube.com/user/chandankumarjha1>

<http://www.youtube.com/user/mailorang>
<http://www.youtube.com/user/chandanmishra2010>

<http://www.youtube.com/user/nirmaana>

<http://www.youtube.com/user/Janakifm1>

http://www.youtube.com/watch?v=XpSuVHtbaQ8&feature=mfu_in_order&list=UL

<http://www.youtube.com/user/gxcng>

<http://www.youtube.com/user/gautamkrishna85>

<http://youtu.be/3i3OG5Nf3y8>

<http://youtu.be/sJnxSe-ckmo>

<http://www.youtube.com/user/jitmohanjha>

<http://www.youtube.com/user/MiTJnPNN>

<http://www.youtube.com/watch?v=-9KaC8ji9t4>

<http://www.youtube.com/user/luvvivek2k7>

<http://www.youtube.com/user/bindassatyandra>

<http://www.youtube.com/user/rustymind1>

<http://www.youtube.com/user/MrDeveshKarna>

<http://www.youtube.com/user/rambabushah>

<http://www.youtube.com/user/mukeshjha84>

<http://www.youtube.com/user/Mauahi>

www.youtube.com/user/MrBasantjha

<http://www.youtube.com/user/themadan>

<http://www.youtube.com/user/sentukhu>

<http://www.youtube.com/user/yarowjha>

<http://www.youtube.com/user/mkoxp>

<http://www.youtube.com/user/luvvick21>

<http://www.youtube.com/user/njyclubashok>

<http://www.youtube.com/user/MrRamkisor>

<http://www.youtube.com/user/pratyushsangita/>

<http://www.youtube.com/user/hellomithilaa>

<http://www.youtube.com/user/mariyoshj>

<http://www.youtube.com/user/dearshantanu/>

www.youtube.com/user/RajuPrasadRajbanshi

www.youtube.com/user/premarshi

<http://www.youtube.com/user/Dhipre> (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

<http://www.youtube.com/user/TheShubhaprabhat>

<http://www.youtube.com/user/njyclubashok>

<http://www.youtube.com/user/mithilaconnect>

<http://www.youtube.com/user/NAYAKSAURABH80>

<http://www.youtube.com/user/Rabindra888>

<http://www.youtube.com/user/uday88mandal>

<http://www.youtube.com/user/nimesdeath>

<http://www.youtube.com/user/pawanks6102>

<http://www.youtube.com/user/sahayogee>

<http://www.youtube.com/user/sunilkumarpawan>

<http://www.youtube.com/user/vidhuk>

http://www.dailymotion.com/video/xjophq_documentary-kosi-katha_shortfilms#from=embed

<http://blackbuddhas.com/>

<http://youtu.be/CPwpm5Y11I>

अपन मंतव्य editorial.staff.vidaha@gmail.com पर पठाउ ।

विदेह मिथिलाक खोज

वि दे ह विदेह Videha विप्लव <http://www.videha.co.in> विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

प्रस्तुत अछि विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति आ तिरहुतक नामसँ विख्यात वर्तमान भारत आ नेपालमे पसरल माटिक प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्रांकित अभिलेख आ मूर्तिकलाक एकटा छोट संग्रह। ऐ संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रह editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार, सम्बन्धित फोटोग्राफर आ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि। फोटो सभ पठेबा लेल धन्यवाद पाठकगण/साभार। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू, **दर्शनीय मिथिला, Brochure 1, Brochure 2, Brochure 3, Brochure 4, Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक), IGNCASI (Cultural Heritage of Mithila- search keyword Mithila), Temple Survey Project ASI- English आ Hindi . पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल।**



भुवनेश्वरी
भगवतीपुर
(Madhubani,
Bihar) बौद्ध तारा
सँ समानता
नाकमे कुण्डल
देखू



सूर्य भगवतीपुर
(Madhubani
Bihar)



विष्णु भगवतीपुर
(Madhubani,
Bihar)



दुर्गा, पोखरिसँ
भेटल, ओतहि
बहेरी मन्दिर



हरद्वार मन्दिर
घनश्यामपुर



गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली,
मधुबनी

(बजारसँ दक्षिण)मे
स्थापित



गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, म
धुबनी

(दरभंगा)- चोरि
भऽ गेल



गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली,
मधुबनी



गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली,
मधुबनी



गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, म
धुबनी



गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली,
मधुबनी



बाइसी-
बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ता
मलेख



बाइसी-
बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम
लेख



बाइसी-
बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ता
मलेख



बाइसी-
बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ता
मलेख



पूरणदेवी, पूर्णियाँ

धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँ, नर
सिंह अवतार



धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँ, न
रसिंह अवतार



बिदेश्वर स्थान अभिलेख, मधुबनी



अन्धाठाढी अभिलेख, मधुबनी



बुद्ध अष्टधातु, सिसव बसंतपुर,
बगहा



12 शताब्दी, कोइलख, मधुबनी



अग्नि बिदेश्वर स्थान, मधुबनी
बुद्ध, मुंगेर



अहिल्या स्थान



अन्धाठाढी, मधुबनी



अशोक स्तंभ, बसाढ, वैशाली



बुद्ध



अवलोकितेश्वर तारा, भागलपुर

बसाढ, वैशाली

बुद्ध भूमिस्पर्श



बुद्ध, ताम्र



बुद्ध मस्तक, सुलतानगंज



वैशाली मूर्ति



चामुण्डा नाग-
नागिनी, मुंगेर



मुकुटधारी बुद्ध, अंतीचक, भाग
लपुर



नाचैत गणेश,
10म शताब्दी, दरभंगा



दरभंगा म्युजियम



दरभंगा म्युजियम



दुर्गा, कार्तिकेय



10म शताब्दी, भीट भगवानपुर,
अन्धा ठाढी



गणेश बुद्ध



गौतम बुद्ध, वैशाली



हरिहर बुद्ध



चिड़कें खुआबैत महिला, राजम
हल



लौरिया नन्दनगढ, अशोक स्तं
भ



लोमश सुदामा गुफा



मुंगेर



नागराज तीर्थकर



कुमारिल भट्ट फेकेलाह, नालन्दा



विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भा
गलपुर



ठाढ बुद्ध



पार्वती



रामायण



रामपुरवा वृषभ



रामपुरवा

बुद्धक अवशेष

संकिसा



सप्तमातृका



सर्वतो भद्र मण्डल



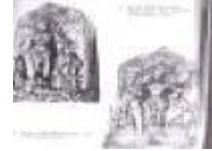
सूर्य



सूर्य



सूर्यक संगी



सूर्य, मधुबनी आ भागलपुर



मूर्ति



मूर्ति



मूर्ति, वैशाली



उमा माहेश्वर, कल्याणसुन्दर



वैशाली वृषभ शीर्ष



वैशाली, शालभंजिका भागलपुर



विष्णु बुद्धा



पाँखियुक्त महिला



अहिल्या



अष्टयोगिनी मन्दिर, सहरसा



बनगंगा



दरभंगा



दरभंगा नगर,
1934



दरभंगा मेडिकल कॉलेज



दुल्हदुल्हिन मन्दिर, जनकपुर



गण्डीश्वर



गंगासागर पोखरि, मधुबनी



हनुमान मन्दिर, मधुबनी



हरिहरस्थान



मधुबनी हॉस्पिटल



जनकपुर जानकी मन्दिर



जानकी मन्दिर



जानकी मन्दिर, सीतामढी



जानकी मन्दिर, सीतामढी



जिला स्वास्थ्य कार्यालय राजबि
राज, नेपाल



कलनेश्वर बाबा



कपिलेश्वर



कोषलेखाकार्यालय, राजबिराज, ने
पाल



मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा



लक्ष्मीश्वर पैलेस,
1934



माध्यमिकविद्यालय , जनकपुर



महेन्द्र चौक, जनकपुर



जनकपुर मंडप



मिथिला,
1988 भूकम्प



पगलाबाबा धर्मशाला, जनकपुर
, नेपाल



पंडौल अहल्या



मधुबनी बस स्टैंड



राज हेड ऑफिस,
1934



राज हॉस्पिटल, दरभंगा,
1934



सौराठ सभा



शिव मन्दिर,
1934



शिवशंकर सिनेमा, मधुबनी



श्यामा मन्दिर



विद्यापति मूर्ति, बिस्फी



उग्रतारा, तारास्थान, महिषी, स
हरसा



विद्यापति स्मारक, बिस्फी



बिस्फी, उदना महादेव



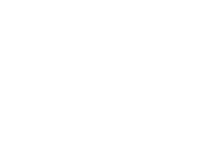
बिस्फी, विश्वेश्वरी भगवती



अहल्या मन्दिर, अहियारी



अशोक स्तंभ, वैशाली



स्तूप अशोक स्तंभ, वैशाली





बलिराजपुर किला पूर्वी गेट



बलिराजपुर किला मीनार



चण्डी स्थान, बिराटपुर, सहर
सा



गाँधी पोखरि, ढाका, मोतिहारी



गाँधी विद्यालय, ढाका, मोतिहा
री



गिरिजा स्थान, मधुबनी



हरिहर मन्दिर, सोनपुर



जैन मन्दिर, भागलपुर



जैन मन्दिर, वैशाली



कमलादित्य स्थान



कपिलेश्वर शिव मन्दिर



लौरिया नन्दनगढ



मदनेश्वर शिव मन्दिर



परमेश्वरी मन्दिर, ठाढी, मधुबनी



शांति स्तूप, वैशाली



सिंघेश्वर स्थान, मधेपुरा



वैशाली स्तूप

मन्दार पर्वत, बाँका



रामजानकी मन्दिर, सीतामढी



उच्चैठ भगवती



सूर्यधाम, परसा



विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भागलपुर

मोतिहारी सत्याग्रह स्मारक



सत्याग्रह स्मारक, सीतामढी



उच्चैठ मन्दिर



उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा



विराटपुर मन्दिर, मधेपुरा



वृषभ शीर्ष, रामपुरवा



सिंह शीर्ष, रामपुरवा



शरभ, नेपाल



पाँखियुक्त देवी, वैशाली



बाबा बडेश्वर, देवना, बनगाँव



वट वृक्ष, बनगाँव



भगवान विष्णु, देवना, बनगाँव



शास्त्रार्थ स्थल, तारास्थान महिषी



शास्त्रार्थ स्थल, तारास्थान महिषी



तारास्थान महिषी



माता तारा, तारास्थान महिषी



उग्रतारा (खादर वाणी तारा) मूर्ति, महिषी



वशिष्ठ मुनि, तारास्थान महिषी



भगवती देकुली



भगवती वारी समस्तीपुर



गंगामूर्ति नगरडीह दरभंगा



काली उच्चैठ



आवर्धित काली उच्चैठ



भगवती गिरिजा फुल्हर



भुवनेश्वरी कोर्थ



गोसाउनि मन्दिर कोर्थ



महिषासुरमर्दिनी बहेरी दरभंगा



बौद्धदेवी तारा वारी समस्तीपुर



भगवती मृणमूर्ति गन्धबारि



देवीकाली कोर्थ



हैहव देवी हाबीडीह



महिषासुरमर्दिनी हाबीडीह



महिषासुरमर्दिनी नाहर-
भगवतीपुर



भैरव, भैरव-बलिया

उमा म्लेच्छमर्दिनी मिर्जापुर द
रभंगा



नटराज, तारालाही

यमुना भैरव बलिया मधुबनी



शिव-
पार्वती मन्दिर, कपिलेश्वरस्था
न



शिव-
पार्वती मन्दिर, कपिलेश्वरस्थान



शिव मन्दिर, सिंगिया, विस्पी



उमामाहेश्वर, महादेवमठ



उमामाहेश्वर, तिरहुत



विष्णु, भवानीपुर



विष्णु, भीठ भगवानपुर



विष्णु, जयनगर



विष्णु, लदहो



विष्णु, साहो-
पररी, हाबीडीह



शेषशायी विष्णु, सवास, मुजफ्फर पुर



वराह मूर्ति, तिलकेश्वरस्थान



मिथिलाक्षर अभिलेख, विष्णु बुद्ध मूर्ति



भगवती उच्चैठ, बेनीपट्टी



भगवती वाणेश्वरी, भंडारीसम



चामुण्डा मन्दिर, कटरा, मुजफ्फरपुर



अष्टभुज गणेश, हाबीडीह



अष्टभुज गणेश, कोर्थ



गंगा, आन्धा-ठाढ़ी



महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा



म्लेच्छमर्दिनी मन्दिर, मिर्जापुर, दरभंगा



नटराज



राममन्दिर, अहिल्यास्थान



सूर्य, देकुली



उमामाहेश्वर



आदि काली, चैनपुर सहरसा
चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमा
त्र नीलकंठ मन्दिर, संगमे आदि
कालीन भव्य काली-
मन्दिर सेहो एहि गाममे अछि। म
हाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूम
धामसँ चैनपुरमे होइत अछि।

सेहनी, वैशाली, विष्णु तिलक-
यज्ञोपवीतधारी



सूर्य मूर्ति, डिलाही



यमुना, आन्धा-
ठाढ़ी



त्योथागढ़क स्वामी माध्वान
न्द कौलाचार्य काली मन्दिर
त्योथा गढ़ लग। पुरान गढ़। ए
कर पूबमे ब्रह्मपुराक बाबा हरिह
रनाथ महादेव मन्दिर आ दक्षि
णमे उच्चैठ भगवती छथि।

रूपनगर शिव मन्दिर



सूर्य मूर्ति, विष्णु, बरुआर



सिमरौनागढ़ मूर्ति



त्योथागढ़क दसमुखी काली
त्योथा गढ़ लग। पुरान गढ़। ए
कर पूबमे ब्रह्मपुराक बाबा हरिह
रनाथ महादेव मन्दिर आ दक्षि
णमे उच्चैठ भगवती छथि।



कोइलख (मधुबनी) देवीक मन्दिर



अकौर, बेनीपट्टी, भगवती दुर्गा, भगवतीपीठ



अकौर, बेनीपट्टी, भगवती दुर्गा, भगवतीपीठ



१.अष्टभुज गणेश, कोर्थ २.शिव मन्दिर, सिंघिया, बिस्फी



१. बौद्ध देवी तारा, वारी, समस्तीपुर २.उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा



१.भगवती, वारी २.भगवती, देकुली



१. भगवती गिरिजा, फुलहर २.काली, उच्चैठ



१. भैरव, भैरव बलिया २. उमा माहेश्वर, महादेवमठ



१. देवीकाली, कोर्थ २. गुसाउनि स्थल मन्दिर, कोर्थ



१. गणेश, लहेरियासराय २.उमामाहेश्वर ३. नटराज, ४. विष्णु, तिलक, जनउ धारी, सेहान, वैशाली



१. गंगा मूर्ति, नगरडीह, दरभंगा २. भगवती मृण्मूर्ति, गन्धवारि



१. हैहट्ट देवी, हाबीडीह २.भुवनेश्वरी, कोर्थ



१. कथित काली, उच्चैठ, २.अष्टभुज गणेश, कोर्थ



१. महिषासुर मर्दिनी, हाबीडीह, २.उमा, म्लेच्छमर्दिनी, मिर्जापुर, दरभंगा



१.महिषासुरमर्दिनी, भगवतीपुर, नाहर, महिषासुर मर्दिनी, बहेरी, दरभंगा



१. म्लेच्छमर्दिनी भगवती, मिर्जापुर, दरभंगा २. राम मन्दिर, अहिल्यास्थान



१. म्लेच्छमर्दिनी भगवती, मिर्जापुर, दरभंगा २.सिंहेश्वर स्थान, मधेपुरा



१. नटराज, तारालाही २. उमा माहेश्वर



१_शेषसायी, सवास, मुजफ्फरपुर, २_नटराज_तारालाही ३_ भगवती ४_ उमा माहेश्वरी



१- शिव पार्वती मन्दिर, कपिलेश्वर स्थान २. सूर्य मूर्ति डिलाही



१_ सूर्यमूर्ति, विष्णु बरुआर २. गंगा, आन्धा ठाढ़ी



१_उच्चैठ भृगवती, बेनीपट्टी २_महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा ३_ चामुण्डा



१. वराहमूर्ति, तिलकेश्वरस्थान, २.विष्णु, भवानीपुर



१. विष्णु, जयनगर २.विष्णु, भीठ भगवानपुर

मन्दिर, कटरा, मुजफ्फरपुर ४. भगवती वानेश्वरी, भण्डारिसम



१_विष्णु, लदहो, २.सूर्य, देकुली



१_विष्णु_साहो परड़ी, स्थापित-
हाभीडीह २.बुद्ध-
विष्णु मूर्ति अभिलेख



१_विष्णु, सेहान, २_वराह ३_गणेश ४.शिव मन्दिर_रूपनगर



१_यमुना, आन्धा ठाढ़ी, २.अष्टभुज
गणेश, हाबीडीह



१_यमुना, भैरव बलिया, २_शेष
सायी, सवास, मुजफ्फरपुर, ३_
नटराज_तारालाही ४_ भगवती
५_ उमा माहेश्वरी



कथित, काली, उच्चैठ, बेनीपट्टी



मूर्ति (मिथिला
क्षेत्र)



सम्भवतः सूर्य



वेणुगोपाल, मिथिला



विष्णु, जाले, दरभंगा

विष्णु

विष्णु, ओझौल, दरभंगा

मिथिलाक खोज

ई आलेख हमर दशकसँ ऊपरक मिथिलाक यात्राक उपरान्तक सूत्र-वृत्तान्त अछि आ एमे ऐ सभ स्थानक स्थानीय निवासी आ गाइड सभक अकथनीय योगदान छन्हि । कखनो कालतँ भाड़ाक गाड़ीक ड्राइवर लोकनि सेहो नीक गाइड सिद्ध भेला ।-गजेन्द्र ठाकुर

"मिथिलायदयश्च मध्यंते रिपवो इति मिथिला नगरी" - मिथिला जतऽ शत्रुकैँ मथल जाइत अछि- पाणिनीक विवरण ।

किला आ गढ़

बलिराजपुर किला- मधुबनी जिलाक बाबूबरही प्रखण्डसँ ५ किलोमीटर पूब बलिराजपुर गाम अछि । एकर दक्षिण दिशामे एकटा पुरान किलाक अवशेष अछि । किला चारि किलोमीटर नमगर आ एक किलोमीटर चाकर अछि । दस फीटक मोट देवालसँ ई घेरल अछि ।

असुरगढ़ किला- मिथिलाक दोसर किला मधुबनी जिलाक पूब आ उत्तर सीमा पर तिलयुगा धारक कातमे महादेव मठ लग ५० एकड़मे पसरल अछि ।

जयनगर किला- मिथिलाक तेसर किला अछि भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्तमान जयनगर लग । दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि ।

नन्दनगढ़- बेतियासँ १२ मील पश्चिम-उत्तरमे ई किला अछि । तीन पंक्तिमे १५ टा ऊँच डीह अछि ।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि ।

देकुलीगढ़- शिवहर जिलासँ तीन किलोमीटर पूब हाइवे केर कातमे दू टा किलाक अवशेष अछि । चारू दिस खधाइ अछि ।

कटरागढ़- मुजफ्फरपुरमे कटरा गाममे विशाल गढ़ अछि, देकुली गढ़ जकाँ चारू कात खधाइ खुनल अछि ।

नौलागढ़-बेगूसरायसँ २५ किलोमीटर उत्तर ३५० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि ।

जयमंगलगढ़- बेगूसरायमे बरियारपुर थानामे काबर झीलक मध्य एकटा ऊँच डीह अछि । एतऽ ई गढ़ अछि । नाओकोठी (मझौल) गाम लग ई गढ़ अछि ।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलामे हसनपुर ब्लॉकमे दुधपुरा बजार लग देओढ गाम लग । भगवान बुद्धक उपदेश एतऽ भेल, स्थानीय राजा मंगलदेवक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन एतऽ निवास सेहो केलन्हि ।

अलौलीगढ़- खगड़ियासँ १५ किलोमीटर उत्तर अलौली गाम लग १०० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि ।

कीचकगढ़- पूर्णिया जिलामे डेंगरघाटसँ १० किलोमीटर उत्तर महानन्दा नदीक पूबमे ई गढ़ अछि ।

बेनूगढ़- टेढ़गाछ थानामे कवल धारक कातमे ई गढ़ अछि ।

वरिजनगढ़- बहादुरगंजसँ छह किलोमीटर दक्षिणमे लोनसवरी धारक कातमे ई गढ़ अछि ।

नेऊरी- दरभंगाक बिरौल प्रखण्डसँ १३ किलोमीटर पश्चिममे एकटा गढ़ अछि जे लोरिकक मानल जाइत अछि ।

बुद्ध

कुन्दग्राम- हाजीपुरसँ बत्तीस किलोमीटर उत्तर-पूर्वमे बसाढ़-वैशाली आ लगमे वासोकुण्ड लग गाम गढ़-टीलासँ २ कि.मी. उत्तर-पूर्व अछि कुन्दग्राम , जतऽ जैनक २४म तीर्थंकर महावीरक जन्म भेल छलन्हि । एतऽ बुद्धक छाउर, अभिषेक पुषकरणी (राजा अभिषेकसँ पूर्व एतऽ नहाइत रहथि), अशोक स्तम्भ आ संसद-भवन (राजा विशालक गढ़) अछि ।

पजेबागढ़ वनही टोल- एतऽ एकटा बुद्ध मूर्ति भेटल छल, मुदा ओकर आब कोनो पता नै अछि । ई स्थल सेहो रखबारी गामक लगे अछि ।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलामे हसनपुर ब्लॉकमे दुधपुरा बजार लग देओढ गाम लग । भगवान बुद्धक उपदेश एतऽ भेल, स्थानीय राजा मंगलदेवक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन एतऽ निवास सेहो केलन्हि ।

मुसहरनियां डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊँच डीह अछि । बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्ति, पाइ, बर्तनक टुकड़ी आ पजेबाक अवशेष एतऽ अछि ।

अकौर- मधुबनीसँ २० किलोमीटर पश्चिम आ उत्तरमे अकौर गाममे एकटा ऊँच डीह अछि, जतऽ बौद्धकालक मूर्ति अछि ।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि ।

विक्रमशिला- भागलपुरमे स्थित प्राचीन विश्वविद्यालय । भागलपुर जिलाक अंतीचक गाममे राजा धर्मपालक बनाओल बुद्ध विश्वविद्यालय अछि । १०८ व्याख्याता लेल रहबाक स्थान आ बाहरसँ पढ़य बला लेल सेहो स्थान एतऽ निर्मित अछि ।

चम्पानगर- भागलपुरक पश्चिममे, आब नगरसँ सटि गेल अछि । ई जैन लोकनिक एकटा पवित्रस्थल अछि, एतऽ महावीर तीनटा बस्सावास केने रहथि । दू टा जैन मन्दिर एतऽ अछि, जे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथकेँ समर्पित अछि । महावीर विदेहमे छह टा बस्सावास बितेलन्हि । बर्खा ऋतुमे चारि मास एक ठाम निवासकेँ बस्सावास कहल जाइ छल । बुद्ध एकोटा बस्सावास विदेहमे नै बितेलन्हि, मुदा वैशाली नगरीमे आम्रपालीक उद्यानमे लिच्छवीगणकेँ सन्देश देने छला । आम्रपालीसँ भिक्षा ग्रहण कऽ बुद्ध गेला वेणुमती करय चारि मासक बस्सावास ।

अभिलेख

गौरी-शंकर स्थान, मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीच ई स्थान गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्ति आ ऐपर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेख । बिदेश्वरस्थानसँ २-३ किलोमीटर उत्तर दिशामे ई स्थान अछि ।

भीठ-भगवानपुर अभिलेख- राजा नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवसँ संबंधित अभिलेख एतऽ अछि । मधुबनी जिलाक मधेपुर थानामे ई स्थल अछि ।

भगीरथपुर- पण्डौल लग भगीरथपुर गाममे अभिलेख अछि जइसँ ओइनवार वंशक अंतिम दुनू शासक रामभद्रदेव आ लक्ष्मीनाथक प्रशासनक विषयमे सूचना भेटैत अछि ।

मंदार पर्वत- बांका स्थित स्थलमे मिथिलाक्षरक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि । समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल । निकटमे बाँसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्ति अछि, पैघ मूर्ति लाल पाथरक अछि तँ दोसर काँसाक जकर सोझाँ दूटा पदचिन्ह अछि । जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एतै भेल छलन्हि ।

बिदेश्वर- मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह केलन्हि । तइ युगक मिथिलाक्षरक अभिलेख सेहो एतऽ अछि ।

बसैटी (बाइसी-बसैटी), अररिया अभिलेख - पूणियाँमे श्रीनगर लग मिथिलाक्षरक ई अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इन्द्रावतीक राज्यकालक वर्णन करैत अछि । रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे अकालक समय फूड-फॉर-वर्क आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ केने रहथि ।

जयनगर किला- मिथिलाक तेसर किला अछि भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्तमान जयनगर लग । दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि ।

विष्णु

हुलासपट्टी- मधुबनी जिलाक फुलपरास थानाक जागेश्वर स्थान लग हुलासपट्टी गाम अछि । कारी पाथरक विष्णु भगवानक मूर्ति एतऽ अछि ।

पिपराही- लौकहा थानाक पिपराही गाममे विष्णुक मूर्तिक चारू हाथ भग्न भऽ गेल अछि ।

मधुबन- पिपराहीसँ १० किलोमीटर उत्तर नेपालक मधुबन गाममे चतुर्भुज विष्णुक मूर्ति अछि ।

कमलादित्य स्थान- अंधरा ठाढ़ी लगमे कमलादित्य स्थानक विष्णु मंदिर कर्णाट राजा नान्यदेवक मंत्री श्रीधर दास द्वारा स्थापित भेल ।

झंझारपुर अनुमण्डलक रखबारी गाममे वृक्षक नीचाँ राखल विष्णु मूर्ति, गांधारशैली मे बनाओल गेल अछि ।

मटिहानी- विष्णु मन्दिर

जनकपुर- बृहद् विष्णुपुराणमे मिथिलामाहात्म्यमे जनकपुर क्षेत्रक वर्णन अछि । सत्रहम शताब्दीमे संत सूर किशोरकेँ अयोध्यामे सरयू धारमे राम आ जानकीक दू टा भव्य मूर्ति भेटलन्हि, जकरा ओ जानकी मन्दिर, जनकपुरमे स्थापित कऽ देलन्हि । वर्तमान मन्दिरक स्थापना टीकमगढ़क महारानी द्वारा १९११ ई. मे भेल । नगरक चारूकात यमुनी, गेरुखा आ दुग्धवती धार अछि । राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी), जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) आ विवाह पंचमी (अगहन शुक्ल पंचमी) पर एतऽ मेला लगैए ।

अंधरा-ठाढ़ीक स्थानीय वाचस्पति संग्रहालय- गौड़ गामक यक्षिणीक भव्य मूर्ति एतऽ राखल अछि ।

गौतम तीर्थ- कमतौल स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पश्चिम ब्रह्मपुर गाम लग एकटा गौतम कुण्ड पुष्करणी अछि ।

मुंगेरक पूब 'सीता-कुण्ड'गर्म कुण्ड अछि, सीता जी एतै पृथ्वीमे समाहित भेल छली । ठंढा जलक कुण्ड 'रामकुण्ड', लक्ष्मण कुण्ड, भरत कुण्ड, आ शत्रुघ्न कुण्ड सेहो अछि, भैयारीमे बड्ड मिलान । से मिलान बाबू गढ़ नारिकेलमे सेहो छै, बेसी पढ़ल लिखल गाममे से आब कहाँ?

हलावर्त्त- जनकपुरसँ ३५ किलोमीटर दक्षिण पश्चिममे सीतामढ़ी नगरमे हलवेश्वर शिव मन्दिर आ जानकी मन्दिर अछि । एतसँ डेढ़ किलोमीटर पर पुण्डरीक क्षेत्रमे सीताकुण्ड अछि । हलावर्त्तमे जनक द्वार हर चलेबा काल सीता भेटलि छली । राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी) आ जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) पर एतऽ मेला लगैए ।

फुलहर-मधुबनी जिलाक हरलाखी थानामे फुलहर गाममे जनकक पुष्पाटिका छल जतऽ सीता फूल लोढ़ै छली ।

धनुषा- जनकपुरसँ १५ किलोमीटर उत्तर धनुषा स्थानमे पीपरक गाछक नीचाँ एकटा धनुषाकार खण्ड पड़ल अछि । रामक तोड़ल ई धनुष अछि । ऐसँ पूब वाणगंगा धार बहैए जे लक्ष्मण द्वारा वाणसँ उद्धाटित भेल छल ।

सुग्गा- जनकपुर लग जलेश्वर शिवधामक समीप सुग्गा ग्राममे शुकदेवजीक आश्रम अछि । शुकदेवजी जनकसँ शिक्षा लेबाक हेतु मिथिला ऐल छला- ए ठाम हुनका ठहरेबाक व्यवस्था भेल छल ।

सिंहेश्वर- मधेपुरासँ ५ किलोमीटरपर गौरीपुर गाम लग सिंहेश्वर शिवधाम अछि ।

कपिलेश्वर- कपिल मुनि द्वार स्थापित महादेव मधुबनीसँ ६ किलोमीटर पश्चिममे अछि ।

कुशेश्वर- समस्तीपुरसँ उत्तर-पूब, लहेरियासरायसँ ६० किलोमीटर दक्षिण-पूब आ सहरसासँ २५ किलोमीटर पश्चिम ई एकटा प्रसिद्ध शिवस्थान अछि । एतऽ चिड़ै-अभ्यारण्य सेहो अछि जतऽ उज्जर आ कारी गैबर, लालसर, दिघौछ, मैल, नकटा, गैरी, गगन, सिल्ली, अधानी, हरिअल, चाहा, करन, रतबा चिड़ै सभ नवम्बरसँ मार्च धरि देखबामे अबैए ।

सिमरदह- थलवारा स्टेशन लग शिवसिंह द्वारा बसाओल शिवसिंहपुर गाम लग ई शिवमन्दिर अछि ।

सोमनाथ- मधुबनी जिलाक सौराठ गाममे सभागाछी लग सोमदेव महादेव छथि ।

मदनेश्वर- मधुबनी जिलाक अंधरा ठाढ़ीसँ ४ किलोमीटर पूब मदनेश्वर शिव स्थान अछि ।

चण्डेश्वर- झंझारपुरमे हरडी गाम लग चण्डेश्वर ठाकुर द्वारा स्थापित चण्डेश्वर शिवस्थान अछि ।

शिलानाथ- जयनगर लग कमला धारक कातमे शिलानाथ महादेव छथि ।

उग्रनाथ- मधुबनीसँ दक्षिण पण्डौल स्टेशन लग भवानीपुर गाममे उगना महादेवक शिवलिंग अछि । विद्यापतिकेँ प्यास लगलन्हि तँ उगनारूपी महादेव जटासँ गंगाजल निकालि जल पियेलखिन्ह । विद्यापतिक हठ केलापर ऐ स्थान पर उगना हुनका अपन असल शिवरूपक दर्शन देलखिन्ह ।

उच्चैठ छिन्नमस्तिका भगवती- कमतौल स्टेशनसँ १६ किलोमीटर पूर्वोत्तर उच्चैठमे कालिदास भगवतीक पूजा करैत छला । भगवतीक मौलिक मूर्ति मस्तक विहीन अछि ।

उग्रतारा- मण्डन मिश्रक जन्मभूमि महिषीमे मण्डनक गोसाउनि उग्रतारा छथि ।

भद्रकालिका- मधुबनी जिलाक कोइलख गाममे भद्रकालिका मंदिर अछि ।

चामुण्डा- मुजफ्फरपुर जिलामे कटरागढ़ लग लक्ष्मणा वा लखनदेइ धार लग दुर्गा द्वारा चण्ड-मुण्डक वध कएल गेल । ओइ स्थानपर ई मन्दिर अछि ।

परसा सूर्य मन्दिर- झंझारपुरमे सग्रामसँ पाँच किलोमीटर पूर्व परसा गाममे साढ़े चारि फीटक भव्य सूर्य मूर्ति भेटल अछि ।

चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगमे आदिकालीन भव्य काली-मन्दिर सेहो ऐ गाममे अछि । महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ चैनपुरमे होइत अछि ।

धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँमे नरसिंह अवतारक स्थान अछि, एकटा खोह जकाँ पैघ पाया अछि जइमे जे किछु फेकबै तँ बड़ी काल धरि गों-गों अबाज होइत रहत । ई स्थान आब नरसिंह भगवानक मूर्ति आ मन्दिरक कारणसँ बेस विकसित भऽ गेल अछि । एतै नरसिंह पाया फाड़ि अवतरित भेल छला ।

बिसफी- मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानामे कमतौल रेलवे स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पूब आ कपिलेश्वर स्थानसँ ४ किलोमीटर पश्चिम बिसफी गाम अछि । ज्योतिरीश्वर पूर्व महाकवि विद्यापतिक जन्म-स्थान ई गाम अछि ।

मिथिलाक बीस टा सिद्ध पीठ- १.गिरिजास्थान (फुलहर, मधुबनी), २.दुर्गास्थान (उचैठ, मधुबनी), ३.रहेश्वरी (दोखर, मधुबनी), ४.भुवनेश्वरीस्थान (भगवतीपुर, मधुबनी), ५. भद्रकालिका (कोइलख, मधुबनी), ६.चमुण्डा स्थान (पचाही, मधुबनी), ७.सोनामाइ (जनकपुर, नेपाल), ८.योगनिद्रा (जनकपुर, नेपाल), ९.कालिका स्थान (जनकपुर स्थान), १०.राजेश्वरी देवी (जनकपुर, नेपाल), ११.छिनमस्ता देवी (उजान, मधुबनी), १२.बनदुर्गा (खररख, मधुबनी), १३.सिधेश्वरी देवी (सरिसव, मधुबनी), १४.देवी-स्थान (अंधरा ठाढ़ी, मधुबनी), १५.कंकाली देवी (भारत नेपाल सीमा आ रामबाग प्लेस, दरभंगा), १६.उग्रतारा (महिषी, सहरसा), १७.कात्यानी देवी (बदलाघाट, सहरसा), १८.पुरन देवी(पूर्णियाँ), १९.काली स्थान (दरभंगा), २०.जैमंगलास्थान(मुंगेर), ५२. जनकपुर परिक्रमाक १५ स्थल आ ओतुक्का मुख्य देवता १. हनुमाननगर- हनुमानजी, २.कल्याणेश्वर- शिवलिंग, ३.गिरिजा-स्थान- शक्ति, ४.मटिहानी- विष्णु मन्दिर, ५.जालेश्वर- शिवलिंग, ६.मनाई- माण्डव ऋषि, ७. श्रुव कुण्ड- ध्रुव मन्दिर, ८.कंचन वन- कोनो मन्दिर नै मात्र मनोरम दृश्य, ९.पर्वत- पाँच टा पर्वत, १०.धनुषा- शिव धनुषक टुकड़ी, ११.सतोखड़ी- सप्तर्षिक सात टा कुण्ड, १२.हरुषाहा- विमलागंगा, १३. करुणा- कोनो मन्दिर नै मात्र मनोरम दृश्य, १४. बिसौल- विश्वामित्र मन्दिर आ १५.जनकपुर ।

दरभंगा कैथोलिक चर्च- १८९१मे स्थापित ई चर्च १८९७ केर भूकम्पमे क्षतिग्रस्त भऽ गेल । एकरा होली रोजेरी चर्च सेहो कहल जाइए । सेंट फांसिस ऑसिसी चर्च मुजफ्फरपुरमे अछि ।

भिखा सलामी मजार- गंगासागर पोखरि दरभंगाक महारपर ई मजार अछि । मकदूम बाबाक मजार:ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय आ कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगाक बीच स्थित ई मजार हिन्दू आ मुस्लिम मतावलम्बीक एकटा पावन स्थान अछि । दरभंगा टावर मस्जिद इस्लाम मतावलम्बीक एकटा भव्य मस्जिद आ धार्मिक स्थल अछि ।

विदेह मिथिला रत्न

वि दे ह विदेह Videha विप्रेर <http://www.videha.co.in> विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

भारत आ नेपालक माटिमे पसरल मिथिलाक धरती प्राचीन कालेसँ महान पुरुष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि रहल अछि। प्रस्तुत अछि मिथिला रत्नक एकटा छोट संग्रह। ऐ संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रहकेँ editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार, सम्बन्धित फोटोग्राफर आ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि। फोटो सभ पठेबा लेल धन्यवाद पाठकगण। साभार।
पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू VIDEHA_346, VIDEHA_347, VIDEHA_366 आ मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पाबनि तिहार (कथा) आ मिथिलाक संगीत ।



वैदिक जनक

'वैदेह राजा' ऋग्वेदिक कालक नमी सप्याक नामसँ छलाह, यज्ञ करैत सदेह स्वर्ग गेलाह, ऋग्वेदमे वर्णन अछि। ओ इन्द्रक संग देलन्हि असुर नमुचीक विरुद्ध आ ताहिमे इन्द्र हुनका बचओलन्हि। शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। निमि गौतमक आश्रमक लग जयन्त आ मिथि-जिनका मिथिला नामसँ सेहो सोर कएल जाइत छन्हि, मिथिला नगरक निर्माण कएलन्हि। निमीक जयन्तपुर वर्तमान जनकपुरमे छल, मिथीक मिथिलानगरीक स्थान एखन धरि निर्धारित नहि भए सकल अछि, अनुमानित अछि



वाल्मीकि



सीतापति राम

जनकपुरक लग । ❖सीरध्वज
जनक❖ सीताक पिता छथि आ
एतयसँ मिथिलाक राजाक सुदृढ़
परम्परा देखबामे अबैत
अछि । ❖कृति
जनक❖ सीरध्वजक बादक 18म
पुस्तमे भेल छलाह । कृति
हिरण्यनाभक पुत्र छलाह आ
जनक बहुलाश्वक पुत्र छलाह ।
याज्ञवल्क्य हिरण्याभक शिष्य
छलाह, हुनकासँ योगक शिक्षा
लेने छलाह । कराल जनक द्वारा
एकटा ब्राह्मण युवतीक शील-
अपहरणक प्रयास भेल आ जनक
राजवंश समाप्त भए गेल (संदर्भ
अश्वघोष-बुद्धचरित आ कौटिल्य-
अर्थशास्त्र) ।



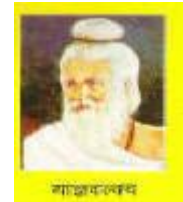
लव कुश



विदेघ माथव

शतपथ ब्राह्मणक विदेघ
माथवक विदेह
आगमन, आगिक सदानीरासँ
आगाँ नहि बढबाक चर्चा।

शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव
आ पुराणक निमि दुनू गोटेक
पुरोहित गौतम छथि से दुनू
एके छथि आ एतएसँ विदेह
राज्यक प्रारम्भ।



वाजसनेयी याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य मिथिलाक दार्शनिक
राजा कृति जनकक दरबारमे
छलाह। हुनकर माताक वा पिताक
नाम सम्भवतः वाजसनी छलन्हि।
ओना हुनकर पिता देवरातकेँ
मानल जाइत छन्हि। याज्ञवल्क्य
१. शुक्ल यजुरवेद, २. शतपथ
ब्राह्मण, ३. बृहदारण्यक उपनिषद आ
४. याज्ञवल्क्य स्मृतिक दृष्टा/लेखक
छथि।



अंगराज कर्ण



वैशेषिक दर्शन कणाद

वैशेषिक दर्शन कणाद



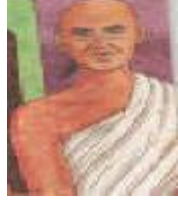
महावीर जैन 599-
527

महावीर विदेहमे छह टा
बस्सावास बितेलन्हि।



गौतम बुद्ध BC 563-483

ओना तँ महावीर विदेहमे छह टा बस्सावास बितेलन्हि मुदा बुद्ध एकोटा नै मुदा मिथिलामे बौद्ध धर्मक प्रभाव पछाति बढ़ल। बुद्ध वैशाली नगरीमे आमपालीक उद्यानमे लिच्छवीगणकेँ सन्देश देने छलाह।



चाणक्य BC 350-283

धर्म आ विधिक क्षेत्रमे कौटिल्यक अर्थशास्त्र आ याज्ञवल्क्य स्मृतिमे बड्ड समानता अछि जे चाणक्यक मिथिलावासी होयबाक प्रमाण अछि।

अर्थशास्त्रमे(१.६ विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षडोऽध्यायः इन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनकक पतनक सेहो चर्चा अछि।

तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यायमभिमन्यमानः सबन्धराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः;...।



चन्द्रगुप्त मौर्य चाणक्यक शिष्य BC 340-293

चाणक्यक शिष्य



आर्यभट्ट वैज्ञानिक 476-550

पञ्जीमे आर्यभट्टक विवरण- (२७) (३४/०८) महिपतियः मंगरौनी माण्डैर सै पीताम्ब र सुत दामू दौ माण्ड्र सै वीजी त्रिनयनभट्टः ए सुतो **आर्यभट्टः** ए सुतो उदयभट्टः ए सुतो विजयभट्ट ए सुतो सुलोचनभट्ट (सुनयनभट्ट) ए सुतो भट्ट ए सुतो धर्मजटीमिश्र ए सुतो धाराजटी मिश्र ए सुतोब्रह्मजरी मिश्र ए सुतो त्रिपुरजटी मिश्र ए सुत



सिद्ध सरहपाद 700-780

सरहपाद-सिद्धिरत्थु मइ पदमे पढ़िअउ ,मण्ड पिबन्तोँ विसरउ एमइउ मिथिलामे अक्षरारम्भ सिद्धिरस्तु जकर पूर्वमे सिद्धिरस्तु, गणेशजीक अंकुश आँजी, लिखल जाइत अछि। मिथिलामे ई धारणा जे माँइ पिलासँ स्मरण शक्ति क्षीण होइत अछि; ई



आदि शंकराचार्य 788-820 मंडन मिश्रसँ शास्त्रार्थ

विद्युजटी मिश्र ए सुतो
अजयसिंहः ए सुतो विजयसिंहः ए
सुतो ए सुतो आदिवराहः ए सुतो
महोवराहः ए सुतो दुर्योधन सिंहः ए
सुतो सोदर जयसिंहर्काचार्यास्त्रस
महास्त्र विद्या पारङ्गत
महामहोपाध्या यः नरसिंहः॥



म.म.गोन् झा 1050-
1150

करमहे सोनकरियाम गोन्
झाक वर्णन पञ्जीमे
अछि- महामहोपाध्याय धूर्तराज
गोन्। पञ्जीक अनुसार पीढीक
गणना कएलासँ गोन्क
जन्म (गोन्क सोनकरियाम
करमहे-वत्समे २४म पीढी
चलि रहल अछि) आर्यभट्टक
बाद (आर्यभट्टक माण्डर-
काश्यपमे ३९ म पीढी चलि
रहल अछि) आ विद्यापतिक
पहिने (विद्यापतिक विषएवार
बिस्फी-काश्यपमे १४म पीढी
चलि रहल अछि) लगभग
१०५० ई.मे सिद्ध होइत अछि।
कारण एहि तरहेँ एक पीढीकेँ
४० सँ गुणा केला सँ
आर्यभट्टक जन्म लगभग ४७६
ई. आ विद्यापतिक जन्म
लगभग १३५० ई. अबैत अछि
जे इतिहाससम्मत अछि।



छेछन महराज

सरहपादक मिथिलावासी
होएबाक प्रमाण अछि।



कृष्णाराम आ हाथी सुबरन

मिथिलाक यादव (गुआर) जातिक
लोकदेवता कृष्णाराम अपन हाथी
सुबरनपर सवार।



दीना- भदरी



वंशीधर ब्राह्मण



ज्योति पँजियार

मिथिलाक डोम जातिक
लोकदेवता



राजा सलहेस

मिथिलाक दूधवंशी (दुसाध)
जातिक लोकदेवता

मिथिलाक मुसहर जातिक
लोकदेवता



दुलरा दयाल

गोन् झाक गाम भरोड़ाक
राजकुमार, "बहुरा गोढिन
नटुआ दयाल" लोककथाक
मलाह कथानायक। भरोड़ामे
एखनो हिनकर गहबर छन्हि।



कालिदास



बोधि कायस्थ

विद्यापतिक पुरुष-परीक्षामे
मृत्युकालमे गंगा नदीक
आयब आ बोधि-कायस्थके
अपनामे समेबाक खिसा
वर्णित अछि जे बादमे
विद्यापतिके लs कs सेहो
प्रचलित भेल।



राधाकृष्ण आ करताराम मल्लिक

मिथिलाक अमता घरेनक प्रारम्भिक गबैय्या



महाराज नान्यदेव

मिथिलाक कर्णाट
वंशक 1097 ई. मे
स्थापना। 1147 ई. मे मृत्यु।



मल्लदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक
संस्थापक नान्यदेवक पुत्र।
मिथिलाक गंधवरिया राजपूत
मल्लदेवके अपन बीजीपुरुष
मानैत छथि।



महाराज हरसिंहदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक।
ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-
रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक
आकि राजा
छलाह। 1294 ई. मे जन्म
आ 1307 ई. मे राजसिंहासन।



मंत्री गणेश्वर

मिथिलाक कर्णाट वंशक
नरेश हरसिंहदेवक
मंत्री। सुगतिसोपानमे
मिथिलाक सांवैधानिक
इतिहासक वर्णन।

घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोड़े बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) श्रौत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।



मीरां साहेब

मिथिलाक मुस्लिम लोकनिक बीच प्रसिद्ध लोकगाथाक नायक।



अमर बाबा

मिथिलाक मलाह जातिक लोकदेवता।



गरीबन बाबा

मिथिलाक धोबि जातिक लोकदेवता।



लालबन बाबा

मिथिलाक चर्मकार जातिक लोकदेवता।



बंठा चमार



कारिख पजियार



लोरिक



राय रणपाल



अयाची मिश्र

पन्द्रहम शताब्दीक भवनाथ मिश्र बड पैघ नैय्यायिक छलाह आ कहियो ककरोसँ कोनो वस्तुक याचना नहि कएलन्हि, ताहि लेल सभ हुनका अयाची मिश्र कहए लगलन्हि।



शंकर मिश्र

"बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती। अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥" क वक्ता। पन्द्रहम शताब्दीमे भवनाथ मिश्रक घरमे मधुबनी जिलाक सरिसव ग्राममे शंकर मिश्रक जन्म भेल। शंकर मिश्र महाराज भैरव सिंहक कनिष्ठ पुत्र राजा पुरुषोत्तमदेवक आश्रित छलाह। एकर वर्णन रसार्णव ग्रंथमे भेटैत अछि। शंकर मिश्र कवि, नाटककार, धर्मशास्त्री आ न्याय-वैशेषिकक व्याख्याकार



पक्षधर मिश्र

विद्यापतिक समकालीन जयदेव मिश्र, जे अपन अकाट्य तर्कक कारण पक्षधर मिश्रक नामसँ जानल गेलाह।



मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)

कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बाबूर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक

रहथि । शंकर मिश्र
ग्रंथावली- १.गौरी दिगम्बर प्रहसन
२.कृष्ण विनोद नाटक
३.मनोभवपराभव
नाटक४.रसार्णव५.दुर्गा-
टीका६.वादिविनोद७.वैशेषिक सूत्र
पर उपस्कार८.कृसुमांजलि पर
आमोद९.खण्डनखण्ड-खाद्य टीका
१०.छन्दोगाह्निकोद्धार ११.श्राद्ध
प्रदीप १२.प्रायश्चित प्रदीप ।



महाराज शिव सिंह

मिथिला नरेश विद्यापतिक
आश्रयदाता ओइनवार वंशक
महाराज शिव सिंह।



उगना महादेव

महादेव विद्यापतिक अहिठाम
गीत सुनबा लेल उगना
नोकर बनि रहैत छलाह।



महाकवि विद्यापति ठाकुर 13 50-1435

(मैथिलीक आदि कवि ज्योति
रीश्वर-

पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न, संस्कृ
त आ अवहट्टमे लेखन)

महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435

विद्यापति ठाकुर: 1350-1435 विषएवार
बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी)
आ संस्कृत आ अवहट्ट लेखक। कीर्तिलता,
कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय,
लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल
संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक
आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)सँ
भिन्न छथि।

(चित्रक आधार मिथिला सांस्कृतिक परिषद,
कोलकाता द्वारा कोनो कलाकारसँ बनबाओल
, कलाकारक नाम ६०-७० सालसँ अज्ञात
कारणसँ गुप्त राखल गेल अछि।)

(ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत
अछि/ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक
अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ
एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ ❖ईश्वर
प्रत्याभिजा- विभर्षिणी❖ मे विद्यापतिक
उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक
सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६,
मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर
दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने
छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी।

❖जाव न मालतो कर परगास

तावे न ताहि मधुकर विलास।❖ आ

❖मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द❖

ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः

कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः

कल्लोल:- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे उल्लेख।



शंकरदेव 1449-
1569

पारिजातहरण।



जगज्ज्योतिर्मल्ल १६१३-
३७

हरगौरी विवाह नाटक, कुञ्ज विहार
नाटक।



सुनीति कुमार चटर्जी मैथिली
प्रेमी 1890-1977



अरविन्द घोष मैथिली प्रेमी
1872-1950

विद्यापति गीतक अंग्रेजीमे अनुवाद



डॉ. सर आशुतोष मुखर्जी मैथिली प्रेमी
1864-1924



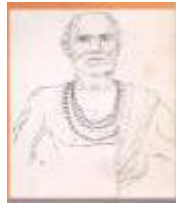
सर जी. ए. गिर्यसन मैथिली
प्रेमी 1851-1941



कवि चन्दा झा 1831-
1907

मूलनाम चन्द्रनाथ
झा, ग्राम- पिण्डारुछ, दरभंगा।
कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ
विभूषित। ग्रिएर्सनकेँ मैथिलीक
प्रसंगमे मुख्य सहायता
केनिहार।

कृति- मिथिला भाषा
रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी
संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर
विलास, अहिल्याचरित आs



महाकवि लालदास 1856-
1921

हिनक जन्म खड़ौआ ग्राममे १८५६ ई.
मे तथा मृत्यु १९२१ ई. मे भेलन्हि ।
हिनक अनेक रचना उपलब्ध होइत
अछि, यथा रमेश्वर चरित
रामायण, स्त्री शिक्षा, सावित्री-
सत्यवान, चण्डी चरित,
विरुदावली, दुर्गा
सप्तशती, तन्त्रोक्त मिथिला
माहात्म्य आदि । मैथिलीक
अतिरिक्त ई संस्कृत, हिन्दी तथा
फारसीक ज्ञाता छलाह । कविताक
अतिरिक्त गद्यमे सेहो ई रचना कएल
। रमेश्वर चरित रामायण हिनक
सभसँ विशिष्ट ग्रन्थ अछि । राम-
कथाक उल्लेखमे सीताक महिमाक



म. म. परमेश्वर झा 1856-
1924

जन्म 1856 ई. मे तरौनी ग्राम
(दरभंगा) जिलामे भेल छलन्हि तथा
निधन 1924 ई. मे । संस्कृत
व्याकरणक ई दिग्गज विद्वान् छलाह
तथा वैयाकरण केशरीक उपाधिसँ
विभूषित छलाह । मैथिली साहित्यमे
अपन कृति मिथिलातत्त्व
विमर्श तथा सीमंतिनी
आख्यायिकाक कारणे महत्वपूर्ण
स्थान रखैत छथि । ई महाराज
रमेश्वर सिंहक दरवारमे राज-पंडितक
पदपर अनेको वर्ष धरि सुप्रतिष्ठित
छलाह ।

विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-
परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।



अवध बिहारी प्रसाद शाही 1
859-1929

महत्त्व दए मिथिला तथा मैथिलीक
प्रति ई अपन श्रद्धा तथा भक्तिर्के
व्यक्त करएल अछि ।



सर्वतंत्र स्वतंत्र बच्चा झा 1860-
1921

मधुबनी जिलांतर्गत लवाणी(नवानी) गाममे
हिनकर जन्म भेलन्हि।हिनक कृति सभ
अछि। 1. सुलोचन-माधव चम्पू काव्य,
2.न्यायवार्तिक तात्पर्य व्याख्यान, 3.गूढार्थ
तत्त्वलोक(श्री मदभागवतगीता व्याख्याभूत
मधुसूदनी टीका पर) 4.व्यासिपंचक
टीका 5.अवच्छदकत्व निरुक्ति
विवेचन 6.सव्यभिचार टिप्पण 7.सतप्रतिपक्ष
टिप्पण 8.व्यासनुगन विवेचन 9.सिद्धांत लक्षण
विवेक 10.व्युत्पत्तिवाद गूढार्थ
तत्त्वलोक 11.शक्तिवाद टिप्पण 12.खण्डन-
खण्ड खाद्य टिप्पण 13.अद्वैत सिद्धि चन्द्रिका
टिप्पण 14.कुकुकाञ्जलि प्रकाश टिप्पण।



म. म. शशिनाथ झा 1860-
1930



मुंशी रघुनन्दन दास 1860-
1945

गाम-सखबार, जिला-मधुबनी। "मिथिला
नाटक" आ "दूतांगद व्यायोग"क लेखक।



मधुसूदन ओझा 1866-
1939



म.म. मुरलीधर झा १८६८-
१९२९

जन्म- गाम-भराम (जिला
मधुबनी), अपन मातृक श्यामसीधपमे
बसि गेलाह। काशीसँ १९०६ ई. मे
ई "मिथिलामोद" नामक मासिक
मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन शुरु
केलन्हि। हितोपदेश (अनुवाद), मैथिली
व्याकरण, "अर्जुन तपस्या" (उपन्यास)
प्रकाशित।



मुकुन्द झा "बखशी"
1869-1936

जन्म हरिपुर बखशी टोल ग्राम (मधुबनी जिला) में 1869 ई. में भेल तथा हिनक निधन काशीमें 1937 ई. में भेलन्हि । हिनक लिखल संस्कृत में अनेक ग्रंथ अछि । मैथिलीमें हिनक महत्वपूर्ण कृति अछि ♦मिथिला भाषामय इतिहास♦ । एकर अतिरिक्त मैथिलीमें हिनक स्फुट निबन्ध सभ सेहो प्रकाशित भेल । मिथिलाक ऐतिहासिक वर्णन सभसँ पहिने हिनके प्रकाशित भेल । एहि इतिहासमें मिथिलाक सर्वतोमुखी परिचय प्रस्तुत कएल गेल अछि ।



डॉ. सर गंगानाथ झा 1871-
1941

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसब-पाही ग्राममें 1871 ई. में भेल तथा निधन प्रयागमें 1941 ई. में । ई अपना समयक संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान म. म. चित्रधर मिश्र, म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. शिवकुमार शास्त्रीसँ मीमांसा एवं दर्शनक अध्ययन कएलन्हि तथा दर्शनक विभिन्न दुरूह ग्रंथक अडरेजीमें अनुवाद कए पाश्चात्य संसारक ध्यान आकृष्ट कएलन्हि । ई गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज बनारसमें 1917 सँ 1923 धरि प्रिंसिपल छलाह तथा एलाहाबाद विश्वविद्यालयक 1923 सँ 1932 पर्यन्त कुलपति रहलाह । मैथिलीमें हिनक सम्पादित चन्दा झाक ♦महेशवाणी संग्रह♦ तथा ♦गणनाथ-विन्ध्यनाथ पदावली♦ प्रकाशित अछि । मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित हिनक ♦वेदान्त दीपक♦ (दर्शन) विषयक अपूर्व ग्रंथ अछि । एहिसँ भिन्न हिनक निबंध सभ सामयिक मैथिली पत्र-पत्रिकामें प्रकाशित अछि ।



जनार्दन झा जनसीदन 1872
-1951



रासबिहारी लालदास 1872-
1940

"मिथिला दर्पण" क लेखक ।



रामचन्द्र मिश्र "चन्द्र"
1873-
1937 मैथिल प्रभा



महावैयाकरणाचार्य पं दीनब
न्धु झा 1878-1955



भवनाथ मिश्र 1879-
1933

मैथिली शब्दकोष "मिथिला
शब्द प्रकाश"क लेखक।



कीर्त्यानन्द सिंह



टंकनाथ चौधरी 1884-
1928



भवप्रीतानन्द ओझा 1886-
1970



कपिलेश्वर मिश्र 1887-
1987

गाम सलेमपुर, थाना-
उजियारपुर, जिला
समस्तीपुर। ❖सीतादाइ❖ पुस्तक
भंडारसँ प्रकाशित।



बालकृष्ण मिश्र 1888-
1948



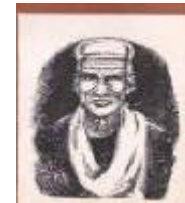
बलदेव मिश्र 1890-
1975

हिनक जन्म सहरसा जिलाक
वनगाँव ग्राममे 1890 ई. मे एवं
निधन फरवरी, 1975मे भेलन्हि
। प्रारम्भमे पं. गेनालाल
चौधरीसँ ज्योतिष पढ़ि ई
काशीमे पं. सुधाकर द्विवेदीजीक
शिष्य भेलाह । बहुत वर्ष धरि
सरस्वती भवन (वाराणसी) मे
हस्तलिखित विभागमे कार्य
कएल । पश्चात् पटनाक
काशीप्रसाद जयसवाल रिसर्च
संस्थानमे अनेक प्राचीन



आचार्य रामलोचन शरण 1889-
1971

सीतामढ़ीमे जन्म आ दरभंगामे मृत्यु। "मैथिली
रामचरित मानस" सहित तुलसीदासक समस्त
रचनाक मैथिलीमे लेखन। मिथिलाक्षरमे
मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ केनिहार। प्रकाशन
संस्था "पुस्तक भण्डार", लहेरियासराय, पटनाक
संस्थापक।



सीताराम झा 1891-
1975

जन्म चौगामा ग्राममे १८९१
ई.मे तथा निधन १९७५ ई.
मे भेलन्हि । संस्कृतमे
ज्योतिष शास्त्रक अनेक
रचनाक .अतिरिक्त मैथिलीमे
हिनक ❖अम्ब चरित❖
(महाकाव्य), ❖सूक्ति
सुधा,❖ लोक लक्षण,❖
❖पट्टुआचरित,❖ ❖पूर्वापर
व्यवहार,❖ उनटा बसात,❖
❖अलंकार दर्पण❖,
❖भूकम्प वर्णन❖, ❖काव्य

तिब्बती हस्तलिपिकें देवनारीमे लिप्यन्तरित कएल। मिथिलामोद प्रकाशन एवं म.म. मुरलीधर झाक प्रोत्साहनसँ ज्योतिषीजी १९१० ई.सँ मोदमे लिखए लगलाह। हिनक प्रकाशित रचना अछि रामायण शिक्षा, चन्दा झा, संस्कृति, भारत शिक्षा, गप्प-सप्प विवेक, समाज आदि। पण्डितजी यावत् धरि पटना रहलाह बराबरि मिहिरमे लिखैत रहलाह।



ताराचरण झा 1892-1928



बद्रीनाथ झा 1893-1973

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसव ग्राममे १८९३ ई. मे भेलन्हि तथा १९१४ ई. मे ई काशी लाभ कएलन्हि। बहुत दिन धरि ई मुजफ्फरपुरक धर्म समाज संस्कृत कॉलेजमे साहित्यक अध्यापक छलाह। मैथिलीक विख्यात कवि लोकनि यथा सुमनजी, मधुपजी, मोहनजी आदि हिनक शिष्य छथिन्ह। संस्कृत साहित्यमे हिनक अनेक रचना अछि। जाहिमे राधा परिणय (महाकाव्य) क स्थान विशिष्ट अछि। मैथिलीमे हिनक एकावली परिणय (महाकाव्य) एक नवीन कीर्तिमान स्थापित कएलक। कोनो अलंकारक दृष्टान्त तकबाक हेतु एकावली परिणय पर्याप्त अछि।

षट-रस, मैथिली काव्योपवन, आदि ग्रन्थ उपलब्ध अछि। हिनक गीताक मैथिली अनुवाद सेहो उपलब्ध अछि। मिथिला मोदक सम्पादन १९२० ई.सँ १९२७ ई. धरि ई कएल।



जीवनाथ राय 1893-1964



उमेश मिश्र 1895-1967

जन्म मधुबनी जिलाक गजहरा ग्राममे 1895 ई. मे भेल छलन्हि । ई एकहतरि वर्षक आयुमे १९६७ ई. मे प्रयागमे स्वर्गवासी भेलाह । ई अपन स्वनाम-धन्य पिता म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. डा. गंगानाथ झाक सान्निध्यमे विद्यार्जन कएल। १९२३ सँ १९५९ धरि मिश्रजी एलाहाबाद विश्वविद्यालयमे संस्कृतक प्राध्यापक छलाह । दरभंगा ❖मिथिला शोध संस्थान❖क निदेशक पदपर किछु समय कार्य कए १९६२ सँ ६५ धरि कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति रहलाह ।म. म. मुरलीधर झासँ प्रभावित भए ❖मिथिलामोद❖मे ई लिखब प्रारम्भ कएलन्हि तथा अपन विविध प्रकारक रचनासँ मैथिलीक गद्यकें समृद्ध कएलन्हि । मैथिलीमे हिनक प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि❖❖कमला❖ (शेक्सपीयरक ❖टेम्पेस्ट❖क भावानुवाद), ❖नलोपाख्यान❖, ❖मैथिली-संस्कृति❖ तथा अनेक वर्णनात्मक एवं आलोचनात्मक निबन्ध; मनबोधक कृष्णजन्मक सम्पादन, विद्यापतिक कीर्तिलता, कीर्तिपताका, गोरक्ष विजय आदिक अनुवाद-सम्पादन सेहो कएल।



बाबू धनुषधारी दास 1895-1965

मैथिलीमे बिहारी कविक अनुवाद प्रकाशित।



अमरनाथ झा 1897-1955

सरिसब पाहीटोल ग्राममे १८९७ ई. मे भेल । हिनक निधन पटनामे जखन ई बिहार लोक सेवा आयोगक अध्यक्ष छलाह, १९५५ मे भेलन्हि । ई एलाहाबाद विश्वविद्यालयक नओ वर्ष धरि कुलपति रहि पश्चात् हिन्दू विश्वविद्यालयक सेहो कुलपतिक पदकें सुशोभित कएलन्हि । ई अंगरेजीक प्रकाण्ड विद्वान् छलाह, ताहि संग हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, बडला एवं मैथिलीक सेहो अद्भुत विद्वान् छलाह ।मैथिलीमे हिनका द्वारा सम्पादित ❖हर्षनाथ काव्य ग्रन्थावली❖ तथा ❖गोविन्ददासक श्रृङ्गारभजन❖ महत्त्वपूर्ण अछि । एहिसँ भिन्न हिनक मैथिली साहित्य परिषदक अध्यक्षीय भाषण तथा अन्य लेख प्रकाशित अछि ।



भोलालाल दास 1897-1977

हिनक जन्म दरभंगा जिलाक कसरौर मे भेलन्हि । साहित्य सर्जनाक अतिरिक्त अपन संगठन क्षमता तथा मैथिली साहित्यक सर्वतोमुखी विकासक हेतु सतत तत्पर रहबाक कारणे भोला बाबू मैथिली संसारक एक स्तम्भक रूपमे रहलाह । हिनक निधन 1977 ई. मे भेल । मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे ई अपन जीवन समर्पित कएने छलाह। पाठ्यक्रममे मैथिलीके स्थान हो ताहि हेतु ई बीड़ा उठओलन्हि । विद्यालय स्तरक अनेक पोथीक निर्माण कएल । मैथिली साहित्य परिषदक ई संस्थापक मण्डलक सदस्य छलाह । 1931 सँ 1940 ई. पर्यन्त ओकर प्रधान मन्त्री रहलाह । हिनक मन्त्रित्वकालमे **भारती** नामक मासिक पत्रक प्रकाशन भेल । एहिसँ पूर्व (१९२९-३१) कुशेश्वर कुमरजीक संग संयुक्त सम्पादनमे **मिथिला** नामक पत्र चलाओल । ई नवीन एवं प्रगतिशील विचारक लोक छलाह । ननव लेखकके प्रोत्साहित करब, शैलीमे एकरूपता आनब, नव प्रकाशनसँ मैथिलीक साहित्य भंडारक पूर्ति करब हिनक कर्तव्य बनि गेल छल । हिनक लिखल **मैथिली व्याकरण** तथा हिनकहि द्वारा सम्पादित **गद्यकुसुमांजलि** बहुत दिन धरि विद्यालयमे पढ़ाओल जाइत रहल । हिनक लिखल अनेक निबन्ध समालोचना, कविता, संस्मरण, जीवनी-साहित्य मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल अछि ।



कुमार गंगानन्द सिंह 1898-1971

जन्म **बनौली** राजपरिवारमे 24-9-1898, मृत्यु:-श्रीनगर पूर्णिया 17-1-1970 । भूतपूर्व शिक्षामंत्री, बिहार एवं कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय । रचना **अगिलही** (अपूर्ण उपन्यास) तथा अनेक कथा एवं एकांकी । युगक अनुरूप सामाजिक कुरीति आदिके आधार बनाए सुधारवादी दृष्टि कथा सभहिक रचना ।



ब्रजमोहन ठाकुर 1899-1977



भुवनेश्वर प्रसाद 1902-

दरभंगा जिलाक बनौली
गाम, निवास रायसाहेब पोखरि
लहेरियासराय। सरस्वती स्कूल
लहेरियासरायमे १९३०-१९६४ ई.
धरि अध्यापन। मैथिलीमे "बाल
रामायण" प्रकाशित।



जयनारायण झा 'विनीत'
1902-1991



नरेन्द्र नाथ दास विद्यालंकार
१९०४-१९९३



सुधाकर झा "शास्त्री"
1904-1974



दामोदर लाल दास विशारद 1904-
1981



बबुआजी झा 'अजात'
1904-1996

२००१- बबुआजी झा अजात
(प्रतिज्ञा पाण्डव, महाकाव्य) लेल
साहित्य अकादमी पुरस्कार।



श्रीवल्लभ झा हाटी 1905-
1940



रमानाथ झा 1906-
1971

जन्म दरभंगा जिलाक उजान
(धर्मपुर) ग्राममे 1906 ई. मे एवं
हिनक निधन दरभंगामे १९७१ ई.
मे भेलन्हि । 1930 ई. मे अडरेजीमे
एम. ए. कएलाक बाद ई कतोक
वर्ष धरि मधुपुर उच्च विद्यालयक
प्रधानाध्यापक छलाह, तकरा बाद
दरभंगडा-राज-लाइब्रेरीक
पुस्तकालयाध्यक्षक रूपमे 1936 सँ
अन्तिम समय धरि रहलाह



काशीकान्त मिश्र "मधुप"
1906-1987

१९७०- काशीकान्त मिश्र मधुप
(राधा विरह, महाकाव्य) पर साहित्य
अकादमी पुरस्कार प्राप्त मैथिलीक
प्रशस्त कवि आ मैथिलीक प्रचार-
प्रसारक समर्पित
कार्यकर्ता अकार कवितासँ क्रान्ति
गीतक आह्वान कएलनि । प्रकृति
प्रेमक विलक्षण कवि । घसल
अठन्नी कविताक लेल कथ्य आ

। 1952 सँ 62 चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे प्रो. झा अडरेजीक प्राध्यापक रूपेँ काजका पश्चात् ओही कॉलेजमे मैथिली विभागाध्यक्ष बनाओल गेलाह । 1965 मे रमानाथ बाबू साहित्य अकादमीक मैथिलीक प्रतिनिधि निर्वाचित भेलाह जाहि पद पर ओ जीवनक अन्त समय तक रहलाह ।

हिनक रचनाक क्षेत्र बहुत व्यापक छल । हिनक अनुसंधानात्मक निबन्क दू गोटा संग्रह निबन्धमाला तथा प्रबंध संग्रह प्रकाशित अछि । संकलित सम्पादित पुस्तक सभमे मैथिली पद्य-संग्रह, मैथिली गद्य-संग्रह, प्राचीन गीत, कथा काव्य, नवीन गीत, कविता कुसुम, कथा संग्रह आदि अछि । कथासरित्सागरक आधार पर प्राञ्जल गद्य शैलीमे हिनक उदयन-कथा तथा बररुचि-कथा बेश ख्याति पओलक । व्याकरणक मिथिला भाषा प्रकाश, अलकडारप्रवेश आदि अनेक ग्रन्थ प्रकाशित अछि । मैथिली साहित्य पत्र त्रैमासिक पत्रिकाक संपादक।

शिल्प-संवेदना दुहू स्तर पर चरम लोकप्रियता भेटलनि।



लक्ष्मीनाथ गोसाई 1793-1872



मेही दास

धरहरा कोठी_बनमनखी_असली
नाम_रामानुग्रहलाल
दास_आश्रम_मायामोहल्ला, कुप्पाघाट, भागलपुर



बुचन भगत, संत 1928-1991



अभिराम दास

मिथिलाक प्रसिद्ध भागवत
वाचक।



सुन्दर झा "शास्त्री" 1930-1998

जनकपुर, नेपाल, युवावस्थाक
जेलक दुर्लभ फोटो।नेपाल
प्रज्ञा प्रतिष्ठानक मानद
सदस्यता- स्व. सुन्दर झा
शास्त्री।

स्नेहलता 1909-1993

गाम- डरोड़ी, समस्तीपुर। पूर्ण
नाम- कपिलदेव ठाकुर "स्नेहलता"।
रामाश्रयी रसिक सम्प्रदायक संत।
हिनकर रचित वैदेही विवाह
संकीर्तन, विनय
पदावली, शिववाणी, चेतावनी, झूला-
संकीर्तन, सीतावतरण प्रबन्धकाव्य
आ स्नेहशतक- दोहावली-कवित्त
आदि मिथिलाक महिला वर्ग आ
संकीर्तनकार लोकनिक कठमे
परिव्यास अछि आ लोकमंगलक
अनुष्ठानमे व्यापक रूपेँ व्यवहृत
अछि। हिनक "वैदेही
विवाह" मिथिलाक कीर्तनिया
नाट्य परम्पराकेँ लोकरुचिक
अनुकूल बनौने अछि।



काञ्चीनाथ झा "किरण" 1906-1988

जन्म स्थान-धर्मपुर,लोहना
रोड, दरभंगा बिहार । मैथिली भाषा
आंदोलनमे महत्वपूर्ण
भूमिका। ❖पराशर❖ महाकाव्य लेल
साहित्य अकादमी ओ ❖कथा
किरण❖ लेल वैदेही पुरस्कारसँ
सम्मानित । प्रकाशित कृति:
चंद्रग्रहण (उपन्यास), वीर-प्रसून
(बालकथा), जय जन्मभूमि
(एकांकी), विजेता
विद्यापति (नाटक), कथा-किरण
(कथा-संग्रह), किरण-
कवितावली, कतेक दिनक
बाद (कविता-संग्रह), पराशर
(महाकाव्य) ओ किरण-निबंधावली
(निबंध-संग्रह)
आदि। १९८९- काञ्चीनाथ
झा ❖किरण❖
(पराशर, महाकाव्य)पर मैथिली मे
साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ
सम्मानित।

स्वतंत्रता सेनानी

स्व. रामफल
मण्डल



श्यामानन्द झा 1906- 1949



मैथिलीमे रामचन्द्र

रमाकांत झा, नेपाल 1907-1971



ईशनाथ झा 1907-1965

बहुमुखी प्रतिभाक कवि । प्राचीन आ नवीन पद्धतिक काव्य-रचनाक विलक्षण संयोग हिनकर कवितामे भेटैत अछि । दलित वर्ग, शोषणक समस्या, स्वदेश प्रेमक यथार्थवादी रचनाक संग संग व्यक्तिनिष्ठ कल्पनाक अनेक विशिष्ट कविता मैथिलीमे लिखलनि ।



भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' 1907-1944

अपन खादीक बहुमुखी प्रतिभाक कवि । प्राचीन आ नवीन रीतिक कविताक रचना विपुल संख्यामे कएलनि । **भुवन भारती** कविता संकलन प्रकाशनसँ मैथिली ओज आ नव चेतनाक शंख फुकलनि।



हरिमोहन झा 1908-1984

हिनकर मैथिली कृति १९३३ मे **कन्यादान** (उपन्यास), १९४३ मे "द्विरागमन" (उपन्यास), १९४५ मे **प्रणम्य देवता** (कथा-संग्रह), १९४९ मे **रंगशाला** (कथा-संग्रह), १९६० मे **चर्चरी** (कथा-संग्रह) आ १९४८ ई. मे **खट्टर ककाक तरंग** (व्यंग्य) अछि। मृत्योपरांत १९८५मे (जीवन यात्रा, आत्मकथा)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



कालीकान्त झा 1909-

मूल गाम ढंगा (हरिपुर), मधुबनी। फेर मातृक बरदबड़ा, पो. उरलाहा, भाया- मदनपुर, जिला- पूर्णियामे बसि गेलाह। सतघरा (मधुबनी), मदनपुर आ काशीमे पाणिनी व्याकरणक अध्ययन। "हनुमान चरित"क लेखक।



तंत्रनाथ झा 1909-1984

जन्म १९०९ ई मे दरभंगा जिलाक धर्मपुर ग्राममे भेलन्हि मृत्यु ४-५-८४, चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे अर्थशास्त्रक प्राध्यापक छलाह । अवकाश ग्रहण क काव्य साधनामे लागल रहलाह । महाकाव्य, मुक्तक, एकांकी सभ विधामे ई सिद्ध हस्त छलाह । हिनक **कीचक वंध** महाकाव्य अडरेजीक **ब्लैकड भर्स** (अमिताक्षर छन्द) म लिखल अछि । मैथिलीमे **सौनेट** एवं **ब्लैकड भर्स**क ई प्रथम प्रयोक्ता थिकाह । संस्कृत परम्परामे काव्य रचना करितहुँ पाश्चात्य शैलीक नवीनता हिनका रचनामे भेल । हिनक **कीचक वंध** ओ **कृष्ण चरित** महाकाव्य **मङ्गल-पञ्चाशिका** एवं **नमस्या** मैथिली साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान रखैछ । तकर अतिरिक्त मुक्तक काव्यमे



जीवनाथ झा 1910-
1977



सुरेन्द्र झा 'सुमन' 1910-
2002

जन्म: ग्राम : बल्लीपुर, जिला-समस्तीपुर

| प्रकाशित कृति:

प्रतिपदा, अर्चना, साओन-

भादव, अंकावली, अन्तर्नाद, पयस्विनी, उत्तरा

आदि तीससँ अधिक मौलिक कविता-

पुस्तक; पुरुष-परीक्षा, अनुगीतांजलि, ऋतु

श्रृंगार तथा वर्णरत्नाकर, पारिजात-

हरण, कृष्णजन्म, आनन्द-विजय आदि

कतिपय ग्रन्थक अनुवाद-संपादन;

◆मैथिली काव्य पर संस्कृतक

प्रभाव◆ नामक समीक्षा-

ग्रंथ। ◆पयस्विनी◆ लेल १९७१ मे

साहित्य अकादेमी पुरस्कार

तथा ◆उत्तरा◆ पर १९१८ मे मैथिली

अकादेमीक विद्यापति पुरस्कार प्राप्त ।

मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्र ◆स्वदेश◆क

लब्धप्रतिष्ठ सम्पादक। १९९५- सुरेन्द्र

झा ◆सुमन◆ (रवीन्द्र

नाटकावली- रवीन्द्रनाथ टैगोर, बांग्ला)लेल

साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद

पुरस्कार। २००० ई.- पं. सुरेन्द्र

झा ◆सुमन◆, दरभंगा; यात्री-चेतना

पुरस्कार।

विषय वस्तुक व्यापकता एवं शिल्प
शैलिक प्रचुरता अबैत अछि । एक
दिश यदि प्राचीन दंगक ईश्वर
वन्दनाक रचना कएलन्हि तँ दोसर
दिस ◆सौनेट◆

(चतुर्दशपदी) ◆बैलेड◆ आदि

लिखबामे पूर्ण सफलता प्राप्त

कएलन्हि । ◆कृष्ण

चरित◆ महाकाव्य पर

हिनका 1979 ई क साहित्यक

अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि

। 1980 ई. मे हिनका अभिनन्दन

ग्रन्थसमर्पित कएल गेलन्हि ।



पं. रामचन्द्र झा 1910-

गाम तरौनी। काशी मिथिला
ग्रन्थमालाक सम्पादक।



'नागार्जुन' वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' 1911-1998

जन्म अपन मामागाम सतलखामे भेलन्हि, जे हुनकर गाम तरौनीक समीपहिमे अछि, जिला-दरभंगा । मूल नाम: वैद्यनाथ मिश्र । हिन्दीमे नागार्जुन नामे प्रख्यात । प्रकाशित कृति: चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली कविता-संग्रह); पारो, बलचनमा, नवतुरिया (मैथिली उपन्यास); युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आंखें, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, तुमने कहा था, हजार हजार बाहो वाली, पुरानी जूतियो का कोरस, रत्नगर्भा, ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या ! (हिन्दी कविता-संग्रह); रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुम्भीपाक, अभिनन्दन, उग्र तारा, इमरतिया (हिन्दी उपन्यास); आसमान में चन्दा तैरे (कहानी संग्रह); भस्मांकुर (हिन्दी खण्ड काव्य); अन्नहीनम् क्रियाहीनम् (निबन्ध-संग्रह); गीत गोविन्द; मेघदूत; विद्यापति के गीत, विद्यापति की कहानियां (अनुवाद) । पत्रहीन नग्न गाछ लेल १९६८ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त । यायावरी जीवन । मैथिली प्रतिनिधिक रूपमे रूस भ्रमण । नागार्जुन (स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र यात्री), हिन्दी आ मैथिली कवि, १९९४ ई.मे साहित्य अकादेमीक फेलो (भारत देशक सर्वोच्च साहित्यक पुरस्कार)।



आरसीप्रसाद सिंह 1911-1996

जन्म: ग्राम-एरौत, जिला-समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: माटिक दीप, पूजाक फूल, सूर्यमुखी (कविता-संग्रह), मेघदूत (अनुवाद), आरसी, नन्ददास, संजीवनी (हिन्दी काव्य संग्रह)। सूर्यमुखी लेल १९८४ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त ।



गुरु जयदेव मिश्र 1911-1991 शिष्य गंगानाथ झा



यशोधर झा



वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' 1912-1987



भीम झा 1912-

मिथिला वैभव, दर्शन मैथिली पोथीपर 1966 मे पहिल साहित्य अकादमी पुरस्कार मैथिली लेल प्राप्त।



राधानाथ दास १९१२-

१९७६- वैद्यनाथ मल्लिक विधु (सीतायन, महाकाव्य) लेल मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कार।



उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' 1913-1980

जन्म १९१३ ई. मे दरभंगा जिलाक चतरिया ग्राममे भेलन्हि । मृत्यु २४-५-१९८० । संस्कृत शिक्षामे साहित्याचार्य ओ बड़ौदा राजक विद्वत्-परीक्षासँ साहित्य-रत्नक उपाधिसँ विभूषित भेलाह । दैनिक आर्यावर्तमे आदिअहिसँ, पश्चात् १९६० सँ मिथिला मिहिरक उप-सम्पादक एवं सह-सम्पादक रूपेँ कार्य करैत १९७७ मे सेवा निवृत्त भेलाह ।मोहनजी करीब पचास वर्ष साहित्य साधनामे लागल रहलाह । विजयानन्द, कुंजरंजन, सुदर्शन, पुण्डरीक, शास्त्री, बामन आदि छत्र नामसँ पत्र-पत्रिकामे विविध विषयपर हिनक लेख सभ प्रकाशित भेल अछि ।मोहन जीक बाजि उठल मुरलीमे १०१ गोट कविताक संकलन अछि जाहिमे हिनक सुदीर्घ काव्य-आराधनाक विभिन्न विचारधाराक ओ विभिन्न अनुभूतिक सामग्री उपलब्ध अछि । एहि पुस्तकपर मोहनजीकेँ १९७८ मे साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि। एहिसँ बहुत पूर्व हिनक फुलडाली नामक कविता संग्रह सेहो प्रकाशित भेल छल ।

पूर्णिया जिलाक मदनपुर ग्रामक। जन्म ५ नवम्बर १९१२ ई.। बनैलीक श्री श्यामानन्द सिंहक अध्यक्षतामे नारायण संकीर्तन महामण्डलीक स्थापना।



जयनाथ मिश्र 1913-1985



श्रीकांत ठाकुर "विद्यालंकार"



पञ्जीकार मोदानन्द झा 1914-1998

लब्ध धौत पञ्जीशास्त्र मार्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया। पिता-स्व. श्री भिखिया झा। गुरु- पञ्जीकार



आनन्द झा 1914-1988

भिखिया झा। पूर्णिया जिलाक बनैली लगक शिवनगर गामक। जन्म २२ सितम्बर १९१४ ई.।सौराठमे अपन मौसा स्व. लूटनझा सँ पंजीशास्त्रक अध्ययन। १९४८-१९५१ ई. धरि दरभंगामे रहि आचार्य रमानाथ झाकेँ पाँजि पढ़ओलनि।शास्त्रार्थ परीक्षा- दरभंगा महाराज कुमार जीवेश्वर सिंहक यज्ञोपवीत संस्कारक अवसर पर महाराजाधिराज(दरभंगा) कामेश्वर सिंह द्वारा आयोजित परीक्षा-1937 ई. जाहिमे मौखिक परीक्षाक मुख्य परीक्षक म.म. डॉ. सर गंगानाथ झा छलाह।



टोक्यो हासेगावा, निदेशक
मिथिला म्यूजियम, निगाटा



माँगनि खबास 1908-
1943 संगीतज्ञ

पचगछियामे जन्म आ अल्प बएसमे मृत्यु। पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहक शिष्य।



रामाश्रय झा 'रामरंग' अभिनव
भातखण्डे 1928-2009

जन्म ११ अगस्त १९२८ ई. तदनुसारभाद्र कृष्णपक्ष एकादशी तिथिकेँ मधुबनी जिलान्तर्गत खजुरा नामक गाममे भेलन्हि। अभिनव गीतांजलि, हुनकर उच्चकोटिक शास्त्र रचना अछि।मिथिलावासी श्री रामरंग राग तीरभुक्त्ति, राग वैदेही भैरव, आऽ राग विद्यापति कल्याण केर रचना सेहो कएने छथि आऽ मैथिली भाषामे हिनकर खयाल \blacklozenge रंजयति इति रागः \blacklozenge केर अनुरूप अछि।



रामचतुर मल्लिक ध्रुपद सं
गीत 1905-1990



अभयनारायण मल्लिक



कुमार तारानन्द सिंह, संगीत
ज्ञ



संगीताचार्य रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंह



पंडित परमानन्द चौधरी, संगीतज्ञ



हृदयनारायण झा



संगीत भाष्कर राजकुमार श्यामानन्द सिंह १९१६-१९९४



मिथिलेश कुमार झा, तबला वादन



नागेश्वर लाल कर्ण, तबला वादक



बाबू साहेब चौधरी 1916-1998

दरभंगा जिलाक दुलारपुर गामक। १९४३ ई. मे जीविकार्थ कलकत्ता अएलाह। नवम कक्षामे स्वराज्य आन्दोलनमे बाझि कए शिक्षाक इतिश्री। कलकत्तामे स्थानीत मैथिल संघमे प्रवेश। कलकत्तामे मैथिली आर्ट प्रेस. ९/१, खिलात घोष लेन, कलकत्ता-७००००६ सँ मैथिली-मिथिला आन्दोलनमे सक्रिय। कुहेस आ चाणक्य दूटा नाटक। १९७१-७९ धरि मिथिला दर्शन आ मैथिली दर्शन मैथिली मासिकक सम्पादन।



लक्ष्मण (लखन) झा 1916-2000

मिथिला राज्य अभियानी।



शुद्धदेव झा 'उत्पल' 1916-

गोड्डा जिलाक अलखदत्त-महेनपुरक निवासी। जन्म १६ अक्टूबर १९१६ ई.।



रामचरित्र पाण्डेय "अणु" १९
१७-२०१०



लक्ष्मीनाथ झा मिथिला चित्रकला 191
7-1990



उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'
1917-2002

जन्म स्थान-हरिपुर
वकशीटोल, मधुबनी, बिहार ।
१९६९- उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'
(दू पत्र, उपन्यास) लेल साहित्य
अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।
साहित्य अकादेमीक अनुवाद
पुरस्कार प्राप्त । प्रकाशित कृति:
कुमार, दू पत्र
(उपन्यास), विडंबना, भजना
भजले (कथा-संग्रह), पतन
संन्यासी, प्रतीक
(काव्य), महाभारत (पहिल दू
पर्व) आदि।



मनमोहन झा 1918-2009

जन्म
सरिसबमे, अश्रुकण, वीरभोग्या, मिथिलाक
निशापुरमे। २००९- स्व.मनमोहन
झा (गंगापुत्र, कथासंग्रह)पर मृत्योपरांत
साहित्य अकादमी पुरस्कार।



ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'
1918-1986

जन्म स्थान-बहेड़ा, दरभंगा बिहार ।
१९७३- ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'
(नैका बनिजारा, उपन्यास) लेल
साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ
सम्मानित । उपन्यासकार, कथाकार
ओ कवि । प्रकाशित कृति:
कोब्रागर्ल, कनकी, अर्द्धनारीश्वर, लोरिक
विजय, नैका-बनिजारा, लवहरि-
कुशहरि, राय रणपाल, आदिम गुलाम
आदि उपन्यास ओ कंठहार (नाटक)
आदि।



पं. सहदेव झा १९१९-

"मिथिला की धरोहर" पोथी
प्रकाशित ।



बुद्धिधारी सिंह रमाकर 1919-1991

जन्म मधुबनीमे 1919 ई. मे भेल । अपन पिता स्व. क्षेमधारी सिंहसँ विभिन्न विषयक शिक्षा ग्रहण कएलन्हि । ई रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीक मैथिली विभागाध्यक्ष छलाह । जतएसँ अवकाश प्राप्त कएलन्हि । बाल्या-वस्थहिसँ ई कविकार्यमे लागल रहलाह अछि । संस्कृत तथा मैथिली दुनू भाषामे हिनक रचना प्रकाशित अछि । यथा **मैथिलीमे प्रयास** (कथा-संग्रह), **मधुमती**, **अमरबापू** (कविता-संग्रह), **शरशय्या** (खंड-काव्य) **स्मृति साहस्री** (महाकाव्य) आदि ।



आचाचरण झा 1920-



चन्द्र भानु सिंह 1922-

२००४- चन्द्रभानु सिंह (शकुन्तला, महाकाव्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



सुधांशु शेखर चौधरी 1922-1990

जन्म दरभंगाक मिश्रटोलामे 1922 ई. मे भेलन्हि तथा मृत्यु 1990 ई. मे भेलन्हि । किछु दिन विभिन्न जीविकामे रहि पश्चात् साहित्यकारक जीवन प्रारम्भ कएल । किछु दिन **बैदेही**क सम्पादन श्री सुमनजी एवं श्री कृष्णकान्त मिश्रजीक संग कएल तत्पश्चात् 1960 ई. सँ 1982 ई. धरि पटनामे **मिथिला मिहिर**क सफल सम्पादन कएल । हिनक दू गोट नाट्यकृति-**भफाइत** चाहक जिनगी, **लेटाइत आँचर**, तथा **पहिल साँझ** हिनक नाटकक नीक व्यावहारिक अनुभवक परिचायक अछि । छद्मनामसँ हिनक दू गोट उपन्यास **मिहिर**मे प्रकाशित भेल अछि । हिनक उपन्यास ई वतहा



गोविन्द झा 1923-

जन्मस्थान- इसहपुर, सरिसब पाही, मधुबनी, बिहार । सिद्ध कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, भाषा वैज्ञानिक ओ अनुवादक। साहित्य अकादेमी पुरस्कार, साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित। बिहार सरकारसँ कामिल बुल्के पुरस्कार, ग्रियर्सन पुरस्कार आदिसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: उपन्यास, नाटक, कथा, कविता, भाषा विज्ञान आदि विभिन्न विधामे अइतीस टा पोथी प्रकाशित । प्रकाशन: सामाक पौती, नेपाली साहित्यक इतिहास (अनु) आदि । १९९३- गोविन्द झा (सामाक पौती, कथा)पुस्तक लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । १९९३- गोविन्द झा (नेपाली साहित्यक इतिहास-कुमार



योगानन्द झा 1923-1986

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक कोइलख ग्राममे 1923 ई. मे भेलन्हि । मृत्यु 1986 मे भेलनि । अग्रेजीमे एम. ए. कएलाक पश्चात् ई किछु दिन चन्द्रधरी मिथिला कॉलेजमे प्राध्यापक रहलाह । बिहार प्रशासनिक सेवामे 1981 धरि विभिन्न पदपर कार्य कएल । तत्पश्चात् मैथिली अकादमीक निदेशक **84** धरि । योगानन्द झाजी मैथिली साहित्यमे अपन उपन्यास **भलमानुस** एवं **पवित्रा**क हेतु ख्यात छथि । हिनक नाटक **मुनिक मतिभ्रम** एवं कथा संग्रह **उड़ैत वंशी** यथेष्ट प्रतिष्ठा प्राप्त कएने अछि । एकर अतिरिक्त ई महात्मा गान्धीक आत्मकथाक अनुवाद एवं **आमक जलखरी** नामक एक

संसार जे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल आ जाहि पर 1980 क साहित्य अकादमीक पुरस्कार देल गेल ।



रामकृष्ण झा 'किसुन'
1923-1970

आधुनिक धाराक विशिष्ट कवि, कथाकार, चिन्तक । प्रकाशित कृति: आत्मनेपद (कविता संग्रह), मैथिली नवकविता (सम्पादन)।

प्रधान, अंग्रेजी) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2006 सँ सम्मानित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१० (समग्र योगदान लेल)



उमानाथ झा 1923-
2009

जन्म:-01-01-1923, मृत्यु 07-12-2009 महारैल, भधुबनी । भूतपूर्व अडरेजी विभागाध्यक्ष एवं प्रति-कुलपति मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा । रचना:-रेखाचित्र, अतीत (कथा संग्रह); मैथिली नवीन साहित्य, इन्द्र धनुष, विद्यापति गीतशती (सम्पादन)। १९८७- उमानाथ झा (अतीत, कथा) पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

कथा संग्रहक सम्पादन सेहो कएने छथि ।



जटाशंकर दास 1923-
2006



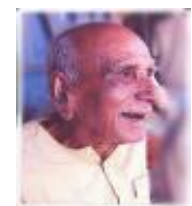
प्रबोध नारायण सिंह 1924-
2005

हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, पाली एवं फारसीक विद्वान्। मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक ई अनन्य भक्त छथि । कलकत्ता रहि मिथिला दर्शन, मैथिली कविता, मैथिली रंगमंच आदि पत्रिकाक प्रकाशनक माध्यमसँ श्री प्रबोधजी मैथिलीक जे सेवा कएल अछि तकर वर्णन थोड़ेमे सम्भव नहि ।



मदनेश्वर मिश्र 1924-
2004

"एक छलीह महारानी" प्रकाशित।



अमोघ नारायण झा "अमोघ"
1924-

अनेक बडला कृतिक ई अनुवाद सेहो कएल अछि ।हिन्दीमे सेहो हिनक कविता संग्रह प्रकाशित अछि ।कलकत्ता विश्वविद्यालयमे हिन्दीक पूर्व अध्यक्ष। २००२- डॉ. प्रबोध नारायण सिंह (पतझड़क स्वर- कुर्तुल ऐन हैदर, उर्दू) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



मुरलीधर सिंह, ब्रजमोहन ठाकुर, शुभंकर झा, मदनेश्वर मिश्र 1924-2004, ललित नारायण मिश्र, देवनाथ राय



मतिनाथ मिश्र मंतंग 1924-



आनन्द मिश्र 1924-2007



डॉ. जयमन्त मिश्र १९२५-२०१०

जन्म १५-१०-१९२५ मृत्यु ०७-०९-२०१०, गाम-ढंगा-हरिपुर-मजरही।

१९९५- जयमन्त मिश्र (कविता कुसुमांजलि, पद्य) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार- मैथिली।



चन्द्रनाथ मिश्र अमर 1925-

जन्म: खोजपुर, मधुबनी । वरिष्ठ कवि, कथाकार-उपन्यासकार । हास्य-व्यंग्यक कवितामे बेजोड़। मैथिलीक लेल समर्पित व्यक्तित्व । पांच दर्जनसं बेसी कथा आ विदागरी, वीरकन्या (उपन्यास) जल समाधि (कथा संग्रह) प्रकाशित ।१९८३- चन्द्रनाथ मिश्र अमर (मैथिली पत्रकारिताक इतिहास) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। एम. एल. एकेडमी, लहेरिरियासरायसं शिक्षकक रूपमे अवकाश प्राप्त। आशा दिशा, गुदगुदी, युगचक्र, उनटा पाल आदि कविता संग्रह प्रकाशित। १९९८- चन्द्रनाथ मिश्र अमर (परशुरामक बीछल बेरायल कथा- राजशेखर बसु, बांग्ला) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। चन्द्रनाथ मिश्र अमर २०१० मे मैथिली साहित्य लेल साहित्य अकादेमीक



मुक्तिनाथ झा (1926-2009)



शुभंकर झा 1926-

फेलो (भारत देशक सर्वोच्च साहित्यक पुरस्कार)।



दीनानाथ पाठक 'बन्धु'
1928-1962



अनंत बिहारी लाल दास "इन्दु"
1928-2010

२००७- अनन्त बिहारी लाल दास ❖इन्दु❖
(युद्ध आ योद्धा-अगम सिंह
गिरि, नेपाली)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली
अनुवाद पुरस्कार।



कृष्णकान्त मिश्र १९२८-
२०००



जगदानन्द झा 1928-



दुर्गानाथ झा "श्रीश"

हिनकर जन्म मधुबनी
जिलाक विट्टो गाममे १९२९
ई. मे भेलन्हि। हिन्दी आ
मैथिलीमे एम.ए. आ बी.एड.
केलाक बाद किछु दिन
स्कूलमे अध्यापन, फेर
मिल्लत
कॉलेज, लहेरियासरायमे
मैथिली आ हिन्दी विभागक
अध्यक्ष। मैथिली भाषामे
पहिल पी.एच. डी.। "श्रीश"
जीक मैथिलीमे प्रकाशित
रचना अछि- "मैथिली
साहित्यक इतिहास", "भुवन
भारती" (सम्पादन),
"महामत्स्य ओ मनु"
(कविता), "नाट्य कथा
सार"(सम्पादन),
"पुरुषार्थ"(पद्य नाटक) आ
अनेक कविता, एकांकी आ
आलोचनात्मक निबन्ध।



राजकमल चौधरी 1929-1967

महिषी, सहरसा। रचना:- आदि कथा, आन्दोलन, पाथर फूल (उपन्यास), स्वरगंधा (कविता संग्रह), ललका पाग (कथा संग्रह), कथा पराग (कथा संग्रह सम्पादन)। हिन्दीमें अनेक उपन्यास, कविताक रचना, चौरङ्गी (बडला उपन्यासक हिन्दी रूपान्तर) अत्यन्त प्रसिद्ध।



विश्वनाथ झा "विषपायी" 1929-2005

"राम सुयश सागर" (मैथिली रामायण) १९८० ई. में प्रकाशित। २५ जनवरी २००५ कें मृत्यु।



जयधारी सिंह 1929-2007

समीक्षक, कवि । प्रकाशन: बौद्धगानमें तांत्रिक सिद्धांत, समीक्षा शास्त्रा अदि । रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीमें मैथिली विभागक पूर्व अध्यक्ष ।



शैलेन्द्र मोहन झा 1929-1994

१९९२- शैलेन्द्र मोहन झा (शरतचन्द्र व्यक्ति आ कलाकार-सुबोधचन्द्र सेन, अंग्रेजी) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



विजयनाथ ठाकुर 1929-2008



रमेशचन्द्र वर्मा 1930-



गोपालजी झा 'गोपेश' 1931-2008

जन्म मधुबनी जिलाक मेहथ गाममें १९३१ ई.में भेलन्हि। हिनकर रचित सोन दाइक चिह्नी, गुम भेल ठाढ़ छी, एलबम



विवेकानन्द ठाकुर 1931-

२००५- विवेकानन्द ठाकुर (चानन घन गछिया, पद्य) मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



ताराकांत मिश्र 1931-

◆आब कहू मन केहन लगेए◆, "मखानक पात" प्रकाशित भेल जाहिमे सोनदाइक चिट्ठी बेश लोकप्रिय भेल।२००६ ई.-श्री गोपालजी झा गोपेश, मेंहथ, मधुबनी;यात्री-चेतना पुरस्कार।



ललित 1932-1983

जन्म स्थान बसेठ चानपुरा मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार ओ उपन्यासकार । प्रकाशित कृति: प्रतिनिधि, (कथा संग्रह), पृथ्वी-पुत्र (उपन्यास) आदि।



मुरारि मधुसूदन ठाकुर 1932-

ताराशंकर बंदोपाध्यायक बंगला उपन्यास "आरोग्य निकेतन"क मैथिली अनुवाद लेल साहित्य अकादमीक अनुवाद पुरस्कार 1999 भेटल छन्हि।



विद्यानारायण ठाकुर 1933-



धूमकेतु 1932-2000

जन्म स्थान कोइलख, मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार ओ कवि । प्रकाशित कृति : दू टा कथा संग्रह ओ एक टा उपन्यास ।



राजमोहन झा 1934-

जन्म स्थान कुमरबाजितपुर, वैशाली, बिहार । प्रख्यात कथाकार ओ संपादक । आइ काल्हि परसू (कथा-संग्रह) लेल १९९६ मे साहित्य अकादेमीसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति : एक आदि एकांत, झूठ साँच, एकटा तेसर, अनुलग्नक, आइ काल्हि परसू (कथा संग्रह), गलतीनामा, भनहि विद्यापति, टीप्पणीत्यादि (आलोचना)। ◆आरम्भ◆ पत्रिकाक संपादन।प्रबोध सम्मान 2009 सँ सम्मानित।



डॉ. धीरेन्द्र 1934-2004

जन्म स्थान लोहना, मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: कुहेस आ किरण, पड़ाइत घूरक आगि, शतरूपा ओ मनु अपन मन्दिर (कथासंग्रह) हैंगरमे टाँगल कोट, काल्हि ओ आइ (कविता संग्रह) सहित कैक विधामे विभिन्न पोथी।



रमेश नारायण १९३४- २०११

नाम- रमेश नारायण दास, जन्म १५ मार्च १९३४ कें मधुबनीक बहेरा गाममे। पिता- श्री हरिवल्लभ लाल दास। शिक्षा मधेपुर, मधुबनी आ पटनामे। १९६१ ई.सँ १९९४ ई. धरि ए.एन. कॉलेज, पटनामे हिन्दी विभागमे अध्यापन। पाथरक नाव (मैथिली कथा संग्रह, १९७२) प्रकाशित। मृत्यु १२ जनवरी २०११ कें पटनामे।



बाबू श्री सत्यनारायण सिंह आ राघवा चार्य



मायानन्द मिश्र 1934-

हिनक जन्म १७ अगस्त १९३४ ई. कें सुपौल जिलाक बनैनियाँ गाममे भेलनि। भाङ्क लोटा, आगि मोम आ पाथर आओर चन्द्र-बिन्दु-हिनकर कथा संग्रह सभ छन्हि। बिहाड़ि पात पाथर, मंत्र-पुत्र, खोता आ चिड़ै आ सूर्यास्त हिनकर उपन्यास सभ अछि। दिशांतर हिनकर कविता संग्रह अछि। एकर अतिरिक्त सोने की नैय्या माटी के लोग, प्रथमं शैल पुत्री च, मंत्रपुत्र, पुरोहित आ स्त्री-धन हिनकर हिन्दीक कृति अछि। १९८८- मायानन्द मिश्र (मंत्रपुत्र, उपन्यास) पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

प्रबोध सम्मान 2007सँ सम्मानित।



तारानन्द तरुण १९३५- २०११



सोमदेव 1934-

उपन्यासकार ओ कवि । साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: चानोदाइ, होटल अनारकली (उपन्यास), काल ध्वनि (कविता संग्रह), चरैवेति (गीति नाट्य) सोम सतसइ (दोहा)। २००२- सोमदेव (सहस्रमुखी चौक पर, पद्य) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार। २००१ ई. - श्री सोमदेव, दरभंगा; यात्री-



राजनन्दन लाल दास 1934-

"कर्णामृतक"क सम्पादन। "चित्रा-विचित्रा" प्रकाशित।



रमानन्द रेणु 1934-2011

जन्म स्थान
उसमामठ, दरभंगा, बिहार ।
वरिष्ठ कवि, कथाकार ओ
उपन्यासकार। साहित्य
अकादेमी पुरस्कारसँ
सम्मानित। प्रकाशित कृति:
कचोट, त्रिकोण, अंतहीन
आकाश (कथा-संग्रह), दूधफूल
(उपन्यास), अंततः, ओकरे
नाम (कविता-संग्रह)।
२०००- रमानन्द रेणु (कतेक
रास बात, पद्य)लेल साहित्य
अकादमी पुरस्कार। विदेह
सम्पादकक समानान्तर
साहित्य अकादेमी फेलो
पुरस्कार २०११ (समग्र
योगदान लेल)

चेतना पुरस्कार, प्रबोध साहित्य
सम्मान २०११।



कालीकांत झा "बूच" 1934-2009

हिनक जन्म, महान दार्शनिक
उदयनाचार्यक कर्मभूमि
समस्तीपुर जिलाक करियन
ग्राममे 1934 ई. मे भेलनि ।
पिता स्व. पंडित राजकिशोर
झा गामक मध्य विद्यालयक
प्रथम प्रधानाध्यापक छलाह ।
माता स्व. कला देवी गृहिणी
छलीह । अंतरस्नातक
समस्तीपुर
काॅलेज, समस्तीपुरसँ
कयलाक पश्चात् बिहार
सरकारक प्रखंड कर्मचारीक
रूपमे सेवा प्रारंभ कयलनि ।
बालहिं कालसँ कविता
लेखनमे विशेष रुचि छल ।
मैथिली पत्रिका - मिथिला
मिहिर, माटि - पानि, भाखा
तथा मैथिली अकादमी पटना
द्वारा प्रकाशित पत्रिकामे
समय - समय पर हिनक
रचना प्रकाशित होइत रहलनि
। जीवनक विविध विधाकें
अपन कविता एवं गीत
प्रस्तुत कयलनि । साहित्य
अकादमी दिल्ली द्वारा
प्रकाशित मैथिली कथाक
विकास (संपादक डाॅ
बासुकीनाथ झा) मे हास्य
कथा कारक सूची मे डाॅ
विद्यापति झा हिनक
रचना ❖❖धर्म शास्त्राचार्यक
उल्लेख कयलनि । मैथिली
अकादमी पटना एवं मिथिला
मिहिर द्वारा प्रशंसा पत्र भेजल
जाइत छल ।श्रृंगाररस एवं
हास्य रसक संग-संग विचार
मूलक कविताक रचना सेहो
कयलनि । डाॅ दुर्गानाथ झा
श्रीश संकलित मैथिली



श्याम चन्द्र 1934-

उपन्यास "रूपा
दीदी" प्रकाशित। गाम
मलंगिया, जिला- मधुबनी।



डोरीलाल शर्मा "श्रोत्रिय" १९ ३५-

"मिथिला की पाण्डित्य परम्परा" पोथी
प्रकाशित ।

साहित्यक इतिहासमे कविक
रूपमे हिनक उल्लेख कएल
गेल अछि । **प्रकाशित**
कृति (मृत्योपरान्त)
: कलानिधि- कविता-संग्रह।



रामभद्र, धनुषा, नेपाल १९३५- २०२०

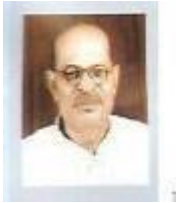
साहित्य तथा अन्यान्य क्षेत्रक कतोक सफल
व्यक्तिसभ अपन प्रेरणास्रोत आ पथ-प्रदर्शक
मानैत छथि । मैथिली साहित्य-क्षेत्रमे
हिनक परिचयक मादे एतबाए कहब पर्याप्त
होएत जे मैथिलीक मूर्द्धन्य साहित्यकार डा.
धीरेन्द्र हिनका मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ
कथाकार मानैत छथि । हिनक कथामे
प्रतीकात्मकताक अदभुत प्रयोगहिटा
नहि, अपितु एकटा आदर्श कथाक समस्त
वैशिष्ट्यसभविद्यमान रहैत अछि । कथाकारक
अतिरिक्त ई उत्कृष्ट समालोचक, नाटककार
आ कवि सेहो छथि । नेपालमे मैथिलीक
पहिल मोनोड्रामा लिखबाक श्रेय सेहो हिनका
जाइत छनि । सामाजिक कुरीतिसभकेँ
कुशलतासँ चित्रण करबामे, चिन्तनीय
बनएबामे आ मन-मस्तिष्कपर अमिट छाप
छोड़बामे रामभद्र सिद्धहस्त छथि । धनुषा
जिलाक कुर्या गाममे जनमल रामभद्रक पूर्ण
नाम रामभद्र कर्ण छनि । अग्रजरेजी
विषयक अवकाशप्राप्त शिक्षक रामभद्र
व्याकरण, पाठ्यपुस्तक आ सहायक
पुस्तकसभ लिखबाक काजमे निरन्तर
सक्रिय छथि।



केदारनाथ चौधरी (१९३६-)

मैथिलीक पहिल फिल्म
'ममता गाबय गीत' केर
निर्माता द्वयमेसँ एकटा
निर्माता छथि केदारनाथ
चौधरी आ दोसर मदनमोहन
दास। बादमे आर्थिक
मजबूरीवश तेसर सहनिर्माता
भेलखिन उदयभानु सिंह।
माता-स्व. कुसुमपरी देवी,
पिता- स्व. किशोरी चौधरी,
जन्म: ०३/०१/१९३६

या.+पत्रा. नेहरा (दरभंगा),
अन्य पारिवारिक सदस्य-
पत्नी-श्रीमती कुमुद चौधरी,
संतान- प्रथम पुत्री-श्रीमती
किरण झा, द्वितीय पुत्री-
श्रीमती अर्चना चौधरी, शिक्षा-
१९५८ ई.मे अर्थशास्त्रमे
स्नातकोत्तर, १९५९ ई.मे लॉ।
१९६९ ई.मे कैलिफोर्निया
वि.वि.सँ अर्थशास्त्र मे
स्नातकोत्तर, १९७१ ई.मे
मार्केटिंग एंड डिस्ट्रीब्यूशन
विषयमे गोल्डेन गेट
यूनिवर्सिटी,
सानफ्रांसिस्को, USA सँ
एम.बी.ए., १९७८ मे भारत
आगमन। १९८१-८६ क बीच
तेहरान आ फ्रैंकफुर्टमे। फेर
बम्बई, पुणे होइत
रिटायरमेंटक बाद २००० सँ
लहेरियासराय, दरभंगामे
निवास। ६ टा उपन्यास-
चमेलीरानी २००४, करार
२००६, माहूर २००८, अबारा



जीवकांत 1936-

नाम- जीवकान्त झा, पिता- गुणानन्द झा, माता-महेश्वरी देवी, जन्म-२५.०७.१९३६ अभुआढ़, जिला-सुपौल। नौकरी- विज्ञान शिक्षक (उ.वि.खजौली १९५७-८१), हिन्दी शिक्षक (उ.वि.डेओढ़ एवं उ.वि.पोखराम १९८१-९८)। पहिल रचना-इजोड़िया आ टिटही (कविता, जनवरी १९६५ मिथिला मिहिर)। पहिल छपल पोथी- दू कुहेसक बाट (उपन्यास १९६८)। नूतन पोथी-खिखिरक बीअरि (२००७ बाल पद्य कथा), अठन्नी खसलइ वनमे (पद्य-कथा संग्रह) आ पंजरि प्रेम प्रकासिया (जीवन-वृत्तक अंश)। पुरस्कार-साहित्य अकादेमी 1998 तकै अछि चिड़ै, पद्य, किरण सम्मान (१९९८), वैदेही सम्मान (१९८५)। प्रकाशित पोथी-

कविता संग्रह: नाचू हे पृथ्वी (७१), धार नहि होइछ मुक्त (९१), तकैत अछि चिड़ै (९५), खाँड़ो (१९९६), पानिमे जोगने अछि बस्ती (९८), फुनगी नीलाकाशमे (२०००), गाछ झूल-झूल (२००४), छाह सोहाओन (२००६), खिखिरक बीअरि (२००७)



देवकांत झा 1936-

नहितन २०१२, हीना २०१३, अयना २०१८. सम्मान- १) विदेह साहित्य सम्मान, बर्ख- २०१३ (झारखंड मैथिली मंच, राँची द्वारा), २) प्रबोध साहित्य सम्मान, बर्ख-२०१६ आ ३) केदार सम्मान, बर्ख- २०१६, 'अबारा नहितन' लेल।



डॉ अमरेश पाठक 1936-

हिनक जन्म सीतामढ़ी जिलाक अन्तर्गत सामारि ग्राममे १९३६ मे भेलन्हि । १९५७ मे पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीक एम. ए. परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथमस्थान पाओल । १९५७ सँ १९६० धरि रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनीमे व्याख्याता रूपेँ तकरा बाद पटना विश्वविद्यालयमे व्याख्याता रूपमे कार्य करए लगलाह । पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली विभागाध्यक्ष रूपेँ । मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन शोध प्रबन्धपर हिनका बिहार विश्व-विद्यालय द्वारा डि. लिट्क उपाधि भेटलन्हि । ई शोध प्रबन्ध पुस्तकाकार रूपेँ सेहो प्रकाशित भेल अछि बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक विद्यापति ग्रन्थावलीक सम्पादक मण्डलक सदस्य । हिनक अन्य प्रकाशित रचना अछि निबन्ध संकलन । एकरा छोड़ि विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक कतेको निबन्ध प्रकाशित छन्हि । मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहक इहो एक सम्पादक छथि । ई अधिकतर उच्च स्तरीय आलोचनात्मक निबन्ध लिखैत छथि । २०००- डॉ. अमरेश पाठक, (तमस- भीष्म साहनी, हिन्दी) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

कथा-संग्रह: एकसरि ठाढ़ि कदम
तर रे (७२), सूर्य गलि रहल
अछि (७५), वस्तु (८३), करमी
झील (९८)

उपन्यास: दू कुहेसक
बाट (६८), पनिपत (७७), नहि, कतहु
नहि (७६), पीयर गुलाब
छल (७९), अगिनबान (८९)

हिन्दी अनुवाद- निशान्त की
चिड़िया (तकैत अछि
चिड़ै, साहित्य अकादमी, दिल्ली
२००३)।

प्रबोध सम्मान २०१० सँ
सम्मानित।



बलराम १९३६-
२००८

जन्म स्थान
पचही, मधुबनी, बिहार ।
विशिष्ट कथाकार । प्रकाशित
कृति : दकचल देबाल (कथा-
संग्रह)।



रवीन्द्र नाथ ठाकुर १९३६-



मैथिलीपुत्र प्रदीप १९३६-

ग्राम- कथवार, दरभंगा। प्रशिक्षित
एम.ए., साहित्य रत्न, नवीन
शास्त्री, पंचाग्नि साधक। हिनकर
रचित "जगदम्ब अहीं अवलम्ब
हमर" आ "सभक सुधि अहाँ लए छी
हे अम्बे, हमरा किए बिसरै छी यै"
मिथिलामे लेजेंड भए गेल अछि।



वीरेन्द्र मल्लिक १९३७-



रामदेव झा १९३६-

कथाकार, समीक्षक, अनुवादक, ग्रंथ
सम्पादक । साहित्य अकादेमीक
मूल एवं अनुवाद पुरस्कार प्राप्त
कर्ता ल. ना. मिथिला
विश्वविद्यालय दरभंगाक मैथिली
विभागक पूर्व प्राचार्य । प्रकाशन:
पसिझैत पाथर, (अनु.) आदि ।
१९९१- रामदेव झा (पसिझैत
पाथर, एकांकी) लेल साहित्य
अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित
। १९९४- रामदेव
झा (सगाइ- राजिन्दर सिंह
बेदी, उर्दू) लेल साहित्य अकादेमी
मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



जन्म पूर्णिया जिलाक धमदाहा ग्राममे 1936 ई. मे भेलन्हि । नेने अवस्थासँ गीत गएबामे एवं कविता लिखबामे विशेष रुचि । कोनो मंच पर ठाढ़ भेला पर ई सहजहि श्रीताकेँ आह्लादित करैत छथि । हिनक सात गोट मैथिलीक गीत संग्रह, एक मिनी महाकाव्य, एक प्रयोगधर्मी काव्य, एक उपन्यास, एक नाटक एक राति एवं एक हिन्दी नाटक, प्रकाशित भेल छन्हि ।



कीर्तिनारायण मिश्र 1937-

जन्म १७ जुलाई १९३७ ई. केँ ग्राम शोकहारा (बरौनी), जिला बेगूसरायमे भेलन्हि। हुनकर प्रकाशित कृति अछि सीमान्त, महानगर (दीर्घ कविता), हम स्तवन नहि लिखब, ध्वस्त होइत शांति स्तूप (एहि पोथीपर साहित्य अकादमी 1997 पुरस्कार), आदमीकेँ जोहैत (कविता संग्रह)। संस्मरण-अपन एकांतमे, स्मृति यात्रा, पत्रक दर्पणमे। सम्पादन- आखर मासिक पत्रिका, आधुनिक मैथिली साहित्य, '63, राजकमल जीवन आ साहित्य, '68, कथा-संकलन- काल कोठी। आलोचना- अर्थातर-2004



प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' 1938-

ग्राम+पोस्ट- हसनपुर, जिला- समस्तीपुर। मैथिलीमे १. नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास (विराटनगर, १९७२ई.), २. ब्रह्मग्राम (रिपोर्टाज दरभंगा १९७२

बिनोद बिहारी वर्मा 1937-2003

मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण, बलानक बोनहार ओ पल्लवी तथा अन्य कथा (कथा संग्रह)



गौरीकांत चौधरीकांत 1937-2001

जन्म-

3 जनबरी 1937 ई. परसौनी, मधुबनीमे। कवि, सम्पादक, समीक्षक । आखर, अग्निपत्रक सम्पादन । अग्नि-शिखा (कविता संग्रह)।



युगल किशोर मिश्र १९३८-२००७

मैथिली शब्दकोष।



महेश्वरनाथ मल्लिक 1938-



परशुराम झा १९३८-

ग्राम- मेंहथ (मधुबनी), कृति- डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन इंग्लिश ड्रामा, क्रिश्चियन पोएटिक ड्रामा।

ई.), ३. **मैथिली** त्रैमासिक सम्पादन (विराटनगर, नेपाल १९७०-७३ई.), ४. मैथिलीक नेनागीत (पटना, १९८८ ई.), ५. नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य (पटना, १९९८ ई.), ६. प्रेमचन्द चयनित कथा, भाग- १ आऽ २ (अनुवाद), ७. वाल्मीकिक देशमे (महनार, २००५ ई.)। २००४- डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह **मौन** (प्रेमचन्द की कहानी- प्रेमचन्द, हिन्दी) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



कुलानन्द मिश्र 1940-2000

जन्म पकड़ी कोठी, सीतामढ़ी, बिहार। सुविख्यात कवि., संपादक, समालोचक। प्रकाशित कृति- तावत एतबे, भोरक प्रतीक्षामे (कविता संग्रह), भारतक भाषा सर्वेक्षण, पारो, राजकमल चौधरी की ग्यारह कहानियाँ (अनुवाद)।



गुणनाथ झा

गुणनाथ झा "लोक मञ्च" मैथिली नाट्य पत्रिकाक संचालन- सम्पादन केने छथि। मैथिलीमे आधुनिक नाटकक प्रणयन। हुनकर नाटक सभ अछि:

मधुयामिनी: एकाङ्क नाट्य शैलीमे दूटा पात्र, पुरुष संयुक्त परिवारक पक्ष लेनिहार आ स्त्री तकर विरोधी।



बिलट पासवान 'विहंगम' 1940-

जन्म मधुबनी जिलाक एकहत्था ग्राममे १९४० ई. मे भेलन्हि।



प्रभास कुमार चौधरी 1941-1998

गाम- पिंडारुछ, जिला- दरभंगा। प्रख्यात कथाकार ओ उपन्यासकार। प्रभासक प्रकाशित कृति : कथा-प्रभास, प्रभासक कथा, नव घर उठय पुरान घर खसय, दिदवल (कथासंग्रह), अभिशप्त, युगपुरुष, हमरा लग रहब, नवारम्भ, राजा पोखरिमे कतेक मछरी (उपन्यास)। विभिन्न महत्वपूर्ण



फजलुर रहमान हासमी 1940-2011

जन्म-पटना जिलाक बराह गाममे। वृत्ति अध्यापक। हिन्दी कविता संग्रह "रश्मि राशि" आ मैथिली कविता संग्रह "निर्मोही" प्रकाशित। १९९६मे अबुलकलाम आजाद- अब्दुलकवी देसनवी, उर्दूसँ मैथिली अनुवादपर साहित्य अकादमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



साकेतानन्द 1940-

वरिष्ठ कथाकार, गणनायक (कथा-संग्रह) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: मैथिली कथा साहित्यमे 1962 सँ सक्रिय। गोडेक चालिस_पचास टा कथा, रिपोर्टाज. संस्मरण, यात्रा_विवरण मैथिलीमे प्रकाशित अधिकांश पत्र_पत्रिकामे छपल। पहिल मैथिली

पाथेयः एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित, मुदा पूर्णाङ्कक सभ विशेषता ऐमे भेटत। मुख्य अभिनेता मिथिलाक अधोगतिसँ दुखी भऽ गामकें कर्मस्थली बनबैत छथि, स्वजन विरोध करै छथि।

लाल-बुझक्करः एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित। दाही रौदीसँ झमारल निम्न आ मध्य-निम्न वर्ग स्वतंत्रताक पहिनहियो आ बादो जीविकोपार्जन लेल प्रवास करब लेल अभिशप्त छथि।

सातम चरित्रः एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित। मैथिली रंगमंचपर महिला अभिनेत्रीक अभाव, सातम चरित्रक प्रतीक्षामे पूर्वाभ्यास खतम भऽ जाइत अछि।

शेष नजिः आधुनिक सामाजिक पूर्णाङ्क नाटक। पिता-माताक मृत्युक बाद अग्रजक अनुजक प्रति पितृवत व्यवहार।

आजुक लोकः पूर्णाङ्क नाटक। विषय निम्नमध्यवर्गीय बेरोजगारी आ बियाहक दायित्वक बोझ।

जय मैथिलीः पूर्णाङ्क नाटक। मिथिलाक भाषिक-सांस्कृतिक समस्या एकर कथावस्तु अछि।

महाकवि विद्यापतिः विद्यापतिक नव विक्षेपण।

पत्रिकाक सम्पादन । त्रैमासिक कथा गोष्ठी 'सगर राति दीप जरय' केर प्रारम्भ। १९९०- प्रभास कुमार चौधरी (प्रभासक कथा, कथा) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।

कथा ग्लेसियर
1962मे मिथिलामिहिरमे प्रकाशित । हिन्दियोमे दू दर्जन कथा आदि प्रकाशित । सन 99मे छपल पहिल कथा संग्रह गणनायक के ओही वर्ष साहित्य अकादमी पुरस्कार। पैघ बान्ध स अबैबला विपत्तिके रेखांकित करैत, पर्यावरण के कथा वस्तु बना क राजकमल प्रकाशन स प्रकाशित एवं अत्यंत चर्चित उपन्यास (डॉक्यूमेंट्री फिक्शन)
सर्वस्वांत । आकाशवाणीक राष्ट्रीय कार्यक्रममे प्रसारित दू टा उल्लेखनीय वृत्त रूपक महानन्दा अभयारण्य पर आधारित जंगल बोलता है एवं झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रक ज्वलंत डाइनक समस्या पर आधारित वृत्तरूपक नैना जोगन चर्चित एवं प्रसिद्ध ।



गंगेश गुंजन 1942-

जन्म स्थान- पिलखबाड़, मधुबनी। श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक बुधिबधियाक लेखक छथि आ हिनका उचितवक्ता (कथा संग्रह) क लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छन्हि। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हम एकटा मिथ्या परिचय, लोक सुनू (कविता संग्रह), अन्हार- इजोत (कथा



प्रेमशंकर सिंह 1942-

ग्राम+पोस्ट- जोगियारा, थाना- जाले, जिला- दरभंगा। मौलिक मैथिलीः १. मैथिली नाटक ओ रंगमंच, मैथिली अकादमी, पटना, १९७८ २. मैथिली नाटक परिचय, मैथिली अकादमी, पटना, १९८१ ३. पुरुषार्थ ओ विद्यापति, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर, १९८६ ४. मिथिलाक विभूति जीवन झा, मैथिली अकादमी, पटना, १९८७. नाटयान्वाचय, शेखर प्रकाशन, पटना २००२ ६. आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ ७. प्रपाणिका, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००५, ८. ईक्षण, ऋचा प्रकाशन भागलपुर २००८ ९. युगसंधिक प्रतिमान, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८ १०. चेतना समिति ओ



मार्कण्डेय प्रवासी 1942-2010

जन्म ग्रामः गरुआर, जिलाः समस्तीपुर । प्रकाशित कृतिः अगस्त्यायिनी (महाकाव्य); एतदर्थ (कविता संग्रह), अक्षर चेतना (काव्य संग्रह)। अभियान, हम कालिदास (उपन्यास)। अगस्त्यायिनी लेल १९८१मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त।

संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आइ भोर (नाटक) प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलांचल की लोक कथाएँ, मणिपद्मक नैका- बनिजाराक मैथिलीसँ हिन्दी अनुवाद आ शब्द तैयार है (कविता संग्रह)। १९९४- गंगेश गुंजन (उचितवक्ता, कथा) पुस्तक लेल सहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।



देवेन्द्र झा १९४३-

गाम- चानपुरा (मधुबनी), कृति- विद्यापतिक श्रृंगारिक पदक काव्यशास्त्रीय अध्ययन, लालदास, सुधाकर झा "शास्त्री", अनुभव, बदलि जाइछ घरे टा।

नाट्यमंच, चेतना समिति, पटना २००८। २००९ ई.-श्री प्रेमशंकर सिंह, जोगियारा, दरभंगा यात्री-चेतना पुरस्कार।



डॉ. भीमनाथ झा 1945-

जन्म:कोइलख, मधुबनी, बिहार । प्रखर कवि, समालोचक, प्राध्यापक । ♦विविधा♦निबन्ध पुस्तक लेल सन् १९९२मे सहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: त्रिधारा, वीणा, की फुरैए की नहि, नाम तँ थिक ओएह (कविता संकलन), परिचायिका, सीताराम झा, कवि चूड़ामणिक काव्य साधना, विविधा (निबंध, आलोचना), टावर चौकसँ आदि ।



महेन्द्र मलंगिया 1946-

गाम- मलंगिया, जिला- मधुबनी । मैथिलीक सुपरिचित नाटककार, रंग निर्देशक एवं मैलोरंगक संस्थापक अध्यक्ष । लोक साहित्य पर गंभीर शोध आलेख । मैथिलीमे 13टा नाटक, 19टा एकांकी, 14टा नुक्कड़ आ 10टा रेडियो नाटक प्रकाशित आ आकाशवाणी सँ प्रसारित । सीनियर फेलोशिप (भारत सरकार), इंटरनेशनल थिएटर इंस्टिट्यूट (नेपाल), प्रबोध साहित्य सम्मान आदि सँ सम्मानित । संप्रति ज्योतिरीश्वर लिखित मैथिलीक प्रथम पुस्तक वर्णरत्नाकर पर शोध कार्य । श्री महेन्द्र मलंगियाक जन्म २० जनबरी १९४६ मे मधुबनी जिलाक मलंगिया गाममे भेलन्हि। मलंगियाजी मैथिली हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली भाषाक जानकार आ थियेटर शिक्षण, पटकथा लेखन आ तत्सम्बन्धी शोधक फ्रीलान्स शिक्षक छथि। २००२ ई.- श्री महेन्द्र मलंगिया, मलंगिया; यात्री-चेतना पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2005 सँ सम्मानित।



डॉ राम दयाल राकेश, सर्लाही, नेपाल 1942-

मैथिली मातृभाषा, हिन्दीक प्राध्यापक आ नेपालीक लेखक ई तीन भाषा राकेशक व्यक्तित्वमे एना ने मिझराएल छैक जे कोनहुसँ हिनका भिन्न नहि कएल जा सकैत अछि । ई विशेषतः नेपालीमे लिखैत छथि, मुदा लेखनक विषय मूलतः मैथिलीए संस्कृति रहैत छनि । ओना मैथिली, हिन्दी आ अङ्ग्रेजीमे सेहो ई अनेक रचना कएने छथि । नेपालक राजकीय-प्रजा-प्रतिष्ठानक सदस्य राकेश दिल्ली विश्वविद्यालयसँ पीएचडी आ अमेरिकास्थित इण्डियाना यूनिभर्सिटीसँ पोस्ट डाक्टरल रिसर्च कएने छथि । डा. राकेशक जन्म २५ जुलाई १९४२ ई. कऽ सर्लाही जिलाक सिर्सौटियामे भेल छनि । नेपाली, मैथिली, हिन्दी आ अङ्ग्रेजीमे मौलिक, सम्पादित आ अनूदित कऽ करीब दू दर्जन पोथी प्रकाशित, दर्जनभरि देशक भ्रमण सेहो कएने छथि । नेपाल प्रजा प्रतिष्ठानक सदस्यता-श्री राम दयाल राकेश (1999)।



उपेन्द्र दोषी 1943-2001

जन्म स्थान रामपुर-कोरिगामा, दरभंगा । कवि-कथाकार, गीत-गजलकार । प्रकाशित कृति: यंत्रणाक क्षणमे (कविता संग्रह)। हिन्दीमे अनेक पोथी प्रकाशित। ओड़ियासँ मैथिली अनुवाद हेतु मृत्युपरान्त साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत। २००३- उपेन्द्र दोषी (कथा कहिनी- मनोज दास, उड़िया) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



उदयचन्द्र झा "विनोद" 1943-

जन्म 5 अप्रैल 1943 ई.। गाम- रहिका, मधुबनी । जन्म-ग्राम- दुलहा, मधुबनी । प्रकाशित कृति: संक्रान्ति, मौसम अयला पर, एहना स्थितिमे, भरि देह गौरा, एहि जनपदमे, दोहा तीन सय दू, कहलनि पत्नी, सहरजमीन, अपक्ष, प्रश्नवाचक (कविता-संग्रह), धूरी (सहयोगी कविता संग्रह); जाँत (कथा संग्रह), उदास गाछक वसंत (नाटक)। माटि पानिक वरेण्य सम्पादक। २००५ ई.-श्री उदय चन्द्र झा विनोदक रहिका, मधुबनी; यात्री-चेतना पुरस्कार।



रेवती रमण लाल, जनकपुर 1943-



मंत्रेश्वर झा 1944-

जन्म ६ जनवरी १९४४ ई.ग्राम-लालगंज, जिला-मधुबनीमे। प्रकाशित कृति: खाधि, अन्विचनहार गाम, बहसल रातिक इजोत (कविता संग्रह); एक बटे दू (कथा संग्रह), ओझा लेखे गाम बताह (ललित निबन्ध)। मैथिली कथा



रत्नेश्वर मिश्र 1945-

अनुवादक, निबंधकार । प्रकाशन: तमिल साहित्यक इतिहास, भवभूति (दुनू अनुवाद)।

संग्रहक हिन्दी
अनुवाद ◆कुंडली◆ नामसँ
प्रकाशित। दि. फूल्स
पैराडाइज (अंग्रेजीमे ललित
निबन्ध)। २००८ ई.-श्री
मंत्रेश्वर झा, लालगंज, मधुबनी
यात्री-चेतना पुरस्कार।
२००८- मंत्रेश्वर झा (कतेक
डारि पर, आत्मकथा) पर
साहित्य अकादमी पुरस्कार।



जगदीश प्रसाद मंडल

गाम-बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी।
एम.ए.। कथाकार (गामक जिनगी-कथा
संग्रह आ तरेगण-बाल-प्रेरक लघुकथा
संग्रह), नाटककार (मिथिलाक बेटी-
नाटक), उपन्यासकार (मौलाइल गाछक
फूल, जीवन संघर्ष, जीवन मरण, उत्थान-
पतन, जिनगीक जीत- उपन्यास)।
मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर
कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन
आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।
विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य
अकादेमी पुरस्कार २०११ मूल पुरस्कार-
श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक
जिनगी, कथा
संग्रह)। मैथिली उपन्यास 'पंगु' लेल साहित्य अ
कादमी पुरस्कार २०२१



राज



महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह 1858-1898



महाराजाधिराज रमेश्वर सिं ह 1860-1929



महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह 1907- 1962



सर हरगोविन्द मिश्र, अलीग ढ़ आ कामेश्वर सिंह



बिनोदानन्द झा 1895-
1971



ललित नारायण मिश्र 1922-
1975



डॉ. रामबरन यादव, नेपाल रा
ष्ट्रपति



स्वर्गीय विन्ध्येश्वरी प्रसाद
मंडल, राजनेता 1919-
1982



भूपेन्द्र नारायण मण्डल



कर्पूरी ठाकुर 1921-
1988



रामविलास पासवान १९४६-

जन्म ५ जुलाई १९४६, गाम-
शहरबन्नी, जिला खगड़िया। भारतीय
राजनीतिज्ञ।



राम लषण राम "रमण"



भोगेन्द्र झा



चतुरानन मिश्र



रमाकांत मिश्र



रमानाथ मिश्र "मिहिर"

"मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश" प्रका-
शित।



गजेन्द्र नारायण चौधरी, पत्रकार 1929-2008



मोहन भारद्वाज 1943-

गाम- नवानी, जिला- मधुबनी ।
मैथिलीक प्रखर समालोचक।२००७
ई.-श्री आनन्द मोहन
झा, भारद्वाज, नवानी, मधुबनी;यात्री-
चेतना पुरस्कार। प्रबोध
सम्मान 2008 सँ सम्मानित।



योगानन्द झा 1955-

२००५- डॉ. योगानन्द
झा (बिहारक
लोककथा- पी.सी.राय
चौधरी, अंग्रेजी)लेल साहित्य
अकादेमी मैथिली अनुवाद
पुरस्कार। **प्रकाशित**
कृति: लोकजीवन ओ लोक
साहित्य (निबन्ध)
1986, परिणीता (कथाकव्यांश)
1987, फकीर मोहन
सेनापति (अनुवाद)
2000, आलेख
सञ्चयन (निबन्ध)
2002, बिहारक
लोककथा (अनुवाद)
2003, स्नेहलता (विनिबन्ध)
2006, मैथिली पत्रकारिताकेँ
सौ वर्ष (निबन्ध)
2006, गहबरगीत (निबन्ध)
2007, लोक-साहित्य ओ शब्द-
सम्पदा (निबन्ध)
2007, मैथिलीक पारम्परिक
जातीय व्यवसायक
शब्दावली (शोध-ग्रन्थ) 2009



हीरानन्द झा "शास्त्री"
,पत्रकार



दीनानाथ झा, पत्रकार



नरेन्द्र झा, अर्थशास्त्र-
पत्रकार

"विकास ओ अर्थतंत्र" प्रकाशित।



प्रेमशंकर झा, पत्रकार



शरदिन्दु चौधरी, पत्रकार



राजेश्वर झा (१९२३-
१९७७)

जन्म- सहरसा जिलाक रसुआर
गाम (आब सुपौल जिला)।

कृति- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ
विकास, अवहट्ट: उद्भव ओ
विकास, मैथिली साहित्यक
आदिकाल, विद्यापतिक संगीतमे
वर्णित नायक-नायिका भेद एवं
राग-रागिनी वर्गीकरण।

महाकवि विद्यापति नाटक, शास्त्रार्थ
नाटक, कन्दर्पीघाट
नाटक, एकादशी, विद्याधर-
कथा, उर्वशी, धर्मव्याध- कथा, मेनका।



एस.एन.सत्यार्थी

मिथिलाक कला आ
शिल्पकलापर लेखन।



राधाकृष्ण चौधरी, इतिहासकार 1921-
1985

मिथिलाक इतिहास, A Survey of Maithili Literature,
THE POLITICAL AND CULTURALHERITAGE OF
MITHILA प्रकाशित।



प्रो. रामशरण शर्मा १९२०-
२०११



विजयकान्त मिश्र इतिहास
कार 1927-1994



द्विजेन्द्र नारायण झा, इतिहासकार



सुरेश्वर झा, राजनीति विज्ञान

२००१- सुरेश्वर झा (अन्तरिक्षमे
विस्फोट- जयन्त विष्णु

डॉ. विजयकांत मिश्रक जन्म १० अगस्त १९२७ मंगरौनी गाम - जे नव्य न्याय आ तांत्रिक साधनाक जन्म-स्थली अछि- (जिला मधुबनी) मे भेलन्हि। ओ 1948 मे प्राचीन भारतीय इतिहास आ संस्कृति विषयमे एलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ सनातकोत्तर उपाधि कएलाक बाद कतेक बरख धरि बिहार सरकार आ पटना विश्वविद्यालयसँ सम्बद्ध रहलाह आ 1957 ई.सँ भारतीय पुरातत्व विभागमे काज कएलन्हि आ ओकर शिशुपालगढ़, कौशाम्बी, वैशाली, हस्तिनापुर, कुम्हरार, पाटलिपुत्र, करियन, सोनपुर, बिलावली, नालन्दा, राजगीर, चन्द्रवल्ली, आ हम्पी खुदाइमे विभिना भूमिकामे भाग लेलन्हि। हिनकर लिखल-सम्पादित पोथी सभमे अछि: 1.वैशाली, 1950 2.कुम्हरार एक्सकेवेशंस: 1950-1957 3.पुरातत्व की दृष्टिमे वैशाली 4.नागेश भट्टाज पारिभाषेन्दुशेखर 5.मिथिला आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर (सम्पादित) 6.कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला 7.श्रृंगार भजनावली- एक अध्ययन 8.क्षेत्र पुरातत्वविज्ञान- 9.पुरातत्व शब्दावली।

नार्लीकर, मराठी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



भागीरथ लाल दास

भारतक एक देशमे राजदूत रहल छथि आ जी.ए.टी.टी. मे भारतक प्रतिनिधि सेहो छलाह।



लक्ष्मीकान्त झा रिजर्व बैंक गवर्नर 1913-1988



एन. एन. झा डिप्लोमेट



कामेन्द्रनाथ झा "अमल" 1938-



भाग्यनारायण झा 1941-



रमाकांत राय "रमा" 1947

जन्म- भादो पूर्णिमा
सम्बत् 2003, प्रथम रचना-

जन्म- 4 जनवरी 1938, गाम
कोइलख (मधुबनी)।
शिभांस (कथासंग्रह) प्रकाशित।



प्रोफेसर महेन्द्र 1947-

जन्म: भेलाही, सुपौल, बिहार ।
प्रसिद्ध कवि, कथाकार, आलोचक
। वृत्ति: भू.ना. विश्वविद्यालयक
स्नातकोत्तर केन्द्र, सहरसामे
मैथिली विभागाध्यक्ष। प्रकाशित
कृति साहित्य अकादेमीसँ
प्राकाशित मोनोग्राफ शैलेन्द्र
मोहन झा । सहयोगी संकलन-
संकल्प । राजकमल जयन्ती
प्रसंगक संपादन।



महेन्द्र 1944-2009

जन्म मधुबनी जिलाक
जमसम गाममे। प्रसिद्ध
मैथिली गीतकार आ गायक।

बटुक, बाल मासिक
प्रयाग, कथा विशेषांक द्वितीय
भागमे 1964ई., प्रकाशित
कृति(क) तीनटा बाबाजी-
(रूसीसँ मैथिलीमे मैथिलीमे
टाल्स्टायक कथाक अनुवाद-
1967ई.मे, (ख)
फूलपात, कविता संग्रह 1978,
(ग) भांगक गोला
(2004 ई.मे), (घ) कटैत
पाँखि: हँसैत आँखि, कथा
संग्रह-2005, शीघ्र प्रकाश्य-
कृष्णकान्त मिश्र (विनिबन्ध)
साहित्य अकादेमी नई
दिल्ली। प्राय: डेढ़ सए
रचना (कथा-निबन्ध कविता)
मैथिली हिन्दीक पत्र-
पत्रिका, आकाशवाणी एवं
दूरदर्शनसँ प्रकाशित/
प्रसारित। साहित्य अकादेमी
द्वारा आयोजित कवि
सम्मेलनक आयोजनक क्रममे
रेलक चपेटमे पड़िदहिना पएर
छाबा धरिगमा विकलांग।
सेवा निवृत्त अध्यापक (उच्च
विद्यालय) सम्पर्क- श्री
रमानिवास, मानाराय टोल पो.
नरहन (समस्तीपुर)।



सुभाषचन्द्र यादव 1948-

जन्म ०५ मार्च १९४८, मातृक
दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक
स्थान: बलबा-
मेनाही, सुपौल। घरदेखिया (मैथिली
कथा-संग्रह), मैथिली
अकादमी, पटना, १९८३, हाली (अंग्रेजीसँ
मैथिली अनुवाद), साहित्य
अकादमी, नई दिल्ली, १९८८, बीछल
कथा (हरिमोहन झाक कथाक चयन
एवं भूमिका), साहित्य अकादमी, नई
दिल्ली, १९९९, बिहाड़ि आउ (बंगला सँ
मैथिली अनुवाद), किंसुन संकल्प
लोक, सुपौल, १९९५, भारत-विभाजन
और हिन्दी उपन्यास (हिन्दी



सुभद्र झा 1909-2000

"फॉर्मेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज"क लेखक।

१९८६- सुभद्र झा (नातिक पत्रक उत्तर, निबन्ध)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



रमानन्द झा 'रमण' 1949-

जन्म: 02 जनबरी 1949, शिक्षा- एम.ए., पीएच.डी., आजीविका- भारतीय रिजर्व बैंक, पटना (सेवा निवृत्त)। **प्रकाशन:** 1. नवीन मैथिली कविता, 1982, 2. मैथिली नऽव कविता, 1993, 3. मैथिली साहित्य ओ राजनीति, 1994, 4. अखियासल, 1995, 5. बेसाहल, 2003, 6. भजारल, 2005., 7. निर्यात कैसे शुरू



रामावतार यादव, मैथिली भाषिकी, ने पाल 1942-

देश-विदेशक भाषाविज्ञान जर्नलमे पचासो आलेखक द्वारा मैथिलीक विशिष्टताकेँ उजागर केनिहार। *मैथिली ध्वनिशास्त्र* 1984 ई. मे जर्मनीसँ आ *मैथिलीक सन्दर्भ व्याकरण* 1996 ई. मे बर्लिन आ न्यूयार्कसँ प्रकाशित। 2000 ई. मे लंदनसँ प्रकाशित *भारतीय आर्यभाषा* पुस्तक मे संकलित हिनकर मैथिली भाषा संबंधी आलेख विशेष उल्लेखनीय। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ पासाङ ल्हामु प्रज्ञा-पुरस्कारसँ सम्मानित।



रामलोचन ठाकुर 1949-

श्री रामलचन ठाकुर, जन्म १८ मार्च १९४९ ई. पलिमोहन, मधुबनीमे। वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक। भाषाई आन्दोलनमे सक्रिय भागीदारी। **प्रकाशित कृति-** इतिहासहन्ता, माटिपानिक गीत, देशक नाम छल सोन चिड़ैया, अपूर्वा (कविता संग्रह), बेताल कथा (व्यंग्य), मैथिली लोक कथा (लोककथा), प्रतिध्वनि (अनुदित कविता), *जा सकै छी, किन्तु किए जाउ* (अनुदित कविता), लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता), जादूगर (अनुवाद), स्मृतिक



योगेन्द्र प्रसाद यादव, भाषिकी, सिरहा, नेपाल 1946-

1998 ई. मे जर्मनीसँ प्रकाशित *इशुज इन मैथिली सिंटेक्स आ टॉपिक्स इन नेपालीज लिग्विस्टिक्स, रीडिंग्स इन मैथिली लंग्वेज- लिटरेचर एण्ड कल्चर आ लेक्सीग्राफी इन नेपाल* (सम्पादित) प्रकाशित। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमे भाषा-विभागक प्राज्ञ रहि कतोक महत्वपूर्ण कार्यक सम्पादन। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव (1994)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान आजीवन सदस्यता श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव।



गंगा प्रसाद मंडल "अकेला", नेपाल 1944-

पं सुन्दर झा शास्त्री राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कारसँ सम्मानित। मिथिलांचलक किछु लोक कथा (संकलन आ सम्पादन) आ शिरीषक फूल (अनुवाद) प्रकाशित।

करें? हिन्दी- रिजर्व बैंक, पटनाक प्रकाशन सम्पादित 8. मैथिलीक आरम्भिक कथा, 1978 समीक्षा, 9. श्यामानन्द रचनावली, 1981, 10. जनार्दन झा जनसीदन कृत निर्दयीसासु (1914) आ पुनर्विवाह (1926), 1984, 11. चेतनाथझाकृत श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा (1910), 1994, 12. तेजनाथ झाकृत सुरराजविजय नाटक (1919), 1994, 13. रासबिहारीलाल दासकृत सुमति (1918), 1996, 14. जीबछ मिश्रकृत रामेश्वर (1916), 1996, 15. भेटघॉंट (भेटवार्ता), 1998, 16. रूचय तँ सत्य ने तँ फूसि, 1998, 17. पुण्यानन्द झाकृत मिथिला दर्पण (1925), 2003, 18. यदुवर रचनावली (1888-1934) 2003, 19. श्रीवल्लभ झा (1905-1940) कृत विद्यापति विवरण, 2005, 20. मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज, 2003। अनुवाद लेल **भाषा-भारती सम्मान 2004-** 05 (सी.आइ.आइ.एल., मैसूर) छओ बिगहा आठ कट्टा- फकीर मोहन सेनापतिक ओड़िया उपन्यासक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त।



महेन्द्रनारायण निधि, धनुषा, नेपाल



धोखरल रंग (संस्मरणात्मक निबन्ध), आंखि मुनने: आंखि खोलने (निबन्ध)। अनुवाद लेल **भाषा-भारती सम्मान 2003-** 04 (सी.आइ.आइ.एल., मैसूर) *जा सकै छी, किन्तु किए जाऊ* शक्ति चट्टोपाध्यायक बांग्ला कविता-संग्रहक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (पद्मानदीक माझी, बांग्लासँ मैथिली अनुवाद, बांग्ला- उपन्यास - मानिक बंधोपाध्याय)



परमेश्वर कापड़ि, धनुषा, नेपाल



रोहिणी रमण झा 1950-



जयनारायण झा "जिज्ञासु", नेपाल



सुरेश झा, नेपाल 1920-1995



विनोद बिहारी लाल 1953-

जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार।
चर्चित कथाकार। सयसँ ऊपर कथा प्रकाशित।



दिनेश कुमार झा

मैथिलीक इतिहासपर लेखन।



शीतल झा, नेपाल



अरविन्द ठाकुर 1954-

परती टूटि रहल अछि (कविता संग्रह), अन्हारक विरोधमे (कथा संग्रह), बहुरुपिया प्रदेश मे (गजल संग्रह)।



अशोक कुमार ठाकुर

जन्म 2 जनवरी 1944 ई.।
गाम बड़ागाँव (पंडौल)।
नागमंडल (नाटक-
अनुवाद), निशांत, वसुधाक
संसार (उपन्यास)



उग्रनारायण मिश्र "कनक"

डॉ. कमलाकान्त भण्डारी 1952-

कबीर (मैथिली) पर शोध।



श्याम दरिहरे 1954-

जन्म स्थान बरहा, बेनीपट्टी
मधुबनी, बिहार।
कवि, कथाकार। प्रकाशित
कृति : सरिसोमे भूत (कथा
संग्रह) अनूदित कृति :
कनिप्रिया (धर्मवीर भारती)



प्रतापनारायण झा, नेपाल



डॉ. शम्भूनाथ चौधरी 1920-2008



इन्द्रकांत झा



पंचानन मिश्र



प्रोफेसर गुरमैता

ज्योतिरीश्वरपर लेखन।



महेन्द्र नारायण सिंह "मग
न"



सूर्यकांत झा, जनकपुर



रमण झा (1957-)

रचना: पञ्चात्ताप (कथा-संग्रह)-
1995, काव्य-वाटिका (कविता-
संग्रह)- 1999, अलंकार-
भास्कर (पूर्व-खण्ड) -
2002, अलंकार-भास्कर (अलंकार
शास्त्र)- 2003, भिन्न-
अभिन्न (समीक्षा)- 2008, संग
सम्पादन: मैथिली (मिथिला
विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक
शोध-पत्रिका) -
1996, सम्पादन: मैथिली (मिथिला
विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक
शोध-पत्रिका)- 2007,2008



विजयनाथ झा

"अहींक लेल" (गीत-गजल संग्रह
प्रकाशित)।



योगानन्द हीरा



बाबा बैद्यनाथ

पहरा इमानपर (गजल संग्रह)



जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" १९५०-

मूल नाम जगदीश चन्द्र ठाकुर, जन्म: 27.11.1950, शंभुआर, मधुबनी । सेवा निवृत्त बैंक अधिकारी। मैथिलीमे प्रकाशित पोथी-1. तोरा अडनामे -गीत संग्रह-1978; 2. धारक ओड़ पार-दीर्घ कविता-1999, गीत गंगा (गीत संग्रह), गजल गंगा (गजल संग्रह)।



विद्यानन्द झा 1965-

बुद्धपूर्णिमा, १९६५कें कैथिनियाँ, झंझारपुर मुधुबनीमे जन्म। पराती जकाँ, बिछड़ल कोनो पिरीत जकाँ, दनुफक फूल जकाँ (कविता संग्रह) प्रकाशित । मूलतः कवि, थोड़ कथा लिखलनि, जे अपन मार्मिक अभिव्यक्तिक कारण बेस चर्चित भेल । विडम्बनापूर्ण परिस्थितिक पाछू जिम्मेवार समाजार्थिक कारणक खोज हिनकर मूल सृजन प्रेरणा थिक ।



हरेकृष्ण झा 1950-

जन्म १० जुलाई १९५० ई. गाम- कोइलखमे। अभियंत्रणक अध्ययण छोड़ि मार्क्सवादी राजनीतिमे सक्रिय। अनेक कविता आ आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित। अनुवाद एवं विकास विषयक शोध कार्यमे रुचि। स्वतंत्र लेखन। प्रकृति एवं जीवनक तादात्म्य बोधक अग्रणी कवि। "एना त नहि जे" (कविता संग्रह)। २००८ ई. - श्री हरेकृष्ण झाकें कविता संग्रह "एना त नहि जे" लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।



उदय नारायण सिंह नचिकेता 1951-

जन्म-१९५१ ई. कलकत्तामे। पहिल काव्य संग्रह "कवयो वदन्ति"। १९७१ "अमृतस्य पुत्राः" (कविता संकलन) आ "नायकक नाम जीवन" (नाटक)। १९७४ मे "एक छल राजा" / "नाटकक लेल" (नाटक)। १९७६-७७ "प्रत्यावर्तन" / "रामलीला" (नाटक)। १९७८मे जनक आऽ अन्य एकांकी। १९८१ "अनुत्तरण" (कविता-संकलन)। १९८८ "प्रियंवदा" (नाटिका)। १९९७- "रवीन्द्रनाथक बाल-साहित्य" (अनुवाद)। १९९८ "अनुकृति" - आधुनिक मैथिली कविताक बंगलामे अनुवाद, संगहि



आशीष अनचिन्हार

मूल लेखन: कुमारि इच्छा (गजल संग्रह), जंघाजोड़ी (गजल संग्रह), अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह), मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास, मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास, मैथिली गजलक रेडी रेकोनर, शब्द-अर्थ-शक्ति।
गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन): मैथिलीक प्रतिनिधि गजल, मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)



कुमार पवन 1958

गाम मुरैठा। कथा संग्रह, कविता संग्रह आ व्यंग्य संग्रह शीघ्र प्रकाश्या। मैथिलीमे १९९० ई सँ विरल लेखन। २००८ ई. सँ दस सालक मौन भंगक बाद पुनः रचनाक दोसर पालीक प्रारम्भ।

बंगलामे दूटा कविता संकलन।
१९९९ अश्रु ओ परिहास।
२००२ खाम खेयाली।
२००६मे मध्यमपुरुष एकवचन (कविता संग्रह)। २००८ ई. मे नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश" सम्पूर्ण रूपे "विदेह" ई-पत्रिकामे धारावाहिक रूपे ई-प्रकाशित भए एकटा कीर्तिमान बनेलक। २००९ ई.-श्री उदय नारायण सिंह नचिकेता के नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।



कीर्तिनाथ झा 1955-

कुरल: मैथिली भावानुवाद



महेन्द्र हजारी



स्व. चन्द्रकान्त मिश्र, आसी,
दरभंगा



स्व. महेन्द्र नारायण झा, बे
लौंजा, मधुबनी



स्व.राजकुमार मल्लिक, सोहराय (पोख
रिभीड़ा), मधुबनी



लक्ष्मीपति सिंह



फूलचन्द्र मिश्र रमण



किशोरनाथ झा

गाम- विट्टो, पो.
सरिसवपाही, मधुबनी।
"लोकवेद" पोथी प्रकाशित।



सूर्यनारायण झा "सरस"

पोथी "मैथिली श्री
सीतारामचरितमानस" प्रकाशित।



कलानन्द भट्ट

कान्ह पर लहास हमर मैथिली गजल संग्रह



दयानाथ झा

गाम नागदह, मधुबनी।
मैथिली रंगमंडल मिथि-
यात्रिक, कोलकाता।



डॉ. सुधाकर चौधरी १९४६-

जन्म १५ मार्च १९४६ ई.। प्रकाशित
पोथी: काजर, तीन रंग तेरह चित्र
(कथा संग्रह), पंडी जी छत्ता
(प्रहसन), विप्लवी सुभाष (नाटक)।



स्व. चुनचुन मिश्र, रहिका, मधुबनी।

मिथिला राज्यक आन्दोलन कर्मी।



सत्यनारायण लाल कर्ण

मिथिला चित्रकला



ले. कर्नल मायानाथ झा 1945

जन्म 1 अप्रैल 1945 ई.।
गाम- भ्राम (मधुबनी)। जकर नारि चतुर
होड़ (मैथिली लोक कथा संग्रह) प्रकाशित।
विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य
अकादेमी पुरस्कार २०११ बाल साहित्य
पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी
चतुर होड़, कथा संग्रह)



श्याम किशोर सिंह



सचिन्द्रनाथ झा

मिथिला लोक चित्रकला



कालीनाथ ठाकुर

ग्राम सर्वसीमा



राजेन्द्र विमल, जनकपुर, नेपाल 1949-

मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषाक प्राज्ञ विमल शिक्षाक हकमे विद्यावारिधि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएने छथि। कम्मो लिखिकऽ यथेष्ट यश अरजनिहार डा. विमलक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक सङ्गसङ्ग नेपाली आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होइत रहलनि अछि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे प्राध्यापन कएनिहार डा. विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाभ छियनि। हिनक जन्म २६ जुलाई १९४९ ई. कऽ भेल अछि। साहित्यकारक नव पीढ़ीकेँ निरन्तर उत्प्रेरित करबाक कारणे ई डा. धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक साहित्यिक गुरुक रूपमे स्थापित भऽ गेल छथि।



नरेश कुमार विकल 1950-

जन्म २७ जुलाई १९५० भगवानपुर देसुआ (समस्तीपुर)। काव्य-अरिपन, महुआ मदन रस टपकय, बिन बाती दीप जरय। कथा-संग्रह- भरि गेल दर्दक इनार। उपन्यास- टहकैत टीस। नाटक- चोखगर खौंच।



जनक किशोर लाल दास



कृष्णचन्द्र झा "मयंक"



लक्ष्मण झा "सागर"
1953-

"उचरि बैसू कौआ" मैथिली कविता संग्रह प्रकाशित।



रघुवीर मोची



शारदानन्द दास "परिमल"



सुरेन्द्रनाथ

शशिबोध मिश्र "शशि"
1946-



अमरनाथ

१९७५

ई. मे "क्षणिका" लघुकथा संग्रह
प्रकाशित। हास्य कथाकार।



बच्चा ठाकुर



बुद्धिनाथ मिश्र



राजाराम सिंह राठौर, धनुषा



वैद्यनाथ विमल 1955-



डॉ वासुकीनाथ झा 1940-



जितेन्द्र मिश्र "जीवन"



वीरेन्द्र नारायण झा



वीरेन्द्र झा 1956-

गोनू झा पर
लेखन।



वैकुण्ठ झा 1954-



वैकुण्ठ झा



पिता-स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म-
२४ - ०७ - १९५४ (ग्राम-भरवाड़ा, जिला-
दरभंगा), शिक्षा-
स्नात्कोत्तर (अर्थशास्त्र), पेशा- शिक्षक।
मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग
२०० गीतक रचना। गोनू झा पर आधारित
नाटक "हास्यशिरोमणि गोनू झा तथा अन्य
कहानी" क लेखन।
एकर अलावा हिन्दीमे लगभग १५ उपन्यास
तथा कथाक लेखन।



महेन्द्र नारायण कर्ण



डॉ. विश्वेश्वर मिश्र

विद्यानन्द झा 'पञ्जीकार'
1957-

जन्म-
09.04.1957, पण्डुआ, तलैल, ककरौड़(मधुबनी
) , रशाढ्य(पूर्णिमा), शिवनगर (अररिया) आ
सम्प्रति पूर्णिया। पिता लब्ध धौत
पञ्जीशास्त्र मार्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द
झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया। पितामह-
स्व.श्री भिखिया झा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष
धरि 1970 ई.सँ 1979 ई. धरि अध्ययन,
22 वर्षक बएससँ पञ्जी-प्रबंधक संवर्द्धन आ
संरक्षणमे संलग्न। कृति-पञ्जी शाखा
पुस्तकक लिप्यंतरण आ संवर्द्धन।



अर्जुन नारायण चौधरी



नरेन्द्र

गजलकार।



महेन्द्र मिश्र, नेपाल



कमल कांत झा 1943-



महाप्रकाश 1946-

जन्म: बनगांव, सहरसा, बिहार
। वरिष्ठ कवि ओ कथाकार।
प्रकाशित कृति: कविता
संभवा, संग समय के



छत्रानन्द सिंह झा 1946-



अयोध्यानाथ चौधरी, धनुषा,
नेपाल 1947-

मूलतः कविक रूपमे परिचित छथि ।
नेपालक आधुनिक कविताक क्षेत्रमे हिनक
नाम उल्लेखनीय अछि । श्री चौधरीक

(कविता संग्रह)।
कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य
सम्मान २०१० ई.- श्री
महाप्रकाश (कविता
संग्रह संग्रह)।



विद्यानाथ झा 'विदित'



सियाराम झा "सरस"
1948-

जन्म स्थान मेंहथ, मधुबनी
बिहार । प्रसिद्ध गीतकार, बादमें
कथा लेखन प्रारम्भ केलनि ।
प्रकाशित कृति आंजुर भरि
सिंगरहार, शोणिताएल उगैत
सूर्यक धम्मक (कथा संग्रह)।

लेखनमें मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब
पाओल जाइत अछि । कविताक संग कथा
आ निबन्धमें सेहो ई कलम चलबैत छथि ।
फड़िछाएल लेखन हिनक विशेषता थिकनि
।धनुषा जिलाक दुहबी गामक रहनिहार श्री
चौधरीक जन्म ६अक्टुबर १९४७कs भेल
छनि । हिनक क्षितिजक ओहिपार नामसँ
एक कविता-संग्रह प्रकाशित छनि ।



अग्निपुष्प 1948-

जन्म: तरौनी, दरभंगा।
मूलनाम : महेन्द्र झा ।
मैथिलीमें सहस्रबाहु कविता
संग्रह प्रकाशित । मुक्ति
प्रसंगक अनुवाद प्रकाशित ।
वामपंथी आन्दोलनमें
सक्रिय। शिक्षा, सम्ववाद आदि
पत्रिकाक सम्पादन ।
वामपंथी विचारधाराक सशक्त
कवि।



मधुकांत झा 1949-



वीन् भाइ



सत्यानन्द पाठक



योगीराज



कुणाल 1951-



राम भरोस कापड़ि भ्रमर, धनु
षा, नेपाल 1951-

जन्म-बघचौरा, जिला धनुषा (नेपाल)। बन्नकोठरी: औनाइत धुँआ (कविता संग्रह), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), तोरा संगे जएबौ रे कुजबा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पटना, १९८४), मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह, १९८३), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, १९९० ई.), रानी चन्द्रावती (नाटक), एकटा आओर बसन्त (नाटक), महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), अन्ततः (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सभक संग्रह), बिसरल-बिसरल सन (कविता-संग्रह), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्गस), लोक नाटय: जट-जटिन (अनुसन्धान)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता- श्री राम भरोस कापडि 'भ्रमर' (2010)।



धीरेन्द्रनाथ मिश्र



शिवेन्द्रलाल कर्ण, धनुषा, नेपाल 1951-

लेखकसँ अधिक शिक्षकक रूपमे परिचित आ प्रतिष्ठित छथि । त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गतरा. रा. ब. कैम्पस, जनकपुर-धामक सह-प्राध्यापक श्री कर्णक ऐतिहासिक विषय-वस्तुपर लिखल कतोक लेख मैथिली, हिन्दी आ अङ्ग्रेजी भाषामे प्रकाशित अछि । स्वान्त-सुखाय ई कहियो कालकs कविता-कथा सेहो लिखि लैत छथि । हिनक लेखन ज्ञानवर्द्धक, जानकारीमूलक एवं सोझारएल रहैत अछि । देखलापर बुझना जाइत अछि जे ई हिनक गम्भीर अध्ययनक परिणति थिक । सामाजिक तथा साहित्यिक सङ्घ-संस्थासभमे सेहो सक्रिय प्राध्यापक कर्णक जन्म धनुषा जिलाक देवडीहा गाममे २ जनवरी १९५१ ई. कs भेल छनि ।



ब्रह्मदेव लाल दास



चण्डेश्वर खान

गाम- पट्टीटोल, जिला
मधुबनी। लघुकथा लेल
चर्चित प्रशंसित।



पद्मश्री श्री गजेन्द्र नारायण सिंह



प्रवासी साहित्यालंकार



शैलेन्द्र कुमार झा 1952-

जन्म स्थान हरिपुर, वकशी
टोल, मधुबनी बिहार। प्रकाशित
कृति: आरोह अवरोह, दशम खुट्टी
(कथा संग्रह), इकोनोमिक हिस्ट्री
ऑफ मिथिला (अंग्रेजी) ।

दयाकान्त झा



हरिकान्त झा



सीताराम सिंह



शिवशंकर श्रीनिवास 1953-

जन्म स्थान लोहना मधुबनी, बिहार ।
चर्चित कथाकार ओ आलोचक । गीत
ओ कविता सेहो कहियो काल लिखैत
छथि । प्रकाशित कृति :
त्रिकोण, अदहन, गाछ-पात, गामक लोक
(कथा संग्रह)।

गजेन्द्र नारायण सिंह, नेपाल



इन्द्रनारायण झा



तुलानन्द मिश्र



अशोक 1953-

जन्म स्थान
लोहना, मधुबनी, बिहार।
चर्चित कथाकार, कवि
ओ सम्पादक । प्रकाशित
कृति : चक्रव्यूह (कविता
संग्रह) त्रिकोण (सहयोगी
कथा संग्रह), ओहि रातिक
भोर (कथा-संग्रह), मातवर
(कथा संग्रह)।



विभूति आनन्द 1953-

जन्म: शिवनगर, मधुबनी, बिहार।
चर्चित कवि, कथाकार, संपादक।
प्रकाशित कृति टूटा उपन्यास
टूटा समीक्षा, तीन टा कथ
संग्रह, टूटा गीत-गजल संग्रह ओ
चारिटा कथा-संग्रह
प्रकाशित। २००६- विभूति
आनन्द (काठ, कथा) मैथिली लेल
साहित्य अकादमी पुरस्कार।



केदार कानन 1959-

जन्म स्थान सुपौल, बिहार।
चर्चित कवि, कथाकार ओ
संपादक। प्रकाशित कृति :
आकार लैत शब्द (कविता
संग्रह), अनूदित कृति राजा
राम मोहन राय, प्रायश्चित।
सम्पादन संकल्प, भारती
मंडन (पत्रिका)।



डॉ. शशिनाथ झा 1954-

गाम-दीप, जिला- मधुबनी।
मैथिली, बांग्ला, नेवारी आ
देवनागरी पांडुलिपिक विशेषज्ञ।
साहित्य अकादमीक भाषा
सम्मान 2007 क्लासिकल आ
मध्यकालीन साहित्य लेल।



धनुर्धर झा

गाम- विशौल। "वाक्यार्थविवेचनम्" लेल
श्रीवाणीयुवालेकरण
पुरस्कार 2010 प्राप्त।



शिवकान्त पाठक



डॉ. योगेन्द्र पाठक "वियोगी" , वैज्ञानिक

"विज्ञानक बतकही" प्रकाशित।



राजनन्द झा

२००६- राजनन्द
झा (कालबेला- समरेश
मजुमदार, बांग्ला) लेल
साहित्य अकादमी मैथिली
अनुवाद पुरस्कार।



आद्यानाथ झा "नवीन"



अमलतास 1956-



यंत्रनाथ मिश्र



दिगम्बर ठाकुर



गणेश झा 1950-



कन्दर्पनारायण लाल कर्ण



शैलेन्द्र आनन्द 1955-



कमलाकांत झा

अध्यक्ष, मैथिली
अकादमी, पटना



लल्लन प्रसाद ठाकुर 1951-
1995

जन्म ५ फरबरी १९५१ मुंगेर मे श्रीमती सुभद्रा देवी आ श्री हीरानंद ठाकुरक द्वितीय बालक । हिनक ग्राम-समौल,जिला-मधुबनी। सिविल इंजीनियर, टाटा स्टीलमे चाकरी। प्रकाश झाक फिल्म "कथा माधोपुर की" मे मुख्य भूमिका। नाटककार आ मंच अभिनेता। हुनक लिखल किछु प्रसिद्ध मैथिली नाटक छन्हि :बडका साहेब,मिस्टर निलो काका, लोंगिया मिरचाई,बकलेल आदि वा अंत।



डॉ. कमलानन्द झा



लोकनाथ मिश्र



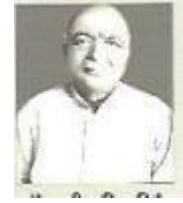
डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी 1966-

जन्म: 5 मार्च 1966 ई. गनपतगंज, सुपौल।
मैथिलीक प्राध्यापक। रक्षामंत्रीक पदक आ
बिहार आ झारखण्ड सरकार द्वारा
पुरस्कृत। झारखण्डक मैथिली आन्दोलनमे
अग्रणी।



अशोक अविचल

जन्म- ५ जनवरी
१९६७, गाम- रहुआ
संग्राम, जिला मधुबनी।
मैथिली प्राध्यापक।
रचना: एक बनू नेक बनू
(लघु नाटक), मैथिली भाषा:
सर्वेक्षण आ विश्लेषण, हमरा
देशक भागमे (मैथिलीक
प्रथम असंगत
नाटक), सम्पादन: झारखण्डक
सनेश, कचोट (नौ
अंक), झारखण्ड वाणी (हिन्दी
साप्ताहिक), सम्मान:
अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली
सम्मेलनमे सम्मान
(२०००), परमहंस लक्ष्मीनाथ
गोस्वामी समिति सम्मान
(२००८)



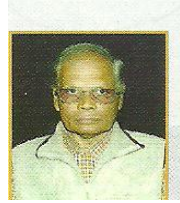
डॉ. श्रीपति सिंह १९४४-

"उमंग-तरंग" कविता-संग्रह प्रकाशित।



डॉ. उमाकान्त

मैथिली व्यंग्य-आलेखक पोथी
"अपन बात" प्रकाशित।



सुशील 1942-

अस्मिता (लघुकथा संग्रह), भामती (नाटक) प्रकाशित।



श्रीदेव

मूल नाम- वागेश्वर झा। कथा-
संग्रह "हिलकोर", नाटक "लोहक
कडना", गीत-
प्रबन्ध "पुलोमा" प्रकाशित।



सुकांत सोम 1950-

जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे 1950 ई. मे भेलन्हि । बी. ए. पास कए ई पटनाक दैनिक **जनशक्ति**क सहायक सम्पादक छलाह । फेर नव भारत टाइम्स, पटनामे। बाल्यवस्थासँ अपन पैतृक (पिता यात्रीजी) गुण कविता करबाक तथा कथा लिखबामे सेहो यश अर्जन कएलन्हि अछि । वर्तमान राजनीति सामाजिक विषयसँ सम्बद्ध व्यंग्यात्मक, सरल भाषामे लिखल नव कविता हिनक विशेषता छन्हि । गामघरक परिवेश तदनुकूल शब्द एवं बिम्ब रचनामे क्रमहि सिद्ध छथि ।



राजनाथ मिश्र 1950-

"अ बर्ड्स आइ व्यू ऑन मिथिला" प्रकाशित ।

डॉ. देवकांत मिश्र 1952-

पिता कविचूडक्षामणि पं. काशीकांत मिश्र "मधुप", "बेनीपुर अनुमण्डलमे मैथिली" पोथी प्रकाशित।



पशुपतिनाथ झा, महोत्तरी, नेपाल 1954

हिनक लेखन विवरणात्मक होइत अछि आ सम्बद्ध विषयमे नीकजकाँ जानकारी दैत अछि । विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक लेख-रचना बरोबरि देखबामे अबैत रहैछ । रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे मैथिली विषयक प्राध्यापनमे संलग्न श्री झा मैथिलीसम्बन्धी सङ्गठनात्मक गतिविधिसँ सेहो जुडल छथि । मैथिली भाषाक लोपोन्मुख अवस्थामे रहल अपन लिपि तिरहुतामे विशेषज्ञता रखनिहार श्री झा एकर संरक्षण-सम्बर्द्धनक दिशामे सेहो क्रियाशील छथि । प्रध्यापक झा मैथिली महाकाव्यमे रस निरूपण विषयपर विद्यावारिधि कएने छथि आ शिक्षा तथा कानून विषयमे सेहो स्नातक छथि । महोत्तरी जिलाक एकरहिया रहनिहार श्री झाक जन्म ४ दिसम्बर १९५४ कऽ भेलछनि । चेन्नैमे मिथिला रत्नसँ सम्मानित।

डॉ. नित्यानन्द लाल दास

पिता स्वर्गीय सूर्यनारायण दास। फारबिसगंज कॉलेज, फारबिसगंज सँ अंग्रेजी विभागाध्यक्ष पदसँ १९९८ मे अवकाशप्राप्त। डॉ. सुरेन्द्र झा "सुमन"क संयोजकत्वक कार्यकालमे "मैथिली परामर्शदातृ समिति" (साहित्य अकादेमी, दिल्ली)क सदस्य। मैथिली पत्रिका सभ जेना बटुक, प्रयाग; मिथिला मिहिर, पटना; स्वदेश, दरभंगा; पहुँच, पटना आ परती पलार, अररियामे रचना प्रकाशित। १९६७ ई. सँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मे सक्रिय। प्रांतीय प्रतिनिधि २००४ धरि जिला सरसंघचालक। जे.पी.आन्दोलनमे लोकतंत्र सेनानी। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामक अंग्रेजी पोथी "इग्नाइटेड माइण्ड्स"क मैथिलीमे "प्रज्वलित प्रज्ञा" नामसँ अनुवाद। साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार २०१०- डॉ. नित्यानन्द लाल दास- (इग्नाइटेड माइण्ड्स- डॉ. ए.पी.जे. कलाम, अंग्रेजी) लेल।



अनिलचन्द्र ठाकुर 1954-2009

जन्म 13 सितम्बर 1954 ई.केँ कटिहार जिलाक समेली गाममे भेलन्हि। 1982 ई.मे हिन्दी साहित्यमे स्नातकोत्तर केलाक बाद नवम्बर '93 सँ नवम्बर '94 धरि "सुबह" हस्तलिखित पत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन कएलन्हि आ कोशी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकमे अधिकारी रहथि। मैथिली, अंगिका, हिन्दी आ अंग्रेजीमे समानरूपेँ लेखन। मृत्युक पूर्व ब्रेन ट्यूमरसँ बीमार चलि रहल छलाह। **प्रकाशित कृति:** आब मानि जाउ(मैथिली उपन्यास)- पहिने भारती-मंडन पत्रिकामे प्रकाशित भेल, फेर मैलोरंग द्वारा पुस्तकाकार प्रकाशित भेल।; कच(अंगिकाक पहिल खण्ड काव्य, 1975); एक और राम (हिन्दी



बृषेश चन्द्र लाल

जन्म 29 मार्च 1955 ई. कें भेलन्हि। पिता: स्व. उदितनारायण लाल,माता: श्रीमती भुवनेश्वरी देव। हिनकर छठिहारक नाम विश्वेश्वर छन्हि। मूलतः राजनीतिककर्मि । नेपालमे लोकतन्त्रलेल निरन्तर संघर्षक क्रममे १७ बेर गिरफ्तार । लगभग ८ वर्ष जेल ।सम्प्रति तराईमधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक राष्ट्रिय उपाध्यक्ष । मैथिलीमे किछु कथा विभिन्न पत्रपत्रिकामे प्रकाशित । आन्दोलन कविता संग्रह आ बी.पी कोइरालाक प्रसिद्ध लघु उपन्यास मोदिआइनक मैथिली रुपान्तरण तथा नेपालीमे संघीय शासनतिर नामक पुस्तक प्रकाशित । ओ विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीति अनुयायी आ नेपालक प्रजातांत्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा छथि। नेपाली राजनीतिपर बरोबरि लिखैत रहैत छथि।



नारायणजी 1956-

जन्म: घोघरडीहा (मधुबनी)। मैथिली भाषा-साहित्यमे एम. ए., पी-एच. डी. कामेश्वर लता संस्कृत विद्यालय, घोघरडीहामे अध्यापन । प्रकाशित कृति: घरि घुरि रहल छी (काव्य-संग्रह)।



डॉ. श्री श्रीशंकर झा 1952-

नाटक,1981); एक घर सड़क पर (हिन्दी उपन्यास, 1982); द पपेट्स (अंग्रेजी उपन्यास, 1990); अनत कहाँ सुख पावै (हिन्दी कहानी संग्रह,2007)। आब मानि जाउ (मैथिली उपन्यास) - एहि उपन्यासमे एक एहन युवतीक संघर्ष-गाथा अंकित अछि जे अपन लगनसँ जीवन बदलैत अछि। असंख्य गामक ई कथा कुलीनताक अधःपतनक कथा, संस्कारविहीनताक उद्घाटन आ भविष्यक पीढ़ीकेँ बचएबाक चेतौनी छी।



जगदीपनारायण "दीपक"



राजदेव मंडल

शिक्षा- एम.ए.द्वय, एल एल बी.,पता- ग्राम-
मुसहरनियाँ, रतनसारा (निर्मली, मधुबनी)। **प्रकाशित**
कृति- अम्बरा-कविता-
संग्रह, हमर टोल (उपन्यास), बसुंधरा(कविता संग्रह), जाल (पट
कथा), लाज (एकांकी), जल भंवर (उपन्यास), त्रिवेणीक रंग (वि
हनि आ लघु कथा संग्रह), पंचैती (लघु पटकथा), वापसी।



शिवप्रसाद यादव



हीरेन्द्र कुमार झा 1958-

जन्म 30 अगस्त 1958,गाम- कोइलख (म
धुबनी), पिता श्री कामेन्द्र नाथ झा।
ट्रांसफर्मेर (मैथिली कथा संग्रह) प्रकाशित।



मानेश्वर मनुज 1958-

जन्म
गम्हरिया (मानपौर, मधुबनी)मे,
1978सँ 1992 धरि नौसेनामे
विभिन्न जहाजपर कार्यरत, फेर
यात्री रेलमे। सम्बन्ध (कथा
संग्रह) प्रकाशित।



नबोनाथ झा



महेन्द्र नारायण राम 1958



तारानन्द वियोगी 1966-

महिषी, सहरसामे जन्म। पहिल पोथी
अपन युद्धक साक्ष्य (गजल
संग्रह) १९९१ मे प्रकाशित। अन्य
पुस्तक हस्तक्षेप, प्रलय रहस्य(कविता-
संग्रह), अतिक्रमण (कथा-
संग्रह), शिलालेख (लघुकथा
संग्रह), कर्मधारय। राजकमल
चौधरीक कथाकृति एकटा चंपाकली
एकटा विषधर संकलन-सपादन।



भालचन्द्र झा

ए.टी.डी., बी.ए.,
(अर्थशास्त्र), मुम्बईसँ थिएटर
कलामे डिप्लोमा। मैथिलीक
अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अग्रेजी
आ गुजरातीमे निष्णात। १९७४
ई.सँ मराठी आ हिन्दी
थिएटरमे निदेशक। महाराष्ट्र
राज्य उपाधि १९८६ आ १९९९
मे। आइ.एन.टी. केर लेल

साहित्य अकादेमी मैथिली बाल साहित्य पुरस्कार २०१०-तारानन्द वियोगीके पोथी "ई भेटल तँ की भेटल" लेल। यात्री-चेतना पुरस्कार २०१० ई.- डॉ. तारानन्द वियोगी।



मनमोहन झा



कुमार शैलेन्द्र

नाटक ◆सीता◆ क निर्देशन। ◆वासुदेव संगति◆ आइ.एन.टी.क लोक कलाक शोध आ प्रदर्शनसँ जुड़ल छथि आ नाट्यशालासँ जुड़ल छथि विकलांग बाल लेल थिएटरसँ। निम्न टी.वी. मीडियामे रचनात्मक निदेशक रूपेँ कार्य।लेखन-बीछल बेरायल मराठी एकांकी(अनुवाद), सिंहावलोकन (मराठी साहित्यक १५० वर्ष), आकाश (जी.टी.वी.क धारावाहिकक ३० एपीसोड), जीवन सन्ध्या(मराठी साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), धनाजी नाना चौधरी (मराठी), स्वयम्बर (मराठी), फिर नहीं कभी नहीं(हिन्दी), आहट (हिन्दी), यात्रा (मराठी सीरयल), मयूरपन्ख (मराठी बाल-धारावाहिक), हेल्थकेअर इन २०० ए.डी.) (डी.डी.)।२००९ मे-भालचन्द्र झा (बीछल बेरायल मराठी एकांकी- सम्पादक सुधा जोशी आ रत्नाकर मतकरी, मराठी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



रमेश 1961-

जन्म स्थान मेंहथ, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: समांग, समानांतर, दखल (कथा संग्रह), नागफेनी (गजल संग्रह), संगोर, समवेत स्वरक आगू, कोसी धारक सभ्यता, पाथर पर दूभि (काव्य संग्रह), प्रतिक्रिया (आलोचनात्मक निबंध)।



मेघन प्रसाद 1961-



प्रदीप बिहारी 1963-

जन्म स्थान कन्हौली
मल्लिक
टोल, खजौली, मधुबनी, बिहार।
चर्चित कथाकार, उपन्यासकार
ओ रंगकर्मी । प्रकाशित
कृति: गुमकी ओ
बिहाड़ि, विसूवियस
(उपन्यास), औतीह कमला
जयतीह कमला, खण्ड-खण्ड
जिनगी, सरोकार (कथा
संग्रह)। २००७- प्रदीप
बिहारी (सरोकार, कथा)मैथिली
लेल साहित्य अकादमी
पुरस्कार ।



चन्द्रमोहन झा पर्वा



डॉ. सुरेन्द्र लाभ, नेपाल



रोशन जनकपुरी, नेपाल



डॉ. अरविन्द अक्कू 1957-



फूलचन्द्र झा "प्रवीण"
1961-

गाम तुमौल दरभंगा, आयल
नवल प्रभात, पांगल गाछक
छाहरि, हमरा मोनक खजन
चिडैया, बसंतक
बजनित्रा (कविता संग्रह), भूत
होइत भविष्य (कथा संग्रह)।



देवशंकर नवीन 1962-

ओ ना मा सी (गद्य-पद्य मिश्रित
हिन्दी-मैथिलीक प्रारम्भिक
सर्जना), चानन-काजर (मैथिली
कविता
संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्यक
परिदृश्य, गीतिकाव्य के रूप में
विद्यापति पदावली, राजकमल
चौधरी का



कुमार मनीष अरविन्द 1964

रचनाकर्म (आलोचना), जमाना बदल गया, सोना बाबू का यार, पहचान (हिन्दी कहानी), अभिधा (हिन्दी कविता-संग्रह), हाथी चलए बजार (कथा-संग्रह)।



बदरी नारायण बर्मा



राजेन्द्र किशोर, नेपाल



श्याम सुन्दर शशि, नेपाल

श्याम सुन्दर शशि, जनकपुरधाम, नेपाल। पेशा-पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ, एम.ए. मैथिली, प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्रायः सभ विधामे रचनारत। बहुत रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आऽ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आऽ बहुतरास रचना प्रकाशित। सम्प्रति- कान्तिपुर प्रवासक अरब ब्यूरोमे कार्यरत।



हिमांशु चौधरी, नेपाल

पिता : स्वर्गीय कामेश्वर चौधरी, माता: श्रीमती चन्द्रावती चौधरी, जन्म: वि स २०२०/६/५ लहान, सिरहा, शिक्षा: स्नातकोत्तर(नेपाली), पेशा: पत्रकारिता (सम्प्रति : राष्ट्रिय समाचार समिति), कृति : की भार सांठू ? (मैथिली कविता संग्रह), विगत दू दशकसं नेपाली आ मैथिली लेखन तथा अभियानमे निरन्तर क्रियाशील आ विभिन्न संघ संस्थासं आबद्ध ।



सत्यनारायण मेहता



भुवनेश्वर पाथेय



राजेन्द्र झा, धनुषा



अशोक कुमार मेहता



धर्मेन्द्र विहल, सिरहा, नेपाल
1967-

रस्ता तर्कत जिनगी, एक सृष्टि एक कविता, एक समयक बात, धुअनाएल आकृति सभ (मैथिली कविता संग्रह), भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु, गोनूझाका कथाहरु (मैथिलीसँ नेपाली अनुवाद), मैथिलीक कक्षा 1 सँ 5 आ बाल-साहित्य संदर्भक तीनटा पोथीक सह-लेखक। पत्रकारिताक मूल सिद्धांत (मैथिली, प्रेसमे), दलित रिपोर्टिंग मैनुअल (नेपाली, प्रेसमे)।



धीरेन्द्र कुमार झा



निमिष झा, नेपाल



गौरीनाथ (अनलकान्त)

"अन्तिका"क सम्पादन।



आनन्द कुमार झा 1977-

जन्म स्थान: मेंहथ, झंझारपुर; पिता स्व. अभयकांत झा, माता श्रीमती इन्द्रकाली देवी, प्रकाशन- "धधाइत नवकी कनियाँक लहास", "हठात् परिवर्तन", "बदलैत समाज", "टाकाक मोल", "कलह" (पाँचू मैथिली नाटक) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी



वनदेवीपुत्र भवनाथ, नाटककार



चन्द्रेश

पुरस्कार २०११ युवा पुरस्कार-
आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)



राम सेवक सिंह

शहीद दुर्गानन्द झा, नेपाल

उदयनाथ झा "अशोक"



कपिलेश्वर राउत

उलहन (विहनि - लघु कथा संग्रह) प्रकाशित
।

कपिलेश्वर साहू

डॉ. शम्भु कुमार सिंह

जन्म: 18 अप्रील 1965 सहरसा
जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर
गाममे। आरंभिक
शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए.
(मैथिली
सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक
प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर
विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार
सँ। BET [बिहार पात्रता
परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता
हेतु उत्तीर्ण, 1995] ❖मैथिली
नाटकक सामाजिक विवर्तन❖ विषय
पर पी-एच.डी. वर्ष 2008, तिलका
माँ. भा. विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार
सँ। मैथिलीक कतोक प्रतिष्ठित पत्र-
पत्रिका सभमे कविता, कथा, निबंध
आदि समय-समय पर प्रकाशित।
वर्तमानमे शैक्षिक
सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय अनुवाद
मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा
संस्थान, मैसूर-6 मे कार्यरत।



कृष्णचन्द्र यादव, नेपाल



उमाकान्त झा आ प्रियंका,
मैथिली रंगमंच



शशिनाथ ठाकुर, नेपाल

शिवकान्त ठाकुर



श्यामानन्द ठाकुर



दुर्गानन्द मंडल

संचयिका, कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह), चक्षु प्र
काशित।

शोभाकान्त झा

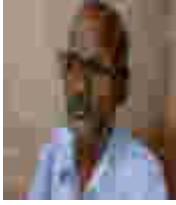


हरिकांत लाल दास, नेपाल



शिव कुमार झा 1973-

शिव कुमार
झा टिडल्, पिताक नाम:
स्व. काली कान्त
झा बूच, माताक नाम:
स्व. चन्द्रकला देवी, जन्म
तिथि: 11-12-1973, शिक्षा:
स्नातक (प्रतिष्ठा), जन्म स्थान:
मातृक- मालीपुर मोड़तर, जि.
- बेगूसराय, मूलग्राम: ग्राम-
पत्रालय - करियन, जिला -
समस्तीपुर, पिन: 848101, संप्रति:
प्रबंधक, संग्रहण, जे. एम. ए. स्टोर्स
लि., मेन रोड, बिस्टुपुर जमशेदपुर
- 831 001, अन्य गतिविधि:
वर्ष 1996 सँ वर्ष 2002 धरि
विद्यापति परिषद समस्तीपुरक
सांस्कृतिक, गतिविधि एवं
मैथिलीक प्रचार-प्रसार हेतु डॉ.
नरेश कुमार विकल आ श्री उदय
नारायण चौधरी (राष्ट्रपति
पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क
नेतृत्वमे संलग्न। प्रकाशित
कृति: क्षणप्रभा-कविता-
संग्रह, अंशु-समालोचना।



राम विलास साहु

मनक

मैल, अंकुर- लघुकथा संग्रह, रथक चक्रा उलटि चलै वाट (कविता/ टनका संग्रह), कर्म विनु जग सुन्ना (दोसर कविता/ टनका संग्रह), स्कूलक खि चडी (विहनि/ लघु कथा संग्रह), दूधवेचनी (लघु कथा संग्रह) प्रकाशित।



महाकान्त ठाकुर



बचेश्वर झा, निर्मली

"निबन्ध-निकुञ्ज" प्रकाशित।



धीरेन्द्र कुमार, निर्मली



चन्द्रशेखर कामति 1959-

मैथिली कवि। शिक्षा- एम.ए.
(राजनीतिशास्त्र), पिता- स्व. योगेन्द्र कामति, गाम-पोस्ट- करियन, भाया- इलमास नगर, थाना- रोसड़ा, जिला- समस्तीपुर, बिहार। संप्रतिप्रखण्ड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी (बेनीपट्टी)।



नन्द विलास राय

"भरदुतिया", "छठिक डाला",
"हमर चारुधाम" प्रकाशित।



बिनय भूषण

उजरा परवाक खोज (कविता संग्रह)



सुधाकर झा, महोत्तरी, नेपाल

सएसँ बेशी सड़क नाटकमे मंचन।



सदरे आलम "गौहर"

गाम-पुरसौलिया, भाया- जयनगर, जिला मधुबनी।



डॉ. भुवन किशोर मिश्र "भुव
नेश"

मैथिली कथा संग्रह- गोबरछता।



दिनकर कुमार

"पूर्वोत्तर मैथिल"क सम्पादन।



डॉ. विनय विश्वबन्धु



रामदेव प्रसाद मण्डल झारू
दार

मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध
मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद
मण्डल झारूदार।

"हमरा बितु जगत सूना छै" आ "गीताञ्जलि
झाड़ू" प्रकाशित।



उमेश पासवान

"वर्णित रस" प्रकाशित।



ओम प्रकाश झा

घोघरडीहा (मधुबनी)।

"क्रियो बूझि नै सकल हमरा" (गजल, रुवाइ आ
कता संग्रह) प्रकाशित।



जगदानन्द झा मनु

नदिया भुकेए हमर घराड़ीपर (गजल संग्रह),
तोहर कतेक रंग (विहनि कथा संग्रह), चोन
हा- (बाल उपन्यास), व्यथा- (कविता-
गीत संग्रह)।



अच्छेलाल शास्त्री



डॉ अमोल राय



नन्द कुमार मिश्र नन्द



डॉ. नन्द कुमार मिश्र



शिव कुमार प्रसाद



दिलीप कुमार झा



डॉ ताराकान्त झा



अमरकान्त, नेपाल



मुरलीधर झा

कबिलपुर, दरभंगा। बाल कथा संग्रह "पिलपिलहा गाछ" (2010) प्रकाशित।



कमलधर दास

"मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध" पोथी प्रकाशित।



श्रीकान्त मण्डल, मैथिली रंग मंच



बेचन ठाकुर

गाम: चनौरागंज, मधुबनी। प्रकाशित कृति: बेटीक अपमान आ छीनरदेवी (नाटक), बाप भेल पिती आ अधिकार (नाटक), बिसवासघात (नाटक), ऊँच-नीच (नाटक), भोट (नाटक); एक



गंगा झा

मैथिली रंगमंडल कोकिल मंच, कोलकाता। कोलकाता आ गाम पजुआरिडीह टोलमे मैथिली रंगमंच निर्देशन।



नबोनारायण मिश्र 1955-

पिता-श्री गोबिन्द मिश्र, माता-श्रीमति अदूला देवी। गाम- कुशमौल, पो.नागदह-बलाइन, भाया-अरेइहाट, जिला-मधुबनी। मैथिली रंगमंचसँ सम्बद्ध "कोकिल मंच" संस्थाक माध्यमसँ।

दर्जनसँ बेसी नाटक
प्रकाशनक प्रतीक्षामे।



कमलेश कुमार दास, रंगमंच
कलाकार



किशोर केशव, मैथिली रंगमंच



कुमार गगन, मैथिली रंगमंच



अशोक दत्त, जनकपुर



मदन ठाकुर

चर्चित रंगकर्मी, जनकपुरक
चर्चित संस्था मिथिला
नाट्यकला परिषदक
संस्थापक । तीन दशकसँ
बेसी समयसँ रंगक्षेत्रमे
सक्रिय। करीब ३००४० गोट
मंचीय नाटकक सयो
प्रस्तुति, २००२५ गोट सडक
नाटकक हजारसँ बेसी
प्रदर्शनमे अभिनय । २० गोट
टेली-सीरियल आ आधा
दर्जन मैथिली फीचर
फिल्ममे अभिनय ।
पुरस्कार: सप्तम अन्तर्राष्ट्रिय
महोत्सवमे सर्वश्रेष्ठ अभिनेता
२०४९ वि.स., क्षेत्रीय प्रतिभा
पुरस्कार (नेपाल
सरकार) २०६३ वि.स.।



अभय कुमार यादव, मैथिली
रंगमंच



आशुतोष यादव अभिज्ञ



बटोही झा, मिथिला चित्रक
ला



कृष्ण कुमार कश्यप 1949-

जन्म १५ सितम्बर १९४९ ई.।
पिता- कवि-उपन्यासकार
स्व. इन्द्रनारायण लाल "सँवलिया"।
जनबरी १९६५ ई. मे नेना सभ
लेल "नाइट स्कूल", १९८१ ई. मे "कला
आधारित जीवन आ शिक्षण पद्धति"क
प्रवर्तन आ तकर कार्यान्वयन लेल
शिवा कश्यप आ शशिबालाक
सहयोगसँ "भारती विकास संस्था"क
स्थापना। रचना: शशिबालाक
संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क
मैथिली अनुवाद, माछ-भात, मिथिला
चित्र-शिक्षा, भाग-१, मिथिला चित्र-
कोर, भाग-३।



प्रवीण कुमार ठाकुर

जन्म तिथि -31 दिसम्बर 1977; जन्म
स्थान -कन्हौली, सकरी, मधुबनी; शिक्षा- सूर्य
नारायण हाई
स्कूल - नरपतिनगर, बी. एस. सी - मेमोरिअल
कॉलेज - दरभंगा, डिप्लोमा इन फैशन
डिजाईन (नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फैशन
डिजाईन - नयी दिल्ली), चित्रकला आओर
फैशन पूर्वानुमानमे विशेष योग्यता, निवास
स्थान- दिल्ली, इंडिया; पिता- श्री सत्य
नारायण
ठाकुर, सकरी - कन्हौली; माता- श्रीमती
मालती ठाकुर, सकरी - कन्हौली। वर्तमानमे
अपन एक्सपोर्ट बिजनेस एस्थेट) क
नामसँ शुरुआत, पूर्वमे प्रोडक्ट डेवेलोपमेंट
आओर मर्चेंटक रूपमे कार्यरत।



ललित कुमुद



लाला पंडित, मिथिला मूर्तिक
ला



राजेन्द्र पंडित, मिथिला मूर्तिकला



चन्द्र किशोर लाल, पत्रकार, नेपाल

गिरीश चन्द्र लाल



उपेन्द्र भगत नागवंशी, नेपाल

सङ्क नाटक।

नवेन्दु कुमार झा, पत्रकार



रमेश रंजन, परवाहा, नेपाल 1966-

परवाहा, नेपालमे जन्म । नेपालीय कथा-जगतक नवीन मुदा सम्मानित नाम । जनपक्षधर कथा-दृष्टि आ मोहक शिल्प । थोड़ लिखलनि, मुदा बेर-बेर चर्चित रहलाह ।



विनीत ठाकुर

"बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज" प्रकाशित।



सुजीत कुमार झा, नेपाल

जिद्दी (लघुकथा संग्रह), चिडै (लघुकथा-संग्रह), रिपोर्टर डायरी (रिपोर्टाज), गन्ध (लघु कथा संग्रह), खजुरीबाली (लघु कथा संग्रह), कोइली घूरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह), दूधमती- (सम्पादन- नेपाली आ मैथिलीमे)।



सरोज खिलाड़ी

नेपालक पहिल मैथिली रेडियो नाटक संचालक



देवांशु वत्स

जन्म- तुलापट्टी, सुपौल। मास कम्प्युनिकेशनमे एम.ए., हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे



संतोष मिश्र, नेपाल

पोसपुत (लघुकथा-संग्रह), उदास मोन (लघुकथा-संग्रह), एना-किए (कविता-संग्रह), अएना (संपादन- कविता-संग्रह)।



सुनील कुमार मल्लिक, गायक, जनकपुर, नेपाल 1968-

मैथिलीक गायक-सङ्गीतकारक रूपमे प्रसिद्ध छथि । मैथिली भाषाक गीतसभमे मौलिक तथा सार्थक सङ्गीतक सृजनमे हिनक सक्रियता प्रशंसनीय छनि । सुनीलक गायन

कथा, लघुकथा, विज्ञान-
कथा, चित्र-कथा, कार्टून, चित्र-
प्रहेलिका इत्यादिक प्रकाशन।
विशेष: गुजरात राज्य शाला
पाठ्य-पुस्तक मंडल द्वारा
आठम कक्षाक लेल विज्ञान
कथा ❖जंग❖ प्रकाशित
(2004 ई.), नताशा: मैथिलीक
पहिल-चित्र-श्रृंखला
(कॉमिक्स) प्रकाशित।



धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सिरहा, नेपा
ल 1967-

वि.सं.२०२४ साल भादब १८ गते सिरहा
जिलाक गोविन्दपुर-१, बस्तीपुर गाममे
जन्म लेनिहार प्रेमर्षिक पूर्ण नाम धीरेन्द्र
झा छियनि।कान्तिपुरसँ हेल्लो मिथिला
कार्यक्रम प्रस्तुत कर्ता जोड़ी रूपा-धीरेन्द्रक
धीरेन्द्रक अबाज गामक बच्चा-बच्चा
चिन्हैत अछि। ❖पल्लव❖ मैथिली
साहित्यिक पत्रिका आ ❖समाज❖ मैथिली
सामाजिक पत्रिकाक सम्पादन।



अमरेन्द्र यादव, नेपाल



रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम:स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम:स्वर्गी
या दयाकाशी देवी, पैतृक ग्राम:अंडेर डीह, मातृक:सिन्धुआ
इयोदी। वृत्ति:योजना आयोगक उप सचिव, दिल्लीमे स्पेशल
मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट। आब सेवा निवृत्त। शिक्षा: चन्द्रधारी
मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-
सी. भौतिकी विज्ञानमे प्रतिष्ठा; दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि
स्नातक। प्रकाशित कृति : मैथिली:-

१. ❖ओरसँ साँझ धरि❖ (आत्म कथा), २.
- ❖प्रसंगवश❖ (निबंध), ३.
- ❖स्वर्ग एतहि अछि❖ (यात्रा प्रसंग), ४.
- ❖फसाद❖ (कथा संग्रह) ५.

नमस्तस्यै❖ (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महरा
ज (मैथिली उपन्यास) ,८.लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
,९.सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास) १०.समाधान(निबंध
संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास) १
३.शंखनाद(उपन्यास)।



रघुनाथ मुखिया

तथा सगडीतमे कैसेट एलबमसभ सेहो बाहर
भेल अछि।लेखनदिस हिनक सक्रियता
परिमाणात्मक रूपमे कम रहितहुँ गुणात्मक
दृष्टिँ हृदयस्पर्शी मानल जाइत अछि
।पेशासँ विज्ञान-शिक्षक छथि ।



कुमार भास्कर



प्रदीप पुष्प



संदीप कुमार साफी

"बैशाखमे दलानपर" प्रकाशित।



उमेश मंडल

निश्तुकी- कविता संग्रह, मिथिलाक संस्कार गीत, विध-
व्यवहार गीत आ गीतनाद (संकलन),
"मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो मिथिलाक जीव-
जन्तु स्लाइड शो मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो", सगर राति
दीप जरय- इतिहास, दुध-पानि फराक-
फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)-
(छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल), हिन्दुस्तानी मुसलमान
और हिन्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- गीतेश शर्मा, मैथिली
अनुवाद- उमेश मण्डल।



चन्द्रमणि



स्व. हेमकान्त झा, गायक



मुरलीधर, मैथिली फिल्म निर्देशक



कुंज बिहारी, मैथिली गायक



रामबाबू झा, गायक



बि.पि.उदासी



जितेन्द्र सहयोगी



उदितनारायण फिल्म गायक



प्रकाश झा, फिल्म निर्देशक



कीर्ति आजाद क्रिकेट



श्रीराम झा शतरंज



अभिषेक झा गोल्फ



अशोक कुमार 1981-

साधारण काष्ठकारक परिवारमे समस्तीपुर जिलाक मोखियारपुर सखलानी गाममे जनमल अशोक कुमार कहियो स्कूल नहि गोलाह। दिनमे पचास टाका कमेनिहार दिल्लीक एकटा गोल्फ क्लबक एहि कैडीकेँ 1994 ई. मे चोरिक मिथ्यारोप लगा कए गोल्फ कोर्ससँ बाहर कए देल गेल। वैह कैडी दस सालक भीतर भारतक नम्बर एक गोल्फर बनि गेल।



राजेश रंजन, मैथिली फेडोरा प्रोजेक्ट



संजय झा

सुल्तानगंज, भागलपुर।
मोटोरोलाक सी.ई.ओ.।



बिन्देश्वर पाठक



बिनोद मिश्र

डॉ. बिनोद मिश्र सम्प्रति आई आई टी रुडकी, उत्तराखंडमे अंग्रेजी पढ़बैत छथि आ हिनक रचना a अंग्रेजी आ हिंदी मे प्रकाशित भेल छन्हि। अहि



राजकमल झा, अंग्रेजी लेखक, पत्रकार

हिनकर अंग्रेजी उपन्यास "द ब्लू बेडस्प्रेड" , "इफ यू आर अफरेड ऑफ हाइट्स" आ "फायरप्रूफ" प्रकाशित छन्हि। "द ब्लू बेडस्प्रेड" (१९९९)पर हुनका "कॉमनवेलथ राइटर्स प्राइज फॉर बेस्ट फर्स्ट बुक-यूरोशिया" भेटल छन्हि। राजकमल झा श्री मुनीश्वर झा आ श्रीमती रंजना झाक पुत्र छथि, "आइ.आइ.टी.खड़गपुर"सँ



मानस बिहारी वर्मा, वैज्ञानिक

वर्ष हिनक कविता संग्रह Silent Steps and Other Poems प्रकाशित भेल छन्हि। एकर अतिरिक्त ई अंग्रेजीमे आलोचनाक क्षेत्रमे आठ टा पोथी संपादित केने छथि। हिनक पोथी Communication Skills for Engineers and Scientists बहुतो इंजीनियरिंग संस्थानमे पाठ्य पुस्तक रूपमे पढ़ाओल जाइत अछि।



फणीश्वर नाथ 'रेणु' मिथिला
रत्न 1921-1977

बी.टेक.छथि, आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि, जतए ओ "इण्डियन एक्सप्रेस" मे एडिटर छथि।



रामधारी सिंह 'दिनकर' मिथिला रत्न 1
908-1974



रामवृक्ष बेनीपुरी 1899-
1967



डॉ. हरिवंश तरुण 1927-
2009

जन्म 21 जून 1927 ई.।
गाम- चकसलेम, पो.- पटोरी, जिला- समस्ती
पुर। तीन दर्जन सँ बेशी हिन्दी पोथी
जाहिमे काव्य-कथा-प्रबन्ध सम्मिलित
अछि।



हरिशंकर श्रीवास्तव "शलभ"
1934-



स्व. जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'
हिन्दीक साहित्यकार।



रामेश्वर प्रेम



डॉ. नवल किशोर दास "नवल"



मोहनानन्द झा 1955-

हिन्दीक नाटककार।



रामाज्ञा शशिधर



गणेश चंचल १९३०-
२०११



डॉ. अमरेन्द्र



गोरेलाल मनीषी



कुन्दन अमिताभ



शंभु अगेही

जन्म ८ जनवरी
१९४१, प्रकाशित
कृति:ओझराएल डीह (कथा-
काव्य) १९९८, सतंजा (कथा
संग्रह) १९९९, तेसरी
बेरिआ (कथा
काव्य) २००३, बज्जिका छंद
विभास २००७



पोद्दार रामावतार अरुण १९
२३-१९९९



मजहर इमाम १९३०-
२०१२



अरुण प्रकाश १९४८-
२०१२



अंशुमन पाण्डेय

तिरहुता यूनीकोडक
आवेदनकर्ता।



वैदेही सीता



बिहुला

चम्पानगरक बिहुला।

दिनेश कुमार मिश्र

मिथिलाक बाढ़िक एक्सपर्ट।
मिथिलाक मोटा-मोटी सभ
धारपर किताब प्रकाशित।
उत्तर बिहार की व्यथा
कथा (१९९०), कोसी- उम्र कैद
से सजा-ए-मौत
तक (१९९२) बंदिनी महानंदा
(१९९४), बोया पेड़ बबूल
का-बाढ़ नियंत्रण का
रहस्य (२०००), बगावत पर
मजबूर मिथिला की कमला
नदी (२००४), भुतही नदी और
तकनीकी झाड़- फूक (२००५),
, दुई पाटन के बीच में- कोसी
नदी की कहानी (२००६) तथा
बागमती की सद्गति (२०१०)।



याज्ञवल्क्य पत्नी मैत्रेयी

याज्ञवल्क्यक दू टा पत्नी छलथिन्ह
पहिल कात्यायनी आ दोसर
मैत्रेयी। मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी छलीह।
कात्यायनीसँ हुनका तीनटा पुत्र
छलथिन्ह- चन्द्रकान्ता, महामेघ आ
विजय।



गांगो देवी

मिथिलाक मलाह जातिक
लोकदेवता। गांगोदेवीक
भगता अखनो मिथिलाक
मलाह लोकनिमे प्रचलित
अछि।

ओमप्रकाश भारती १९६८-

कोसी नदीक लोक सांस्कृतिक अध्ययन - न
दियाँ गाती हँ, बिहार के पारम्परिक नाट्य आ
मैथिलीक लोक नाट्य प्रकाशित



मोतीदाइ

मिथिलाक रजक (धोबि)
जातिक लोकदेवता



रेशमा, कुसुमा, फुल्वा



मोरंगक मोतीसायर



विन्ध्यवासिनी देवी मैथिली लोकगीत
1920-2006



कामेश्वरी देवी 1922-

मधुबनी जिलाक नवानी
गामक। जन्म १९२२ ई. मे
अपन मातृक नाहरमे भेलनि।
पति पं मदनमोहन झा।
बरौनीवासी प्रसिद्ध तान्त्रिक
पण्डित केशव मिश्र हिनक
पिता छलथिन। "मैथिला
संस्कार गीत" पोथी।



कुसुमलता कर्ण



अणिमा सिंह 1924-

समीक्षिका, अनुवादिका, सम्पादिका
। प्रकाशन: मैथिली
लोकगीत, वसवेश्वर (अनु.), शिशु
खेल गीत आदि। लेडी ब्रेबोर्न
कॉलेज, कलकत्तामे पूर्व
प्राध्यापिका।



लिली रे 1933-

जन्म: २६ जनवरी, १९३३, पिता: भीमनाथ
मिश्र, पति: डॉ. एच. एन. रे, दुर्गागंज, मैथिलीक
विशिष्ट कथाकार एवं उपन्यासकार ।
मरीचिका उपन्यासपर साहित्य
अकादेमीक १९८२ ई. मे पुरस्कार ।
मैथिलीमे लगभग दू सय कथा आ पाँच
टा उपन्यास प्रकाशित । विपुल बाल
साहित्यक सृजन। अनेक भारतीय भाषामे
कथाक अनुवाद-प्रकाशित। पहिल प्रबोध
सम्मान 2004 सँ सम्मानित।



चित्रलेखा देवी 1935-



मोहिनी झा 1937-



डॉ. सावित्री झा




कविता देवी 1942-



प्रमिला झा



शान्ति सुमन 1942-

जन्म 15 सितम्बर 1942, कासिमपुर, सहरसा , बिहार, प्रकाशित कृति, ओ प्रतीक्षित, परछाई टूटती, सुलगते पसीने, पसीने के रिश्त, मौसम हुआ कबीर, समय चेतावनी नहीं देता, तप रहे कचनार, भीतर-भीतर आग, मेघ इन्द्रनील (मैथिली गीत संग्रह), शोध प्रबंध: मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी का आधुनिक काव्य, उपन्यास: जल झुका हिरन। सम्मान: साहित्य सेवा सम्मान, कवि रत्न सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान। अध्यापन कार्य।



प्रभावती झा 1945-1999



स्व. इलारानी सिंह 1945-1993

इलारानी सिंह: जन्म 1 जुलाई, 1945, निधन : 13 जून, 1993, पिता : प्रो. प्रबोध नारायण सिंह सम्पादिका : मिथिला दर्शन, विशेष अध्ययन : मैथिली, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी, भाषा विज्ञान एवं लोक साहित्य । प्रकाशित कृति : सलोमा (आस्कर वाइल्डक फ्रेंच नाटकक अनुवाद 1965), प्रेम एक कविता (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विषवृक्ष (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विन्दंती (1972), स्वरचित: मैथिली कविता संग्रह (1973), हिन्दी संग्रह।



उषाकिरण खान 1945-

जन्म: २४ अक्टूबर १९४५, कथा एवं उपन्यास लेखनमे प्रख्यात । मैथिली तथा हिन्दी दूनू भाषाक चर्चित लेखिका । प्रकाशित कृति: अनुत्तरित प्रश्न, दूर्वाक्षत, हसीना मंजिल, भामती (उपन्यास) । २०१०-श्रीमति उषाकिरण खान (भामती, उपन्यास) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार-मैथिली।



नीरजा रेणु 1945-

जन्म: ११ अक्टूबर १९४५, नाम: कामाख्या देवी, उपनाम: नीरजा रेणु, जन्म स्थान: नवटोल, सरिसबपाही । शिक्षा: बी.ए. (आनर्स) एम.ए., पी-एच.डी., गृहिणी । प्रकाशित रचना : ओसकण (कविता मि.मि., १९६०) लेखन पर पारिवारिक, सांस्कृतिक परिवेशक प्रभाव । मैथिली कथा धारा साहित्य अकादेमी नई दिल्लीसँ स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक पन्द्रह टा प्रतिनिधि कथाक सम्पादन । सृजन धार पियासल कथा संग्रह, आगत क्षण ले कविता संग्रह, ऋतम्भरा कथा संग्रह, प्रतिच्छवि हिन्दी कथा संग्रह, १९६० सँ आइधरि सएसँ अधिक कथा, कविता, शोधनिबन्ध, ललितनिबन्ध, आदि अनेक पत्र-पत्रिका तथा अभिनन्दनग्रन्थमे प्रकाशित । मैथिलीक अतिरिक्त किछु रचना हिन्दी तथा अंग्रेजीमे सेहो । २००३- नीरजा रेणु (ऋतम्भरा, कथा) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार ।



वीणा ठाकुर 1954-

जन्म- भवानीपुर, पण्डौल (मधुबनी) । पिता श्री श्रीमोहन ठाकुर । प्रकाशित कृति: मैथिली रामकाव्यक परम्परा, इतिहास-दर्पण (समीक्षा), विद्यापतिक उत्स (समालोचना), भारती (उपन्यास)



जानसुधा मिश्र

भारतक उच्चतम न्यायालयक चारिम महिला न्यायाधीश आ पहिल मैथिलानी ।



जस्टिस मृदुला मिश्र



वीणा कर्ण 1946-

जन्म ३ नवम्बर १९४६, गाम- पटोरी, पो. पंचगछिया, जिला- सहरसा । सदस्य, मैथिली साहित्य अकादेमी परामर्शदातृ समिति १९८७-१९९३, सदस्य, भाषा परामर्शदातृ समिति (मैथिली), भारतीय ज्ञानपीठ । अवकाशप्राप्त विश्वविद्यालय आचार्य आ अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय । प्रकाशित कृति- अर्गला, भावनाक अस्थिपंजर (मैथिली काव्य संग्रह), शंखनाद, तुभ्यमेव समर्पये, अनुबन्ध (हिन्दी काव्य संग्रह) । प्रकाश्य: ससपदी (मैथिली निबन्ध संग्रह), चारित्रिक पृष्ठभूमिमे मैथिलीक प्रसिद्ध उपन्यास, मैथिली-उपन्यासक कथा किछु कहैत अछि (मैथिली



शेफालिका वर्मा 1943-

जन्म: ९ अगस्त, १९४३, जन्म स्थान : बंगाली टोला, भागलपुर । शिक्षा: एम., पी-एच.डी. (पटना विश्वविद्यालय), ए. एन. कालेज, पटना मे हिन्दीक प्राध्यापिका पदसँ सेवानिवृत्त । नारी मनक ग्रन्थिकें खोलि: करुण रससँ भरल अधिकतर रचना । प्रकाशित रचना: झहरैत नोर, बिजुकैत ठोर; विप्रलब्धा (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकाश (लघुकथा संग्रह), यायावरी (यात्रा-वृत्तान्त), भावाञ्जलि (काव्य-प्रगीत) , किस्त-किस्त

आलोचना); जिन्दगीनामा (हिन्दी काव्य संग्रह), क्रमशः (हिन्दी आलोचना)।



नीता झा 1953-

जन्म : २१-०१-
१९५३, व्यवसाय: प्राध्यापिका ।
लेखन पर समाजक परम्परा
तथा आधुनिकताक संस्कार
सँ होइत विसंगतिक
प्रभाव। प्रकाशित कृति :
फरिच्छ, कथा संग्रह
१९८४, कथानवनीत
१९९०, सामाजिक असन्तोष
ओ मैथिली साहित्य शोध
समीक्षा । बिलाइ मौसी (बाल
लघुकथा संग्रह)।



प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'
1948-

जन्मस्थान: रहिका, माता: श्रीमती
वृन्दा देवी, पिता: पं. दीनानाथ
झा, शिक्षा: एम.ए., बी.एड., प्रसिद्ध
अभिनेत्री दू सयसँ बेशी
नाटकमे भाग लेलनि । भंगिमा
(नाट्यमंच) क भूतपूर्व
उपाध्यक्षा, पत्रिकाक
सम्पादन, कथालेखन आदिमे
कुशल । ❖ अरिपन ❖ आदि
अनेक संस्था द्वारा पुरस्कृत-
सम्मानित।



आशा मिश्र 1950-

जन्म: ६-७-१९५० ई., प्रकाशित
कथा मे मैथिलीक संग
हिन्दी मे सेहो । सभसँ पैघ
विजय मैथिली कथा संग्रह ।



डॉ. इन्दिरा झा 1957

जीवन (आत्मकथापर साहित्य अकादेमी पुरस्कार)
र)। अर्थयुग (लघुकथा संग्रह) आखर-
आखर प्रीत, नागफांस (उपन्यास)। २००४
ई.- डॉ. श्रीमती शेफालिका वर्मा, पटना; यात्री-
चेतना पुरस्कार।



डॉ. सुनीति झा



मेनका मल्लिक 1966-



शारदा सिन्हा मैथिली लोक
गीत 1953-



लालपरी देवी



शकुंतला चौधरी



गोदावरी दत्ता, मिथिला चित्र
कला



उषा वर्मा 1948-



कमला चौधरी 1953-

कृति- मैथिलीक वेश-भूषा-
प्रसाधन सम्बन्धी
शब्दावली, प्रकाशनाधीन: बाटे
बिलायल पानि (कथा
संग्रह), पिया मधुमास (कविता
संग्रह), आशापूर्णा देवीक बंगला
लघु उपन्यास **मन मंजूषा**
मैथिली अनुवाद। मुजफ्फरपुरसँ
प्रकाशित मैथिली साहित्यिक
पत्रिका **स्वातीक** सम्पादन
(१९८४-८५)।



सीता देवी, मिथिला चित्रक
ला



सरस्वती चौधरी, जनकपुर



डॉ. अरुणा चौधरी



विभा रानी 1959-

मैथिली क 3 साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता लेखकक 4 गोट किताब "कन्यादान" (हरिमोहन झा), "राजा पोखरे में कितनी मछलियां" (प्रभास कुमार चाऊधरी), "बिल टेलर की डायरी" व "पटाक्षेप" (लिली रे) हिन्दीमें अनूदित छन्हि। 2 गोट लोककथाक पुस्तक "मिथिला की लोक कथाएं" व "गोनू झा के किस्से"। मैथिली कथा संग्रह "खोहसँ निकसैत"।



उर्मिला देवी, मिथिला चित्र कला



रमा झा, सम्पादक मिथिला दर्पण



नूतन दास

ज्योत्सना चन्द्रम 1963-

जन्मतिथि: १५ दिसम्बर, १९६३, जन्मस्थान : मरुआरा, सिंधिया खुर्द, समस्तीपुर, पिता : श्री मार्कण्डेय प्रवासी, माता: श्रीमती सुशीला झा, अध्यापन। सुपरिचित कवयित्री, कथाकार। प्रकाशित कृति: बोनसाई (कविता संग्रह), झिझिरकोना (कथासंग्रह)।



यमुना देवी, मिथिला चित्रकला



पन्ना झा

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)।



राधिका झा, अंग्रेजी लेखिका

सुस्मिता पाठक 1962-

जन्म: सुपौल, बिहार। परिचित कविता संग्रह प्रकाशित। कथावाचक, कथासंग्रह प्रकाशनाधीन। राजनीति शास्त्रमे एम.ए.। संगीत, पेंटिंगमे रुचि। मैथिलीक पोथी पत्रिका पर अनेक रेखाचित्र प्रकाशित। समकालीन जीवन, समय, आ तकर स्पंदनक कवयित्री। अनेक भाषामे रचनाक अनुवाद प्रकाशित।



यशोदा देवी, मिथिला चित्रकला



सुधा कर्ण



स्वयंप्रभा झा 1970-

सम्पादिका, मिथिलांगन

हुनकर अंग्रेजी उपन्यास "स्मेल" आ "लैन्टर्न्स ऑन देयर हॉर्न्स" आ अंग्रेजी लघु कथा संग्रह "द एलीफेन्ट एण्ड द मारुति" प्रकाशित अछि। उपन्यास "स्मेल" लेल हुनका "फ्रेन्च प्रिक्स गुएरलेन" पुरस्कार भेटल छन्हि आ ई पोथी सोलह भाषामे अनूदित भेल अछि। राधिका "एमहर्स्ट कॉलेज"सँ "एन्थ्रोपोलोजी" पढ़ने छथि आ "शिकागो विश्वविद्यालय"सँ राजनीति विज्ञानमे मास्टर्स डिग्री लेने छथि। ओ "हिन्दुस्तान टाइम्स" आ "बिजनेस वर्ल्ड"मे काज केने छथि आ संगमे "राजीव गांधी फाउन्डेशन, दिल्ली" मे सेहो, जतए ओ आतंकवादसँ पीड़ित बच्चा सभ लेल सम्पर्क कार्यक्रमक प्रारम्भ केने रहथि। आइ काल्हि ओ अपन पति आ बच्चीक संग टोक्योमे रहै छथि।



रूपा धीरू 1973-

रूपा धीरू- जन्मस्थान- मयनाकडेरी, ससरी, श्रीमती पूनम झा आ श्री अरूणकुमार झाक पुत्री।स्थायी पता- अञ्चल- सगरमाथा, जिल्ला- सिरहा। प्रथम प्रकाशित रचना-कोइली कानए, माटिसँ सिनेह (कविता), भगता बेडक देश-भ्रमण (कनक दीक्षितक पुस्तकक धीरेन्द्र प्रेमर्षिसँग मैथिलीमे सहअनुवाद, सङ्गीतसम्बन्धी कृति- राष्ट्रियगान, भोर, नेहक वएन, चेतना, प्रियतम हमर कमौआ (पहिल मैथिली सीडी), प्रेम भेल तरघुस्कीमे, सुरक्षित मातृत्व गीतमाला, सुखक सनेस। सम्पादन-पल्लव, मैथिली साहित्यिक मासिक पत्रिका, सम्पादन- सहयोग, हमर मैथिली पोथी (कक्षा १, २, ३, ४ आ



रंजना झा, विद्यापति संगीत गायिका



रश्मि दत्त, गायिका, जनकपुर

५ आ कक्षा 9-10 क ऐच्छिक
मैथिली विषय पाठ्यपुस्तकक
भाषा सम्पादन।



कामिनी कामायनी



मुन्नी झा युवा रचनाकार



कामिनी 1978- युवा कवियि
त्री



रुक्साना सिद्दीकी



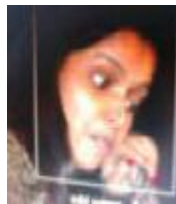
कल्पना मिश्र, मैथिली रंगमंच



ज्योति झा,
, मैथिली रंगमंच



किरण झा, मैथिली रंगमंच



प्रियंका झा, मैथिली रंगमंच



ऋतु कर्ण, मैथिली रंगमंच



ज्योति वत्स, रंगमंच



नेहा वर्मा, रंगमंच



सविता



अनुप्रिया



मृदुला प्रधान



अरुण मिश्र, महिला बॉक्सिंग



राखी दास, मिथिला चित्रकला



बनारसी पंडित, मिथिला चित्रकला, धनुषा, नेपाल



देवकला देवी कर्ण, मिथिला चित्रकला, नेपाल



मदनकला कर्ण, मिथिला चित्रकला, नेपाल



महासुन्दरी देवी, मिथिला चित्रकला



निर्जला झा, मिथिला चित्रकला, नेपाल



फुलो साह, मिथिला चित्रकला, महोत्तरी, नेपाल



रजनी पल्लवी



संगीता कुमारी, मैथिली फेडोरा प्रोजेक्ट



विन्देश्वरी दास



वाणी मिश्र, कवियित्री १९५३
-१९९६

कोइलख, मधुबनी। जन्मस्थान
तिलाठी, नेपाल।

गौरी सेन



मौसमी बनर्जी, कवियित्री

सीमा झा



शैल झा



शान्ति देवी



शशिबाला

पिता श्री उग्र नारायण
लाल, पति श्री उमेश कुमार
कण्ठ (बिसहथ)। शिवा
कश्यप आ कृष्ण कुमार
कश्यपक सहयोगसँ "भारती
विकास संस्था"क स्थापना।
रचना: कृष्ण कुमार कश्यपक
संग "मेघदूत" आ "गीत-
गोविन्द"क मैथिली
अनुवाद, माछ-भात, मिथिला
चित्र-शिक्षा, भाग-१, मिथिला
चित्र-कोर, भाग-३।



मुन्नी कामत

सुखल मन तरसल आँखि (कविता संग्रह)।



प्रेरणा झा

मिथिला लोक कला



अंशुमाला

मैथिली लोकगीत।



श्वेता झा चौधरी, चित्रकार

गाम सरिसव-पाही, ललित कला आ
गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे

सर्टिफिकेट कोर्स।कला
प्रदर्शनी: एक्स.एल.आर.आइ., जमशेदपुरक
सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला
जमशेदपुर, कला मन्दिर
जमशेदपुर (एक्जीवीशन आ वर्कशॉप)।कला
सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुरमे
कला प्रतियोगितामे निर्णायकक रूपमे
सहभागिता, २००२-०७ धरि
बसेरा, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला
चित्रकला), वूमेन कॉलेज पुस्तकालय आ
हॉटेल बूलेवार्ड लेल वाल-पेंटिंग।प्रतिष्ठित
स्पॉन्सर: कॉरपोरेट
कम्युनिकेशन्स, टिस्को; टी.एस.आर.डी.एस,
टिस्को; ए.आइ.ए.डी.ए., स्टेट बैंक ऑफ
इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न
व्यक्ति, हॉटेल, संगठन आ व्यक्तिगत कला
संग्राहक।

हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत
आ भानस-भात।



श्वेता झा

मिथिला चित्रकला, सम्प्रति
सिंगापुरमे निवास।



रानी झा



मोती कर्ण

मिथिला चित्रकला



निक्की प्रियदर्शिनी



प्रज्ञा झा



डॉ. नलिनी चौधरी



नीलम चौधरी, कथक नृत्यां
गना



पूनम मंडल

प्रियंका झाक संग मैथिली न्यूज
पोर्टल "समदिया"
www.esamaad.blogspot.com क
संचालन ।



डॉ. ललिता झा १९५१

जन्म
पनिचोभ, दरभंगा। "मैथिलीक
भोजन सम्बन्धी
शब्दावली" प्रकाशित।



अनुपमा प्रियदर्शिनी

पति डॉ. रतन कर्ण, गाम-
उजान (बडकागाम), पो.
लोहना रोड, जिला दरभंगा।

इरा मल्लिक

पिता स्व. शिवनन्दन
मल्लिक, गाम-
महिसारि, दरभंगा। पति श्री
कमलेश
कुमार, भरहुल्ली, दरभंगा।



प्रियंका झा

पूनम मंडलक संग मैथिली न्यूज
पोर्टल "समदिया"
www.esamaad.blogspot.com क
संचालन ।



आरती कुमारी १९६७-

"मैथिली मुक्तक काव्यमे
नारी" प्रकाशित ।



आराधना मल्लिक

मैथिली रंगमंच।

गुंजन कर्ण

राँटी मधुबनी, सम्प्रति यू.के.मे रहै
छथि। www.madhubaniarts.co.uk पर
हुनकर कलाकृति देखि सकै छी।



स्तुति नारायण



मीना झा

ब्रेस्ट कैंसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा के
र एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक
पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैंसर पर लिखल गे
ल। हिन्दीमे सेहो ताधरि एहि विषयपर कथा
नहि लिखल गेल छल।



शिखा

मैथिली रंगमंच।

सम्प्रति लोजियाना (संयुक्त राज्य अमेरिकामे), शिक्षा-एम्.एस.सी. (जंतु विज्ञान), ल.ना. मिथिला वि.वि., दरभंगा; बी.एस.सी. बी.आर. अम्बेडकर वि.वि. मुजफ्फरपुरसँ, हाँबी, मिथिला चित्रकला, कमप्यूटराइज्ड चित्रकला, ललित कला। उपलब्धि: अखिल भारतीय कला आ दस्तकारी प्रतियोगिताक पुरस्कार 1995 मे; संस्कार भारती भाव नृत्य प्रतियोगिता 1989 मे सहभागी।



प्रीति ठाकुर

गाम- जगेली, भाया तारानगर, पूर्णियाँ। मैथिली बाल साहित्यमे "गोनू झा आ आन चित्र कथा २००८", "मैथिली चित्रकथा २००९" आ "मिथिलाक लोकदेवता २०१०", विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य) २०१४ प्रकाशित।



रेवती मिश्र



अनुपमा झा

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल, भारत।



अनामिका राज



विनीता मल्लिक



आभा झा



प्रियंवदा तारा झा



डॉ अपर्णा



शान्ति लक्ष्मी चौधरी

ग्राम गोविन्दपुर, जिला सुपौल
निवासी आ राजेन्द्र मिश्र
महाविद्यालय, सहरसा मे
कार्यरत पुस्तकालयाध्यक्ष श्री
श्यामानन्द झाक जेष्ठ
सुपुत्री, आओर ग्राम महिषी
(पुनर्वास आरापट्टी), जिला
सहरसा निवासी आ दिल्ली
स्कूल ऑफ इकानोमिक्स सँ
जुड़ल अन्वेषक आ
समाजशास्त्री श्री अक्षय कुमार
चौधरीक अर्धांगिनी छथि।
प्राणीशास्त्र सँ स्नातकोत्तर
रहितो शिक्षाशास्त्रक स्नातक
शिक्षार्थी आ एकटा समाजशास्त्री
सँ सानिध्यक चलिते आम
जीवनक सामाजिक विषय-
बौस्तु आ खास कऽ
महिलाजन्य सामाजिक समस्या
आ प्रघटनामे हिनक विशेष
अभिरुचि स्वभाविक।



अनुपम रैना



डॉ चित्रलेखा



डॉ कल्पना
मणिकान्त मिश्र

पिता डॉ शिव कुमार झा,
ग्राम राटी, सासुर- गजहारा।
मेडिकल शिक्षा जे. जे.
हॉस्पिटल/ ग्रान्ट हॉस्पिटलसँ
सम्पन्न कय स्त्री-रोग
विशेषज्ञ। मुम्बईसँ १९८०-८२
मे प्रकाशित होइबला मैथिली
पत्रिका "विदेह"क पति डॉ
मणिकान्त मिश्र (निर्माता-

(c)२०००- २०२३। विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमें पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

(c) २०००-२०२३ सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसीटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.htm, <http://www.geocities.com/ggajendra> आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाई २००४ क पोस्ट <http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.htm> (किछु दिन लेल <http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.htm> लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- <http://videha.com/> भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इन्टरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इन्टरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे <http://www.videha.co.in/> पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब 'भालसरिक गाछ' जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

